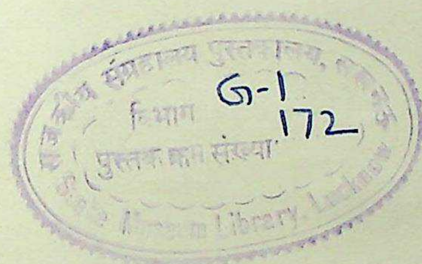
भारत की एकता का निर्माण

सरदार वल्लभभाई पटेल के भाषण

भारत की एकता का निर्माण

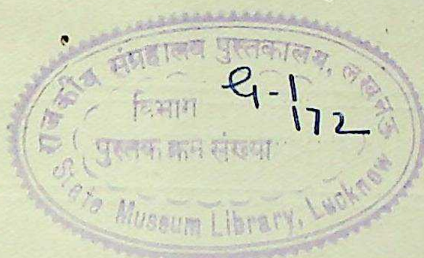
सरदार वल्लभभाई पटेल
के भाषण


विभाग G-1
पुस्तक क्रम संख्या 172
State Museum Library, Lucknow

भारत की एकता का निर्माण

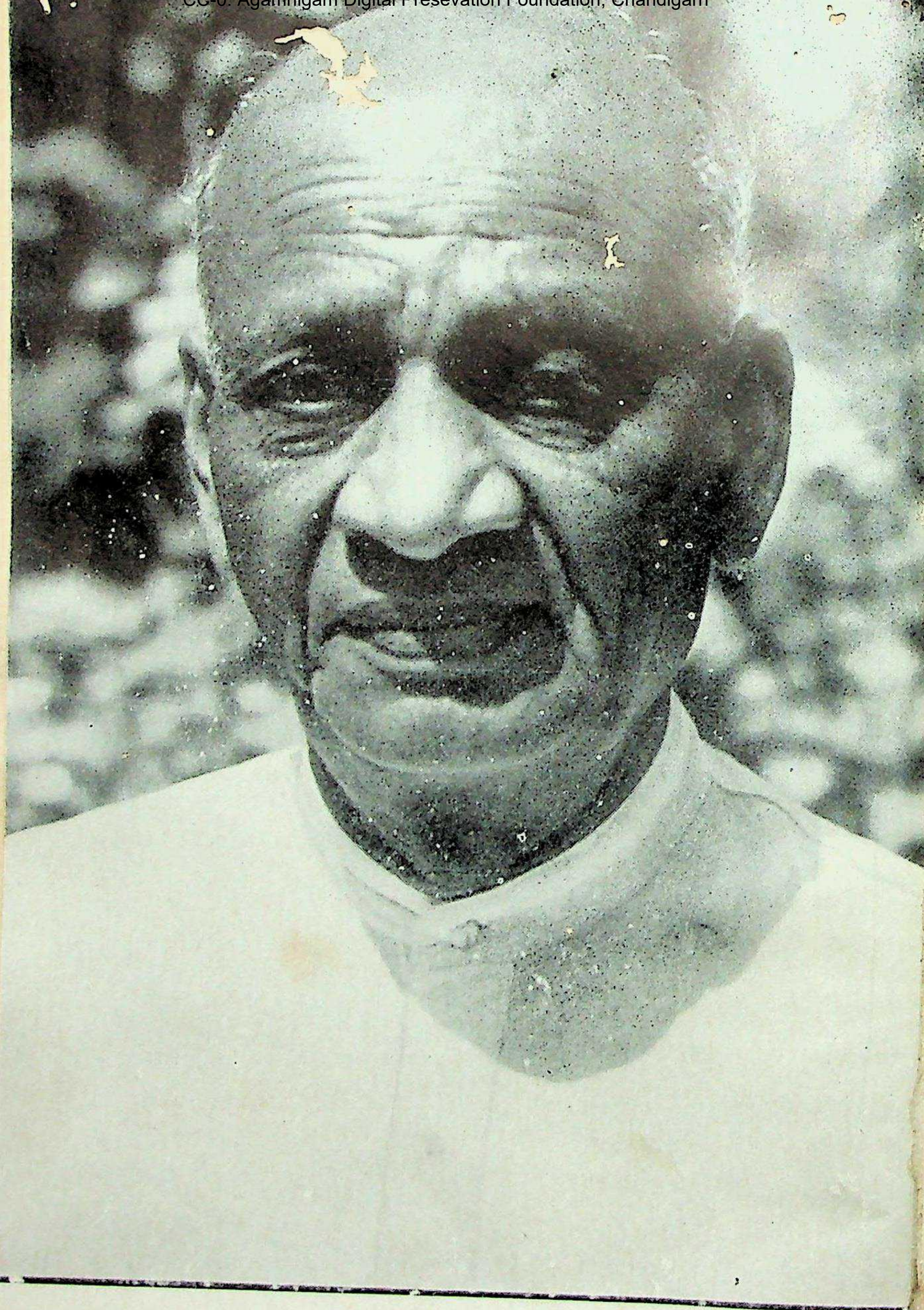
(२७ भाषण)

सरदार वल्लभभाई पटेल



पब्लिकेशन्स डिवीज़न
ओल्ड सेक्रेटेरियट
दिल्ली

प्रथम संस्करण ५००० } नवम्बर, १९५४ ई० { मूल्य ५ रुपया

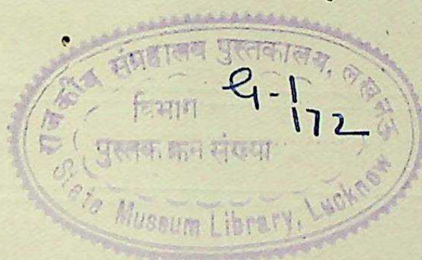


नवीन भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल

भारत की एकता का निर्माण

(२७ भाषण)

सरदार वल्लभभाई पटेल



पब्लिकेशन्स डिवीज़न

ओल्ड सेक्रेटेरियट

दिल्ली

प्रथम संस्करण ५००० } नवम्बर, १९५४ ई० { मूल्य ५ रुपया

लीडर प्रेस, इलाहाबाद में मुद्रित

वक्तव्य

१५ अगस्त १९४७ को जब भारत स्वाधीन हुआ, तब भारत में ९ प्रान्तों के अतिरिक्त ५८४ रियासतें थीं। इन ५८४ रियासतों में केवल हैदराबाद, काश्मीर और मैसूर यही ३ रियासतें ऐसी थीं, जो आकार और आबादी के लिहाज से पृथक् राज्यों का रूप धारण कर सकती थीं। अधिकांश रियासतें बहुत छोटी थीं और २०२ रियासतें तो ऐसी थीं, जिनका क्षेत्रफल १० वर्गमील से अधिक नहीं था। उस पर भी ये सब की सब रियासतें शासन की पृथक् इकाइयाँ बनी हुई थीं।

रियासतों का यह महकमा भारत के प्रथम उपप्रधान मन्त्री श्री सरदार वल्लभभाई पटेल को सौंपा गया और दो वर्षों के भीतर ही उन्होंने सम्पूर्ण भारत को एक बना दिया। उक्त ५८४ रियासतों का ५,८८,००० वर्ग मील क्षेत्रफल और १० करोड़ के लगभग आबादी इस अल्पकाल ही में भारत के आन्तरिक भाग बन गए। उसी तरह, जिस तरह भारत के अन्य राज्य हैं। हैदराबाद, मैसूर और काश्मीर को पृथक् पृथक् और अन्य कितनी ही रियासतों के संघ बनाकर उन्हें बी श्रेणी के राज्य बना दिया गया। सैकड़ों छोटी-छोटी रियासतें आसपास के बड़े राज्यों में मिला दी गईं। परिणाम यह हुआ कि भारत भर में पूर्ण प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और सन् १९५२ का निर्वाचन समूचे देश में बालिग मताधिकार के आधार पर समान रूप में हुआ।

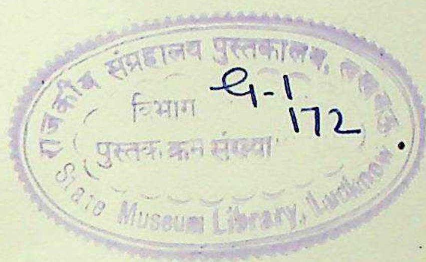
इस नवीन भारत की एकता के निर्माण में सरदार पटेल के इन २७ भाषणों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। स्वाधीनता के पहले २½ वर्षों की भारतीय समस्याओं पर इन भाषणों में जो प्रकाश डाला गया है, उसका महत्व ऐतिहासिक है। ये भाषण देश के लिये चिरकाल तक प्रकाश-स्तम्भ का काम देते रहेंगे। इसी दृष्टिकोण से इन्हें भारतीय जनता की भेंट किया जा रहा है।

२ अक्तूबर १९५४

चित्र-सूची

भाषणों की सूची

स्थान पृष्ठ



भारत की एकता का निर्माण

भारत

15 अगस्त 1947 के दिन

तथा

एकता के निर्माण के बाद

भारत के राज्यों की सीमाएं – 15 अगस्त 1947

वर्तमान भारत के राज्यों की सीमाएं

आन्ध्र का जन्म अक्तूबर 1953 में हुआ

(१)

कलकत्ता

३ जनवरी १९४८

बहनो और भाइयो,

बहुत दिनों से आप लोगों से मिलने की ख्वाहिश थी। आपका प्रेम और मुहब्बत देख मेरा दिल भर आया है। चन्द दिन हुए, हमारे नेता हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब भी इधर आए थे। उस दिन भी बहुत लोग जमा हो गए और वह अपने दिल की जो बातें आपको सुनाना चाहते थे, उस का मौका रह गया। आप लोग कलकत्ता में सब चीजें बहुत बड़े पैमाने पर करना चाहते हैं। आज भी आप लोग इतनी बड़ी तादाद में यहाँ आए हैं। इतनी बड़ी भीड़ को सुनाना भी मुश्किल हो जाता है। यदि पास और दूर के सब लोग शान्त हो जाएँ, तो चन्द बातें मैं आपको सुनाना चाहता हूँ। क्योंकि अब हमें ऐसा मौका बहुत कम मिलता है कि हम लोग आपके पास आकर आपको अपने दिल की बात कह सकें।

कहने की बातें तो बहुत हैं, क्योंकि बंगाल के ऊपर, हिन्दुस्तान के ऊपर बहुत सी मुसीबतें गुजरीं हैं। एक बात हम और आप सब चाहते थे कि हिन्दुस्तान आजाद हो जाए। तो हमारा देश तो आजाद हो गया। यहाँ जो पर-देसी हुकूमत थी, वह इधर से हट गई। वह तो बहुत अच्छा हुआ। हमारा

और आपका जिन्दगी भर का यह काम था कि हमारा मुल्क आजाद हो। हिन्दुस्तान आज आजाद हो गया। एशिया भी अब आजाद होने वाला है। चन्द दिनों में, बल्कि कल ही बर्मा भी आजाद हो जाएगा। लेकिन परदेसियों के हट जाने से जो आजादी हमें मिली है, क्या सचमुच वह वही आजादी है, जो आजादी हम चाहते थे, उसका हिसाब हमें लगाना चाहिए। क्योंकि खाली परदेसियों को हटा कर उनकी जगह पर हम लोग बैठ जाएँ, तो उससे हमारा काम नहीं चलेगा। तो अब हमें क्या करना चाहिए ? अपनी स्वाधीनता को पूर्ण और अपने मन के मुताबिक बनाने के लिए हमें तैयारी करनी चाहिए। वह तैयारी क्या हो, यही मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

सब से पहले मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि हमने हिन्दोस्तान को परदेसी हुकूमत से तो आजाद कर लिया, लेकिन उसके बाद हिन्दुस्तान में जो हालत हुई, उससे हम लोगों को काफी दर्द हुआ। हिन्दुस्तान के दो हिस्से किए गए। दो हिस्से करने के जो कारण थे, उनके बारे में मैं कुछ भी कहना नहीं चाहता। बंगाल के भी हमें दो टुकड़े करने पड़े। दो टुकड़े क्यों हुए, उस चीज़ में जाने से आज कोई फायदा नहीं। लेकिन उससे हमको काफ़ी नुकसान हुआ। इतना नुकसान होते हुए भी, यदि हम उस नुकसान में से, उस खराबी में से कुछ पाठ सीख लें, तो हमारा वह नुकसान कम हो जाएगा। आखिर बंगाल के दो टुकड़े करने से ही तो कोई ऐसा बिगाड़ नहीं हो सकता है कि हम एक दूसरे से इस तरह से अलग हो जाएँ, जैसे दो दुश्मन हों। क्योंकि आखिर बंगाल की भाषा एक है, एक के दो बंगाल बन जाने पर भी बंगाल का अपना एक कल्चर है, एक साहित्य है, एक रंग-ढंग है। आज तक आप साथ-साथ रहे, अब आप आपस में क्यों लड़ें ?

लेकिन दूसरी ओर यह भी मैं आपसे नहीं छिपाना चाहता हूँ कि मेरे दिल में काफी अन्देशा है कि अब क्या होगा ? हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच में आज जो हालत है, अगर वही हालत चलती रही, तो दोनों की बड़ी मुसीबत होगी। उस मुसीबत को दूर करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? हम कोई ऐसी चीज न करें, जिससे हमारे ऊपर कोई दोष आए। आप यह भी जानते हैं कि पाकिस्तान को छोड़ कर भी हमारा जो मुल्क बाकी बच रहा है, वह बहुत बड़ा मुल्क है। बत्तीस करोड़ की आज भी हमारी आबादी है। अब इस बत्तीस करोड़ की आबादी वाले इतने बड़े मुल्क को उठाने के लिए अगर

हम काम करें, तो वह बहुत बड़ा काम होगा। इस चीज़ में हम अपनी सारी शक्ति लगाएँ, उसके लिए हमें मौका मिलना चाहिए।

पन्द्रह अगस्त के बाद दोनों देशों में जो काम हुआ है, वह इस प्रकार का काम हुआ है कि उससे दुनिया के सामने हमें सिर झुकाना पड़ा, हमको शर्मिन्दा होना पड़ा। लेकिन उसके बावजूद भी पिछले पाँच-छः महीनों में हमने काफी काम किया है। चन्द महीनों में सारे मुल्क के दो हिस्से करना, दो बड़े-बड़े प्रान्तों के दो हिस्से करना और इस प्रक्रिया में सारी हुकूमत के और सारी सामग्री के दो टुकड़े करना, देश के सम्पूर्ण कर्ज़, लेन-देन और जायदाद के दो हिस्से करना, यह कोई आसान काम नहीं था। हमने थोड़े दिनों में यह काम पूरा किया और इसके लिए हम किसी अदालत में नहीं गए। हमने आपस में बैठ कर तै कर लिया। इतनी लड़ाई होते हुए भी हमने यह काम किया। साथ ही साथ कोई साठ-सत्तर लाख आदमी इस तरफ से उस तरफ को चले गए, और लगभग उतने ही आदमी उस तरफ से इस तरफ को चले आए। तो यह बहुत बड़ा काम था। दुनिया में कोई भी हुकूमत अगर उस काम के बोझ से दब जाती, तो उसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं थी।

यह काम तो हमने किया, मगर अभी जो बहुत जरूरी काम करना बाकी है, वह है हिन्दुस्तान की हवा साफ करना। क्योंकि अब आजाद हो जाने के बाद भी हम अगर इसी काम में फँसे रहे, इसी तरह आपस में झगड़ा करते रहे, तो कोई काम नहीं होगा। आप यह जानते हैं कि हिन्दुस्तान में आज क्या हालत है। देश को अगर आप देख लें, तब आपको मालूम पड़ेगा कि हमें जो काम करना चाहिये, वह हम नहीं करते और उससे हमें नुकसान होता है। उस नुकसान को हमें रोकना है।

तो वह क्या काम है? आप जानते हैं कि हमारे मुल्क में खुराक की कमी है और खुराक परदेस से लानी पड़ती है। और इसमें हमें बहुत पैसा खर्च करना पड़ता है। बाहर से आनेवाली खुराक के लिए हमें बहुत दाम देना पड़ता है और उस खुराक को अपने मुल्क तक लाने के लिए भी हमें बहुत ज्यादा दाम देने पड़ते हैं। हमारे मुल्क में खुराक की जो कीमत है, उससे बहुत ज्यादा दाम हमें देना पड़ता है। यह काम हमारे लिए खतरनाक है।

दूसरा काम यह है कि यदि हमें अपनी आजादी हज्म करनी हो, तो बड़े पैमाने पर हमारे पास अच्छा फौजी सामान होना चाहिए। आर्मी (फौज),

नेवी (जल सेना) और हवाई शक्ति (एअर फोर्स) इन तीनों का काफी मजबूत इन्तजाम हमारे पास होना चाहिए। यह न हो, तो आजाद हिन्दुस्तान आज की हालत में खड़ा नहीं रह सकता। इसलिए हमारे पास इन तीनों चीजों का पूरा सामान होना चाहिए।

तीसरा काम यह है कि आज के युग में यदि हमें अनुकूल फौज रखनी हो, तो उसके लिए देश में काफी इण्डस्ट्री (उद्योग) होनी चाहिए। उसके लिए जितनी इण्डस्ट्री चाहिए, वह इण्डस्ट्री यदि हमारे पास न हो, तो हम न तो कोई फौज रख सकते हैं और अगर हम फौज रख भी लें, तो वह कोई काम न दे सकेगी। तो हमें अपने मुल्क में बड़े-बड़े कारखाने बनाने होंगे। उसके लिए आज क्या हमारे पास कोई सामान हैं? न हो, तो हमें सोच लेना पड़ेगा कि हमें क्या करना है? हमें यह कबूल करना पड़ेगा कि हम लोग बहुत पीछे हैं।

हमारा मुल्क आज इण्डस्ट्री में बहुत पीछे है। पिछले पांच-छः साल जो विश्व-युद्ध चला था, उससे हमारी आर्थिक स्थिति में काफी अन्तर आ गया। हमारा मुल्क एक प्रकार से देनदार मुल्क था, लेकिन अब वह लेनदार मुल्क बन गया है। इंग्लैंड के पास से हमारा काफी लेना निकलता है। हमारा क्रेडिट (साख) तो आज बहुत है, लेकिन उससे कोई काम की चीज हमारे पास नहीं आती है। लेनदार की हालत होते हुए भी हम देनदार से बुरी हालत में पड़े हैं। आज कोई चीज हमारे पास नहीं है। तो हमें अपनी इण्डस्ट्री बनानी है, उद्योग (व्यवसाय) बनाना है। देश का उद्योग बनाने में हमें आपका साथ चाहिए। एक तो लेबर (श्रम) का साथ चाहिए। आज हमारी लेबर की हालत बहुत बुरी है। मजदूर लोग आज एक ही बात समझते हैं और वह यह कि किसी न किसी तरह से उन्हें हड़ताल करनी है। उन्हें बहकाने वाले लोग समझते हैं कि इससे उनकी लीडरशिप बनी रहती है।

यह बहुत बुरी बात है। हमारे लिए यह सोचने की बात है कि यदि इस तरह से हम काम करते रहेंगे, तो हमारी इण्डस्ट्री तो बढ़ेगी नहीं। तब हमारी लेबर क्या करेगी? उसको क्या मिलेगा? तो वह चीज हमें पहले सोच लेनी चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि मजदूरों को जो तनख्वाह मिलनी चाहिए, जो मजदूरी मिलनी चाहिए, वह उन्हें नहीं मिले। ऐसा नहीं। लेकिन उसको क्या मिलना चाहिए, उसके लिए हमें झगड़ा नहीं करना चाहिए, उसके लिए हमें काम नहीं रोकना चाहिए। उसके लिए हमें फ़राख-

दिली से काम लेना चाहिए। उसके लिए मजदूर वर्ग, मिल-मालिक और गवर्नमेंट तीनों को मिल कर यह फैसला करना चाहिए कि भाई, पंच के पास से इन्साफ़ कराओ और इन्साफ से काम लो। लेकिन इस झगड़े से मुल्क का काम मत बिगाड़ो। आज तो हमारे मुल्क का काम बिगड़ रहा है।

तो आज लेबर को यह चीज समझानी है कि तुम्हें जितना मिलना चाहिए, वह आपको बिना स्ट्राइक (हड़ताल) किए मिल जाना चाहिए। उसका इन्तजाम गवर्नमेंट कर सकती है। यदि यह चीज हो जाए, तभी देश का भला है। अगर ऐसा न हुआ, तो लेबर में जितने काम करनेवाले लोग हैं, इनसे मैं बड़ी अदब से प्रार्थना करता हूँ कि उस सूरत में हिन्दुस्तान तो पीछे रह जाएगा, वह आगे नहीं बढ़ सकेगा। दुनिया के उन्नत मुल्कों में जिस तरह लेबर का काम चलता है, उस तरह का हमारा संगठन नहीं है, उस तरह की हमारी लेबर भी नहीं है और न उस तरह की हमारी तालीम ही है। हमारी गवर्नमेंट भी उस तरह की नहीं है।

आप जानते हैं कि हमारी बंगाल सरकार ने एक पब्लिक सेपटी बिल बनाया है। आज बंगाल में जो प्रधान मण्डल है, वह हमारा अपना है। हमें उससे काम लेना है। अब बंगाल के प्रधान मण्डल ने इस विचार से कानून बनाया कि पश्चिम बंगाल का भला हो और यहाँ कोई झगड़ा-फिसाद न हो, कोई तूफान न उठ खड़ा हो। जब यह बिल असेम्बली में पेश हुआ तो कुछ लोगों ने मेम्बरों को असेम्बली में जाने से रोकना शुरू किया। इस से हमारा काम नहीं चल सकता। आज यदि हमारा प्रधान मण्डल अच्छा काम न करे, तो हम उसको हटा सकते हैं। तो जिन लोगों ने यह बिल पेश किया था, उनको अगर आप हटाना चाहें तो उनके ऊपर जो देख-भाल करनेवाले लोग हैं, कांग्रेस की वर्किंग कमेटी है, मध्यस्थ सरकार है, उनके पास जाना चाहिए था। या आखिर में सच्चा रास्ता यह है कि आप उन लोगों के पास जाते, जो उनको वोट देनेवाले हैं। वह बंगाल की, कलकत्ता की प्रजा है, और उनके पास आपको जाना चाहिए था। लेकिन मेम्बरों को असेम्बली में जाने से रोकना तो किसी भी तरह ठीक नहीं। इस तरह करने से तो हमारा कोई काम नहीं चलेगा। इस तरह कोई लोक-शासन नहीं रह सकेगा, कोई डेमोक्रेसी प्रजातन्त्र, नहीं रहेगी। इस तरह तो गुंडों का राज्य हो जाएगा।

आज मैं जब एक. बजे इधर आया, तो मैंने अखबार में इधर की एक

खबर देखी, जिस से मुझे बड़ा दर्द हुआ। मैंने अखबार में देखा कि इधर एक छोटी-सी रियासत बिहार और उड़ीसा में पड़ी है, उस रियासत में गोली चली और उसमें बत्तीस या तेंतीस आदमी मर गए, कुछ घायल भी हुए। यह बहुत बुरा हुआ। यह सब किस लिए हुआ? यह छोटी-सी रियासत बिहार में हो या उड़ीसा में, यह उसके लिए झगड़ा था। जब वे हमारे पास आए थे तो हमने कहा था कि भई, उसका फैसला हम एक कमीशन बैठा कर करेंगे। जो कमीशन कहेगा, उसकी जाँच कर फैसला करेंगे। आज जो कुछ फैसला हमने किया है, वह तो आरजी फैसला है। इस आरजी फैसले के लिए किसी को झगड़ा नहीं करना चाहिए था। मगर झगड़ा हुआ और गोली चली। अब हमको स्वराज्य तो मिला। लेकिन दोनों प्रान्तों में, जहां हमारी हुकूमत है, प्रजा अपना काम इस तरह करे और अमलदार वर्ग को गोली चलानी पड़े, तो यह बहुत बुरी बात है। अब इधर कलकत्ते में असेम्बली के दरवाजे पर गोली चलानी पड़े, तो फिर इस तरह राज करने से क्या फायदा? तब तो राज करने के लिए और लोगों को तैयार होना चाहिए। जिसको राज चाहिए, उसे अगर हमारी जनता राज दे दे, तो उसको इन्तजार करने की कोई जरूरत नहीं।

लेकिन एक बात आप समझें। मैं इस बात का आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हम लोगों ने कभी हुकूमत नहीं की है और कलकत्ता में भी जो हमारा प्रधान मण्डल बैठा है, उन लोगों ने भी कभी कोई हुकूमत नहीं चलाई। उनके पास सरकार चलाने का अनुभव तो नहीं है। लेकिन एक बात उनके पास है और वह यह कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं। बहुत दिनों के बाद जनता के प्रतिनिधियों का प्रधान मण्डल बना है। उनके खिलाफ कोई शिकायत नहीं कर सकता कि वे लोग कोई रिश्वत लेकर काम करेंगे, या किसी काम में खामख्वाह बिगाड़ करेंगे। तो जिसका जितना दिमाग चलेगा, उतना ही काम वह करेगा। लेकिन हमारा प्रधान मण्डल किसी बुरी नीयत से कोई काम नहीं करेगा। उसमें मैला काम करनेवाला कोई नहीं है। तो अनुभव ही काम सिखाएगा। यदि आपके पास ज्यादा अनुभव है और आप ज्यादा काबिल हैं, तो आप काम उठा लीजिए। आप जनता की राय से उनको हटा सकते हैं। लेकिन इस प्रकार रुकावट डाल कर आप ऐसा काम करें कि गोली चलाने की जरूरत पड़े, तो यह बहुत बुरा होगा। इस तरह तो न हमारी हुकूमत चलेगी और न आपकी चलेगी। हम लोगों ने ६० साल तक कोशिश करके

जो कुछ प्राप्त किया है, इस तरह वह सब गिर जाएगा। उससे किसी को कोई फायदा नहीं होगा।

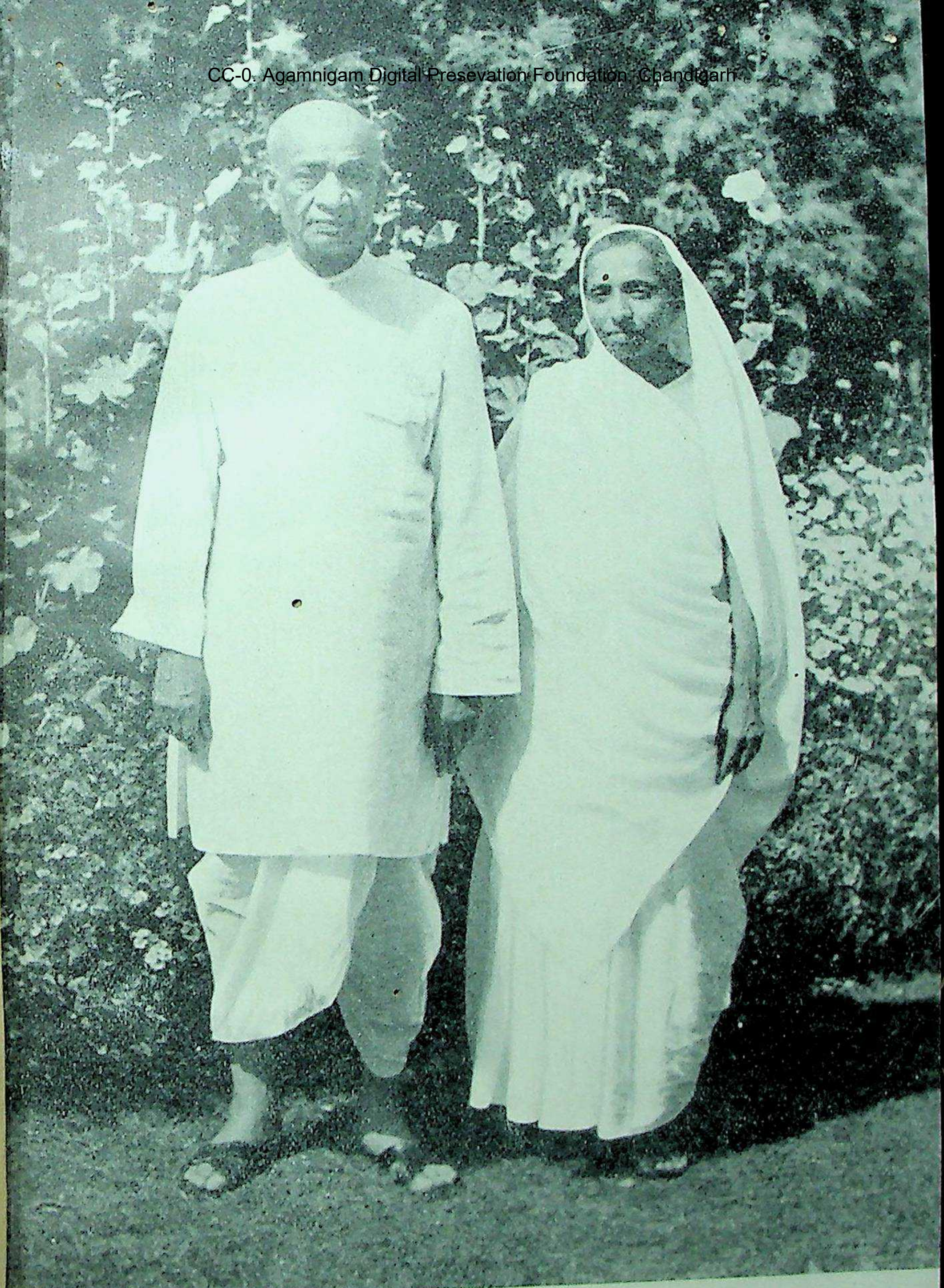
तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि हमारे पास तो करने को बहुत काम पड़ा है। अभी हमारा और पाकिस्तान का रिश्ता कैसा है, वह भी आप जानते हैं। काश्मीर में आज हमारी कैसी हालत है, वह भी आप जानते हैं। और जगह के हालत भी आप जानते हैं। यह तो ईश्वर की मेहरबानी है कि आप लोगों ने कुछ संभाल लिया। नहीं तो यदि पूर्वी और पश्चिमी बंगाल में एक साथ झगड़ा हुआ होता, तो यह फिर से लाखों आदमियों का मामला हो जाता। तो आपको समझना चाहिए कि हम बहुत नाजुक समय में से गुजर रहे हैं। हिन्दुस्तान की हालत अभी बहुत नाजुक है। उस समय पर आपको कोई गड़बड़ नहीं करनी चाहिए। हां, आपको अगर कोई शिकायत है, तो उसके लिए धीरज से काम लीजिए। जल्दबाजी में बना-बनाया काम न बिगाड़ दीजिए। देश का ध्यान रख कर आप बरदाश्त से काम लीजिए। दो सौ साल तक परदेशियों की गुलामी की। अब अपने लोग आए, तो दो-चार महीनों में इन लोगों ने इतना क्या बिगाड़ दिया? इस तरह से क्यों काम करते हो? इस तरह तो हमारा काम नहीं चलेगा।

मैंने आपसे जो कुछ कहा, उसके बारे में मैं आपको मिसाल देना चाहता हूँ। चन्द रोज हुए, मध्यस्थ सरकार के हमारे इण्डस्ट्री (उद्योग) के मिनिस्टर ने एक कान्फरेंस बुलाई थी। उसमें देश भर से लेबर (श्रम) के मिनिस्टरों और प्रतिनिधियों को बुलाया था, साथ ही उद्योगपतियों को भी बुलाया था। इस कान्फरेंस में इस बात पर विचार किया गया कि उद्योगपतियों को क्या करना चाहिए तथा लेबर को क्या करना चाहिए। बहुत सोच-विचार के बाद सब ने मिलकर फैसला किया कि हमें तीन साल तक के लिए एक ट्रूस (सन्धि) करना चाहिए। दोनों ने कबूल किया कि तीन साल तक हम हड़ताल नहीं करेंगे। अब यह फैसला करने के बाद सब लोग घर चले गए। दो दिन के बाद लेबर के प्रतिनिधि बम्बई में पहुँचे और वहाँ उन्होंने रेज़ोल्यूशन (प्रस्ताव) पास किया कि बम्बई में एक रोज की हड़ताल की जाए। इस तरह दूसरे ही दिन उन्होंने अपना वायदा तोड़ दिया। अब इससे क्या फायदा हुआ? वे शायद समझते हैं कि ऐसा करने से वे सिद्ध कर देंगे कि वही मजदूरों के प्रतिनिधि हैं। मगर ऐसा करने से यह सिद्ध कहाँ होता है? एक रोज छुट्टी मिले

और लेबर से कहा जाए कि आपको तनख्वाह भी मिलेगी तो कौन काम करना चाहेगा ? उससे क्या फायदा हुआ ? लेकिन मुल्क को इससे कितना नुकसान हुआ ? अब आप देखिए कि मजदूरों को कैसी गलत तालीम दी जाती है।

अब इधर कहा जाता है, पांच तारीख को इधर भी हड़ताल करो। लेकिन कलकत्ता को इन हड़तालों का बहुत बुरा अनुभव हुआ है । आपको नहीं मालूम है एक दिन की छुट्टी मनाने में कितना नुकसान होता है और पुलिस पर कितना बोझ पड़ता है । उसमें कहीं कोई फिसाद न हो, यह पोलीस को देखना होता है । यह आपको समझना चाहिए कि उससे मजदूरों को कोई फायदा नहीं होता । फिर भी भोले-भाले लोग उसी रास्ते पर चल पड़ते हैं। वह समझते हैं कि हमारा हित इसी में है, इसलिए वे बहक जाते हैं। लेकिन उससे सब का बहुत नुकसान होता है । तो मैं आप लोगों से बड़ी अदब से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि दो-चार साल काम करने दीजिए । हिन्दुस्तान आज जिस हालत में है, उस हालत में से वह निकल जाए, तो उसके बाद जितना जो कुछ आपको करना हो, कीजिए । लेकिन देश को कुछ ताकतवर बन जाने दीजिए। आजाद हिन्दुस्तान का तो अभी जन्म ही हुआ है। जब वह शक्तिशाली बन जाएगा, तो आपको जो कुछ करना हो कीजिएगा । लेकिन अभी वैसी बात कुछ न कीजिए । इसका मतलब यह नहीं है कि मजदूरों के साथ अन्याय किया जाए ।

कुछ लोग कभी-कभी मुझ पर इल्जाम भी लगाते हैं कि वह तो राजाओं का पिट्ठू है । कुछ लोग मुझे धनिकों और जमींदारों का भी पिट्ठू कहते हैं। मगर मैं असल में सबका पिट्ठू हूँ, मैं मजदूरों का भी हूँ क्योंकि मैं मजदूरों का काम भी करता हूँ। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आपमें से बहुत कम लोग जानते होंगे कि जब से मैंने गान्धी जी का साथ दिया, तब से मेरे पास कोई दमड़ी भी अपनी नहीं है। तब से एक धेला भी मैंने अपना बना कर नहीं रखा । क्योंकि यह उनके सिद्धान्त के खिलाफ है। तो मुझे मिलकीयत की कोई जरूरत नहीं है । हाँ, जैसे गान्धी जी भी धनिकों को समझाने की कोशिश करते हैं, वैसा ही मैं भी करता हूँ । धनिकों के पास से धन लेकर मैं उसे अच्छे काम में लगा सकता हूँ। वही मैं करता हूँ। लेकिन आजकल जो एक रवैया चल रहा है कि लीडर बनना हो तो पब्लिक मीटिंग में जाकर कैपिटलिस्ट को दो-चार गाली दे दो, नहीं तो लीडर नहीं बन सकते । वह



सरदार पटेल अपनी पुत्री कुमारी मणिबेन पटेल के साथ

मुझे पसन्द नहीं। दूसरा एक रवैया यह चल रहा है कि दो-चार गाली राजाओं को भी दे दो। इस प्रकार का लीडर मैं नहीं हूँ। इस प्रकार की लीडरी मुझे नहीं आती है। मैं यह सब पसन्द नहीं करता क्योंकि इस तरह की बातों से हम जनता को अच्छी तालीम नहीं देते हैं।

मैंने जब राजाओं का काम किया था, तो रियासतों में कई लोग कहते थे कि भई, यह राजाओं को हिन्दुस्तान में ले तो आया, लेकिन तब से रियासतों के लोगों को दुख है। हिन्दोस्तान के आजाद होने पर कुछ राजा तो यह समझे थे कि अब वे जो चाहें सो कर सकते हैं। मैंने चालीस रियासतों को तो बिल्कुल एक दो रोज़ में साफ कर दिया। तब सब लोग समझ गए कि कोई नई बात हुई है। मैंने राजाओं को भी समझाया और रियासतों के लोगों को भी समझाया। दोनों को एक दूसरे का साथ देने को कहा। मैं राजाओं से कहता हूँ कि जो रैयत की नहीं मानेगा, उस राजा को अगर मैं रखना चाहूँ, तो भी वह नहीं रह सकता। वह जरूर चला जाएगा। वह रह ही नहीं सकता। इसी प्रकार जो धनिक लोग हैं, उनको भी मैं समझा देना चाहता हूँ कि धन तो आपके पास तभी रह सकता है जब कि आप उन लोगों को भी खुश रक्खें, जिन लोगों के पास से आप धन पैदा करते हैं। लेकिन हम अगर लेबर को कोई तालीम न दें, तो हमारी आधुनिक लेबर बहक जाएगी।

लोग कहते हैं कि हमें मजदूरों का राज चाहिए। ठीक है। मैं भी उसे पसन्द करता हूँ। इग्लैंड में वहाँ की फौज को अपने लोगों पर गोली चलानी नहीं पड़ती। वहाँ तो अपने सिपाहियों को भी नहीं चलानी पड़ती। इधर हर रोज गोली चलानी पड़े, जब कि पुलिस हमारी, प्रधान मण्डल हमारा और फौज हमारी। फिर भी हमें अपने भाइयों पर गोली चलानी पड़े, इस प्रकार का राज लेने से क्या फायदा हुआ? यह तो बहुत बुरी और नुकसान देनेवाली बात है। इसलिए यह चीज़ हमें छोड़ देनी चाहिए। इसके लिए हमें लोगों को अच्छी तालीम देनी चाहिए। एक रोज हड़ताल कराने से कोई लीडरशिप कायम नहीं होती है। लीडरशिप आप भले ही ले लीजिए, लेकिन मुल्क का फायदा किस तरह से होगा, वह तो देखिए। आज हमारे पास न तो पूरा अनाज पैदा होता है, न हमारे पास पूरा कपड़ा है। ज़िन्दगी की ज़रूरियात की जितनी चीजें हैं, वे सब हमारे पास पूरी नहीं हैं। मकान बनाना हो तो उसके लिए लोहा चाहिए, वह नहीं मिलता, सीमेंट चाहिए तो वह भी नहीं मिलता। हमारी रेलवे की

मुझे पसन्द नहीं। दूसरा एक रवैया यह चल रहा है कि दो-चार गाली राजाओं को भी दे दो। इस प्रकार का लीडर मैं नहीं हूँ। इस प्रकार की लीडरी मुझे नहीं आती है। मैं यह सब पसन्द नहीं करता क्योंकि इस तरह की बातों से हम जनता को अच्छी तालीम नहीं देते हैं।

मैंने जब राजाओं का काम किया था, तो रियासतों में कई लोग कहते थे कि भई, यह राजाओं को हिन्दुस्तान में ले तो आया, लेकिन तब से रियासतों के लोगों को दुख है। हिन्दोस्तान के आजाद होने पर कुछ राजा तो यह समझे थे कि अब वे जो चाहें सो कर सकते हैं। मैंने चालीस रियासतों को तो बिल्कुल एक दो रोज़ में साफ कर दिया। तब सब लोग समझ गए कि कोई नई बात हुई है। मैंने राजाओं को भी समझाया और रियासतों के लोगों को भी समझाया। दोनों को एक दूसरे का साथ देने को कहा। मैं राजाओं से कहता हूँ कि जो रैयत की नहीं मानेगा, उस राजा को अगर मैं रखना चाहूँ, तो भी वह नहीं रह सकता। वह जरूर चला जाएगा। वह रह ही नहीं सकता। इसी प्रकार जो धनिक लोग हैं, उनको भी मैं समझा देना चाहता हूँ कि धन तो आपके पास तभी रह सकता है जब कि आप उन लोगों को भी खुश रक्खें, जिन लोगों के पास से आप धन पैदा करते हैं। लेकिन हम अगर लेबर को कोई तालीम न दें, तो हमारी आधुनिक लेबर बहक जाएगी।

लोग कहते हैं कि हमें मजदूरों का राज चाहिए। ठीक है। मैं भी उसे पसन्द करता हूँ। इग्लैंड में वहाँ की फौज को अपने लोगों पर गोली चलानी नहीं पड़ती। वहाँ तो अपने सिपाहियों को भी नहीं चलानी पड़ती। इधर हर रोज गोली चलानी पड़े, जब कि पुलिस हमारी, प्रधान मण्डल हमारा और फौज हमारी। फिर भी हमें अपने भाइयों पर गोली चलानी पड़े, इस प्रकार का राज लेने से क्या फायदा हुआ? यह तो बहुत बुरी और नुकसान देनेवाली बात है। इसलिए यह चीज़ हमें छोड़ देनी चाहिए। इसके लिए हमें लोगों को अच्छी तालीम देनी चाहिए। एक रोज हड़ताल कराने से कोई लीडरशिप कायम नहीं होती है। लीडरशिप आप भले ही ले लीजिए, लेकिन मुल्क का फ़ायदा किस तरह से होगा, वह तो देखिए। आज हमारे पास न तो पूरा अनाज पैदा होता है, न हमारे पास पूरा कपड़ा है। ज़िन्दगी की ज़रूरियात की जितनी चीजें हैं, वे सब हमारे पास पूरी नहीं हैं। मकान बनाना हो तो उसके लिए लोहा चाहिए, वह नहीं मिलता, सीमेंट चाहिए तो वह भी नहीं मिलता। हमारी रेलवे की

गाड़ियाँ टूट-फूट गई हैं। हर जगह पर देखो तो हमारा सारा साजो-सामान टूट-फूट गया है। हमने स्वराज्य तो पाया, लेकिन हमारे देश की अवस्था अभी बहुत कमजोर है, उसको हमें मजबूत बनाना है। वह बनाना हो, तो उसमें आप लोगों को हमारा साथ देना पड़ेगा। यदि आप कहें कि नहीं भई, तुम अच्छा राज नहीं करते हो। आप तो वैसा ही राज चलाते हो, जैसा परदेसी चलाते थे। तो हम आज ही छोड़ दें। तब आप यह बोझ उठाइए। लेकिन जैसा आप करते हैं, ऐसा हम हठ भी नहीं करेंगे। हम किसी भी सूरत में देश का बिगाड़ नहीं करेंगे। यदि आप बोझ न उठा सकें, तो हम यह बोझ उठाएँगे, लेकिन उसमें आप हमारा साथ दीजिए।

आज प्रफुल्ल बाबू की कलकत्ता में हुकूमत है, तो इसके लिए आपको मगरूर होना चाहिए। आपको समझना चाहिए कि यह हमारा आदमी है, हम उनके पास आ-जा सकते हैं। पहले गवर्नमेंट हाउस में आप नहीं जा सकते थे। पहले जो हुकूमत करनेवाले थे, उसके पास तो आप जा ही नहीं सकते थे। आपको पुलिस के साथ अपना बरताव बदलना चाहिए। पिछली सरकार फौज से जो काम लेती थी, उस प्रकार का काम हमें नहीं लेना चाहिए। आज फौज हमारी है और उसको देख कर हमें मगरूर होना चाहिए। देश के सिपाही हमारे हैं, पुलिस हमारी है, उनपर हमें मगरूर होना चाहिए। उनको सिखाना चाहिए कि किस तरह से पुलिस का काम करना होता है। यह सब चीज, सारा पुराना ढंग, हमें बदलना पड़ेगा। पिछली गवर्नमेंट के साथ हमारी जो लड़ाई चलती थी, उसी चाल से अब हमें नहीं चलना है। नहीं तो हमारा सारा ढाँचा टूट जाएगा, और उससे किसी को कोई फायदा नहीं होगा।

हमें हिन्दुस्तान का राज बराबर ठीक तरह से चलाना हो, तो वह दो तरह से चल सकता है। एक तो जिस तरह गान्धी जी कहते हैं, इस तरह का राज, अर्थात् रामराज्य। तो रामराज्य में तो खुला दरवाजा रख के भी सो जाओ, तो कोई हर्ज नहीं। तब पुलिस की कोई जरूरत नहीं होगी। कोई दूसरों की चीज़ को लेने की इच्छा ही न करे, कोई किसी से मार-पीट न करे और सब एक दूसरे को भाई समझकर एक कुटुम्ब की मुआफिक रह सकें, तब राम-राज्य होगा। उसके आने में तो अभी बहुत देर है। अभी तो उसमें एक भी बात नहीं है। तो गान्धी जी के रास्ते पर हम चलने की पूरी कोशिश करें, वह तो ठीक है। लेकिन आज यह हालत नहीं है। आपने इधर कलकत्ता में 'डाइरेक्ट

एक्शन डे' भी तो एक रोज देखा था। वह आपको याद होगा। १६ अगस्त १९४६ को आप भूल तो नहीं गए होंगे। मैं नहीं समझता कि कलकत्ता में कभी उसे कोई भूल सकेगा। तो आज भी हमारी हालत ऐसी नहीं है कि हम कलकत्ता की उस चीज को भूल जाएँ। उस दिन कलकत्ता से आग की जो चिन-गारी उड़ी, उसने सारे हिन्दुस्तान को जला दिया और वह अभी तक शान्त नहीं हुई। लोग कहते हैं कि यह पाकिस्तान क्यों बना? उसके बाद ये सब झगड़े-फसाद क्यों हुए? ये सब चीजें अगर हम खोल कर कहने के लिए बैठ जाएँ, तो उसमें से फिर और बुराइयाँ पैदा होंगी। इसलिए वह सब चीज हम अपने दिल में रखते हैं। हम बोलते तो नहीं लेकिन पूरी तरह समझते हैं कि यह किसकी जिम्मेवारी है। किसने कैसा और क्यों किया? ठीक है। जो कुछ हुआ, सो हमारी किस्मत से हुआ। लेकिन वह सब फिर न हो, उसके लिए हमें क्या करना है? उसके लिए मैंने कहा कि या तो आप गान्धी जी के रास्ते पर चलो और या फिर हमारी फौज मजबूत चाहिए, हमारी पुलिस मज-बूत चाहिए और हमारे देश में एका होना चाहिए। अगर हम आपस में लड़ते रहेंगे तो फिर और भी ज्यादा खराबी होगी।

तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि पाँच चार साल तक के लिए आपस में लीडरशिप का यह झगड़ा छोड़ दो। और तब तक आपस में मिल-जुल कर काम करो। यह पसन्द न हो तो अलग रहो, लेकिन जो काम कर रहे हैं, उन्हें काम करने दो। अभी कुछ लोग कहते हैं कि सरकार ने जो यह बिल पेश किया, उससे हमारी सिविल लिबरटी (नागरिक स्वाधीनता) चली गई। मुझे समझ में नहीं आया कि हम ने कितने आदमियों को पकड़ के बैठा लिया है, जो कहते हैं कि हमारी सिविल लिबरटी चली गई! सिविल लिबरटी कलकत्ता से चली गई, या किसी और सूबे से चली गई? और प्रान्तों में भी तो ऐसे ही बिल पेश किए गए हैं। किसी ने कोई ऐसी शिकायत नहीं की। क्योंकि यह बिल इस तरह से बनाया गया है कि उसका उलटा उपयोग नहीं हो सकता। अगर हमारे लोग इस बिल का ऐसा उपयोग करें कि अपने पोलि-टिकल अपोनेन्ट (राजनीतिक विरोधियों) को तंग करें, तब तो मिनिस्टर लोगों को भी जेलखाने में जाना पड़ेगा। उससे हमें डर क्यों होना चाहिए? लेकिन यहाँ तो उसको हथियार बना कर प्रधान मण्डल के ऊपर हल्ला करना उद्देश्य बन जाता है। लेकिन आज उनका टर्न (बारी) आया है, तो

कल आपका टर्न भी आएगा। दुख यही है कि इस तरह देश का काम नहीं चलेगा ।

जब आप जैसे कुछ लोग कहते हैं कि भाई, यह तो वही करते हैं, जो पुरानी गवर्नमेंट करती थी, तो यह सच्ची बात नहीं है । क्योंकि हम आपके प्रतिनिधि हैं और जिस चीज का उपयोग हमारे लोग हमें जहाँ तक करने दें, वहीं तक हम उसका उपयोग कर सकते हैं। लेकिन पुरानी गवर्नमेंट तो लोगों को जानती ही नहीं थी। लोग तो उनके पास जा भी नहीं सकते थे। इधर आज की सरकार में हमारे देश के लोगों को जितनी सत्ता चाहिए, उतनी देने में हमें कोई झिझक नहीं है ।

हम डेमोक्रेटिक रूल (प्रजातन्त्र शासन) को पसन्द करते हैं और डेमोक्रसी का काम ही हमने लिया है। लेकिन हिन्दुस्तान में डेमोक्रेसी का असली जन्म तो अभी अभी हुआ है। अभी तक पुराना सिलसिला चलता आया है। पिछले दो सौ साल तो आटोक्रेसी (निरंकुश राज्य) चलती थी, उसके बाद पोलिटिशियन्स (राजनीतिज्ञों) के कारण जो फिसाद हुए, उस चीज में से हम मुश्किल से निकले। तब आपको यह समझना चाहिए कि जहाँ हम लोगों के हाथ में सत्ता है, वहाँ अगर उसका दुरुपयोग न हो, तो आपको जरा खामोश रहना चाहिए ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूँ कि कलकत्ता हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा शहर है। कलकत्ता हमारे नये इतिहास में एक बड़ा पार्ट (हिस्सा) अदा करता रहा है । हिन्दोस्तान की लीडरशिप भी बहुत दिनों तक इधर ही थी । मैं चाहता हूँ कि आज भी वैसा ही हो । लेकिन आज कलकत्ता गलत रास्ते पर चलता जाता है। कलकत्ता में जिस प्रकार की डिसिप्लिन (नियन्त्रण), जिस प्रकार की तालीम होनी चाहिए, वह नहीं है। हमको हमेशा डर रहता है कि कलकत्ते में कोई फिसाद तो नहीं हो गया ।

एक चीज देख कर हम को खुशी भी हुई। वह यह कि जब पंजाब में इतना बड़ा तूफान उठ खड़ा हुआ था, तब भी कलकत्ता शान्त हो गया और खामोशी पकड़ कर बैठ गया। यदि यह बिगड़ता तो बहुत बिगड़ जाता । लेकिन उस समय गान्धी जी यहाँ ही थे और यह ईश्वर की कृपा थी कि हम बिगाड़ से बच गए । नहीं तो हमारे पास कोई सामान नहीं था। अगर कलकत्ता बिगड़ा होता, तो सारा हिन्दुस्तान बिगड़ जाता।

सवाल यह है कि अब हमें क्या करना चाहिए। अभी तक हमारे सामने कितनी ही मुसीबतें हैं। अभी तक हमारे सामने ऐसी हालत है कि सिन्ध में १० लाख आदमी हिन्दू और सिक्ख पड़े हैं, जिनको हमें वहाँ से निकालना है। क्योंकि वहाँ से जो चिट्ठियां आती हैं, उनमें सब लोग कहते हैं कि भई, हम वहाँ नहीं रह सकते। कितना भी हमको विश्वास दिलाया जाए, कितनी भी बातें कही जाएँ कि हम मैनोरिटी (अल्पमत) को ठीक प्रोटेक्शन (संरक्षण) देनेवाले हैं, ठीक हक देनेवाले हैं, पर किसी बात पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

इधर हमारे यहाँ तो तीन-चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं, उधर कोई हिन्दू या सिक्ख रहनेवाले न हों, तो किस तरह काम चल सकता है? कुछ लोग कहते हैं कि जो लोग चले आए हैं, वे पीछे लौट जाएँ, तो अच्छा है। कौन कहता है पीछे जाने के लिए? कौन उन्हें विश्वास दिला सकता है पीछे जाने से उनका जान-माल सुरक्षित रहेगा? वैसा करना हो तो सारा सामान बदलना पड़ेगा। और उसके लिए सब से पहले दिल साफ़ करना पड़ेगा। क्योंकि वहाँ एक गवर्नर से लेकर चपरासी तक, जितने भी सरकारी नौकर हैं, उनमें एक भी हिन्दू या सिख नहीं रहा है। इन हालतों में हिन्दू और सिख वहाँ किस तरह से रहेंगे? वे न वहाँ फौज में हैं और न पुलिस में ही। वहाँ के हाई कोर्ट में भी वे नहीं हैं। ऐसी जगह पर अगर आप कहो कि हिन्दू और सिख वापस चले जाएँ तो कौन वहाँ जाएगा? ऐसी जगह पर कोई हिन्दू या सिक्ख कैसे रह सकेगा? उधर जो ऐसी बातें कहते हैं कि, वहाँ पीछे लौट आए तो ठीक है, वह खाली बातें ही बातें हैं। वह भी सिर्फ दुनिया को बताने की बात है। यदि सफाई से बात करनी हो तो हमारे साथ बैठ कर फैसला करना चाहिए। हम तो आज यह बात करने के लिए तैयार हैं कि झगड़ा करने की क्या जरूरत है? हिन्दू और सिक्ख वहाँ नहीं रहना चाहते, उनको जबरदस्ती रखने की कोशिश न करो। वे इधर आना चाहते हैं तो उन्हें आने दो। हम को उन्हें इधर ले आने दो। क्यों नहीं ले आने देते? जबरदस्ती करके उन्हें वहाँ रखने से फायदा क्या है? और इस तरह वे रह भी कैसे सकते हैं?

तो अभी तक हर एक चीज़ में झगड़े का बीज बाकी है। काश्मीर में जो कुछ चल रहा है, उसे तो आप जानते ही हैं। कल मैं इधर आया, और आज अखबार में मैंने जफरुल्ला साहब का एक लम्बा-चौड़ा बयान देखा, जिसमें उन्होंने

जूनागढ़ को भी डाल दिया है। जूनागढ़ को जफरुल्ला साहब ने सलाह दी थी कि तुम पाकिस्तान में शरीक हो जाओ। अगर वह ठीक था, तो उसका नतीजा जूनागढ़ के नवाब साहब को भोगना ही था। वह कोई जफरुल्ला साहब को तो भोगना नहीं था, उन्हें तो खाली बातें ही करनी थीं। जूनागढ़ का फैसला तो अब हो गया। उसमें अब कोई और चीज बननेवाली नहीं है। यू० एन० ओ० में जाओ, चाहे जहाँ जाओ, उससे कोई नई चीज नहीं बन सकती। वहाँ तो जो कुछ होना था, वह हो गया। अब जो जफरुल्ला साहब कहते हैं कि जूनागढ़ तो यू० एन० ओ० में जाएगा। आज काश्मीर का मामला हमारी तरफ से यू० एन० ओ० में गया। हमने तो यह इसलिए किया कि भई, इस से तो पाकिस्तान खुली लड़ाई करे तो अच्छा है। लेकिन वे खुली लड़ाई नहीं करते हैं, दूसरों की मार्फत अपने आदमियों को लड़ाई में भेजते हैं। अपने वहाँ से लड़ाई का सारा सामान और सब हथियार उन्हें देते हैं। इसके साथ ही अपने यहाँ से रास्ता भी उन्हें देते हैं। इससे तो खुल्लमखुल्ला लड़ाई करें, तो अच्छा है। इसलिए हमने सोचा कि यू० एन० ओ० के पास जाओ। जाके वहाँ से कुछ हो न हो तो और बात है। लेकिन अगर यू० एन० ओ० ने भी कुछ नहीं किया, तो इस तरह हम बैठे नहीं रह सकते।

इस तरह काश्मीर का मामला अलग है और जूनागढ़ का मामला अलग। जूनागढ़ यू० एन० ओ० के पास नहीं जा सकता। जफरुल्ला साहब कहते हैं कि आपने भी तो रास्ता दिया था। मगर मैं पूछता हूँ कि हमने किस को रास्ता दिया था? हमने किसी को रास्ता नहीं दिया। जूनागढ़ के लोग अपने रास्ते से गए, जिधर वे जाना चाहते थे। हमने किसी को कोई रास्ता नहीं दिया। हमने किसी को कोई चीज़ नहीं दी। जूनागढ़ में किसी को एक मक्खी भी नहीं मारनी पड़ी। किसी के ऊपर कोई हथियार नहीं चलाना पड़ा। फिर रह क्या गया? यहाँ तो खुद दीवान ने आकर कहा कि मेहरबानी करके हमारी हुकूमत ले लो, हम उसे नहीं चला सकते। जूनागढ़ का नवाब तो भाग कर कराची जा बैठा। तब फिर जूनागढ़ की बात ही क्या रह गई? सो यह चीज तो हो ही गई।

उसके बाद हमने एक फैसला किया कि भई! रियासतों में हमें एक काम करना चाहिए। हमने यह कबूल किया कि रियासत के लोग जैसा चाहें, वैसा करें। रियासतों में जो लोकमत हो, इसी प्रकार हमें करना चाहिए।

हैदराबाद में, काश्मीर में, सब जगह जो लोकमत हो, उसी प्रकार का फैसला करने में हमें कोई एतराज नहीं है। लेकिन यदि काश्मीर में आज जिस तरह से चल रहा है, उसी तरह चलता रहा, तो लोकमत करने की क्या जरूरत है ? हम लड़ाई करके काश्मीर को ले लें, तो फिर लोकमत की जगह कहाँ रही ? तो हम कहते हैं आप भी प्लैबिसिट (लोकमत गणना) करो, वहां लोकमत ले लो। लेकिन आखिर कब तक हमारे सिपाही वहाँ मरते रहें, हम पर उनका खर्च पड़ता रहे और हमारे गाँव-के-गांव जलाए जाएँ, वहाँ हिन्दू और सिक्खों को तबाह किया जाए ? यह सब जारी रहा, तो आखिर लोकमत कहाँ रहा ? फिर तो हम भी बन्दूक से ले सकते हैं। तब तो दूसरी तरह से कुछ हो ही नहीं सकेगा। हमने यह बात भी साफ कर दी कि हम काश्मीर की एक इंच जमीन भी छोड़नेवाले नहीं हैं। वह हम कभी नहीं छोड़ेंगे।

आपको यह भी समझना है कि जब हम ऐसी नाजुक हालत में पड़े हैं, तब हमें आप छोटी-छोटी बातों पर तंग न करें। आज जब हिन्दुस्तान की यह हालत है, दुनिया की यह नाजुक हालत है, तब हमें क्या करना चाहिए ? इस नाजुक हालत में अगर हम अपनी हुकूमत को ठीक नहीं चला पाएँगे, अगर उसे चलाने में आप साथ नहीं देंगे, तो हमारे देश को नुकसान होगा। इसलिए आज आप को केन्द्रीय सरकार का और प्रान्तों में जो हमारी हुकूमतें हैं, उनका साथ देना चाहिए। तो आज आप जो लाखों आदमी यहाँ जमा हुए हैं, आप जो कलकत्ता के निवासी हैं, मैं आप लोगों से बड़ी अदब से कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की ऐसी हालत में आपको हमारा एक मेसेज (सन्देश) देशभर में फैला देना चाहिए। वह सन्देश यह है कि आज देश की हालत बहुत नाजुक है, और उसमें हमें कोई हड़ताल नहीं करनी चाहिए, न कोई दूसरा तूफान खड़ा करना चाहिए। आज तो हम सब को मिल कर काम करना चाहिए।

इधर कुछ लोग कहते हैं कि भई, हमारे यहाँ सेक्यूलर स्टेट (धर्म-निरपेक्ष सरकार) चाहिए। यहाँ हिन्दुओं का साम्प्रदायिक राज नहीं होना चाहिए। कौन कहता है कि यहाँ साम्प्रदायिक राज बनाओ ? हिन्दुस्तान में तो आज भी तीन-चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं। यहाँ साम्प्रदायिक राज कैसे हो सकता है ? लेकिन एक बात यह है कि हिन्दुस्तान में जो मुसलमान पड़े

हैं, उनमें से काफी लोगों ने, शायद ज्यादातर लोगों ने, पाकिस्तान बनाने में साथ दिया था। ठीक है। अब एक रोज में, एक रात में उनका दिल बदल गया, वह मेरी समझ में नहीं आता। अब वे सब कहते हैं कि हम वफादार हैं, और हमारी वफादारी में शंका क्यों करते हो? अपने दिल से पूछो! यह बात आप हम से क्यों पूछते हैं ? यह हमसे पूछने की बात नहीं है।

लेकिन अब मैं एक बात कहता हूँ कि आपने पाकिस्तान बनाया, आपको मुबारक। उसमें हम कोई दखल देना नहीं चाहते। जो कुछ हो गया, सो हो गया। अब जैसे हम बैठे हैं, ठीक बैठे हैं। कोई-कोई कहते हैं कि हिन्दोस्तान और पाकिस्तान फिर एक हो जाएँ। मैं कहता हूँ कि अब वह सब कुछ नहीं हो सकता। उन्हें वहीं बैठा रहने दो। जो भाई पाकिस्तान में चले गए हैं, उनको पाकिस्तान को अच्छा बनाने दो। पाकिस्तान जब स्वर्ग बन जाएगा, तब हम को भी उसकी ठंडी हवा लगेगी। यही ठीक है। आप लोग जब ऐसी बात कहते हैं, तो उनको शंका पैदा होती है। ऐसी बात हम क्यों करें ? अपने को मजबूत बनाओ, तगड़ा बनाओ।

पाकिस्तान हमारा पड़ोसी है। अगर वह मजबूत होता है, तो बहुत अच्छी बात है। उससे हमको कोई नुकसान नहीं है। वह ठीक है। लेकिन बहुत दफा ऐसा कहा जाता है कि पाकिस्तान मिटाने के लिए, उसको बरबाद करने के लिए उन के दुश्मन लोगों ने कौन्स्पिरेसी (षड्यन्त्र) की है। मैं पाकिस्तान के लीडरों से बार-बार कहना चाहता हूँ कि पाकिस्तान का कोई भी दुश्मन क्यों न हो, मगर अगर कोई कौन्स्पिरेसी हैं, तो वह पाकिस्तान में ही पड़ी हैं। बाहर कहीं कोई कौन्स्पिरेसी नहीं हैं। वह तो वहाँ भीतर ही पड़ी है। जितने दुश्मन हैं, सब वहां ही हैं, इधर कोई नहीं है। हम तो उनका कोई बुरा नहीं चाहते हैं। हम क्यों उनका बुरा चाहें ? हमने तो राजी-खुशी से तुम्हारा हिस्सा तुमको दे दिया कि जाओ पाकिस्तान बनाओ। लेकिन अगर कोई हमारी आँख में धूल फेंकने के लिए आए, तो हम कहेंगे कि हम इस तरह से नहीं करने देंगे। अब इस तरह काम नहीं चलेगा। अब हमारा जो हिन्दुस्तान बाकी बच रहा है, उसको छोड़ दो। हिन्दुस्तान में हिन्दोस्तानियों को काम करने दो। उसमें आप कोई दखल मत दो। हम आपके काम में कोई दखल नहीं देंगे।

आप देख लीजिए कि हम ने किस तरह बँटवारा किया। तो जितनी चीज

थी, उस सब चीज में बहुत उदारता से हमने उनको उनके हिस्से से भी ज्यादा देने की कोशिश की। जब हमने उनको रुपया देने का किया, उस समय हमने कह दिया था कि आपको यदि पांच सौ करोड़ रुपया चाहिए और इतना हिस्सा लेने का आपका हक न हो, तो हम ज्यादा देने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन मैंने लिखकर दे दिया था कि अगर इन रुपयों से आपको काश्मीर में गोली चलानी हो, तो हम इस तरह से रुपया नहीं देंगें। हाँ, तुम में ताकत हो तो ले जाओ। ठीक है। हम खुशी से रुपया तो तब देंगे, जब यह सब फैसला हो जाए। जो आपका रुपया है, उसमें हम कोई दखल नहीं देंगे। हमने आपके साथ मिल कर जो फैसला किया, वह तो एक कन्सेण्ट (रजामन्दी का देना-पावना) डिक्री है। लेकिन रजामन्दी से जो फैसला होगा, वही तो लागू होगा। तो जिस रोज काश्मीर का फैसला हो जाए, उस रोज पैसा ले जाओ। इसी तरह कुछ लोग कहते हैं कि हमारा पैसा नहीं देते और जो कुछ आपने फैसला किया, उसमें से पलट जाना चाहते हैं। हमारी पलटने की नीयत नहीं है। अगर हमारी यह नीयत होती, तो हम फैसला करते ही क्यों। तब हम कहते कि जाओ कोर्ट में। हमने इस तरह से काम नहीं किया। तो मैं बार-बार उन्हें सुनाना चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ हमारी कोई अदावत नहीं है, और न हम कोई बुराई करना चाहते हैं। तुम्हारे साथ हमें कोई झगड़ा भी नहीं करना। लेकिन हम यही कहते हैं कि आप मेहरबानी करके हमें इधर पड़े रहने दीजिए, हमें यहां अपना काम करने दीजिए।

इधर मैं आप लोगों से भी कहना चाहता हूँ कि मेहरबानी करके आप आपस में झगड़ा छोड़ दीजिए। थोड़े दिन हमें लगकर काम करने दीजिए। यदि परदेशियों ने यह दो सौ साल बिगाड़ किया, और देश की हुकूमत बुरी तरह से चलाई, तो एक दो साल हमको भी थोड़ा बिगाड़ कर लेने दीजिए। देखिए तो सही, यह क्या चीज होती है। क्योंकि हम यदि बिगाड़ करेंगे, तो उस बिगाड़ से भी कुछ अच्छा ही होगा, बुरा नहीं होगा। यह आप समझ लीजिए। आज हमारा प्रथम काम **यह** है कि हमारे मुल्क में ज्यादा माल पैदा हो, इस धरती में से ज्यादा अनाज पैदा हो, हमारे मुल्क में बहुत से कारखाने बनें और कारखानों में बहुत माल पैदा हो। तभी हमारे मजदूर भी तगड़े हो सकेंगे। अमेरिका को देखिए, वह दुनिया का सब से अधिक धनिक मुल्क है। वहाँ मजदूर भी तगड़े हैं, मालिक भी तगड़े हैं, और सब लोग भी वहाँ तगड़े हैं।

वहां किसी प्रकार का कोई संकट नहीं है। इंग्लैण्ड में आज मजदूरों का राज्य है। वहाँ भी बार-बार इस प्रकार की स्ट्राइक (हड़ताल) नहीं चलती। वे भी इसी फिक्र में हैं कि उनके कारखाने किस तरह से ज्यादा चलें और ज्यादा-से-ज्यादा माल किस तरह से पैदा करें।

हिन्दुस्तान की किस्मत में एशिया की लीडरशिप के लिए लियाकत चाहिए। आज हमें कितनी ही प्रकार की चीजों के लिए बाहर जाना पड़ता है। बाहर से भी जरूरत की चीजें मिल नहीं रही हैं। सब जगह से हम तंग हो रहे हैं। इस हालत में हमें अपने ही मुल्क में ज्यादा से ज्यादा माल पैदा करना है। मगर वे कहते हैं कि "गो स्लो"! (धीरे चलो)। जरा धीमे पैदा करो। यानी हड़ताल करो। इस प्रकार का काम करने से तो न मजदूरों का भला होगा और न देश का भला होगा। दुनिया कहेगी कि एक बन्दर के पास एक हीरा हाथ में आया, तो बन्दरने समझा कि कोई फल है। हीरा हाथ में पकड़ वह उसे खाने लगा। मगर वह हीरा था, जब वह बन्दर के दाँतों से न टूटा, तो उसने यह समझ कर उसे फेंक दिया कि वह तो पत्थर है। हीरे का दाम तो जौहरी ही समझ सकता है। इसी प्रकार अब देखना यह है कि हमारे हाथ में आज जो स्वराज्य आया है, उसका व्यवहार हम बन्दर की तरह करेंगे या जौहरी की तरह।

जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, हमने तो परदेशियों की हुकूमत को हटाने का ठेका लिया था। वह हमने पूरा किया और आज हमारी जिन्दगी पूरी होने का भी समय आ गया है। अगला बोझ तो अब इन नौजवानों पर पड़ने वाला है, जो कहते हैं कि हमारी लीडरशिप पुरानी हो गई। मैं नौजवानों से कहता हूँ कि अगर तुम ठीक तरह से यह बोझ नहीं उठाओगे, तो आप भी मर जाओगे और मजदूर भी मर जाएँगे। आप को इस प्रकार काम नहीं करना चाहिए, जिस से हिन्दोस्तान का नुकसान हो। आज जरूरत इस बात की है कि हम ज्यादे-से-ज्यादा और अच्छी-से-अच्छी आर्मी (सेना) रखें। ताकि दुनिया के किसी मुल्क से हमें भय न रहे। यह काम सारा देश मिल कर ही कर सकेगा।

अब आप लोगों ने जिस प्रेम से मेरा स्वागत किया है, जिस मुहब्बत से मेरी बात सुनी है, उसके लिए मैं आपको मुबारकबाद देना चाहता हूँ। आप लोग इतने प्रेम से और इतनी बड़ी संख्या में यहां जमा होते हैं। उसका मतलब

मैं यह भी समझता हूँ कि आप लोगों में कांग्रेस के प्रति पूरी वफादारी और भक्ति है। आप के प्रान्त का जो टुकड़ा हुआ है, उस की चोट लगते हुए भी आपको हम पर इतना विश्वास है कि ये लोग जो काम करते हैं, समझ-बूझ कर आप की भलाई के लिए ही करते हैं। कांग्रेस आपके हित के लिए ही काम करती है। सो मैं आप को भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि बंगाल का टुकड़ा हो जाने से जितनी चोट आप को लगी है, इससे ज्यादा नहीं तो, इतनी ही चोट हम को भी लगी है। आप ऐसा कभी न समझें कि हमें चोट नहीं लगी। लेकिन जब तक फल पका न हो, तब तक उसे खाने में मजा नहीं। जब फल पकता है, तभी उसमें मिठास आती है।

मैंने जैसा कहा, जब तक पाकिस्तान को यह समझ न आ जाए कि यह काम बुरा है, तब तक हमें उसको बुलाना नहीं है। तो धीरज रखो। धीरज रख कर अपना काम ठीक करो। दूसरे के सामने न झुको और जो चीज हो गई है, उसको याद मत करो। आगे का रास्ता सोचो। आगे की मंज़िल काटने के उपाय सोचो। यह करोगे तो पीछे वाला अपने आप ठीक हो जाएगा। फिर उसमें कुछ भी करने की कोई जरूरत आपको नहीं रहेगी। हमने आगे की भी सोची है, पीछे की भी सोची है। और सोच-विचार कर हमने जो निष्कर्ष निकाला है, वह मैं आपको कहना चाहता हूँ। हमने आज देश का दो टुकड़ा न किया होता, तो हिन्दुस्तान का टुकड़ा-टुकड़ा हो जाने वाला था। पाकिस्तान तो हुआ, उससे भी बुरा राजस्थान हो जाने वाला था। रियासतों का भी टुकड़ा करने का था कि अलग-अलग एक राजस्थान बनाओ, या छोटे-छोटे राजाओं को मिला कर अनेक राजस्थान बनाओ। तब ऐसी बहुत सी बातें चलती थीं। लेकिन अब हम उन सब चीजों में से निकल आए हैं। आज जो हिन्दुस्तान बाकी बच रहा है, वह भी बहुत बड़ा मुल्क है। इतने बड़े मुल्क को हम ताकतवान बनाएँ, तो जितने टुकड़े हमारे आसपास पड़े हैं, वे सब हमारी छाया में चले आएँगे। आप को कोई फिक्र करने की जरूरत नहीं है। लेकिन इस चीज में आप को हमारा साथ देना पड़ेगा।

सारा देश अगर आज मिल कर काम न करेगा, देश की जनता अगर हमारा साथ न देगी, तो हमारी नौका तूफान में पड़ जाएगी। तो बंगाल के नौजवानों और कार्यकर्ताओं से मेरी अदब से प्रार्थना है कि जरा हम पर भरोसा रखो, जरा धीरज से और डिसिप्लिन (नियन्त्रण) से काम लो। दुनिया देख

रही है कि हिन्दुस्तान को जो आजादी मिली है, उस में वह किस तरह से चलाता है। दुनिया के पास हमें अपना तमाशा नहीं बनाना है। आज सारी दुनिया के बड़े-बड़े लोग एम्बेसेडर (राजदूत) बन कर इधर आकर बैठे हैं। वे सब देखते हैं कि हम क्या कर रहे हैं।

आज तो दुनिया बहुत छोटी बन गई है। आज सारी दुनिया हमारी तरफ देख रही है। हमें इस तरह से काम करना चाहिए कि दुनिया में हमारी इज्ज़त बढ़े और दुनिया के लोग यह समझें कि हम लोग समझदार हैं। वे ऐसा समझें कि उन की मुहब्बत की हमें ज़रूरत है।

मैं फिर एक दफा आपका शुक्रिया करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि मैंने जो चन्द बातें आपसे कही हैं, उनको ठीक तरह समझ कर आप उन पर अमल करेंगे। ईश्वर आपका भला करे।

---

(२)

लखनऊ

१८ जनवरी, १९४८

बहनो और भाइयो !

मेहरबानी करके अब कोई आवाज़ न करें, सब भाई-बहन शान्त हो जाएँ। बहुत दिनों के बाद आप लोगों से मिलने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, इससे मुझे बहुत खुशी हुई है। आप लोगों से मिलने की ख्वाहिश तो बहुत दिनों से थी, लेकिन हम लोग ऐसी मुसीबतों में फंसे रहे कि किसी जगह पर आ-जा नहीं सकते थे। लेकिन इस बार चन्द दिनों के लिए मुझे आसाम और कलकत्ता जाना था, हमारे प्रधान मन्त्री पन्त जी का एक सन्देश मेरे पास आया कि कम-से-कम एक रोज़ के लिए सब से मिलने के लिए मैं लखनऊ रुकूं। मैंने कबूल कर लिया कि एक रोज के लिए आऊँगा। लेकिन मेरा जी आज भी दिल्ली में पड़ा है, क्योंकि आजकल वहां इतना काम रहता है कि हम वहां से हट नहीं सकते। तो भी मैं आया हूँ और आप लोग मेरी कुछ बात भी सुनना चाहते हैं, तो ठीक है कि मैं कुछ बातें आप से कहूँ।

आप का यह लखनऊ शहर हमारे मुल्क का एक बहुत पुराना शहर है, और यह हिन्दू और मुसलमान दोनों की मिश्रित कल्चर (संस्कृति) का एक केन्द्र स्थान है। इस शहर की पुरानी बातें हम सदा सुनते रहते हैं। लखनऊ की पुरानी निशानियों को देख कर हम मगरूर भी होते हैं। पिछली आजादी

की लड़ाई में इस शहर का जो हिस्सा है, जो इतिहास है, वह देख कर भी हम मगरूर होते हैं। साथ ही आज तक हम इस बात को याद करते हैं कि इसी शहर में से यह बात निकली थी कि हम हिन्दू और मुसलमान एक कौम नहीं हैं, एक नेशन (राष्ट्र) नहीं हैं, एक प्रजा नहीं हैं,––हमें अलग-अलग हिस्सा करना चाहिए। यहीं कहा गया था कि हमारी जबान अलग है, हमारी संस्कृति अलग है, हमारा सब प्रकार का काम अलग-अलग है, इसलिए हमें अलग होना चाहिए। हिन्दोस्तान के सारे मुसलमानों के ऊपर ज्यादातर लखनऊ के मुसलमानों का ही असर पड़ा और पड़ता रहा। दूसरी ओर हमारे जो नेशनलिस्ट (राष्ट्रीय) मुसलमान थे, वे भी इसी प्रान्त के थे। उन लोगों ने काफी विरोध किया और काफी मुसीबतें उठाईं। हिन्दुओं और नेशनलिस्ट मुसलमानों में बहुत मुहब्बत थी और आज भी है। वे चन्द लोग हैं और परेशान हैं। उनकी तकलीफ और उनकी परेशानी हम उनके चेहरों पर देखते हैं और तब हमको दर्द होता है।

लेकिन हमारे जो भाई मुस्लिम लीग के लीडर थे, उन लोगों ने यह बात सोची कि हमें तो अलग ही होना है और इसी में मुसलमानों का कल्याण है, मुसलमानों की रक्षा है। और वे कहते रहे कि हमें 'सैपरेट इलेक्शन' (पृथक निर्वाचन) से कोई फायदा नहीं, उससे हमारी कोई रक्षा नहीं होती। यदि हमको कोई वेटेज (अधिक सीटें) दिया, तो उससे भी हमारा कोई काम नहीं होता। इसी तरह से, हमको और छोटी-मोटी चीज़ें दी जाएँ, तो उनसे भी हमें कोई फायदा नहीं होता। हमको तो हमारा अलग हिस्सा चाहिए। हिन्दुस्तान के लीगी मुसलमान यही बात कह कर घूमने लगे और उनका काफी प्रचार हुआ। जो नौजवान मुसलमान कालेजों में पढ़ते थे, उन पर भी इन बातों का प्रभाव हुआ और उन लोगों ने मान लिया कि यही बात सही है। हमें कबूल करना चाहिए कि बहुत से मुसलमानों के दिल में यह ख्वाहिश पैदा हुई कि अगर हमारा राज्य अलग हो जाएगा, तो हम स्वर्ग में चले जायँगे। हम उनकी ख्वाहिश को रोक नहीं सके, दबा नहीं सके और हमारे बीच एक बहुत बड़ी दीवार उठ खड़ी हुई।

कांग्रेस का यह सिद्धान्त था कि हम इतनी सदियों से एक साथ रहे, चाहे किसी तरह भी रहे। आखिर बहुत से मुसलमान, अस्सी फी सदी बल्कि नब्बे फीसदी मुसलमान, असल में तो हमारे में से ही गए थे और उन्होंने धर्मान्तर कर लिया था। धर्मान्तर करने से कल्चर कैसे बदल गई? दो नेशन्स कैसे बन

गईं ? यदि गान्धी जी का लड़का मुसलमान हो गया तो वह दूसरी नेशन का कैसे हो गया ? और चन्द दिनों के बाद वह फिर हिन्दू बन गया, तो क्या उसने नेशन बदल ली ? नेशन बार-बार थोड़े ही बदली जाती है ? इस तरह से क्या जाति ही बदल जाती है ? तो हमने समझाने की बहुत कोशिश की। मगर किसी ने नहीं सुना और जब हम समझे कि मुल्क बरबाद हो रहा है। उसके बाद वे १६ अगस्त, १९४६ को कलकत्ता में एक डायरेक्ट ऐक्शन डे रखा गया और कहा गया कि हम तो सीधी चोट लगाएँगे और कोई काम नहीं करेंगे, जब तक हिन्दुस्तान के टुकड़े न हो जाएँ। उस दिन कलकत्ता में बहुत सी खून-खराबी हुई, बरबादी हुई। तब हमने सोचा कि इस तरह से सारे मुल्क का हाल हो जाए, उससे तो अच्छा है कि अलग कर दो। वह अपना घर सम्भालें और हम अपना संभाल लें। हमने सोच लिया कि अगर यही हाल रहा तो जो परदेसी-हुकूमत हमारे बीच में पड़ी है, वह हटनेवाली नहीं है। हमारा जिन्दगी का काम ही यही था कि जिस किसी तरह से परदेसियों की हुकूमत को इधर से हटा दें, पीछे देखेंगे कि क्या होता है। तो हमने कबूल कर लिया कि ठीक है भाई, आप अलग अपना हिस्सा ले लो।

उसका यह मतलब नहीं कि हम दिल से राजी थे। लेकिन हम समझ गए कि हिस्सा-बाँट चाहे कितनी भी बुरी हो, लेकिन जब उनको समझाना मुश्किल है, तो उनको लेने दो। सो हमने दे दिया। जब दे दिया, तो हम यह समझे थे कि अब मुल्क में पूरी शान्ति होगी और हम अपना काम करेंगे। हमारे दिल में भी यही ख्वाहिश थी, और आज भी है कि वह जो अपना घर अलग बनाकर बैठे हैं, वे तगड़े हो जाएँ, अच्छे हो जाएँ और अपना कार्य करें। वे अपने मुल्क को उठाएँ और जैसी उनके दिल में ख्वाहिश थी, वैसा ही स्वर्ग वे अपने पाकिस्तान को बना दें। इसी से हमको खुशी होगी। क्योंकि आखिर तो वह हमारा भाई है। गलत समझ से उसने जो काम किया है, उससे भी वह तगड़ा हो जाए, सुखी हो जाए, तो आखिर वह हमारा पड़ोसी है, हमारा भाई है। वह सुखी होगा, तो अच्छा है। लेकिन हमने यह कभी नहीं सोचा था और हमें कभी ऐसी उम्मीद भी नहीं थी कि अलग होने के बाद भी वह हमें चैन से नहीं बैठने देंगे। अब वे बार-बार कहते हैं कि आप लोग हमको चैन से बैठने नहीं देते हैं, और पाकिस्तान को तबाह करने के लिए, उसको बरबाद करने के लिए, हिन्दुस्तान में शरकत (कौन्स्पिरेसी) हो रही है। तो मैं उन लोगों को बार-

बार कहता हूँ कि पाकिस्तान का अगर कोई दुश्मन है, तो वह पाकिस्तान के भीतर है, बाहर कोई नहीं। आप अपने को संभाल लो, हमारे यहाँ पाकिस्तान का कोई बुरा नहीं चाहता। हम तो आप का भला ही चाहते हैं।

कभी-कभी कोई कहता है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान आखिर एक हो जाएँगे। मैं यह नहीं कहता हूँ। मैं कहता हूँ कि अब अलग ही रहो। आपको बहुत नमस्कार है। आप वहीं बैठे रहो। हमें आना नहीं है। क्योंकि हमने बहुत अनुभव कर लिया है। आप अपनी जगह बैठ कर देख लीजिए। आप अच्छे हो जाएँगे, तो हम खुश रहेंगे। लेकिन मेहरबानी करके हमको अपना काम करने दीजिए। वह तो नहीं होता है, और पाकिस्तान कभी सिक्खों पर कसूर का बोझ डालता है, कभी हमारे पर कसूर का बोझ डालता है, और कभी गवर्नमेंट पर। लेकिन अपनी गलती अभी महसूस नहीं करता है। जो आदमी अपनी गलती महसूस नहीं करता, उसका भला कभी नहीं हो सकता। पाकिस्तान गिरेगा, तो वह अपने पाप से ही गिरनेवाला है, हमारे गिराने से कोई नहीं गिरेगा।

तो अब आप देखें कि जब हमन फैसला किया कि अलग-अलग दो हिस्से कर दिए जाएँ, तो उसके बाद क्या हुआ ? उसके बाद जो कार्रवाई हुई, उसमें हमारा दोष नहीं है, ऐसा मैं नहीं कहता। हमारा भी पूरा दोष है। लेकिन जो दोष उनका है, वैसा हमारा दोष नहीं है। और आज भी हमारी ख्वाहिश है कि दंगा-फसाद न हो। क्योंकि हमारे यहाँ चार साढ़े-चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं और उनके लिए हिन्दुस्तान के सिवा कोई दूसरी जगह नहीं है। उनमें से बहुत-से मुसलमानों के साथ हमारी जिन्दगी भर की मोहब्बत है। उनके साथ हम दगाबाजी नहीं करना चाहते। क्योंकि जो कोई छोटी-मोटी चीज के लिए अपने मित्रों के साथ दगाबाजी करता है, वह कभी कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। उधर पाकिस्तान के मुसलमानों के अखबार आप देखें। 'डॉन' रोज रोज जो पढ़ते हैं वे जरा देखें; वहाँ के और अखबार देखें। अब वे कहते हैं कि मुसलमानों का सब से बड़ा दुश्मन मैं ही हूँ। मेरा ही नाम वे लेते हैं।

एक समय ऐसा भी था जब कि ये सब कहते थे, खुद कायदे-आजम भी कहते थे, बाकी सब लोग भी कहते थे कि गान्धी मुसलमानों का एनिमी नं० १ (पहले नम्बर का शत्रु) है। वह अब मुसलमानों का सब से बड़ा दोस्त हो गया है। मुसलमानों का अगर कोई परम मित्र और रक्षक है तो गान्धी जी

हैं। अब मेरा नम्बर वहाँ रख दिया। क्यों रक्खा? क्योंकि मैं साफ बात कहता हूँ। मैं छिपाता नहीं हूँ। उधर अगर कोई बुरी चीज़ करेगा तो उसका बुरा असर इधर भी पड़ेगा। मैं कहता हूँ कि भाई यदि आप लोग हमको चैन से काम करने देंगे, तो इधर मुसलमानों को तकलीफ नहीं होगी। यों भी इधर पूरी शान्ति रखने की कोशिश हम करेंगे, क्योंकि कोशिश करना हमारा फर्ज है, धर्म है। अगर हम अपने फर्ज को पूरा न करें तो हम ईश्वर के गुनहगार बनते हैं। सो कोशिश तो हम करेंगे। लेकिन अपनी कोशिश में हम पूरे कामयाब नहीं होंगे, जब तक आपका कर्म ठीक नहीं होगा। तो आपको अब किस ढंग से चलना चाहिए? क्योंकि आप तो कहते थे कि अगर आप को पाकिस्तान मिल जाए, तो आप को पूरा प्रोटेक्शन (सुरक्षा) मिल जाएगा। अब जिन लीग वाले मुसलमानों ने इधर से यह काम शुरू किया था, यही लखनऊ सारे हिन्दुस्तान के मुसलमानों के कल्चर का केन्द्र था, उन्हीं लीडरों से मैं पूछता हूँ कि अब क्या प्रोटेक्शन देते हैं? इधर हिन्दुस्तान में जो मुसलमान हैं, उनकी हालत देखें, आप उनका दिल देखें, उनका चेहरा देखें। हमको तो दर्द होता है। आपको नहीं होता है, उससे मुझे ताज्जुब होता है कि आपको क्या हुआ है। आप तो वहाँ जाकर बैठ गए। लेकिन इन लोगों का कुछ सोचा कि उनकी क्या हालत है? उन्हें आपने हम पर छोड़ दिया। ठीक है, छोड़ दिया। हम तो कोशिश करेंगे। लेकिन वहाँ बैठ कर भी आप हम को कुछ चैन लेने देंगे, कि वहाँ से भी तकलीफ करते ही रहेंगे?

यह तो ठीक है कि खूब मार-पीट हुई। परन्तु चाहिए तो यह कि जो कुछ हो गया है, उसे हम भूल जाएँ। उन्होंने भी बहुत बुरी तरह काम किया और हमने भी बहुत बुरा काम किया। दुनिया में हमारी बदनामी हुई, जगत के सामने हमें सिर झुकाना पड़ा। जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ था, तब दुनिया में हमारी इज्जत बहुत बढ़ गई थी। लेकिन आज हम बहुत गिर गए हैं। तो यह जो नुकसान हुआ, उसे तो हमें पी जाना चाहिए। ठीक है, जो कुछ हुआ, सो हुआ। लेकिन तुमको यह क्या जरूरत थी कि बाकी हिन्दुस्तान में घुसने की कोशिश करो। आप क्यों जूनागढ़ के दरवाजे पर आ बैठे? क्या जरूरत थी आपको? वहाँ तक कहाँ से आया पाकिस्तान? आप के कहने से ही तो हिन्दोस्तान के इस तरह दो टुकड़े बनाए गए। उसके बाद और भी टुकड़े करने हों, तो मैदान में खुली बातें करो। इस तरह से क्यों करते हो?

जूनागढ़ के बारे में नवाब साहब को सलाह दी गई कि आप पाकिस्तान में शरीक हो जाओ, तो आपको स्वर्ग मिल जाएगा। वह वहाँ मिल गया। अब बेचारा कराची जाकर कैदी बना बैठा है। अब उसके दिल की हालत पूछो। खुदा को याद करता होगा। उस से पूछो कि जूनागढ़ में, हिन्दुस्तान में, जेल में रहना अच्छा है, या पाकिस्तान के स्वर्ग में? हमने बहुत कहा कि यह पाकिस्तान का काम अच्छा नहीं है। हम को चैन से बैठने दो। आप अब अपना काम करो। आपके पाकिस्तान के एरिया (क्षेत्र) में जितनी रियासतें हैं, बहावलपुर है, कलात है, और हैं, उनमें चाहे जो कुछ करो। हम उसमें नहीं पड़ेंगे। पर उस समय हमारा कहना नहीं माँना। अच्छी बात है। हम समझे कि जूनागढ़ में गड़बड़ कर वे समझ जाएँगे। लेकिन फिर उन्होंने काश्मीर पर अड्डा लगाया। तब फिर हमने पूछा कि भाई आप काश्मीर में क्यों जा रहे हैं? तो कहने लगे कि हम तो वहां कुछ करते नहीं। काश्मीर में तो एक आजाद गवर्नमेंट बनी है, जिसे काश्मीर के मुसलमान चला रहे हैं लेकिन वह बात ज्यादा दिन नहीं चली। असली सब बात खुलने लगी। वहाँ फ्रंटियर (सरहद) के मुसलमान गए और उन्हें पाकिस्तान की तरफ से हथियार, कपड़ा, खाना-पीना और सब सामान दिया गया। उन को मोटर लारी और लड़ाई की सब चीजें भी दी गईं। उनको लड़ाई की तालीम देने के लिए पाकिस्तान के अफसर भी भेजे गए। तब हमने पूछा कि यह क्या कर रहे हो? खुली लड़ाई क्यों नहीं करते? तो कहने लगे, हम कुछ नहीं करते हैं।

इतना होते हुए भी हमने कोई झगड़ा नहीं किया। हमारी तरफ से, हिन्दुस्तान की सरकार की तरफ से, सारी दुनिया की बड़ी-बड़ी सल्तनतों की जमायत को, जिसे यूनाइटेड नेशन्स कहते हैं, लिखा गया कि भाई, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों देशों की सरकारें आपके यहाँ शरीक हैं, आप की संस्थाओं पर हैं, आप के संगठन में शामिल हैं, इस से आपके कानून से हम सीधी लड़ाई नहीं कर सकते। तो आप उसका फैसला कीजिए कि इस लड़ाई में पाकिस्तान का कितना हिस्सा है। जब हमने यूनाइटेड नेशन्स को इस तरह से लिखा, तब उनकी तरफ से जफरुला साहब कहते हैं कि वहां क्यों गए? बाहर जाने की क्या जरूरत है? अपना मैल और मैला कपड़ा बाहर धोने की क्या जरूरत है? वह धोना हो तो अपने घर में धोओ। अभी चार महीनों तक हम पंजाब में अपना मैला कपड़ा धोते रहे तो पूरा नहीं हुआ, अभी कहते हैं कि घर में अच्छी धोओ।

अच्छी बात है। अब अपनी गवर्नमेंट को मैं सलाह दूं कि अजी जफरुल्ला साहब कहते हैं कि आप वहां क्यों गए ? हिन्दुस्तान की सरकार को वहां जाने की क्या जरूरत थी ? वहाँ नहीं जाना चाहिए था। आप को अपनी अरजी वापस ले लेनी चाहिए। फिर आपस में लड़ लेना इस से अच्छा है। ठीक है। यदि वह चाहते हैं तो हम अपनी अरजी वापस ले लेंगे। मगर हमें बताइए कि दूसरा क्या रास्ता होगा ? फिर तो हमें स्यालकोट और लाहौर होकर जाना पड़ेगा। यदि वह पसन्द हो, तो फैसला करना अच्छा है। लेकिन इस तरह से कहना और बार-बार सरासर झूठ बोलना मेरी समझ में नहीं आता। यह किस तरह का पाकिस्तान चलेगा ? तो मैं कहता हूँ कि पाकिस्तान गिरेगा तो, इसी तरह से गिरेगा।

आपको गिराने की हमारी ख्वाहिश नहीं है। लेकिन बार-बार आपकी तरफ से जो बातें कही जाती हैं, वे मेरी समझ में नहीं आतीं। जब हम आपस में बैठ कर बात करते हैं, तो कहते हैं कि हां भाई, रेडर्स (आक्रमणकारी) लोग काश्मीर में गए हैं, वे फ्रंटियर से गए हैं। उनको हम समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन वे मानते नहीं हैं। आज तो हम कितना भी उन्हें कहें, लेकिन वे लोग नहीं मानेंगे। उधर बाहर दुनिया से कहते हैं कि हम कुछ भी नहीं जानते। हमारा इसमें कुछ भी हिस्सा नहीं है। हमने कहा कि तुम्हारे घर में से होकर वे उधर चले जाते हैं। तुमने वहां से उन्हें रास्ता करके क्यों दिया ? आप सब सामान उन्हें क्यों देते हो ? यह क्या बात है ? तो वह कहते हैं कि तुम हमको कुछ दो, तो हम उनको समझा दें। अब इस तरह से जो हालत बन गई है, उसके लिए मैं हिन्दुस्तान के मुसलमानों से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। आप लखनऊ में जमा हुए। आपने बहुत बड़ा जलसा किया। ५६ हजार मुसलमान यहाँ जमा हुए। आप सब लोगों की अगर यह राय है कि पाकिस्तान काश्मीर में जो कुछ कर रहा है, वह गलत है, तो क्यों आपकी जबान खुलती नहीं है ? आप क्यों बोलते नहीं हो कि यह गलत रास्ता है ? जब तक मुसलमान हिन्दुस्तान में इस तरह से नहीं बोलेंगे, तब तक हमारा काम बिलकुल मुश्किल हो जाता रहेगा। जितने वहां बुरे काम होते हैं, उनके बारे में यदि हिन्दुस्तान के मुसलमान नहीं बोलेंगे, खुले दिल से उसे बुरा नहीं कहेंगे, तो फिर उन्हें यह शिकायत नहीं करनी चाहिए कि उनकी वफादारी की तरफ किसी को अन्देशा है। तब हम से पूछने की कोई जरूरत नहीं है।

तो मैं आपसे बड़ी अदव से कहना चाहता हूँ कि मैं मुसलमानों का दोस्त हूँ और दोस्त का काम है कि सच्ची बात कह दे और धोखाबाजी न करे। तो मैं कभी मुसलमानों के साथ गलत बात नहीं करूँगा। मैं साफ-साफ कहना चाहता हूँ कि अब हिन्दुस्तान के मुसलमानों की वफादारी का वख्त आया है। उनमें से प्रत्येक के दिल में हिन्दोस्तान के लिए पूरी-पूरी मुहब्बत हो और वह समझे उसे हिन्दुस्तान में ही रहना है। उन्हें समझ लेना चाहिए कि पाकिस्तान से उनका कल्याण नहीं होनेवाला है। पाकिस्तान उनकी रक्षा नहीं कर सकता। तब उनका कर्तव्य हो जाता है कि जिस नाव में वे बैठे हैं, उसी नाव का हित सोचें, क्योंकि उन्हें भी उसी नाव से चलना पड़ेगा। नाव चलाने में उन्हें साथ भी देना पड़ेगा। तो जिस तरह से पाकिस्तान के लोग कर रहे हैं, उसमें उन्हें ठीक-ठीक, सीधी बात कहनी पड़ेगी कि यह रास्ता गलत है। उस रास्ते से जाने में कोई फायदा नहीं है। अब यह कहा जाता है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में यदि लड़ाई होगी, तब उसमें भी साथ देंगे। अरे भाई! वहाँ तक तो न जाओ, तो खुली बात तो करो। पीछे हम देखेंगे कि क्या बात होती है। लड़ाई होगी, तब देखा जाएगा कि कौन किसका भरोसा करता है।

सच्ची बात तो यह है कि दो घोड़ों पर सवारी नहीं हो सकती, एक घोड़े पर ही सवारी होगी। अपना घोड़ा पसन्द कर लो। लखनऊ ही के कई लोगों ने अपना घोड़ा पसन्द कर लिया और समझ लिया, दो घोड़ों की सवारी नहीं चलेगी। कांस्टीच्यूएँट असेम्वली में जब हमारा कांस्टीच्यूशन बन रहा था, तब वहाँ लखनऊ मुसलिम लीग के एक लीडर थे, उनसे मैंने साफ-साफ कह था कि आप इधर सेपरेट इलेक्ट्रेट (पृथक् निर्वाचन) और रिज़र्वेशन (सुरक्षित स्थानों) की बातें करते हैं। यही बातें करके आपने हिन्दुस्तान के टुकड़े कराए। अब जो बाकी हिन्दुस्तान बचा है, उसका भी आपको टुकड़ा कराना है क्या? यही इरादा हो, तो अब मेहरबानी करके आप पाकिस्तान में चले जाइए। आप के इधर रहने से कोई फायदा नहीं है। तब वह पाकिस्तान चले गए। यह ठीक हुआ। अच्छी बात है। अब कौन कहता है कि तुम पीछे लौट आओ। भाई, हम भी यह नहीं चाहते हैं, कि पाकिस्तान और हिन्दोस्तान अभी जल्दी-जल्दी मिल जाएँ। यह तो तब कह सकते हैं, जब कि पाकिस्तान का स्वाद खाते-खाते दांत खट्टा होकर गिर जाएँ, तब आगे की बातें करेंगे। अभी तो आप वहाँ ही बैठो। लेकिन हमको हमारा काम करने दो।

अगर हम इस तरह से गाफिल रहेंगे, तो हम भी मार खाएँगे । हम कहते हैं कि हमारे यहाँ जो चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं, उसके हम ट्रस्टी हैं। तो मैं हिन्दू भाइयों से, जो हमारे आर० एस० एस० वाले नौजवान भाई हैं, उनसे भी कहना चाहता हूँ कि आप लोग कुछ दिमाग से काम लीजिए, अक्ल से काम लीजिए और समझ से काम लीजिए, जिससे हमारा भी काम हो जाए और दुनिया में हमारी बदनामी भी न हो, इस तरह से हमें काम करना चाहिए । यदि आपको लड़ाई की ख्वाहिश हो, और आपको लड़ना ही हो तो उसके लिए लड़ाई का मैदान पसन्द करना चाहिए, लड़ाई का मौका पसन्द करना चाहिए और लड़ाई का सामान पूरा करना चाहिए । बेमौके से जो काम करता है, जो बेवकूफी से काम करता है, वह अपना सारा काम गँवा देता है । तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो चार करोड़ मुसलमान इधर पड़े हैं, उनके साथ छेड़खानी कभी न करो । जितनी छेड़खानी आप करेंगे, उतना ही हमारे ऊपर बोझ पड़ता जाएगा, क्योंकि एक तो उसके लिए हमें ज्यादा पुलीस रखनी पड़ती है । हमारे सँभालने की चीज़ तो वहाँ पड़ी है, इधर क्यों सँभालते हो ? इनको इधर आराम से रहने दो । जिनके दिल में पूरी वफादारी नहीं होगी, वे आप ही चले जाएँगे, वे इधर रह ही नहीं सकते । इधर इतनी गरमी होगी कि वह हट जाएगा, इधर रहेगा ही नहीं । लेकिन अगर आप उनको इस तरह से बार-बार और बुरी तरह से परेशान करते रहोगे, तो जो हमारे साथ हैं, वे भी चले जाएँगे । वह हमारे लिए कभी अच्छा नहीं होगा ।

यदि एक भी ऐसे मुसलमान को, जो हिन्दोस्तान के प्रति वफादार है और जिसने हमारी आजादी की लड़ाई में हमारा साथ दिया और हमारे साथ मुहब्बत से रहा है, यहाँ से जाना पड़ेगा, तो उससे बड़ी शर्म की और बात कोई नहीं होगी । यह बहुत ही बुरी बात है । यह चीज़ हमें समझनी चाहिए । लेकिन जितने मुसलमान इधर दो घोड़ों पर सवारी करनेवाले हैं, उनमें से एक-एक को यहां से जाना पड़ेगा, उनमें से कोई इधर रह नहीं सकेगा । तो हमें इस तरह से काम करना है कि हिन्दोस्तान में रहनेवाले मुसलमानों से साफ-साफ कह देना है कि आप कहते हैं कि हम वफादार हैं, तो जबान से कहने भर से काम नहीं चलेगा । लीगवाले बार-बार कहते हैं, पाकिस्तान गवर्नमेंट बार-बार कहती है कि इधर जो माइनोरिटी (अल्पमत) है, हम उसकी रक्षा करने

के लिए पूरा इन्तजाम करेंगे। लेकिन जो लोग वहाँ रहते हैं, उनसे आप पूछिए कि वे कैसा इन्तजाम करते हैं।

आज सिन्ध में रहनेवाले हिन्दू हमारे पास चिट्ठी लिखते हैं कि वे बहुत दुखी हैं। दो महीना हो गया, मैंने बम्बई से कुछ जहाज भेजने का बन्दोबस्त भी किया था और कहा था कि इधर चले आओ। उस समय पर उन लोगों में आपस में कुछ फूट हुई, कुछ हमारे अपने लोग भी कहने लगे कि नहीं, सिन्ध में कोई दिक्कत नहीं है, वहाँ ही रहो। सिन्धी मुसलमान भी यही चाहते हैं। ठीक बात है। लेकिन सिन्धी मुसलमान की खुद वहाँ चलती ही कहाँ है। वहाँ तो लखनऊ के मुसलमान को या तो पंजाब के मुसलमान की चलेगी, वहाँ सिन्धी मुसलमान की क्या बात चलेगी ? तो पाकिस्तान तो इस प्रकार बना है कि उसमें कानून से काम नहीं चलेगा, जिसमें किसी एक सत्ता से काम नहीं चलेगा, वहाँ तो हर आदमी नवाब हो जाएगा और अपनी-अपनी मर्जी से, जैसा दिल में आएगा, वैसा काम चलाएगा। कोई उसे कब्जे में नहीं रख सकता है। आज ऐसी हालत वहाँ शुरू हो गई है। तो वहाँ से अब हिन्दू लोग लिखते हैं कि उनके लिए वहाँ रहना एक मुसीबत हो गई है। वे वहाँ से निकलना चाहते हैं, वहाँ रह नहीं सकते। तो आठ-दस लाख हिन्दुओं को हमें वहाँ से निकालना है। इधर कई लोग कहते हैं कि इतने ही मुसलमान इधर से निकालो। यह ठीक बात नहीं है। इस रास्ते से हमारा काम नहीं होगा। यदि हमें पाकिस्तान के साथ हिसाब करना है, तो वह इधर के मुसलमानों के साथ नहीं किया जा सकता। यदि हमारे आदमी वहाँ न रह सकें और वहाँ उन्होंने एक कम्युनल (साम्प्रदायिक) राज बना दिया है, तो उन्हें बनाने दो। हम वैसा क्यों करें ? उनको लड़ने की ख्वाहिश हो, तो हम तीस करोड़ पड़े हैं। हमारा मुल्क बहुत बड़ा है। हमारी धरती में इतना धन पड़ा है, हमारे पास इतने साधन हैं। लेकिन अगर हम पागल हो जाएँ तो कोई काम की बात नहीं कर सकेंगे। लेकिन अगर हम ठीक रास्ते पर चलें और अपने दिमाग पर काबू रक्खें तो हमारे पास इतना सामान है कि पाकिस्तान की लड़ने की ख्वाहिश भी हो तो भी वह हमारा कुछ न बिगाड़ सकेगा। वह तो अभी बच्चा है। कल ही तो उसका जन्म हुआ है। वह क्या करेगा ?

मैं देखता हूँ कि कई नौजवानों में लश्करी (लड़ाई) की तालीम लेने की ख्वाहिश है। यह बहुत अच्छी बात है। लश्करी तालीम लेना, वह आज की हालत

में, मैं जरूरत की चीज़ भी समझता हूँ। यदि हिन्दुस्तान गान्धी जी के रास्ते पर चला होता, (जैसा कि हमें उम्मीद थी और हमारी ख्वाहिश भी थी कि हम उस रास्ते पर चलें) तो दूसरी बात थी। लेकिन हम उस रास्ते पर चल नहीं सके। अब अगर उनके रास्ते पर भी न चलें और दुनिया के रास्ते पर भी न चलें, तो हम खड्ड में गिर जाएँगे। इसलिए हमें एक रास्ता पकड़ लेना है। तो आज हिन्दुस्तान की और दुनिया की हालत ऐसी है कि हमें पुलीस और मिलिटरी के ऊपर भरोसा करना पड़ता है। इस हालत में हमारी पुलीस और हमारी मिलिटरी पक्की होनी चाहिए और हमारे नौजवानों को उसकी तालीम मिलनी चाहिए। उसके लिए हम सोच रहे हैं कि हमें क्या करना है। उसमें आपको भी पूरा मौका मिलेगा। लेकिन यह चाकू या लाठी की लड़ाई छोड़ दो और किसी की पीठ में खंजर मारना भी छोड़ दो। उससे कोई फायदा नहीं है। उससे न हमारा चारित्र्य बढ़ता है, और न हमारी इज्जत बढ़ती है। बल्कि उस से हम गिर जाते हैं। लेकिन अगर हमें लड़ना ही पड़े, तो उसके लिए हमें लड़ाई का मौका देखना होगा और लड़ाई का तरीका ठीक तरह से पसन्द करके लड़ाई की सामग्री बनानी होगी।

आज के हालात में मैंने यह सोचा कि जब पाकिस्तान का ढंग इस प्रकार का चल रहा है, तो हमें क्या करना है। मैं अपने नौजवानों को बड़े अदब से कहना चाहता हूँ कि अब जितना हिन्दुस्तान हमारे पास है, उसे सौ फी सदी एक बनाओ। पहले भी हमने परदेसियों के पास हिन्दुस्तान को क्यों गुमाया था? हमारे मुल्क पर और लोगों का राज्य क्यों हुआ था? हमारी बेवकूफी से हुआ था। ऐसी बेवकूफी अब फिर न हो, वह हमें देखना है। तो हमारे नौजवान आज जो काम कर रहे हैं, उसमें मैं कई बेवकूफियाँ देखता हूँ। जो हिन्दुस्तान बाकी बच रहा है, इसको हमें अगर एक गठरी में बाँधना हो, पूरी तरह संगठित करना हो, तो हमें उसमें अलग-अलग गिरह-गाँठें नहीं बनानी चाहिए। हमें सबको एक करना है। अब यहाँ अलग-अलग सम्प्रदाय का काम नहीं है। देश में जितनी रियासतें हैं, उनको भी हमें एक कर देना चाहिए। तो मेरी कोशिश तो सदा यही रही। पाकिस्तान बननेवाला था, सो बन गया; उसे अगर हमने नहीं बनाया तो कम-से-कम बनने तो दिया। तो उसमें हमें झगड़ा नहीं करना चाहिए। जो हिन्दोस्तान अब है, वह हमें ठीक करना चाहिए।

पाकिस्तान के अलावा एक अन्य टुकड़ा भी होनेवाला था, जो उस से

भी बुरा था, और वह था राजस्थान। तो राजस्थान में बहुत लोग गड़बड़ चला रहे थे, उनकी चलती तो देश में बहुत-से टुकड़े पड़ जानेवाले थे। लेकिन मुझे आप लोगों के सामने यह कहने में बहुत खुशी होती है कि हमारे देश में जो राजा थे, उन लोगों में बहुत-से समझदार लोग थे। उनमें से बहुतों में अपने देश के लिए बड़ा प्रेम है। आप यह न समझें कि राजा लोग बड़े स्वार्थी और घमंडी लोग हैं। आप यह भी न समझें कि उनके पास धन का और सत्ता का मद है और कोई स्वदेशप्रेम नहीं है। मैंने बहुत से राजाओं के साथ बातें कीं और हमारे और उनके बीच में जो पर्दा था, वह टूट गया।

आपने देखा कि एक हफ्ता पहले मैं उड़ीसा में गया था। वहाँ मध्य प्रान्त की ४० रियासतें थीं। उन सब रियासतों के ४० राजाओं ने दस्तखत दे दिया है कि आप हमारा राज ले लीजिए और आप ही सारा प्रबन्ध कीजिए। पहले किसी को ख्याल भी नहीं था कि ऐसा हो सकता है। लेकिन हो गया। अब कई राजा परेशानी में पड़े हैं कि क्या हमारा भी यही हाल होगा। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी नीयत ऐसी नहीं है कि हम किसी को खत्म कर दें। लेकिन जहाँ राजा और प्रजा एक विचार के हो गए और मान गए कि हमारे बीच में यह अच्छी चीज़ है, हम सब की सलामती इसी में है, तो हमें मानना पड़ता है। तो ४० रियासतों ने मेरी बात मान ली। राजा और रैयत दोनों ने मिलकर यह सब कुछ किया। जिन राजाओं के दिल में शक है, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आपको हमारे ऊपर अन्देशा करने की जरूरत नहीं है। यदि अब भी इसमें से कोई राजा हटना चाहता है, तो मैं उसे छोड़ने के लिए तैयार हूँ। लेकिन तब उनपर जो खतरा आ सकता है, उसकी जिम्मेदारी उनको खुद लेनी होगी। उनको समझना चाहिए कि आज तो उन्हें अपनी रैयत को अपने साथ रखना होगा। जो राजा रैयत के साथ नहीं रहेगा, उसकी हस्ती जोखिम में रहेगी। रैयत को अपने साथ रखने की कोशिश करनी चाहिए। राजा लोग इसे समझते हैं। किसी के दिल में अगर कोई शंका है, तो उसे निकाल देना चाहिए।

तो अब हमारा जो इतना बड़ा संगठन बना है, उसका हमें क्या करना चाहिए? हमने १५ अगस्त को सत्ता अपने हाथ में ली। अभी ज्यादा दिन नहीं हुए हैं, सिर्फ ४ महीने हुए हैं। ४ महीने में हमने क्या किया? जो कुछ हमने किया, उसकी फेहरिस्त बताऊँ, तो आप ताज्जुब में पड़ जाएँगे, कि

इस टूटी हुई सरकार ने क्या कुछ किया। बहुत-से लोग इसे नहीं समझते हैं और कहते हैं कि अभी तक सभी कुछ पुराने ढंग से चलता है। अभी तक वही पुराना राज है, कोई फर्क नहीं पड़ा। लेकिन वे देखते नहीं हैं कि आजादी के साथ मुल्क का दो टुकड़ा हुआ। यह छोटी बात नहीं है, बहुत बड़ी बात है। दो बड़े प्रान्त थे बंगाल और पंजाब, उनका भी टुकड़ा किया गया। यह भी बड़ी बात है। फिर सरहद को ठीक करना भी खतरे की बात थी। भली-बुरी वह भी हमने कर ली।

हमारी हुकूमत चलाने के लिए लोहे का एक चौखटा था, जिसको स्टील-फ्रेम कहते हैं। उसमें १२०० से लेकर १३५० तक आदमी थे। वे ही सदियों से हमारे हिन्दुस्तान का तन्त्र चलाते थे। उनमें अधिक परदेसी लोग थे। उसका भी हिस्सा किया। लेकिन यह हिस्सा दो तरह से हुआ। उसमें जितने अंग्रेज थे, वे चले गएँ। ५० फी सदी के करीब उनमें अंग्रेज थे, उनमें चन्द ही रह गए, बाकी सब चले गए। बाकी जो रहे, उनमें से ५० फी सदी पाकिस्तान में चले गए। बाकी में से भी कई लोग हमारे धनिकों, इन्डस्ट्रियलिस्टों (व्यवसायपतियों); के पास चले गए। नतीजा यह हुआ कि हमारे पास चौथाई हिस्से की सर्विस बच रही। उसी से हम काम चलाते हैं। बहुत से लोग समझते थे, खास तौर से अंग्रेज आफिसर सोचते थे कि इनका काम नहीं चलेगा। जो सर्विस चलती थी, वह टूट गई, तो इनका काम कैसें चलेगा ? लेकिन हमारा काम चलता है।

उसके बाद हमारी जो मिल्कियत थी, उसका भी हिस्सा किया। एक कुटुम्ब की मिल्कियत का हिस्सा करने में कितना समय लग जाता है ? यह काम चन्द रोज में नहीं होता। लेकिन हमने सारे मुल्क के हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप में, दो हिस्से किए। उसके लिए हम किसी अदालत में नहीं गए। आपस में बैठकर यह सब कर लिया। पाकिस्तान चाहे कुछ भी कहे, लेकिन मैं कहता हूँ कि अगर हमें पाकिस्तान को खत्म करना होता, तो हम यह सब कभी न करते। हमने इस सब में उदारता दिखाई। हमने इस सब में वैसा ही बरताव किया, जैसा छोटे भाई के साथ करना चाहिए। कोई भी स्वतंत्र आदमी हमारे पक्ष में फैसला देगा। इस तरह से हमने सारी मिल्कियत का फैसला कर लिया। जो कर्ज देना था और जो रुपया दूसरे मुल्कों से लेना था, उस सब का भी फैसला किया।

इस सब के साथ-ही-साथ ४० लाख लोगों को इधर से वहाँ भेज दिया, और ५० लाख लोगों को उधर से इस तरफ ले आए। ये सब किस तरह से आए और गए ? पैदल चलनेवालों की ६०-६० मील लम्बी कतारें थी, दस-दस लाख आदमी एक काफिले में थे। दोनों तरफ से कतारें चलती थीं और वे दो तीन महीनों तक चलती रहीं। ऊपर से पानी पड़ता था और नीचे भी पानी ही पानी था। रोग फैल गया, कॉलरा फैल गया, खाने-पीने की बड़ी मुसीबत थी। इस तरह से इन मुसीबतों में लोगों का अदला-बदला हुआ। राह में अमृतसर जैसा सिक्खों का बड़ा शहर पड़ता था। सिक्खों ने हठ पकड़ ली कि हम इधर से मुसलमानों को नहीं जाने देंगे। तब मैंने अमृतसर जाकर, उन्हें समझाया कि ऐसी बेवकूफी न करो। उसमें राष्ट्रीय स्वयं-सेवक-संघवाले भी थे, तो मैंने उनसे भी कहा कि तुम यह क्यों नहीं देखते हो कि हमारे दस लाख आदमी भी उधर पड़े हैं। लड़ना है, तो लड़ने का ढंग भी सीखना चाहिए। तब उन लोगों ने मेरी बात मान ली और सब को अमृतसर के बीच में से जाने दिया। हमारे लोग भी इधर चले आए।

इस सब हेरा-फेरी में हमने कान्स्टीटयूएँट असेम्बली का जलसा भी किया। अपना कान्स्टीटयूशन (संविधान) बनाने की कोशिश न सिर्फ हमने जारी रक्खी, बल्कि करीब-करीब उसे पूरा कर लिया। इतने लोग मारे गए, लाखों की मिल्कियत नहीं रही, लाखों के पास खाना-पीना नहीं रहा, हजारों रोते-कलपते आदमी हमारे पास फरियाद करने आए। उनको भी हमने, जहाँ तक बन पड़ा, आश्वासन दिया और साथ ही इतना काम भी किया। इसके साथ देशी रियासतों का भी काम कर लिया। तो चार महीने में हमने इतनी कार्रवाई की। इतना काम कोई भी सरकार करती, इतना बोझ किसी भी सरकार पर आता, तो चाहे वह कितनी भी मजबूत सरकार क्यों न होती, उसके टूट जाने की संभावना थी। लेकिन ईश्वर की कृपा से हमारी गवर्नमेंट जहाँ तक बन पड़ा, अपना काम निबाहती रही। और इस सबमें हमारी इज्जत काफी बढ़ी है। हमने जूनागढ़ में जो कुछ किया, काश्मीर में जो कुछ किया, उससे लोगों को कुछ विश्वास आया कि यह लोग भी कुछ ताकतवर हैं।

तो इस हालत में हमें अब आगे क्या करना है ? चार महीना तो हमने डटकर काम किया; अब हमें क्या करना है ? अब मैं आपसे कहना चाहता

हूँ कि हमें हिन्दुस्तान को उठाना है। हिन्दुस्तान दो सौ साल से गिरा पड़ा रहा। उसके पहले भी वह गिरा था। अपने इस हिन्दुस्तान को हमें उठाना है। तो इस काम में हमें समझ से काम लेना पड़ेगा। हमें सोचना चाहिए कि हमें क्या चीज़ें चाहिएँ। एक तो हमारे पास मजबूत फौज चाहिए, हमें कमजोर आर्मी नहीं चाहिए। दूसरा हमें अपनी सेन्ट्रल गवर्नमेंट (केन्द्रीय सरकार) को मजबूत बनाना चाहिए। आर्मी की तीन शाखाएँ हैं, हवाई फौज़, समुद्र की फौज, और जमीन की फौज। वह सब मजबूत होनी चाहिए। क्योंकि यदि हमारा और पाकिस्तान का जिस तरह से काम चलता है, इसी तरह से चलता रहा, तो कभी-न-कभी खतरा है। यह बात छिपाना बेवकूफों का काम है। कम-से-कम मैं नहीं छिपाता। हम चाहते तो हैं मुहब्बत। लेकिन हम अपनी आँख में किसी को धूल फेंकने नहीं देंगे। तो हमारे आर० एस० एस० वाले जो नौजवान भाई हैं, जो गाँवों में घूमते रहते हैं और बहुत-सी बातें करते हैं, वे लोग अगर गलत रास्ते पर चलते हों, तो उनको ठीक रास्ते पर लाना हमारा काम है। हमें उनको समझाना चाहिए कि उनका तरीका गलत है। यह काम आर्डिनेन्स से नहीं हो सकता, उससे तो वे उल्टे तरीके पर चलेंगे। इसलिए मैं उसके साथ कुछ-न-कुछ खामोशी से काम लेता हूँ। हाँ, अगर वे अपनी मर्यादा छोड़ देंगे तो फिर हमें लाचारी से सख्ती करनी पड़ेगी। लेकिन हमारे जिन नौजवानों पर हिन्दुस्तान का बोझ पड़ना है, उन्हें क्या यह शोभा देगा कि वे हमें इतना मजबूर बना दें? तो उन लोगों से मैं अदब से कहना चाहता हूं कि वे इस तरह से काम न करें।

आप अब देख लीजिए कि हमने सेन्ट्रल गवर्नमेंट बनाई, तो वह भी ऐसी गवर्नमेंट नहीं बनाई, जो सिर्फ कांग्रेस की गवर्नमेंट हो। ठीक है, कांग्रेस के पास सत्ता तो है, लेकिन हम सत्ता का उपयोग इस तरह से नहीं करते कि सिर्फ अपनी ही चलाएँ। हमारी गवर्नमेंट में आप देखिए कि जो हमारा फाइनान्स मिनिस्टर (अर्थ-सचिव) है, वह एक कैपिटलिस्ट है। वह कभी कांग्रेस में नहीं था, कभी-कभी वह कांग्रेस के खिलाफ भी पड़ा। इसी तरह, देखिए डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी हैं, वह हिन्दू महासभा के प्रतिनिधि हैं। हम उनको काफी छूट देते हैं। वह कुछ भी बोलें, उन्हें बोलने देते हैं। हमारे कई लोग कहते हैं कि डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी कांग्रेस गवर्नमेंट में बैठकर ऐसी बातें क्यों करते हैं, तो हम कहते हैं कि उन्हें बोलने दो। उससे क्या होता

है ? खाली बोलने से कोई बात थोड़े ही होती है ? यदि हमारा काम ठीक और साफ होगा तो लोग हमारे पीछे चले आनेवाले हैं। मैं तो हिन्दू महासभावालों से भी कहता हूँ कि बाहर रहकर क्या करोगे ? आओ, कांग्रेस में चले आओ। जो कुछ करना हो, हमारे साथ बैठकर बात करो। यह क्यों मानते हो कि अलग रहने से ठीक काम होगा ? तो हिन्दू महासभा को मैं बार-बार सलाह देता हूँ कि अलग रहने से आप तो अस्पृश्य हो गए, हरिजन जैसे आप हो गए ! एक अलग टुकड़ा बनाकर आपको अलग नहीं बैठना चाहिए, बल्कि भीतर आ जाना चाहिए। अलग बैठने से आपकी ताकत नहीं बढ़ेगी। आप ऐसा क्यों गुमान रखते हैं कि आप ही करोड़ों हिन्दुओं को ठीक रखेंगे। इस तरह से तो हिन्दू-धर्म छोटा हो जाएगा, बहुत संकुचित हो जाएगा। हिन्दू धर्म में तो काफी उदारता पड़ी है, काफी टॉलरेन्स (सहिष्णुता) पड़ी है। तो आपको इस तरह से नहीं करना चाहिए। तो देखो, कांग्रेस ने उनको भी सरकार में रखा। हमारे डा० जान मथाई क्रिश्चियन हैं। वह टाटा के यहाँ थे। लेकिन उनमें ताकत थी, वह काबिल थे, तो हमने उनको भी ले लिया। एक पारसी गृहस्थ हैं, वह भी कभी कांग्रेस में नहीं थे, वह भी आए। सरदार बलदेव सिंह हैं, वह सिक्खों के प्रतिनिधि हैं, वह अकाली दल के थे, और इन्डस्ट्रियलिस्ट भी हैं। तो इतने लोगों को तो हमने अपनी कैबिनेट के भीतर लिया। तो हम इस तरहसे काम नहीं करते।—आप लोग ऐसा न समझें कि कांग्रेस कोई एक जमात बनाकर या कोई अपना बाड़ा बनाकर काम करना चाहती है। कांग्रेस का इस तरह का कोई मकसद नहीं है। लेकिन कांग्रेस का धर्म यह हो जाता है कि हिन्दुस्तानभर में जितने लोग रहते हैं, वे सब यह महसूस करें कि वे अपने राज में पड़े हैं, अपनी हुकूमत में पड़े हैं। उन सब को पूरी सिक्योरिटी देनी चाहिए।-उनकी सलामती, उनके रक्षण की जिम्मेदारी अगर कांग्रेस न ले सके तो वह राज नहीं चला सकेगी। तो, जितने नौजवान भाई इस रास्ते पर चलते हैं, उनसे मेरी बड़ी अदब के साथ अपील है कि आप हम पर भरोसा करें। हम जिस रास्ते पर आपको ले जाना चाहते हैं, उस रास्ते पर आप चलें तो राज आपके अपने हाथों में आनेवाला है। हमको राज से क्या करना है ? इस हुकूमत को हम क्या करेंगे ? आपको यह भार उठाना है, तो आप इसके लिए तैयार हो जाइए। आपके और कांग्रेस के बीच झगड़ा क्यों है ? आप कांग्रेस में चले जाइए।

दूसरा एक काम हमें यह करना है कि कांग्रेस में काम करनेवाले जो लोग हैं, उनमें से कुछ हुकूमत में आ गए हैं, सत्ता में आ गए हैं, और उनके दिल में यह ख्याल आ गया है कि अब हम तो हुकूमत और सत्ता से ही सब काम कर सकते हैं, वह नहीं हो सकता। यदि कांग्रेस में काम करनेवाले लोग ठीक तरह से काम करें, तो आर० एस० एस० वाले आज-कल जिस तरह काम कर रहे हैं, उस तरह से नहीं करेंगे। कांग्रेसवालों का काम है कि उनके साथ मिलें, उन्हें मुहब्बत से समझाएँ और उन्हें गलत रास्ते से ठीक रास्ते पर लाएँ। डंडे से यह काम नहीं होगा, क्योंकि जब हम हुकूमत से काम करना शुरू करें, तो उस से और खराबियाँ पैदा होती हैं। डंडा तो चोर डाकू के लिए है, जो फिसाद करनेवाले, गुनाह करनेवाले हैं, उनके लिए है। अगर आप कहें कि आर० एस० एस० वाले भी गुनाह करते हैं, तो मैं कबूल करूँगा कि वे गुनाह करते हैं। लेकिन इस गुनाह के पीछे उनका स्वार्थ नहीं है। तो उनके दिल में जो भाव है, वह ठीक भाव है। अगर हम उसको ठीक रास्ते पर ले जा सकते हैं, तो क्यों न ले जाएँ? तो वह काम हमें करना है।

दूसरी बात यह है कि यदि हमें आर्मी ठीक रखनी हो, फौज को अच्छा और मजबूत बनाना हो, तो आज के ज़माने में उसके लिए जो सामान हमें चाहिए, वह हमें रखना होगा। आज हमें बड़ी फौज रखनी हो, तो उसके लिए बड़ी-बड़ी इन्डस्ट्री चाहिए और ऐसा काम करना चाहिए कि हिन्दुस्तान में उद्योग दुबारा बन चले। इन्डस्ट्री के बिना फौज़ नहीं चलेगी। तो इस इन्डस्ट्री के लिए हमें क्या काम करना चाहिए? इन्डस्ट्री में भी हमारी दिक्कतें हैं और हम फँसे हैं। चन्द लोग, जो मज़दूरों में काम करते हैं, यह समझते हैं कि अगर उनकी लीडरशिप रखनी हो तो उन्हें मजदूरों से बार-बार हड़ताल करानी है और ज्यादा-से-ज्यादा डिमांड (माँग) करानी है। माँग पूरी न हो तो हड़ताल कराओ, किसी-न-किसी बहाने से हड़ताल कराओ। हमारी इन्डस्ट्री को यह एक रोग लगा है। यदि आपको मज़दूरों की सच्ची लीडरशिप चाहिए, तो जो चीज़ मज़दूरों को नापसन्द हो, वह चीज़ उनसे कराने की ताकत अपने में लाओ, तब तो आप लीडर हुए। खाली फोकट लीडरशिप में कोई दम नहीं है। मजदूरों के इन्टॅरेस्ट में सच्ची बात क्या है? इनके हित में सच्ची चीज क्या है? सब से पहले यही उन्हें सिखाना चाहिए।

लेकिन मैं तो उस बहस में भी नहीं पड़ता हूँ। मैं तो इतना ही कहता हूँ

आज हमारी हालत ऐसी है कि हमें हिन्दुस्तान की रक्षा करनी है, हिन्दुस्तान को उठाना है, उसे मजबूत बनाना है, और इसके लिए आप हमें एक मौका दीजिए। एक ट्रूस कर लो कि अभी चार पांच साल तक हमें काम करने दोगे। नहीं, तो दूसरा काम करो। यदि आपको यही लगता है कि आप यह काम नहीं कर सकते हैं, तो मेहरबानी करके आप बोझ उठा लीजिए। चार-पाँच साल हम आपके पीछे नहीं लगेंगे, हम आपका साथ देंगे, मदद करेंगे। लेकिन आप यह क्या कर रहे हो? जब परदेसी हुकूमत थी, तब तो हम समझ सकते थे। लेकिन अब यह हमारी खुद की हुकूमत है, आपकी अपनी सरकार है। यदि कुछ समझाना हो, तो हमको समझाओ, लेकिन बार-बार इस तरह झगड़ा करने से क्या फायदा? आज यह ट्रेड यूनियन कांग्रेस, मजदूरों की संस्था, कम्यूनिस्टों के हाथ में पड़ी है। हमने देखा कि जब तक यह संस्था इन लोगों के हाथ में है, तब तक कोई काम नहीं होगा। क्योंकि यह तो बार-बार स्ट्राइक (हड़ताल) के सिवाय दूसरी बात ही नहीं करते हैं। और हड़ताल भी कैसे? उसमें वाइलेंस (हिंसा) करते हैं। मैनेजरों को मारना, आफीसरों को पीटना और लोगों को मारना। अगर मजदूर हड़ताल में शरीक न हो तो उसको भी मारना। उनका एक ही पेशा है कि किसी-न-किसी तरह अनरेस्ट (अशान्ति) पैदा करना। तब हमने सोचा कि हमें लेबर का अलग संगठन बनाना चाहिए। तो हमने अलग संगठन बनाने की कोशिश की। ठीक है। अलग संगठन बनाया, तो हमारा आपस में झगड़ा हुआ कि नहीं भाई, मजदूरों का हड़ताल करने का जो हक है, वह क्यों छीने लेते हो? तो हमने कहा कि भाई, हम कोई हक छीन नहीं लेते हैं। उनका यह हक कायम रहा। लेकिन मजदूरों और मालिकों के बीच झगड़ा हो, तो उसका फैसला पंच से कराओ। चार-पाँच साल तक यह करो, पीछे उनका यह हक कायम रहेगा, हम उसे नहीं ले लेंगे। लेकिन चार-पाँच साल शान्ति से हमें काम करने दो।

अगर हमें मजबूत फौज बनानी हो, तो उसके साथ हमें फौज का जितना सामान चाहिए; बारूद-गोला, मोटर-ट्रक, लोहा, पेट्रोल, कपड़ा, चीनी और खाना, वह सब हमें चाहिए। जितना सामान चाहिए, वह खूब अच्छा चाहिए। अच्छी रेलवे चाहिए, अच्छा तार चाहिए, अच्छा टेलीफोन चाहिए। अच्छी फौज रखनी हो, तो कौन-सी अच्छी चीज नहीं चाहिए? सबसे पहले पूरी फौज चाहिए। फिर उस फौज की हिफाजत करनी चाहिए, उसे सब चीजें देनी चाहिए

और इस सब के लिए धन चाहिए। अगर यही कहते रहोगे कि कोई पैदा ही न करो, झगड़ा ही करो, तो कौन फौज रक्खी जा सकेगी और किस तरह से हमारा काम चलेगा ?

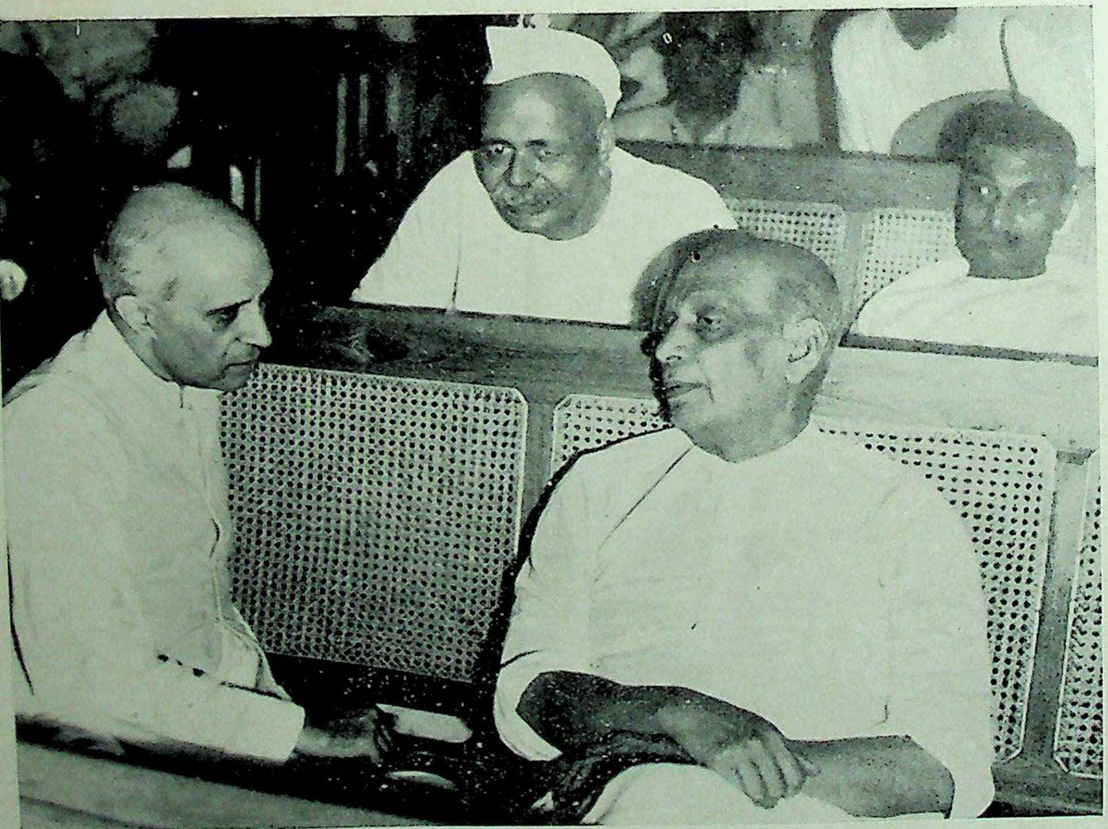
आजादी के पहले चार महीनों में ही हमने इतना काम किया है। अब हम मुल्क को ठीक कर, साफ कर, आगे बढ़ना चाहते हैं। इस काम के लिए दो चीज़ करो। एक तो यह कि जितने मुसलमान इधर पड़े हैं, उनको चैन से रहने दो, उनसे झगड़ा न करो। क्योंकि फिर हमारा चित्त उसमें जाता है। हमारा अटेन्शन (ध्यान) उसमें डाइवर्ट होता (बँट जाता) है। तो उनको चैन से रहने दो। अगर उनमें से किसी की नीयत अच्छी न होगी, तो वह पकड़ा जाएगा। उसमें आपको डर नहीं रखना चाहिए। हम जाग्रत हैं। हम पागल लोग नहीं हैं। हम समझते हैं कि कहाँ चूहा पड़ा है, और कहाँ चोर पड़ा है। वह सब हम देखते हैं। तो आपको इस तरह से हमको तंग नहीं करना चाहिए, हमें मजबूर नहीं करना चाहिए। दिल्ली हमारी राजधानी है, उसमें हम राज करते हैं, तो जो चन्द मुसलमान पड़े हैं, जो लोग उन्हें तंग करते हैं, वे हमारी इज्जत पर हाथ डालते हैं। उसका मतलब यह होता है कि हम राज करने के लायक नहीं हैं। राजधानी में जो लोग बाहर से आए हैं, एम्बेसेडर (राजदूत) आदि परदेसी लोग आए हैं, वे सब देखते हैं कि यह राज कैसे चलेगा ? तो इस तरह से हमें नहीं करना चाहिए। मैं आप से कहना चाहता हूँ कि हमारी प्रेस्टिज (रोब) हमारी इज्जत कुछ बढ़ने लगी है, उसमें किसी को ठोकर नहीं लगानी चाहिए। उससे आपको नुकसान ही होगा, कोई फायदा नहीं होगा। तो हिन्दुस्तान में जो मुसलमान पड़े हैं, उनको रहने दो और जो मजदूर लोग हैं, उन्हें काम करने दो। हाँ, आप कहते हैं कि मजदूरों को पैसा मिले, उनकी जितनी जरूरतें हैं, वे पूरी पड़नी चाहिए, तो इस काम में मेरा आपको पूरा साथ मिलेगा।

मजदूरों को जो इन्साफ से मिलना चाहिए, वह उन्हें जरूर मिलना चाहिए। एक हफ्ता पहले हमारे वहाँ सेन्ट्रल गवर्नमेंट (केन्द्रीय सरकार) ने दिल्ली में एक कान्फ्रेन्स बुलाई थी। हमारे इन्डस्ट्री के मिनिस्टर डा० श्यामा-प्रसाद मुकरजी ने इस कान्फ्रेन्स में हिन्दुस्तान के सब उद्योगपतियों को बुलाया था और लेबर में काम करनेवाले सब लोगों को भी बुलाया था। सब ने मिलकर गवर्नमेंट के साथ एक फैसला किया कि तीन साल का एक ट्रूस (सन्धि)

करो कि तीन साल तक किसी को स्ट्राइक (हड़ताल) नहीं करनी है। इन तीन सालों में मजदूरों को किस तरह से देना होगा, उसका फैसला करने का एक मशीनरी बनाई गई। उसे सब कैपिटलिस्टों ने मान लिया और लेबर के जितने प्रतिनिधि थे, उन्होंने भी कबूल कर लिया। लेकिन जब इधर से वे बम्बई चले गए, तो वहाँ जाकर एक रेजोलूशन (प्रस्ताव) पास किया कि यह जो बम्बई में गवर्नमेंट की तरफ से लेबर का काम चलता है, वह अच्छा नहीं चलता, इसलिए एक रोज की हड़ताल करो। उन्होंने कहा कि सारे बम्बई शहर में एक रोज की हड़ताल करो और उसमें सब गवर्नमेंट सर्वेण्ट्स (सरकारी नौकर) भी शरीक हो जाओ। इस तरह से दूसरे ही दिन उन्होंने यह काम किया। मैं कल कलकत्ता में था। तो वहाँ भी कल उन्होंने स्ट्राइक कराने की काफी कोशिश की। वहाँ से मुझको बुलाया गया कि वहाँ इस तरह स्ट्राइक होनेवाली है। तो मैं दो दिन पहले वहाँ चला गया और तीन तारीख को मैंने कलकत्ता में एक मीटिंग की, जो बहुत बड़े पैमाने पर हुई। कोई बारह लाख आदमी वहाँ जमा हो गए। तो मैंने इन लोगों को समझाया कि यदि हम इसी रास्ते पर चलेंगे, तो हमारा हिन्दुस्तान तबाह हो जाएगा। इसमें न मुसलमान बचेंगे, न लेबर बचेगी, न कैपीटल बचेगी, न कोई और बचेगा। यह हड़ताल करने की जरूरत क्या है? मुझे बताओ तो? जब यह पूछा, तो उसमें कोई बात नहीं निकली।

आज हिन्दोस्तान में जो अशान्ति है, उसे दृष्टि में रखकर हमारी गवर्नमेंट एक क़ानून बनाना चाहती थी, जिस से गुनाह करनेवाले लोगों को ठीक रास्ते पर ले आया जाए, उनके ऊपर कुछ काबू पाया जाए। मुझे ताज्जुब होता है कि हमारे अपने लोग स्ट्राइक करवा रहे हैं। तो मैं आप लोगों से, जितने लेबर में काम करनेवाले हैं, उन सब से मैं अदब से कहता हूँ कि हिन्दुस्तान को तो अभी आजादी मिली है। हम दो-चार साल हिन्दुस्तान में कुछ इन्डस्ट्री बना लें, कुछ उद्योग पैदा करें, तभी तो मजदूरों के लिए कुछ धन पैदा हो सकेगा और उन्हें हिस्सा मिल सकेगा। जहाँ होगा, वहाँ ही से तो कुछ लिया जा सकेगा। लेकिन जो शून्य है, उसका क्या हिस्सा होगा? कोई चीज होगी ही नहीं, तो क्या बाँटेंगे? तो कुछ पैदा तो करो!

हिन्दुस्तान में आज कोई भी चीज़ नहीं बनती। न अनाज पूरा मिलता है, न कपड़ा पूरा मिलता है, और न जिन्दगी की जरूरियात की और चीजें



भारत की विधान सभा में : (बायें से दायें) पं० जवाहरलाल नेहरू, पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, सरदार पटेल और डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

मिलती हैं। बाहर से लाने की कोशिश करते हैं, तो उसमें और मुसीबत आती है। तो आप लोगों को यह समझना चाहिए कि यह रास्ता गलत है। इस रास्ते पर जाने से फायदा नहीं है। हमारा यूनाइटेड प्रोविन्स (उत्तर प्रदेश) सब से बड़ा प्रान्त है। उसमें पन्त जी हमारे प्रधान मन्त्री हैं और सरोजनी देवी गवर्नर हैं। अब देशभर में जितने प्रधान हैं, सब हमारे अपने हैं। अब अँग्रेज की शक्ल भी दिखाई नहीं देती। कोई परदेसी अब नहीं है। पुलिस हमारी है, मिलिटरी हमारी है, फौज हमारी है। अब हमारे रास्ते में क्या रुकावट है, जो बीच में आती है? हिन्दुस्तान के उठाने में असल में अब कोई रुकावट है, तो खाली वह हमारी अपनी बेवकूफी है।

बहुत सालों के बाद हमारी गुलामी गई है, और अब मौका आया है कि हम उसका उपयोग करें। यदि हम उसका सच्चा उपयोग करेंगे, तो दुनिया में हमारी इज्जत बढ़ेगी। तभी दुनिया में हम और मुल्कों के साथ आगे की जगह ले सकते हैं। कल बर्मा स्वतन्त्र हो गया, परसों दूसरा होगा। सारा एशिया खण्ड स्वतन्त्र होगा। लेकिन इस सब का आधार हिन्दुस्तान के ऊपर है। यदि एशिया की नेतागीरी (लीडरशिप) किसी के पास चाहिए तो वह हिन्दुस्तान को लेनी चाहिए। वह लेनी हो, तो हमें उसके लिए ठीक ढंग से काम करना होगा। आज तक तो हम एक ही रास्ते पर गए कि हाँ कानून तोड़ो, जेल में जाओ। उसी रास्ते पर हमने काम किया। पर आज भी उसी रास्ते पर चले जाओ, तो यह तो खुदकशी होगी। क्योंकि वह सब तो परदेसियों के साथ लड़ने के लिए था, उनको यहाँ से हटाने के लिए था। तब वह रास्ता ठीक था। लेकिन आज वह रास्ता काम का नहीं है। तो अपनी सरकार के सामने भी वही रास्ता, वही हथियार लिया जाए, यह मूर्ख लोगों का काम है। उसमें कोई फायदा नहीं है। तो मैंने आपको समझाने की जो कोशिश की, वह यही है कि अब ऐसा मौका फिर नहीं आएगा। अगर हम इसे गंवा देंगे, तो बेवकूफ बनेंगे।

मैंने आपका कुछ समय तो लिया, लेकिन मेरे दिल में जो बात थी, वह मैंने आपके सामने रख दी है। मैं कोई चीज छिपाना नहीं जानता हूँ और साफ साफ बात कहता हूँ। चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे सिक्ख हो, सब के सामने मैं साफ बात कहने वाला आदमी हूँ। नौजवानों को बुरा लगे, आर० एस० एस० वालों को बुरा लगे, लेकिन मेरे दिल में सबके लिए मुहब्बत है। मैं सबको यह समझाने की कोशिश करता हूँ कि ऐसा मौका फिर नहीं

आएगा । अगर इस वक्त हम साथ मिलकर कुछ काम कर सकेंगे तो उस से हिन्दुस्तान का भला होगा, हमारा भला होगा । मैं उम्मीद करता हूँ कि यह सब जिस भाव से मैंने कहा है, उसी भाव से आप उसे स्वीकार करेंगे । जिस प्रेम से आप लोगों ने मेरा स्वागत किया है और जिस शान्ति से मेरी बात सुनी है, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ । जय हिन्द !

----

(३)

बम्बई, चौपाटी

बम्बई
१७ जनवरी, १९४८

बहुत दिनों के बाद आप लोगों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं आप लोगों को मिलने की बहुत दिनों से कोशिश कर रहा था, लेकिन मैं ऐसे कामों में फँसा रहा, जिससे आप लोगों को मिलने का अवसर नहीं बन सका। आज मैं आपके पास आया, तो भी कोई ऐसा मौका नहीं था कि मैं दिल्ली छोड़ कर आपके पास आऊँ। लेकिन पहले से मैंने एक दो ऐसे काम कबूल कर लिए थे, जिनको पूरा करना मुनासिब था।

एक तो हमारे उद्योग मन्त्री डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने बम्बई में उद्योग-पतियों की एक कान्फ्रेन्स बुलाई है। जो कान्फ्रेन्स बुलाई है, उसमें तय करने का मामला ऐसा कठिन है कि उसमें उन्होंने मेरी मदद माँग ली और मैं इन्कार नहीं कर सका। क्योंकि बम्बई में जो उद्योगपति रहते हैं, उनके हाथ में काफ़ी ताकत है। वे सारे हिन्दुस्तान की कपड़े की माँग को पूरा कर सकते हैं। अब जैसा हमने अनाज के बारे में राशनिंग कंट्रोल वगैरह का एक फैसला किया है, इसी प्रकार कपड़े के बारे में क्या करना चाहिए, यह भी एक बड़ा विकट प्रश्न है। अनाज के बारे में जो हमने फैसला किया था, वह कई लोगों ने पसन्द

किया, कई लोगों ने नापसन्द किया। और अभी तक उसी की चर्चा चल रही है कि हमने ठीक किया या ठीक नहीं किया। लेकिन कपड़े के बारे में कुछ हमारे हाथ की बात नहीं है। उसमें हमें मदद चाहिए। एक तो कपड़े की मिलों वाले उद्योगपतियों की मदद चाहिए, दूसरे इन कारखानों के जो मजदूर वर्ग हैं, उनकी मदद चाहिए, तीसरे कुछ व्यापारी लोग हैं, उनकी भी मदद चाहिए। अब आप जानते हैं कि हमारे हिन्दुस्तान में आज ऐसी हालत है कि खाने के लिए जितना अनाज हमको चाहिए, वह हम पूरा पैदा नहीं कर सकते। पैदा करना चाहिए, लेकिन आज ऐसी स्थिति नहीं है। इसलिए हमको बहुत तकलीफ होती है और बाहर के मुल्कों से करोड़ों मन अनाज लाना पड़ता है। उसका दाम बहुत देना पड़ता है। क्योंकि बाहर के मुल्कों के लोग हम से काफी दाम लेते हैं, जो अपने वहाँ अनाज का दाम है, वह नहीं। लेकिन बाहर भेजने के लिए उसमें से काफी नफ़ा ले के दाम लेते हैं, तो उसमें हमको बड़ा नुकसान होता है। लेकिन हम लाचार हो गए हैं। क्योंकि जब तक हम उतना अनाज पैदा न करें, जितना हमारे मुल्क को चाहिए, और हम बाहर से भी न लावें, तो जैसी बंगाल में हालत हुई थी, वैसे ही लोग शहरों में मरने लगे, तो वह बर्दाश्त नहीं हो सकता।

हमने हिन्दुस्तान को एक तरह से तो आजाद किया। जिन्दगी भर की हमारी कोशिश थी कि हमें परदेशी हुकूमत को यहाँ से हटाना है। हटा तो लिया लेकिन जब हमने इंडिया या हिन्दुस्तान को आजाद कर लिया और उसकी हुकूमत का हमने चार्ज लिया, तब हमारे सामने जो समस्याएँ आईं, उन्हें हल करने के लिए काफी बोझ हमारे ऊपर पड़ा है और वह हमारी कमर तोड़ रहा है। वह एक अनाज का ही सवाल नहीं है, कपड़े का सवाल नहीं है। परदेसी लोग अनेक मुसीबतें हमारे सर डाल गए हैं। हमने यह तो समझा था कि दो सौ साल के बाद जब एक हुकूमत चली जायगी, तो उसमें से कुछ ऐसी चीजें जरूर रह जाएँगी, जिनको हमें ठीक करना पड़ेगा और इस कार्य में हमें मुसीबत भी उठानी पड़ेगी। लेकिन हमने यह नहीं सोचा था कि हमारे लोग ऐसे पागल हो जाएँगे, कि हम भी खुद कुछ ऐसी नई समस्याएँ पैदा कर लेंगे कि उनका हल करना अत्यन्त मुश्किल हो जाएगा। तो जो कई सवाल हमने खुद में पैदा किए हैं, उन्हें किस तरह से हल किया जाय, वह सवाल मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

हमने हिन्दुस्तान का टुकड़ा किया जाना कबूल कर लिया। कई लोग कहते हैं कि हमने ऐसा क्यों किया और यह गलती थी। मैं अभी तक नहीं मानता हूँ कि हमने कोई गलती की और मैं यह भी मानता हूँ कि यदि हमने हिन्दुस्तान का टुकड़ा करना मंजूर नहीं किया होता, तो आज जो हालत है, उससे भी बहुत बुरी हालत होनेवाली थी और हिन्दुस्तान के दो टुकड़े नहीं, बल्कि अनेक टुकड़े हो जानेवाले थे। इस बात की गहराई में मैं आपको नहीं ले जाना चाहता हूँ, लेकिन यह बात मैं अनुभव के आधार पर बताना चाहता हूँ। मेरे सामने वह सारा चित्र है कि हम किस तरह एक साल गवर्नमेंट चला पाए थे और यदि हमने यह चीज कबूल न की होती, तो क्या होता। परन्तु यदि यह सारा बयान मैं आपको दूं, तो बहुत समय चला जाएगा। इसलिए मैं नहीं दूंगा। लेकिन आप इतना विश्वास रखें कि जब मैंने और मेरे भाई पं० नेहरू ने यह कबूल किया कि अच्छा ठीक है, यदि टुकड़ा जरूर करना है और इसके बिना मुसलमान नहीं मानते, तो हम इसके लिए भी तैयार हैं। क्योंकि जब तक हम परदेशियों को न हटा दें, विदेशी हुकूमत न हटा दें, तब तक दिन-प्रति-दिन ऐसी हालत होती जाती थी कि हमें साफ तौर से दिखाई दिया कि हमारे हाथ में हिन्दुस्तान का भविष्य नहीं रहेगा और परिस्थिति काबू से बाहर चली जाएगी। इसलिए हमने सोचा कि अभी तो दो टुकड़े करने से काम ठीक हो जाता है, तो वैसा ही कर लो। हमने मान लिया कि ठीक है, अपना अलग घर लेकर अगर यह अपना भाई शान्त हो जाता है और अपना घर सँभाल लेता है, तो हम अपना घर सँभाल लेंगे। लेकिन हमने यह बात इसी उमीद से मानी थी कि हम शान्ति से अपना काम करेंगे। उसमें हमारी गलती हुई। टुकड़ा करने में हमारी गलती हुई, यह मैं नहीं कहता, लेकिन गलती इसमें हुई कि न करने का काम टुकड़ा करने के बाद हम लोगों ने किया। हमने किया, उसका मतलब यह है कि हमारे सब लोगों ने किया और ऐसी बुरी तरह से कि हम गिर गए। आजादी के बाद दुनिया में हमारी इज्जत बढ़ी थी और १५ अगस्त के बाद दुनिया में हमारी एक जगह बन गई थी। उस से हम गिर गए और बहुत नीचे गिरे। और देशों के लोग यह शक करने लगे कि हम लोग हुकूमत करने के लायक भी हैं या नहीं। कई लोग ऐसा खयाल भी करने लगे कि यह आजादी चलनेवाली चीज नहीं है। यह आजादी तो हमने ले ली, लेकिन महीना, दो महीना या तीन महीनों में यह खतम हो जाएगी। कई परदेशी लोग मानने लगे कि हम

तो भाई, पहले से ही कहते थे कि क्यों इनको आजादी देते हो । आजादी को ये हजम नहीं कर सकेंगे। कई अँगरेज लोग ऐसे भी थे, जो समझते थे कि जब हिन्दुस्तान का किनारा छोड़कर जाएँगे, तो बम्बई की बन्दरगाह पर लोग आएँगे और कहेंगे कि तुम इस देश से मत जाओ और इधर ही रहो। वे मानते थे कि हम अपना राज नहीं चला सकेंगे । अब वहाँ तक तो हम नहीं गिरे और हमने एक तरह से तो हिन्दुस्तान को ठीक कर लिया।

जब पंजाब का टुकड़ा हुआ और बंगाल का टुकड़ा हुआ, तो बंगाल में तो गान्धी जी बैठे थे, सो उन्होंने वहाँ की हालत को सँभाल लिया। उम्मीद से भी कहीं अधिक अच्छी तरह सँभाल लिया। उससे दुनिया पर बहुत असर पड़ा। हम पर भी असर पड़ा। मुल्क पर भी असर पड़ा। लेकिन पंजाब में जो हुआ, वह बहुत ही बुरा हुआ। पंजाब और उत्तर पश्चिम के सरहदी प्रान्त में। इन दोनों प्रान्तों में जो ख्वारी हुईं, जो अत्याचार हुआ, वह इस प्रकार का हुआ कि जिसका बयान करने से हृदय फट जाता है। तो यह सब जो हुआ, उसकी चोट हम लोगों को बहुत लगी। और एक जिन्दा आदमी के सर पर जब घाव पड़ता है या ज़ख्म लगता है, तब उसमें से खून निकलता है और जख्मी को बेहोशी आ जाती है। वह चक्कर खाकर गिर जाता है। इस तरह से हिन्दुस्तान का भी हाल हो गया। पंजाब तो हिन्दोस्तान का सिर ही है। हिन्दोस्तान के सिर पर घाव पड़ा और उसमें से बहुत खून बहा। इस तरह खून निकलने से हमारा देश गिर पड़ा, तो उसको सब तरह से उठाने की हमने पूरी कोशिश की। इस कोशिश में हम बहुत दूर तक कामयाब भी हुए। और जो हिन्दुस्तान बाकी रहा है, उसको एक तरह से हमने संगठित कर लिया वह होश में आ गया और सावधान हो गया। लेकिन यह सब जो हुआ है, वह पूरी समझ और रजामन्दी से नहीं हुआ है। वह पुलिस की बन्दूक से, मिलिटरी की बन्दूक से और फौज के डंडों से हुआ है। वह दिल से नहीं हुआ है तो उसकी चोट गान्धी जी को लगी है।

जब तक हिन्दुस्तान पूर्णतया दिल का परिवर्तन न करे और जिस तरह से हमें स्वतन्त्र हिन्दुस्तान में अपना काम करना चाहिए, उसी तरह जब तक हम न करें, तब तक हमारा काम नहीं हुआ और तब तक गान्धी जी को चैन नहीं है, वह बेचैन हैं। अब उनको दिल्ली में छोड़कर मैं इधर आया, तो मुझको

भी बहुत दर्द हुआ* । परन्तु इधर न आता तो और भी मुसीबत होनेवाली थी । इसलिए मैं आया तो सही, लेकिन मैं भी पूरी तरह अस्वस्थ हूँ । इस तरह से मैं आपके सामने बोल रहा हूँ । लेकिन जो दिल से बात निकलनी चाहिए, जल्दी जल्दी वह निकलती भी नहीं, इतना दर्द उसमें भरा है ।

तो हमने हिन्दुस्तान को एक तरह से बाँध तो लिया । अब हमारी कोशिश है कि हिन्दुस्तान को उठाओ । इस उठाने की कोशिश में यदि हमको आप लोगों का साथ मिल जाए, तो अभी भी हमारी उम्मीद है कि हमने कुछ ज्यादा नही गँवाया है । क्योंकि हमारा इतना बड़ा मुल्क है । इस मुल्क में कई सदियों से हमारी हुकूमत तो थी नहीं । हम लोग छिन्न-भिन्न थे । यहाँ परदेसी हुकूमत ही चलती रही । अब करीब एक हजार साल के बाद हमारे पास यह मौका आया है कि ८० प्रतिशत हिन्दुस्तान हमने एक कर लिया है । उसको उठाने का हमें यह पहला मौका मिला है । यदि हम इसका सदुपयोग करें, तो दुनिया के और बड़े-बड़े मुल्कों के साथ हम बैठ सकते हैं और सारे एशिया की नेतागिरी हम ले सकते हैं । साथ ही और देशों को रास्ता बता सकते हैं । यही हमारी कोशिश है, उसमें हमको आपका साथ मिलेगा, कि नहीं, यही हमारी चिन्ता है । हमें उम्मेद तो है, लेकिन कभी कभी हम निराश भी हो जाते हैं ।

१५ अगस्त के बाद हमने काम तो किया, और एक तरह से बहुत काम किया । उस काम से हमारी गिरी हुई प्रतिष्ठा फिर से हमें प्राप्त होने लगी, क्योंकि दुनिया देख रही थी कि इन लोगों पर क्या बोझ पड़ा है । हिन्दुस्तान की वर्तमान सरकार की जगह पर यदि दूसरी कोई सरकार होती, तो क्या करती, यह भी दुनिया जानती थी । बहुत से मुल्क अब यह सोचने लगे हैं कि जैसा वे हमें समझते थे, वैसे बुरे हम लोग नहीं हैं । हिन्दुस्तान की जड़ें बहुत मजबूत होती जा रही हैं और उनको वे हिला नहीं सकेंगे । चार महीने में दो प्रान्तों के टुकड़े किए और कई प्रान्तों में प्लेबीसिट (जनमत) लिया । आसाम में से एक टुकड़ा निकाल लेने का हौसला भी कर लिया गया । बंगाल का टुकड़ा कर लिया और पंजाब का भी टुकड़ा कर लिया और उसके

---

* गांधी जी उन दिनों दिल्ली में अपने जीवन का अन्तिम उपवास कर रहे थे ।

साथ साथ इन्हीं चार महीनों में पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच में सारी पुरानी मिल्कियत का भी हमने हिस्सा-बाँट कर लिया। अब एक कुटुम्ब में भी यदि मिल्कियत का हिस्सा करना हो, तो दो भाइयों के बीच भी वह काम एक दिन में नहीं हो जाता और उसका हिसाब-किताब करना पड़ता है, उसकी जायदाद का माप निकालना पड़ता है। कभी पंच भी करना पड़ता है। कभी झगड़ा भी होता है। यह सब निपटाने में वक्त लगता है। तो हिन्दुस्तान की मिल्कियत का, जमीन जायदाद का, जितनी हमारी दौलत थी, जितना हमारा कर्जा था, जितनी लोगों की सेक्यूरिटीज़ थीं, सब का हिसाब करना था। इन सब चीज़ों का हमने फैसला किया और आपस में बाँट लिया। इस सब कार्य में हमने किसी पंच को नहीं बुलाया।

पिछले चार महीनों में हमने न केवल यह सब ही किया, बल्कि इसके साथ-साथ लाखों आदमी पंजाब में एक तरफ से दूसरी तरफ गए और दूसरी तरफ से इस तरफ ले आए गए। अभी तक यह काम पूरा नहीं हो पाया, लेकिन करीब-करीब पूरा कर लिया है। समय आया है कि इस काम में कितनी-कितनी मुसीबतें आई हैं, उनका बयान मैं आपके सामने करूँ। अगर मैं सब बातें विस्तार से बताऊँ तो आपकी आँखों में आँसू आ जाएँगे। एक लम्बा-सा, साठ साठ मील का लम्बा, पैदल चलता जलूस एक तरफ से दूसरी तरफ के लिए चला, तो दूसरा उस तरफ से इस तरफ के लिए। दस-दस लाख आदमी एक साथ, जिनमें लाखों बच्चे और औरतें थीं, एक तरफ से दूसरी तरफ गए या आए। जो मर गए, सो मर गए। जो जिन्दा थे, वे गाड़ी, बैल, भैंस सभी कुछ लेकर चलते चलते निकले। रास्ते में किस तरफ से मार पड़ेगी, इसका कोई ख्याल नहीं था। साथ में थोड़ी-सी पुलिस या थोड़ी-सी फौज ही होती थी। ऊपर से मूसलधार पानी पड़ता है, नीचे भी पानी-ही-पानी भरा है। बच्चों और औरतों तक के पास का कपड़ा नहीं है, खाने का इन्तजाम नहीं है, लकड़ी तक नहीं है। दो-दो महीनों तक इस तरह से लोग चलते ही रहे। तभी लोगों में कालरा की बीमारी हुई और सैकड़ों हजारों लोग मरने लगे।

इसी हालत में अमृतसर शहर के बीच में से मुसलमानों का जुलूस उधर जाने को हुआ। अमृतसर शहर हिन्दुओं और सिक्खों से भरा हुआ था। सिक्खों ने इन्कार किया कि इधर से यह मुसलमान लोग नहीं जा सकते। वह ६०

मील का लम्बा प्रोसेशन (जुलूस) अब वहीं पड़ा था। उसमें १० लाख आदमी थे और इन लोगों ने वहीं रोक लिया और दूसरा कोई रास्ता जाने का नहीं था। इधर इन लोगों ने हठ पकड़ी कि नहीं जाने देंगे। उधर दूसरी तरफ हमारे जुलूसों को भी रोक लिया गया। अब उसका फैसला कौन करें? लोग गुस्से में भरे हुए थे। अपने मकान जले हैं, अपने बीवी-बच्चे कत्ल हो गए हैं, अपने पास खाने-पीने की भी कोई चीज़ नहीं बची है। आँखें लाल हैं और तलवार लेकर निकल आए कि नहीं जाने देंगे। तब फौज से भी यह काम नहीं होता। फौज आखिर बन्दूक चलाकर कितने हिन्दुओं को मारे? कितने सिक्खों को मारे? तोप से हम कैसे रोकें और कितनों को मारें? तब मैं अमृतसर गया। सब सिक्ख लीडरों को मैंने बुलाया और उनके साथ बातचीत की। मैंने कहा, यह क्या कर रहे हो आप? आप १० लाख मुसलमानों को इधर रोक लोगे। १० लाख हिन्दू और सिक्ख वहाँ रुके पड़े हैं। उन अभागों पर ऊपर से पानी पड़ता है। नीचे भी पानी है। उनका सब कपड़ा भीगा हुआ है। नींद नहीं है, खाना नहीं है। हैजा शुरू हो गया है। इस तरह से प्रोसेशन रोककर आप क्या फायदा निकालोगे? मैंने अनुरोध किया कि मेरी बात मानो। यदि हमें लड़ना ही है, तो हम कुछ सभ्यता से लड़ें ताकि दुनिया के लोग भी देखें कि यह लड़नेवाले बहादुर लोग हैं। आपकी तलवार यदि इस तरह कमजोरों पर चलेगी तो उससे क्या फायदा होगा? तुम बहादुर कौम हो। ऐसे कामों से दुनिया में हमारी इज्जत जाती है। बहादुर सिक्खों को बदनाम करनेवाला यह काम कभी मत करो। पटियाला महाराज ने भी मेरा साथ दिया। जितने सिक्ख लीडर थे, वह समझ गए और मान गये।

तब मैंने वहाँ अमृतसर में एक बहुत बड़ा जल्सा किया। दो घंटे की नोटिश में डेढ़ लाख आदमी जमा हो गए। सब को मैंने कहा और समझाया। मैंने कहा, आपका काम यह है कि आप अपनी गवर्नमेंट की मदद करें, ताकि हमें पुलिस का उपयोग न करना पड़े, फौज का उपयोग न करना पड़े। आप खुद चौकीदारी करें। आप वालंटियर बनकर मुसलमानों को इधर से निकल जाने दें और उधर जो हमारे हिन्दू और सिक्ख भाई पड़े हैं, उनको इधर लाने में मदद दें। ५० लाख आदमी हमें वहाँ से इधर लाना है। ४० लाख आपको इधर से वहाँ भेजना है। वैसे हम मरते रहेंगे, उससे तो अच्छा है कि अब अपनी फौज बनाकर, मजबूत हिन्दुस्तान बनाकर, पाकिस्तान और हिन्दु-

स्तान को लड़ना हो, तो लड़ें। लेकिन किसी ढंग से लड़ें, तब तो ठीक बात है। यह इस तरह का लड़ना भी क्या है? वहां कई हमारे आर० एस० एस० वाले लोग थे। उनको भी मैंने समझाया कि हिन्दुस्तान का बोझ तो आप लोगों को ही उठाना है। हम लोग तो अब जरित हो गए। हमने तो आजादी आपके लिए पाई है। यह आप क्या कर रहे हो? सब समझ गए। सबने मुझसे वायदा किया। उन्होंने कहा कि यह काम हम करेंगे। आप बेफिक्र रहें। मैं चला आया और मुझे खुशी हुई कि उसके बाद हमारे सिक्खों और हिन्दू भाइयों ने बहुत अच्छे ढंग से काम किया, और सब को जाने दिया। निकलते-निकलते एक महीना डेढ़ महीना लग गया। लेकिन सब चले गए। उधर से भी बाकी के सब चले आए।

आज सिक्ख और मुसलमान के बीच में इतना जहर फैला हुआ है कि मुसलमान सिक्खों का चेहरा भी नहीं देख सकते। वे उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। सिक्खों ने मुझे जो कौल दिया था, यदि उन्होंने उसका पूरा-पूरा पालन न किया होता तो आज न हिन्दुस्तान रहता, न पाकिस्तान रहता। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। लेकिन फिर भी उन्हें बदनाम किया जा रहा है। अब उनको बदनाम करना कोई अच्छा काम तो नहीं है। कम-से-कम उससे ज्यादा तो मैं नहीं कहूँगा। आप ही देख लीजिए कि कराची में क्या हुआ। थोड़े दिन हुए, वहाँ सिक्खों के गुरुद्वारे पर हल्ला किया गया। गुरुद्वारे में बहुत-से सिक्ख जमा थे। वे शिकारपुर, सक्खर आदि शहरों तथा वहाँ के देहातों से आए थे। पाकिस्तान की पुलिस ही उन्हें वहाँ लाई थी! बाहर भेजने के लिए, हिन्दुस्तान में भेजने के लिए। और हम चाहते थे जल्दी उनको यहाँ ले आएँ। लेकिन वहाँ गुरुद्वारे पर ही उनको कत्ल किया गया। उसपर हल्ला किया गया। और उसके बाद सारे कराची में जितने हिन्दू लोग रहते थे, उनके मकानों की लूट-पाट शुरू हुई। अब वहाँ न हिन्दू रह सकते हैं न सिक्ख।

मैं तीन महीनों से कह रहा हूँ कि कराची में हिन्दू नहीं रह सकता। हैदराबाद में, कराची में, या सिन्ध में, कहीं भी हिन्दू और सिक्ख नहीं रह सकते। हमें आपस में बैठकर दोनों गवर्नमेंट के बीच में समझौता कर सब को यहाँ ले आना चाहिये। जब मैं यह कहता था, तो मेरा सब विरोध करते थे कि यह तो मुसलमानों की या पाकिस्तान की बदनामी करते हैं। मैं बार-

बार कहता हूँ कि यह गलत बात है। मैं तो कहता हूँ कि यदि हम उन्हें यहाँ न लाएँ, तो वे मारे जाएँगे और उसकी जिम्मेवारी हमी पर पड़ेगी। लेकिन हमारे लोग भी नहीं मानते थे। अब वे सब भागे-भागे आते हैं। आज हमारे पास जितने जहाज हैं, सिन्धिया के भी जितने जहाज हैं, वह सब हमने वहाँ भेजे हैं। अब किस तरह से लोगों को वहाँ से निकलना है, उनका बयान आज मैं नहीं करूँगा, क्योंकि मैं जहर फैलाना नहीं चाहता। लेकिन हालत बहुत बुरी है। ये सिक्ख, जिन्होंने मुसलमानों को इस तरह से यहाँ से जाने दिया, इन्हीं सिक्खों के गुरुद्वारे में उनका ऐसा हाल हुआ! इतना होते हुए भी सिक्खों ने खामोशी रखी। सिक्ख मेरे पास आए तो मैंने कहा कि सौ-डेढ़-सौ सिक्ख मारे गए हैं। लेकिन उससे आपकी इज्जत बहुत बढ़ी है। आप बैठे रहिए, गुस्सा नहीं कीजिए। वे बैठ गए। उसके बाद गुजरात से ट्रेन आती थी, जिसमें बन्नू से हमारे सिक्ख और हिन्दू भाई आ रहे थे। इस ट्रेन में करीब-करीब तीन हजार आदमी थे। दस बजे उलटे रास्ते ट्रेन ले जाकर रोक ली गई। वहाँ हमारा मिलिट्री का पहरा था। मिलिट्री के करीब ६० आदमी थे। कोई ६-८ घंटों तक लगातार गोली चलती रही। ट्रेन में हमारे जो तीन हजार आदमी थे, अब उनमें से करीब-करीब एक हजार का हिसाब मिलता है, २,००० हजार आदमियों का पता ही नहीं चलता। बस और जो कुछ हुआ, उसका बयान करने का यह मौका नहीं है। लेकिन इतना मैं जरूर कहना चाहता हूँ कि यह सब होते हुए भी, सिक्खों ने उस सब को बर्दाश्त कर लिया और सब जगह पर, दिल्ली में भी, सिक्ख जब आज मिलते हैं, तो हम से कहते हैं और गान्धी जी को विश्वास दिलाते हैं कि हम खामोशी रखेंगे। इन सिक्खों को लोग जब बदनाम करते हैं, तब मुझको चोट लगती है कि यह क्या बात है। लोग क्यों ऐसा करते हैं?

मैं आप से जो कह रहा था, इन्हीं हालात में चार महीने में हमने ये सब काम कर लिए। सारा हिस्सा बाँटकर लिया, न कोर्ट में जाना पड़ा, न किसी और जगह पर जाना पड़ा। साथ-साथ हमारी किस्मत में जूनागढ़ की समस्या भी आई। उसे जिस तरह से हमने ठीक किया, दुनियावाले लोग उसे देखते रहे। वे जानते हैं कि हम लोगों पर जो बोझ पड़ा है, वह बोझ अगर दूसरी गवर्नमेंट पर पड़ा होता तो उसकी कमर टूट जाती। इससे हमारी इज्जत काफी बढ़ी है। मैं दावा करता हूँ कि चार महीने में यह जितना

काम हुआ है, उसे पूरा करना भी बहुत कठिन काम था। हमने उसे किस तरह से किया, यह आप जानते हैं। अभी भी हमारा कुछ काम बाकी है। अभी हमारे ८ लाख सिन्धी भाइयों को इधर ले आना है। वह आ रहे हैं, तो लानेलाने में ही काफी समय लगेगा। क्योंकि हमारे पास इतने बोट भी नहीं हैं। एक छोटी सी रेलवे जोधपुर की तरफ जाती है। उसमें भी एक छोटी रेलवे है, उसमें दो सौ ढाई सौ आदमी आते हैं। रास्ते में जोखम भी है। बहुत मुश्किल काम है।

सिन्धी लोग, जो दुनिया भर में व्यापार करते थे और लाखों, करोड़ों रुपयों का व्यापार करते थे। वे धनी लोग थे, वे सुखी लोग थे। लेकिन आज उनके पास कोई चीज बाकी नहीं है। सब खाली हो गया है। यों तो जो इन्सान पैदा होता है, वह एक दिन जरूर मरेगा। लेकिन इस तरह जो उसका मान भंग होता है, वह बहुत बुरा है। वे न इधर के हैं, न उधर के हैं। उधर अब कोई उनकी परवा नहीं करता, और वे दुःखों के बोझ से दब गए हैं। अब अगर इधर भी हम उनको अपना न समझें; यह न समझें कि उनके ऊपर जो यह आपत्ति आई है, यह तो असल में सारे हिन्दुस्तान पर विपत्ति है, इस समय हम उनकी मदद न करें, तो वह कितना बुरा होगा! हमें इस चीज को ठीक करना है। तो यह आप लोगों का काम है। आपका बम्बई शहर कितना बड़ा है। इस बम्बई शहर के हर एक घर में दो-दो सिन्धी रख लो। आठ लाख में से सब-के-सब सिन्धी तो इधर आनेवाले हैं नहीं। जितने सिन्धी आनेवाले हैं, उन में तीन-चार लाख तो तीस या चालीस लाख की आबादीवाले इस बम्बई में खप ही सकते हैं। अगर हम अपने दुखी आदमियों को भी हजम नहीं करेंगे, तो हम स्वराज्य कैसे हजम करेंगे? तो मैं आप से यह कहना चाहता हूँ कि हमारा और आपका काम है कि हमारे जो सिन्धी दुखी भाई यहाँ आए हैं, हम उनकी तलाश करें। हम पता चलाएँ कि कौन आया है, कहाँ आया है। एक-एक को अपने पास रख लो और उसको सँभाल लो। और ये ऐसे लोग नहीं हैं कि कोई भिक्षुक हों, या भिक्षुक बनना चाहते हों। पहला मौका मिलते ही वे अपना कार्य ठीक कर लेंगे, क्योंकि वे बहादुर लोग हैं, वे कुशल लोग हैं। हाँ, अभी उनमें गुस्सा भरा हुआ है, उनका दिमाग इस वक्त बिगड़ा हुआ है। उनकी जगह पर हम और आप में से भी कोई होता, तो उसका दिमाग भी बिगड़ जाता। तो हमें

उनको सँभालना है। इस मौके पर उनके साथ सहानुभूति न बताओ, तो मुश्किल हो जाएगा। तो आपके पास मेरी नम्र विनती यह है कि आप समझ लें कि यह हमारा धर्म है। और यह फर्ज यदि हम अदा नहीं करेंगे, तो हम पर मुसीबत आनेवाली है।

अव यह तो मैंने आज थोड़ा-सा चित्र आपको दिया कि हमने अब तक क्या किया है। लेकिन अपनी कहानी सुनाने के लिए मैं नहीं आया। हमारी उम्मीद क्या है, हमें करना क्या चाहिए, वह सुनाने के लिए मैं आया हूँ। इसमें मुझे बहुत निराशा होती है, क्योंकि हमारे कई नौजवान भाई समझते हैं कि उन्हें अपनी लीडरशिप सिद्ध करने या अपनी नेतागीरी प्रसिद्ध करने का मौका मिला है। यह देखकर मुझे बड़ा दुख होता है। सारे हिन्दुस्तान का भविष्य तो आपके पास पड़ा है, आपको सिद्ध किसके पास करने की जरूरत है?

मैं पहले अनाज का मसला लेता हूँ। जब हमने अनाज के बारे में, फूड कंट्रोल (अन्न नियंत्रण) के बारे में, एक पौलिसी (नीति) तय की, तो यह कोई आसान मामला तो था नहीं। उसमें बहुत मतभेद था। हमारे आपस में भी बहुत मतभेद था। लेकिन आखिर तीन-चार साल से कंट्रोल चलता है और चारों तरफ से शिकायत आती है तो उसका किसी-न-किसी तरह से फैसला तो करना ही है। गान्धी जी ने बहुत जोर दिया कि कंट्रोल निकाल देना चाहिए। कई और लोगों की भी यही राय थी और देहातों में तो सब लोग यही कहते थे। हमने बार बार प्रान्तीय सरकारों में मिनिस्टरों को बुलाया, उनकी कांफ्रेंसें कीं। आखिर हमने एक कमेटी बनाई, जिसमें बड़े-बड़े समझदार लोग थे। सर पुरुषोत्तम दास को इस कमेटी का चेयरमैन (अध्यक्ष) बनाया और इस कमेटी से कहा कि भाई इस चीज को तलाश करके हमें सलाह दो कि हमें क्या करना चाहिए। उसमें हमारे सोशलिस्ट भाई राममनोहर लोहिया को भी रख लिया, क्योंकि हम सब की राय लेना चाहते थे। अब इस कमेटी ने फैसला किया कि कंट्रोल को हटा देना चाहिए। उस फैसले पर जब अमल करने का वक्त आया, तब फिर हमने प्रान्तों के मिनिस्टरों को बुलाया। फिर उनकी राय ली। सब लोगों की राय थी कि अब इसे हटाना ही चाहिए। हमारी आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने भी यही फैसला दिया कि हां, हटाओ। अब हम लाचार हो गए, क्योंकि चन्द जिम्मेवार लोग उसके खिलाफ

थे। हमारे सब आफीसर उसके खिलाफ थे। लेकिन हमने यह फैसला कर लिया। फैसला करके इधर से चले गए और हम सोचते रहे कि अब क्या करेंगे। हमारे सोशिलिस्ट भाइयों ने प्रस्ताव किया कि यह बहुत गलत काम किया गया है, बहुत बुरा किया गया है। जो सोशिलिस्ट कांग्रेस में हैं, उनका प्रतिनिधि तो हमने ले लिया था और हमारे फूड मिनिस्टर डा० राजेन्द्र प्रसाद ने जयप्रकाश नारायण से भी कहा था कि अपना एक आदमी भेजें या खुद ही आ जाएँ। तो उन्होंने कहा था कि हमें फुर्सत नहीं है। हम अपना प्रतिनिधि भेज देंगे, और उन्होंने ही राममनोहर लोहिया को भेज दिया था। इस सब के वाद इन लोगों ने इस प्रकार किया।

दूसरी कान्फ्रेंस डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने बुलाई। हमारे यहाँ कपड़ा भी कम पैदा होता है, उसको किस तरह से बढ़ाया जाए और उसके कंट्रोल के वारे में क्या किया जाए और किस तरह किया जाए, यह इस कांफ्रेंस को सोचना था। उसमें मजदूरों के प्रतिनिधि को भी बुलाया और जो उद्योग के प्रतिनिधि थे उनको भी बुलाया। सबको बुलाकर एक जलसा किया गया। इसमें लेबर के प्रतिनिधि, कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट सभी थे। वहाँ हमारे प्राइम मिनिस्टर पं० नेहरू ने इन लोगों को सब कुछ समझाया और सबने उनकी राय मान ली। सब ने एक राय से फैसला किया कि हाँ, ठीक है। अब तीन साल तक कोई हड़ताल नहीं करनी चाहिए। मैं चिल्ला-चिल्लाकर बहुत दिनों से कह रहा था कि पाँच साल तक जमकर काम करो। सब झगड़ा छोड़ दो। नहीं तो, हमारा हमारे हिन्दोस्तान का कुछ भी भविष्य नहीं है। तो हमें इधर शान्ति चाहिए। इसलिए जमकर हम कुछ काम करें, तब तो काम होगा। जब फैसला किया, तो उसमें सब शरीक थे। लेकिन जब फैसला करके इधर आए, तो दूसरे या तीसरे ही दिन सोशलिस्ट पार्टी ने रेज्योलूशन (प्रस्ताव) पास किया कि गवर्नमेंट आफ इंडिया ने ट्रूस (सन्धि) का जो फैसला किया है, उसको हम पूरा नहीं मान सकते हैं। एक रोज के लिए तो हमें बम्बई में हड़ताल करनी ही है।

मैं पूछता हूँ कि एक दिन के लिए टोकन स्ट्राइक क्यों? क्या लीडरशिप सिद्ध करने के लिए? उसे भी तो सिद्ध करना है। अरे भाई, इतना ही झगड़ा था, तो हमसे कहना था। हम ही लिख देते कि लीडरशिप आपकी है। लेकिन यह भी कोई तरीका है! अब कांग्रेस में भी तो आप हैं। आपका प्रतिनिधि वहाँ

जाकर कबूल करके आया है और आप कहें, कि नहीं हमें तो ट्रूस नहीं माननी है। एक दिन की स्ट्राइक तो हम जरूर करेंगे। अब हम क्या करें? मुझे बड़ा अफसोस हुआ कि जिन लोगों पर हम आखिर को गवर्नमेंट चलाने का बोझ डालनेवाले हैं, वह इसी तरह से काम करेंगे, तो कौन-सी गवर्नमेंट चलेगी। और ऐसा ही रहा तो हिन्दुस्तान के स्वराज्य का क्या भविष्य है? हमारे हाथ अब कहाँ तक यह चीज़ रहनेवाली है और कहाँ तक हम इसे रख सकते हैं? तो हमको बड़ा दर्द हुआ। हो सकता है कि उनका पूरा काबू मजदूरों पर हो। मुझे तो यह कभी समझ में नहीं आया कि इस प्रकार कोई लीडरशिप कैसे सिद्ध होती है, क्योंकि मजदूरों को लीडरशिप तो तब सिद्ध होती है कि जो चीज मजदूरों को पसन्द न हो, वह चीज उनसे करवा कर दिखाओ। वह चीज अहमदाबाद में ही होती है। दूसरी जगह पर नहीं होती। और अहमदाबाद में भी यदि हम सावधान नहीं रहेंगे, तो वहाँ से भी चली जाएगी।

आज अखबार में यह पढ़कर मुझे बहुत दुख हुआ कि वहाँ के स्वामी नारायण के मन्दिर को हरिजनों के लिए खोलने से जब वहाँ के महाराज ने इनकार किया, तो सारी मिलें बन्द हो गईं। देखो, हमारा दिमाग कहाँ तक चलता है। एक मन्दिर खोलने में कोई आर्थिक सवाल या मजदूरों की तहरीक का भी कोई सवाल नहीं है। उसके लिए बस एक दिन की डेमौस्ट्रेशन (प्रदर्शन) करो। उसमें सोशिलिस्ट, कम्यूनिस्ट सबको मिला लो। करो हड़ताल। कपड़ा तो है नहीं मुल्क में। गरीब लोग भूखे मरते हैं। उससे किसी को फायदा नहीं है। इससे अहमदाबाद में मजदूरों का संगठन इतना गिरा कि मुझको चोट लगी कि यह क्या हुआ। वहाँ कांग्रेस यह क्या करती है, यह मुझे कांग्रेस को भी कहना पड़ा।

इस तरह जो स्ट्राइक हो तो कांग्रेस हमारे हाथ से चली जायगी, यह मेरा निचोड़ है। क्योंकि मैं इस तरह से काम नहीं करता। थोड़े दिन हुए, मैं कलकत्ते गया था। वहाँ भी यही तरीका है। पाँच तारीख को एक दिन की स्ट्राइक करो। उसमें कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, एंटीकांग्रेस जितने थे, सब मिल गए। एक दिन की स्ट्राइक करो। मैं वहाँ गया तो, दस-बारह लाख आदमी जमा हो गए। तीन तारीख को मैंने मीटिंग की। बहुत लोग आए। मैंने सब लोगों को समझाया कि क्या आप पसन्द करते हो कि स्ट्राइक हो और

कलकत्ता जैसे सिटी में एक दिन की स्ट्राइक करने से आप समझते हो कि पुलिस और गवर्नमेंट के ऊपर क्या बोझ पड़ता है ? उसमें से कोई फ़िसाद हो गया तो उसका क्या नतीजा निकलेगा ? और किस चीज के लिए आप हड़ताल कर रहे हैं ? उससे आपका क्या फायदा होगा ? जब लोग समझ गए, तो मैंने कहा कि आप लोगों का कर्त्तव्य यह है कि जब इस तरह स्ट्राइक होने का समय आए, तो आप खुले तौर से उसका विरोध करें। तब आपको घरों में नहीं बैठे रहना चाहिए। सब लोग यह चाहते हैं कि हड़ताल न हो। परन्तु मजदूरों के साथ कौन झगड़ा करे। मजदूरों में काम करनेवाले तूफानी लोग कहते हैं कि वे फिसाद करेंगे, मोटर पर हमला करेंगे, घर पर हमला करेंगे, पत्थर डालेंगे। इस से डरकर अपने काम पर मत जाओ, घर में बैठ रहो। इस तरह काम नहीं चल सकता। इस तरह से अपने स्वराज्य में आप अपनी जिम्मेवारी पूरी नहीं करेंगे। हर आदमी का फर्ज है कि वह सिटीजनशिप (नागरिकता) के अधिकार और जिम्मेवारी दोनों को अदा करें और अगर आप ऐसा नहीं करेंगे, तो देश का बहुत बड़ा नुकसान होगा। आज तो एक दिन की स्ट्राइक हो जाएगी, क्योंकि मजदूरों को इतना ही तो कहना है कि एक दिन घर बैठो, आराम मिलेगा छुट्टी मिलेगी, तनख्वाह भी मिलेगी। परन्तु यह लीडरशिप की बात नहीं है। यह तो पागलपन है। इससे किसी का कोई फायदा नहीं होगा। तो कलकत्ता वालों ने मान लिया। फिर भी कई लोगों ने ट्रामें रोकने की कोशिश की। ट्रामों पर पर बम डाला, कुछ गड़बड़ भी की। लेकिन सब लोगों ने विरोध किया कि यह नहीं चलेगा, तो स्ट्राइक नहीं हुई। यानी आप लोगों को स्ट्राइक पसन्द न हो तो आपको भी उसी तरह से करना चाहिए।

अब आज मैं आया तो मेरे पास सोशलिस्ट लीडर अशोक मेहता की एक चिट्ठी आई कि पोर्ट ट्रस्ट में तीन हफ्ते हड़ताल चली है। अब आप इस चीज में इन्साफ कराने के लिए मदद कीजिए। अब मैं क्या करूँ ? अब मैं उसे चिट्ठी लिखनेवाला हूँ कि यह तो गवर्नमेंट आफ इंडिया का काम है। यह प्रान्तीय गवर्नमेंट का काम नहीं है। इसलिए हम उनको बराबर इन्साफ देंगे। क्योंकि हमारे कम्यूनिकेशन के मिनिस्टर डा० जान मथाई मजदूरों की तरफ काफी हमदर्दी रखते हैं। लेकिन वह भी तंग आ गए हैं और वह भी कहते हैं कि अब तो कोई रास्ता निकालना चाहिए। मैंने कहा कि एक ही रास्ता है, वह यह



सरदार पटेल जनता के नमस्कार का उत्तर देते हुए

कि निश्चय कर लो कि स्ट्राइक तो हम कभी वर्दाश्त नहीं करेंगे। तब यह काम होगा। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक हम गलत रास्ते पर चलते रहेंगे। यह यूटिलिटी सर्विस (जनोपयोगी सेवा) है और जाहिर काम के लिए पोर्ट ट्रस्ट है। मजदूरों के लिए ही तो वहाँ अनाज आता है। लोग भूखों मरते हैं, राशन शाप पर अनाज हमें पहुँचाना ही है। मजदूर हड़ताल करके बैठें तो वाहर से आनेवाला अनाज बोट में ही पड़ा रहेगा। तो हम क्या करें ? क्या हम बैठे रहें ? सोशलिस्ट भाई की वात मान लें ? तो हमने मजदूरों की एक नई लेबर फौज भर्ती कर ली, और उनसे कहा कि आप लोगों को काम करना पड़ेगा। इस तरह हमने एक छोटी-सी फौज बनाई है। हमने उन लोगों को भेज दिया कि जाओ काम करो। अब काम तो चलता है। लेकिन अब यह चिट्ठी आई है, तब हमें क्या करना चाहिए ? तब मैंने सोचा कि अब एक ही जवाब देना चाहिए कि यह जो मजदूर स्ट्राइक करने गए हैं, उनकी जगह हम दूसरों को भर्ती करनेवाले हैं। उनको निकाल देंगे तो उसका बोझ आप पर पड़ेगा। क्योंकि या तो हमको गवर्नमेंट आफ इंडिया छोड़ देनी चाहिए। बम्बई गवर्नमेंट चाहे, तो छोड़ सकती है, हम नहीं छोड़ेंगे। हम ऐसा नहीं करेंगे। यह बहुत बुरा काम है, यह लीडरशिप नहीं है। इसी तरह की बातों से हिन्दुस्तान का सत्यानाश होनेवाला है।

जितने लोग सोशलिस्ट का लेबिल लगाते हैं, वे सब सोशलिस्ट हैं ऐसा न मानिए। जितने लोग कैपिटलिस्टों के दोस्त हैं, उनके साथ घूमते हैं, उन सबको कैपिटलिस्ट का एजेंट कह दिया जाता है, परन्तु उससे काम खतम नहीं होता। लेकिन मैंने कलकत्ता में भी कहा था कि मैं सोशलिस्ट का लेबिल तो नहीं लगाता, लेकिन मैं अपनी कोई प्रौपर्टी (जायदाद) नहीं रखता। जब से गान्धी जी का साथ हुआ, तभी से। और मैं भी आपके साथ सोशलिस्ट में था। उससे भी आगे जाना हो तो उसमें मुकाबिला करने को तैयार हूँ। लेकिन हिन्दुस्तान की वरवादी होने के काम में मैं कभी साथ नहीं दूंगा। उसमें आप कहें कि मैं कैपिटलिस्ट का एजेंट हूँ, जो चाहें सो नाम लगाइए, लेकिन मैं इस रास्ते पर हिन्दुस्तान को नहीं चलने दूँगा। जब तक मैं बैठा हूँ, मैं ऐसा हरगिज़ नहीं होने दूँगा। मुझे तो बड़ा अफसोस होता है कि हम लोग कहाँ जा रहे हैं। सवाल यह है कि अब हमें क्या करना चाहिए। एक तो हमने हिन्दुस्तान का दो टुकड़ा किया। उसके बाद हमारे मुल्क में यह हालत

थी कि सल्तनत जब चली गई, तो यह कह कर गई कि भारत में जो सार्व-भौम सत्ता थी, वह खत्म हो गई और जो पैरामाउन्सी थी, वह हवा में उड़ गई। तो हमारे मुल्क में पाँच सौ राजा पड़े हैं, क्योंकि यहाँ इतनी रियासतें हैं। इनमें बहुत से लोगों को लगा कि अब क्या होगा; अँग्रेज तो चले गए। बहुत-से सोचने लगे कि राजस्थान बनाओ और उसमें काफी कोशिश हुई। अगर अलग राजस्थान बन जाता, तो वह पाकिस्तान से भी बुरी चीज थी। हमने तो हिंदुस्तान गँवाया ही इसी कारण से कि अनेक अलग-अलग राज्य एक नहीं हो सकते थे। अब हमें फिर से उसे नहीं गवाँना है। इसलिए साथ-साथ दो-चार महीने में यह भी काम करना था कि हिन्दुस्तान को संगठित करके सब राजाओं को भी साथ ले लें। आप देखते हैं कि हमने यही काम कर लिया। दो-तीन राज्यों के साथ झगड़ा चलता है, उसका भी फैसला हो जाएगा और ठीक तरह से हो जाएगा। उसमें मुझे कोई शंका नहीं है। लेकिन जब मैंने यह काम किया तो कई लोग कहने लगे कि भई, यह तो राजाओं का दोस्त हो गया; कैपिटलिस्ट का दोस्त तो मैं पहले ही था, अब राजाओं का भी दोस्त हो गया। ४८ घंटों में चालीस रियासतें मैंने खत्म की। तब वे लोग कहने लगे कि यह क्या चीज़ बनी! तो काम तो दिमाग से होता है और जिस समय मौका आता है, उस समय काम होता है। जब फल पकता है, तब उसमें मिठास आती है। लेकिन कच्चा खाओ तो दाँत खट्टे हो जाएँगे, और पेट खराब हो जाएगा। इस तरह से यह सब भी हमने चार महीने में कर लिया।

अब हमें क्या करना है? अब करने का काम यह है कि हमें हिन्दुस्तान को उठाना है और दुनिया के और उन्नत मुल्कों के साथ उसको रखना है। उसके लिए आज हिन्दुस्तान में किस चीज की जरूरत है? एक, मैंने जो कहा और जिसके लिए गान्धीजी फाका कर रहे हैं, उस चीज की हमें पूरी जरूरत है। हमें गुस्से पर, अपने मिजाज पर, काबू रखना है कि इधर हिन्दुस्तान में कोई फसाद न हो। आज मैं एक प्रेस कांफ्रेंस में गया था। एक आदमी ने सवाल पूछा कि जितने हिन्दू और सिक्ख वहाँ से निकालते हैं, उतने मुसलमान हम इधर से निकालें कि नहीं? अब इस तरह से हमारा दिमाग चलेगा, तो हमारा काम नहीं होगा। जितने मुसलमान इधर पड़े हैं, उन सबको चैन से रहने दो। यदि उनको जाना पड़े, तो अपने कर्म से जाना पड़े, हमारे कर्म से

नहीं। यदि वह गल्ती करेगा, तो उसको जाना ही पड़ेगा। लेकिन यदि वह वफादारी से हमारे यहाँ रहे, तो हमें उसपर पूरा भरोसा करना चाहिए। जैसा हमारा रहने का अधिकार है, इसी तरह से उसका भी है। उनको दिल की पूरी अमन और चैन से यहाँ रहना चाहिए। चन्द मुसलमानों को मार देने से मुल्क का कोई फायदा न होगा। इससे मुल्क का बुरा होगा, नुकसान होगा। यह चीज़ हमको छोड़ देनी चाहिए। यही मैं मुसलमानों से भी कहता हूँ और कभी-कभी कड़ी भाषा में भी कहता हूँ। लेकिन कई मुसलमान समझने लगे कि यह हमारा दुश्मन है। तो मैं कहता हूँ कि गान्धी भी तो एनेमी नम्बर १ था। वैसे ही मैं भी हूँ। लेकिन जैसे गान्धी आज उनका सबसे बड़ा मित्र है, ऐसा ही मैं भी हूँ, यह आप समझ लीजिए। क्योंकि मैं कोई बात छिपाऊँगा नहीं। मैं साफ सुनाऊँगा। यदि मैं छिपाऊँगा तो वह आपसे दगा करना होगा। तब मैं दगाबाज हो जाऊँगा। मैं दगाबाज नहीं होना चाहता। तो आप ऐसी बात न समझें। जो बात मैं कहता हूँ, उससे आपको थोड़ा सा बुरा या कटु भी लगे, तो हजम कर लीजिए। लेकिन मेरी बात समझ लीजिए।

तो एक चीज तो हमें वही करनी है, जो गान्धी जी चाहते हैं। वह यह कि इस तरफ हिन्दोस्तान में कोई गड़बड़ न करो। पाकिस्तान में कुछ हो, तो उसका बदला हम इधर न लें। बुरी चीज में मुकाबला न करो' भली चीज़ में मुकाबला करो। गान्धीजी जितना कहते हैं, अगर वहाँ तक नहीं जा सके, तो जो मैं कहता हूँ और जवाहरलाल कहता है, वहाँ तक तो चलो। गान्धी जी के साथ तो आप जाकर नहीं बैठ सकते हो, मैं भी नहीं बैठ सकता हूँ। मैं भी कहता हूँ कि मुझे राज्य चलाना है, बन्दूक रखनी है, तोप रखनी है, आर्मी रखनी है। गान्धी जी कहते हैं कि कोई न करो। तो वह मैं नहीं कर सकता हूँ। और मुझे ऐसी आर्मी रखनी है, जिससे हमारे सामने कोई नज़र न रख सके, इस तरह की मजबूत आर्मी मुझे रखनी है। नहीं तो मुझे इधर से हट जाना चाहिए। मुझे यह चीज़ नहीं चाहिए। क्योंकि मैं तीस करोड़ का ट्रस्टी हो गया हूँ। मेरी जिम्मेवारी है कि मैं सबकी रक्षा करूँ। तो इस तरह मुझे करना है। गान्धी जी जिस तरह करना चाहते हैं, उस तरह तो मैं नहीं कर सकता। लेकिन गान्धी जी भी यह अच्छी तरह समझते हैं, मैं उनको भी कहता हूँ कि भाई, मैं तो हुकूमत लेकर बैठा हूँ। मेरे पर हमला

होगा मैं उसे बर्दाश्त नहीं करूँगा। क्योंकि मेरी ज़िम्मेवारी है। वह समझते हैं कि यह ठीक कहता है। यह हँसने की बात नहीं है। मैंने बार-बार उनके साथ बात की है। उन्होंने मुझसे कहा, "मैं तो ऐसे ही करूँगा। आप अपने रास्ते चलिए। मेरा रास्ता अच्छा है, यह मैं जानता हूँ।"

मैंने कहा—"मैं भी जानता हूँ कि आपका रास्ता अच्छा है। लेकिन वहाँ तक मैं नहीं जा पाता हूँ।"

लेकिन जो रास्ता इधर बताया जाता है कि हिन्दू वहाँ से निकाले जाएँ, तो उतने मुसलमान इधर से निकालने ठीक नहीं हैं। और यह भी है कि लड़ना हो, तो लड़ाई का मैदान और लड़ाई का मौका होना चाहिए। सब चीज़ हमारे साथ होनी चाहिए। हमारे पास लड़ाई का सामान पूरा होना चाहिए, कि घाटा न पड़े। यह सब चीज़ ठीक करके काम करना चाहिए। तो गवर्नमेंट जो पार्टी चलाती है, वह तरीके से काम करती है। पागलों की तरह काम करेगी, तो हार जाएगी। तो यह चीज़ करने की है कि यह जो हमारा हिन्दुस्तान है, उसमें अब कोई गड़बड़ न करो। मेहरबानी करके अब हमको काम करने का मौका दो। अब ५० लाख तो हम निकाल लाए। जो चन्द २५, ३० हजार आदमी फ्रांटियर में पड़े हैं और सात-आठ लाख सिन्ध में पड़े हैं, उनको आराम से ले आने की मेरी कोशिश है। इसमें तकलीफ तो पड़ेगी। क्योंकि पत्थर के नीचे हमारा हाथ पड़ा है। तो कुछ ठीक तरह से सँभाल कर निकालना है। उतना निकल जाए, तो पीछे कोई झगड़ा हमें नहीं रहता।

अब हमें हिन्दोस्तान की हिफाजत के लिए फौज रखनी होगी। और अगर आर्मी मजबूत न हो तो हिन्दुस्तान, आप समझ लीजिए कि, खत्म हो जायगा। तो मजबूत फौज तो हमें रखनी होगी। मजबूत फौज रखनी पड़ी, तो फौज के पीछे कितनी चीजें चाहिएं, उसका नक्शा आप के सामने होना चाहिए। और यह न हो तो फौज रखने की बातें बेकार हैं। बहुत-से लोग मुझसे कहते हैं कि भर्ती क्यों नहीं करते हो। हम भर्ती में आने के लिए तैयार हैं। लेकिन मैं भर्ती करके क्या करूँ? जितनी भर्ती करूँ, उसके पीछे कितनी चीज़ें चाहिए, उसका तो आपको ख्याल नहीं है। क्योंकि खाली आदमी भर्ती करने से काम नहीं होता। हिन्दुस्तान की पिछली सरकार ने पिछली लड़ाई में २५ लाख आदमी भर्ती में लिए थे। लेकिन करोड़ों-अरबों रुपयों का खर्च हुआ था। जब

लड़ाई चलती थी तो एक घंटे की स्ट्राइक भी किसी कारखाने में नहीं हो सकती थी। और यह सब लोग जो आज स्ट्राइक की बात करते हैं, उन दिनों नहीं कर सकते थे।

लड़ाई के दिनों में हमारे कम्यूनिस्ट भाई कहते थे कि "ज्यादा पैदा करो और स्ट्राइक न करो!" आज कहते हैं कि "बैठ जाओ और कम पैदा करो!" क्योंकि आज कोई पकड़नेवाला नहीं है; क्योंकि आज कोई लाठी नहीं चलाता। वह लड़ाई पीपुल्स वार (जनता का युद्ध) हो गई थी। अब क्या हुआ 'पीपुल्स' का? भूखे रहो, खाओ नहीं, पैदा मत करो और बस मौज करो! ऐसा ही हुआ तो देश क्या होगा? क्योंकि इस चीज़ में आर्मी नहीं बन सकती। फौज अच्छी बनानी हो, तो हमें कितनी चीज़ें चाहिएँ? एक तो आर्म्स-एम्यूनिशन (हथियार-बारूद) चाहिए। उसके लिए फैक्टरी चाहिए। वह फैक्टरी रात-दिन चलनी चाहिएं। वह २४ घंटा चले। फौज के लिए राइफलें चाहिएँ। भर्ती करूँ, तो कहाँ से करूँ? बन्दूक देनी हो तो कहाँ से लाऊँ? मैं जाऊँ सोशलिस्ट के पास कि दो भाई? इस तरह काम नहीं बनेगा। यदि हमारी फैक्टरी हैं, तो कितनी हैं, कहाँ हैं, उनमें कितने काम करनेवाले हैं और उस फैक्टरी में से हम कितनी पैदावार कर सकते हैं, कितनी पैदावार बढ़ा सकते हैं, यह सब हिसाब हमारे पास है, उनके पास तो है नहीं। वह तो जानता भी नहीं है कि यह सब क्या है? सिर्फ बन्दूकें ही नहीं चाहिएँ, तोपें चाहिएँ, मशीनगनें चाहिएँ, उनके लिए बारूद-गोला चाहिए, बम चाहिए, हवाई जहाज चाहिए, बम फेंकनेवाली मशीनें चाहिएँ। उनके लिए ट्रेण्ड आदमी चाहिएँ। लेकिन मैंने कोई जगह नहीं देखी, जहाँ स्ट्राइक नहीं होती है। सब जगह पर होती है। साथ ही हमें पेट्रोल चाहिए, यह सब कहाँ से लाओगे? हमारा पेट्रोल परदेसियों की मेहरबानी पर है। कल हमारा पेट्रोल वह बन्द कर दें, तो हमारी लड़ाई खतम। पेट्रोल के बिना कुछ नहीं चल सकता। क्योंकि आज की लड़ाई ऐसी लड़ाई नहीं, जैसी पहले थी। पेट्रोल चाहिए, उसके साथ हजारों ट्रक चाहिए और ट्रक्स भी ऐसे चाहिए जो बराबर तैयार मिलें। जीप्स चाहिएँ कि बिना सड़क के भी चली जाएँ; पहाड़ के ऊपर जा सकनेवाली मोटरें चाहिएँ।

अब ये सब चीजें कहाँ से लाओगे? कहां बनती हैं इधर? और इधर हमें नए कारखाने खोलने होंगे, तो किस तरह खोलेंगे? स्ट्राइक होगी और

क्या होगा ? अब लोहा चाहिए। क्योंकि बन्दूक बनानी हो, तोप बनानी हो, सब चीज़ बनानी हो, तो स्टील चाहिए, लोहा चाहिए। टाटा का एक कारखाना हमारे हिन्दुस्तान में जमशेदपुर में है और हमने उसकी काफी मदद की है। क्योंकि हम यह समझते थे कि वह मुसीबत में था। लोहा एक नेशनल वेल्थ है, राष्ट्र की दौलत है। अगर उसको हम ठीक नहीं रखेंगे, तो हमको मुश्किल पड़ेगी। तो आज भी एक ही कारखाना है। लेकिन आज स्टील (लोहा) पर कन्ट्रोल है। आपको मालूम है कि आज मकान बनाना हो तो उसके लिए स्टील चाहिए, या लोहा चाहिए, तो नहीं मिलेगा। उस पर कन्ट्रोल है, क्योंकि हमारे पास है ही नहीं। हमारे देश में जो लोहा बनता है, वह बहुत कम बनता है। हिन्दुस्तान में ऐसे कारखाने बहुत से चाहिएँ। तो हमें लोहे के नये कारखाने बनाने हैं और बनाने के लिए हम क्या करें ? अब आप बताएँ कि बड़ा कारखाना बनाएँ, तो अभी तो जो एक ही चलता है, उसमें भी बार-बार स्ट्राइक होती है। दूसरा बनाएँगे, तो वहाँ भी स्ट्राइकें होंगी। हम बड़ी आर्मी बनाएँगे, उसके लिए पूरा कपड़ा चाहिए। हमें इधर कपड़ा न मिले तो चल सकता है, लेकिन आर्मी को हमें काश्मीर भेजना है, उसके पास भी कपड़ा न हो, तो वह पहले दिन ही मर जाएगा। क्योंकि वहाँ इतनी ठंड पड़ती है। ठंड न भी हो, तो भी आर्मी का यूनिफार्म तो चाहिए और स्पेयर (फालतू) भी चाहिए। यह सब चीज़ें पहले से हमें सोचनी पड़ेंगी। अब वह कहाँ बने ? वह घर में नहीं बन सकता। वह कारखाने में बनेगा। लेकिन कारखाने में तो स्ट्राइक करो। इस तरह कभी काम चलेगा ?

अब कितनी चीजें मैं आपके सामने रखूं ? फौज को खुराक चाहिए। खुराक रेल की मार्फत पहुँचती है। आर्मी की सब चीजें रेल में जाएँगी। हाँ, पे कमीशन की रिपोर्ट आई कि रेलवे मैन को इतनी तनख्वाह दी जाए। अब तो भाई, भाव बढ़ गया है, अब ज्यादा न बने तो करो स्ट्राइक। बस सारा काम अटक पड़ा। मैं सिर्फ एक ही चीज़ नहीं देखता हूँ, सभी कुछ देखता हूँ। अब आप गवर्नमेंट में तो न आए, पर गवर्नमेंट के जो नौकर हैं, उनमें आ घुसे और गवर्नमेंट का कारखाना ही बन्द करने की कोशिश की। तो भाई तुम चाहते क्या हो ? कह दो कि हम सरकार में आना चाहते हैं, तो हम जगह दे देने के लिए तैयार हैं। ऐसी बातें क्यों कहते हो, जिसमें आपका भी काम

बिगड़ता है, हमारा भी बिगड़ता है। तो कोई हद भी है, कोई मर्यादा भी है कि कहाँ तक जाना है? अब कहते हैं कि हम तीन साल की एक ट्रूस के लिए तैयार हैं। लेकिन हम तो शर्तें लगाएँगे। राज्य हमें चलाना है, और वह कहते हैं कि इस तरह से हम चलाएँ कि बुद्धि वह दें और काम हम करें। इस तरह से काम नहीं बनेगा भाई साहब!

मैंने बहुत दफा कहा कि एक प्रान्त पसन्द करके आप ले लें और वहाँ आप चलाके बताएँ कि इस तरह से हम काम करेंगे। वह कहते हैं कि आप के दिए हम थोड़े लेंगे। आपको देने का क्या अधिकार है? हम तो छीनकर लेंगे। अच्छी बात है। इस तरह से वह एक कारपोरेशन जीतने के लिए आए हैं। हम हँस कर कहते हैं, लीजिए। स्ट्राइक हुई। कहते हैं कि कारपोरेशन का चुनाव होनेवाला है, इसलिए आए हैं। अब कितने सोशलिस्ट कारपोरेशन में थे, वह देख लीजिए। उसका इतिहास देख लीजिए कि कारपोरेशन में क्या-क्या काम उन्होंने किया। जितने और लोग कारपोरेशन में आज तक थे, जो पाँच-दस साल से वहाँ बैठे थे। उनका कारपोरेशन के काम का इतिहास देखिए। जब डिसक्वालिफ़ाई (पदायोग्य) होने का समय आए, तब जा कर हाजिरी दें। तब तक तो हाजिरी भी न दें। अब इस तरह से काम करो, तब तो क्या काम होगा? चाहो तो एक कारपोरेशन को आप सँभालो। यह तो बहुत ही अच्छी बात है। लेकिन सँभालना चाहिए। अब कहते हैं कि यह गवर्नमेंट बुरी है, ठीक काम नहीं करती है। जैसे पहले चलती थी वैसी ही है, उसमें कोई फर्क नहीं पड़ा। असल में फर्क पड़ा उनमें। दूसरों में कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि पहले वे ऐसे नहीं थे, अब हो गए हैं। तभी तो उनको कांग्रेस में से निकालना पड़ा। कहते हैं कि हम कांग्रेस में से इस्तीफा देंगे। अच्छी बात है, दो। जो लोग कांग्रेस में काम करेंगे, काम का बोझ तो उनके ऊपर पड़नेवाला है। मुझे दिल में खटका रहता है कि यह क्या हो रहा है।

मैं आप लोगों को यह समझाना चाहता हूँ कि कारखाने अब हमारे हैं और हमें ज्यादा पैदा करना है। तब कहते हैं कि नेशनलाइज़ (राष्ट्रीयकरण) करो। यह तो कैपिटलिस्ट लोग धन पैदा करके ले जाएँगे। आपने हिसाब नहीं देखा कि हम कितना रुपया टैक्स में लेते हैं? १६ आना में हम साढ़े पन्द्रह आना तक टैक्स ले लेते हैं। तो कैपिटलिस्ट लोग हमसे कहते हैं कि हम क्यों

पैदा करें ? हमारे बजट में पिछली दफा हमने इतना टैक्स लगाया कि उनको चोट लगी। तो इस हालत में हमें काम करना है। यदि देश को अपना नहीं समझना, तब तो आप भूल जाइए कि हमने स्वराज्य क्यों लिया है। या फिर अँग्रेज़ों को पीछे बुला लो। या किसी दूसरे को राज दे दो कि हमारे काम की बात नहीं है। नेशनेलाइज़ेशन ठीक बात है। कराची कांग्रेस से हमारा रेज़ोल्यूशन है कि सब इंडस्ट्री नेशनेलाइज़ करना है। लेकिन यह तो रेज़ोल्यूशन है। हम कौन-सी चीज करके बताते हैं, वह हमें पहले देखना चाहिए। कोई काम करता है, तो उसको काम न करने दो और आप खुद भी काम न करो। इस तरह करने से तो कोई काम नहीं होता। यदि गवर्नमेंट इतनी ताकत रखती है कि सिलेक्ट इंडस्ट्री (चुना हुआ व्यवसाय) बनाए, तो उसे बनानी चाहिए। कांग्रेस का भी तो यही मकसद है। सरकार कोशिश भी करती है कि हमें सिलेक्ट इंडस्ट्री अपनी बनानी है। जैसे टाटा ने कारखाना बनाया है, वह हम भी बनाएँ। क्यों न बनाएँ ? और खुद टाटा भी कहता है कि आप बनाइए। क्योंकि हमारे पास तो जगह बहुत है। लेकिन गवर्नमेंट के पास, हमारे पास रिसोर्सेज़ (साधन) नहीं हैं, इतनी ताकत नहीं है, इतने आदमी नहीं हैं।

हमारी गवर्नमेंट का कल ही तो जन्म हुआ है। हमारी सरकार तो अभी चार महीने का बच्चा है। उसके ऊपर सब बोझ डालो, तो वह गिर जायगा। तो जितने हमारे लोग बुद्धिमान हैं, जिनके पास अनुभव है, उसका उपयोग भी हमें करना है। मुल्क के फायदे के लिए जितना और जहाँ तक हो सके, कोशिश करके उनको भी साथ लेना है। हमारी कोशिश तो यह है कि नेश-नैलाइज़ करना सम्भव हो, तो हम वह भी करें। और वह न हो सके तो जितने और लोग अनुभववाले हैं, उनको साथ लेकर जहाँ तक उनको समझावें वहाँ तक समझा कर साथ लें, और मजदूरों को भी समझाने की कोशिश करें। मैं जो कहता हूँ, उसका मतलब यह नहीं कि मजदूरों को न्याय से जो देना हो वह नहीं देना। वह उन्हें ज़रूर देना चाहिए। क्योंकि उन्हें उनका भाग पूरा नहीं मिलेगा, तो वे अपने दिल से काम नहीं कर सकेंगे।

लेकिन नेशनलाइज़ करनेवाले लोग कहते हैं कि आप देखें कि इंग्लैण्ड में क्या हाल है। मैं कहता हूँ देखिए, आज इंग्लैण्ड के मजदूर के अपने हाथ में राज्य है। वह समझ गए हैं कि इस तरह से तो हमारा काम नहीं चलेगा, तो खुद ज्यादा काम करते हैं। "ज्यादा

पैदा करो ?" यह उनका स्लोगन (नारा) है । "ज्यादा पैदा करो और स्ट्राइक न करो।" और दोनों मिलकर आज इस तरह से काम करते हैं कि आज वहाँ प्रोडक्शन (उत्पादन) वढ़ गया है। अब हम तो स्ट्राइक के बाद तनख्वाह बढ़ाएँ, लेकिन तनख्वाह बढ़ाने के बाद काम बढ़ाने की बात नहीं बनती। यह तो उल्टी बातें करते हैं। ऐसा ही रहा तो हम गिर जानेवाले हैं। तो मैं आप लोगों को यह समझाना चाहता हूँ कि यदि हम इस चीज़ को नहीं समझेंगे, तो हमारा काम कभी न बनेगा । हम अब ज्यादा बोझ नहीं खेंच सकते हैं। और चन्द दिन खींचे, तो भी वह काम नहीं चलेगा। लेकिन हम चाहते हैं कि यह चीज़ सब समझें कि जब तक हमारे मुल्क का प्रोडक्शन नहीं बढ़ेगा, जब तक हमारा मुल्क ज्यादा धन नहीं पैदा करेगा, तब तक हम उठ नहीं सकेंगे। क्योंकि हमारा मुल्क बहुत गिरा है। यह शायद आपको मालूम नहीं। हम पहले तो कर्जदार थे, आज हम लेनदार हैं। लेकिन लेनदार होते हुए हमारी हालत कर्जदार से बुरी हो गई है। क्योंकि कर्जा तो मिलनेवाला नहीं है और कर्जा तो खून का बूंद-बूंद निकाल कर ले गया लेने वाला। अब हम मुर्दार पड़े हैं। इतना नासिक में नोट छाप-छाप के रुपया तो बनाया। खूब इंफ्लेशन कर दिया। उसका असर आज हमारे ऊपर पड़ रहा है। हमारी इकोनॉमी (आर्थिक व्यवस्था) पर। बहुत गिर गए हैं हम। उसका किसी को ख्याल नहीं है। तो मैं यह चाहता हूँ कि मैं जो बात करता हूँ, उसको अच्छी तरह से सद्भाव से समझ लो। मैं आपकी कोई बुराई नहीं करना चाहता। लेकिन मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि इस तरह से आप गलत काम करते रहेंगे, तो मुल्क को तो नुकसान ही होने वाला है, फायदा नहीं होगा।

जब पंडित नेहरू ने यह कहा कि तीन साल का ट्रूस करो, तो आप को समझना चाहिए कि वह तो कोई आप से कम दर्जे का सोशलिस्ट नहीं है। मुझको आप कहो कि मैं कैपिटलिस्ट का एजेंट हूँ। मुझे आप सब चीज़ कह सकते हो। क्योंकि मुझको तो आप जानते ही नहीं हैं। लेकिन उनको आप यह नहीं कह सकते हैं। जब उसने कहा कि ट्रूस करो, तो दूसरे ही दिन आपने वह ट्रूस तोड़ दिया। अब वह तो कांग्रेस में से निकल जाते हैं। ठीक है निकल जाओ लेकिन आप लोगों का काम है कि कांग्रेस को कमजोर न होने दें। कांग्रेस ने तो अभी आपको आजाद ही कराया है। असली काम तो अब हमें शुरू करना है। मुल्क में से परदेसी हुकमत हट जाने से हमको मौका मिला है कि हम

जैसा चाहें, वैसा भविष्य बना सकें। अच्छा भविष्य बनाने के काम में अगर आप हट जाएँ और साथ न दें, तो यह काम बिगाड़ देनेवाली बात है।

तो बम्बई में आपको इस प्रकार की आबोहवा पैदा करनी चाहिए। आज मैंने देखा तो मुझे दुख हुआ कि यहाँ जो हमारे धनिक लोग हैं, कैपिटलिस्ट हैं, उनको गवर्नमेंट का जितना और जिस प्रकार साथ देना चाहिए, उनके और सरकार के बीच जो सहयोग होना चाहिए, मेल होना चाहिए, वह नहीं है। कांग्रेस और गवर्नमेंट के बीच में जिस प्रकार का मेल होना चाहिए, वह भी मैं यहाँ नहीं देखता हूँ और लोगों का सरकार के साथ जिस प्रकार का सहयोग होना चाहिए, वह भी मैं नहीं देखता हूँ। मैं तो बम्बई में बहुत दिनों बाद आया हूँ। मुझे लगता है कि बम्बई शिथिल हो गया है।

किसी ने यह समझ लिया कि १५ अगस्त को हमको आजादी मिल गई, अब क्या बाकी है। अब जो चाहे सो करो। तो मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि बम्बई गिर जाएगा। बम्बई का आज हिन्दोस्तान में पहला नम्बर है, जिस तरह अभी तक हिन्दोस्तान समझता है कि बम्बई से ही सब पौलिसी चलती है, तो आपकी वह जगह गिर जाएगी। तो आजकल यहाँ हमारे भाई डा० श्यामाप्रसाद इसलिए आनेवाले हैं कि कपड़े के कंट्रोल का क्या किया जाए। उसको ज्यादा पैदा करने के लिए क्या किया जाए, उसके दाम का क्या किया जाए। उसके लेबर का, और उद्योगवालों का क्या किया जाए, इस सब पर हमें विचार करना है। उन्होंने मेरी मदद माँगी तो मैं उनका साथ देने के लिये आया हूँ। लेकिन यदि आप लोग साथ न दें, तो वह चीज नहीं चल सकेगी। तो मैंने आपको जो इतनी बातें समझाई हैं, उन पर आप ख्याल रखें और यह समझें कि यह सब बातें आपको ज़रूर करनी हैं। अगर बम्बई गलत रास्ते पर चलता है, तो उसका बोझ भी आप पर ही पड़ेगा और उसका नुकसान भी आप ही को उठाना पड़ेगा। बम्बई सही रास्ते पर चलेगा, तो उसका फायदा भी आपको मिलेगा और उसमें आपकी इज्जत भी बढ़ेगी। मैं चाहता हूँ कि बम्बई अपने सही रास्ते से विचलित न हो जाए। ईश्वर आप को सफलता दे। धन्यवाद !

———

(४)

शिवाजी पार्क, बम्बई

१८ जनवरी, १९४८

बहनो और भाइयो,

कल चौपाटी पर जो सभा हुई थी, उसमें मैंने बहुत-सी बातें कह दी थीं और आप लोगों ने वे बातें समझ भी ली होंगी। क्योंकि या तो रेडियो आपने सुना होगा और या अखबारों में देख लिया होगा। जैसा भाई पाटिल ने आपको बताया, कल हमारे दिलों में बहुत दर्द भरा हुआ था। आज हमारा दर्द कुछ कम हुआ है, क्योंकि गान्धी जी का उपवास टूट गया है। लेकिन तो भी यह तो हमारे ही कामों का नतीजा है कि उनको हम ऐसी हालत में रख देते हैं कि उनको उपवास करना पड़ता है। वह दर्द तो हमको हो ही जाता है। क्योंकि जब गान्धी जी उपवास करते हैं तो यह चीज़ कोई हिन्दुस्तान में ही नहीं रहती है। यह सारी दुनिया में फैल जाती है। तब सारी दुनिया सोचने लगती है कि कोई ऐसी चीज है, जिसके लिए इस महान पुरुष को उपवास करना पड़ता है। क्योंकि आज के युग में सारी दुनिया मानती है कि वह सबसे बड़ी हस्ती है। दुनिया में जो एक ऐसा महान पुरुष है, उसको उपवास क्यों करना पड़ता है? सो हम चाहते हैं कि वैसा मौका फिर पैदा न हो कि उनको फाका करना पड़े।

अब गान्धी जी का फाका छूट गया, तो यह बहुत खुशी की बात है। लेकिन

फाका छूटने के बाद भी, अगर वे कारण कायम रहे, जिन के लिए उनको फाका करना पड़ा, तो वह उससे भी बुरा होगा। तो उसके लिए उसका रहस्य हमें समझ लेना चाहिए। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि जो कुछ आज हुआ, वह तो हो गया। लेकिन अब हमें हिन्दुस्तान में कम-से-कम इतनी आबो-हवा ज़रूर पैदा कर लेनी चाहिए कि यहाँ दो कौमों के बीच जो ज़हर भरा है, वह निकल जाए। हिन्दुस्तान में रहनेवाले सिक्ख, हिन्दू तथा मुसलमान दोनों के बीच दोनों के हितों में, जो अन्तर बन गया है, वह टूट जाए और वे एक दूसरे के साथ मिलकर रहें, ऐसी आबोहवा हमें पैदा करनी चाहिए। मैं जानता हूँ कि यह काम कठिन है, आसान नहीं है। क्योंकि जो हालत वहां पाकिस्तान में बनती है, उसका कुछ-न-कुछ असर हमारे मुल्क पर पड़ता ही है। लेकिन जब हमने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े मंजूर कर लिए, तो हमें समझना चाहिए कि वहाँ कुछ भी हो इधर हमारी जो ज़िम्मेवारी है, वह हमको अदा करनी ही है। अगर हम उसे अदा न करें, तो हमारा काम नहीं चलेगा।

तो आज उसके बारे में मैं ज्यादा नहीं कहूँगा। लेकिन मैं एक बात ज़रूर कहना चाहता हूँ, जो आपको अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए। आपने आज़ादी हासिल की, मुल्क को परदेसी हुकूमत में से मुक्त किया। लेकिन इतनी कुर्बानी करने के बाद हमारा उद्देश्य तो पूरा हो गया, तब भी जितनी खुशी हम लोगों को होनी चाहिए, वह हमें नहीं हुई। उसका कारण यह है कि एक तरह से हमने आज़ादी तो पाई। लेकिन उसके बाद हिन्दुस्तान को जिस रास्ते पर हमें ले जाना था, उस रास्ते पर हम उसे ले नहीं जा सके। जिस प्रकार का हमारा स्वराज्य होना चाहिए था, वैसा हम बना नहीं सके। तो हमारे चन्द लोग यह बात नहीं समझते हैं और कहते हैं कि यह राज तो वैसे ही चलता है, जैसे पुराना राज चलता था। कई नवजवान कहते हैं कि यह राज चलाने वाले धनिकों के हाथ में पड़े हैं। यह तो कैपिटलिस्ट (पूंजीपति) की गवर्नमेंट है। वह लोग नहीं समझते हैं कि हम लोगों ने इतने थोड़े समय में कितना काम किया है।

मैंने चन्द बातें कल बताई थीं कि हमने क्या-क्या किया और कितने रोज़ में किया। हमने १५ अगस्त को पावर (शक्ति) ली। उसे अभी ५ महीने से ज्यादा नहीं हुआ। अब इन पाँच महीनों में हमने जो काम किया, वह मैंने मुख्तसिर तौर पर बताया कि हमने दो प्रान्तों के टुकड़े किए

और हमारी जो माल-मिलकियत थी, सारी हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट की जो जगह थी, जो जागीर थी, उस सबका टुकड़ा किया और उसे आपस में बैठ कर बांट लिया। हमें किसी अदालत में नहीं जाना पड़ा, कोई पंच नहीं करना पड़ा। हमने आपस में बैठकर सब तै कर लिया। इसी बीच में हमने लाखों आदमियों की अदला-बदली कर ली। यह सब हमने बड़ी मुसीबत की हालत में किया, क्योंकि हमने बैठकर आपस में समझौता करके लोगों की अदला-बदली नहीं की। यहाँ तो लोगों को जबरदस्ती भागना पड़ा, अपनी खुशी से जाने का मौका नहीं मिला। उसमें लोगों पर बहुत संकट आया। हमको भी बहुत परेशानी हुई। भाग-भागकर लोग दिल्ली में आए और दिल्ली में भी ऐसी हालत पैदा हो गई कि हमारे लिये राज चलाना भी मुश्किल हो गया। अब यह सब बातें तो हुईं। लेकिन जो और बातें हुईं, और जो मैंने कल नहीं कही थी, वह मैं आज आप से कहना चाहता हूँ।

हमारी राज चलाने की जो सर्विस थी, जो नौकर वर्ग उसमें थे, उनका भी हमें दो हिस्सा करना पड़ा। जो अमलदार वर्ग थे और छोटे-छोटे नौकर थे, उन सब का भी हमें दो हिस्सा करना पड़ा। तो जितने मुसलमान थे, वे तो भागकर उस तरफ चले गए और जितने हिन्दू और सिक्ख थे, वे इस तरफ आ गए। हमारी तरफ तो कुछ मुसलमान रहे भी, लेकिन वहाँ तो कोई भी नहीं रहा। गवर्नर जेनरल से लेकर चपरासी तक देश में जितने आफिसर और नौकर थे, उन सब को कहा गया कि आप पसन्द कर लीजिए कि आपको कहां जाना है। तो अपनी ओर जितने मुसलमान यहाँ थे, उन में से ज्यादातर अपनी पसन्दगी से वहां चले गए। लेकिन हिन्दू-सिख तो उधर एक भी न रहे। सब-के-सब चले आए। कितने ही सालों से अँग्रेज़ों ने हमारी हुकूमत चलाने के लिए एक तन्त्र बनाया था, जिसको 'लोहे की चौखटी' यानी 'स्टील फ्रेम' कहते हैं। यह वज्र का बना हुआ एक फ्रेम था, जिसको सिविल सर्विस कहते हैं। यह कोई पन्द्रह सौ आदमियों की एक सर्विस थी। यह पन्द्रह सौ अफ़सर सारे हिन्दुस्तान का राज्य चलाते थे। बहुत साल से और बड़ी मजबूती से वह राज्य चला रहे थे। जब यह फैसला हुआ, तब हमारे पास पन्द्रह सौ आफिसर थे। उसमें २५ फी सदी अँग्रेज थे। वे सभी तो भागकर चले गए। कोई दो-तीन फी सदी रहे हों, तो वे भी चलते चले गए। तो वह जो फ्रेम था, आधा तो टूट गया। अब जो बाकी रहा, उसमें से जितने मुसलमान थे, वह सब भी चले गए। उनमें से

चन्द लोग यहाँ रहे, बाकी सब चले गए। आज़ादी प्राप्त कर लेने के बाद हमारा और मुल्कों के साथ व्यवहार शुरू हुआ और बड़े-बड़े देशों में हमें अपने एलची भेजने पड़े। उन एलचियों के साथ अच्छे-अच्छे चुनिन्दे आफिसर भी हमें भेजने पड़े। नतीजा यह हुआ है कि आज हमारे पास पुरानी सर्विस के लोगों का सिर्फ चौथा हिस्सा बच रहा है, और इसी २५ फी सदी सर्विस से हम हिन्दुस्तान का सारा कारोबार चला रहे हैं। नई सर्विस तो हमारे पास कोई है नहीं। वह तो हमें बनानी पड़ेगी। इस तरह से तो लोग मिलते नहीं, और जिसके पास अनुभव नहीं है, जिसने कभी काम नहीं किया, वैसे आदमियों को ले लेने से तो काम चलता नहीं है।

राज चलाने के तन्त्र का तीन हिस्सा टूट गया। सिर्फ चौथा हिस्सा बाकी रहा है, और उसी से हम काम चला रहे हैं। इस पर भी पिछले चार पाँच महीनों में हमने इतना काम कर लिया। और साथ-ही-साथ कांस्टीच्यूएन्ट असेम्बली में हमारा जो नया संविधान बनाने को है, वह करीब-करीब सब पूरा कर लिया है। खाली उसको अच्छी तरह से कानून के रूप में रखने का काम ही बाकी बच रहा है। संविधान के सब सिद्धान्त हमने तै कर लिए हैं। वह भी तो बहुत बड़ा काम था, वह हमने पूरा कर लिया।

जब हमने चार-पाँच महीने में इतना काम कर लिया, तो जो भाई कहते हैं कि आप लोग तो पुराने ढब से काम करते हैं और अगर आप इसी तरह से काम चलाएँगे, तो हम उसको पसन्द नहीं करेंगे और कांग्रेस में से निकल जाएँगे, तो वह क्या ठीक है? अगर वे निकल जाएँगे और मुल्क की बदकिस्मती होगी, तो सम्भव है कि कांग्रेस टूट जाए। हो सकता है कि हम भी उन से आजिजी करें कि भाई, हमारे साथ रहो। लेकिन हमारी समझ में नहीं आता कि यह क्या बात है कि कुछ लोग अपनी आँख से देखते हुए भी कि मुल्क में इतना कुछ हो रहा है, यह अनुभव नहीं करते कि उसमें हमारी भी कोई जिम्मेवारी है। उन्हें यह सोचना चाहिए कि बोझ उठाने में उनका भी कोई हिस्सा होना चाहिए, न कि जो लोग बोझ उठाते हैं खाली उनकी पीठ पर गाली ठोकते रहना ही उनका काम है। जब मुल्क का टुकड़ा हुआ तो आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी में सब की राय ली गई कि पाकिस्तान को हिन्दुस्तान से अलग करना चाहिए या नहीं। तो उस वक्त जो लोग अपनी राय न बना सके, अब वे लोग हमसे कहते हैं कि आप तो पुराने ढंग से राज करते हो।

हमने एक दफा फैसला किया कि मुल्क में आज अनाज का जो कंट्रोल और राशनिंग है, वह बहुत तकलीफदेह है। शहरों में तो उसकी कुछ न-कुछ ज़रूरत है, लेकिन देहात में लोगों को उससे बहुत कष्ट होता है। किसान लोग बहुत माँग करते हैं कि यह कंट्रोल हटाना चाहिए। शहर में भी बहुत-से लोग यही बात कहते हैं। हमने बार-बार प्रान्तों के वज़ीरों को बुलाया। उनसे पूछा, कांग्रेस कमेटियों से पूछा, सबसे पूछा। आखिर हमने यह भी मुनासिब समझा कि जो लोग काँग्रेस में नहीं हैं, उनकी भी राय लेनी चाहिए और जो लोग हमारी टीका करते हैं, उनकी भी राय लेनी चाहिए। तो हमने उनको बुलाया। इसी काम के लिये बड़े-बड़े व्यापारियों और उद्योगपतियों को भी बुलाया। साथ ही हमने एक कमेटी बनाई, जिसमें जो सोशलिस्ट भाई हमारी टीका करते हैं, उनके प्रतिनिधि को भी बुलाया। खुद उनके लीडर से भी हमने कहा कि भाई आप आइए। तो उसने कहा कि मैं तो नहीं आ सकता हूँ, हमारा प्रतिनिधि आएगा। तो उनका प्रतिनिधि भी आया। उस कमेटी में यह तै हुआ कि कन्ट्रोल आहिस्ता-आहिस्ता हटा देना चाहिए। लेकिन उसमें उनका जो प्रतिनिधि था, उसने कहा कि आहिस्ता आहिस्ता नहीं, आज ही हटा देना चाहिए। उसको रखना ही नहीं चाहिए।

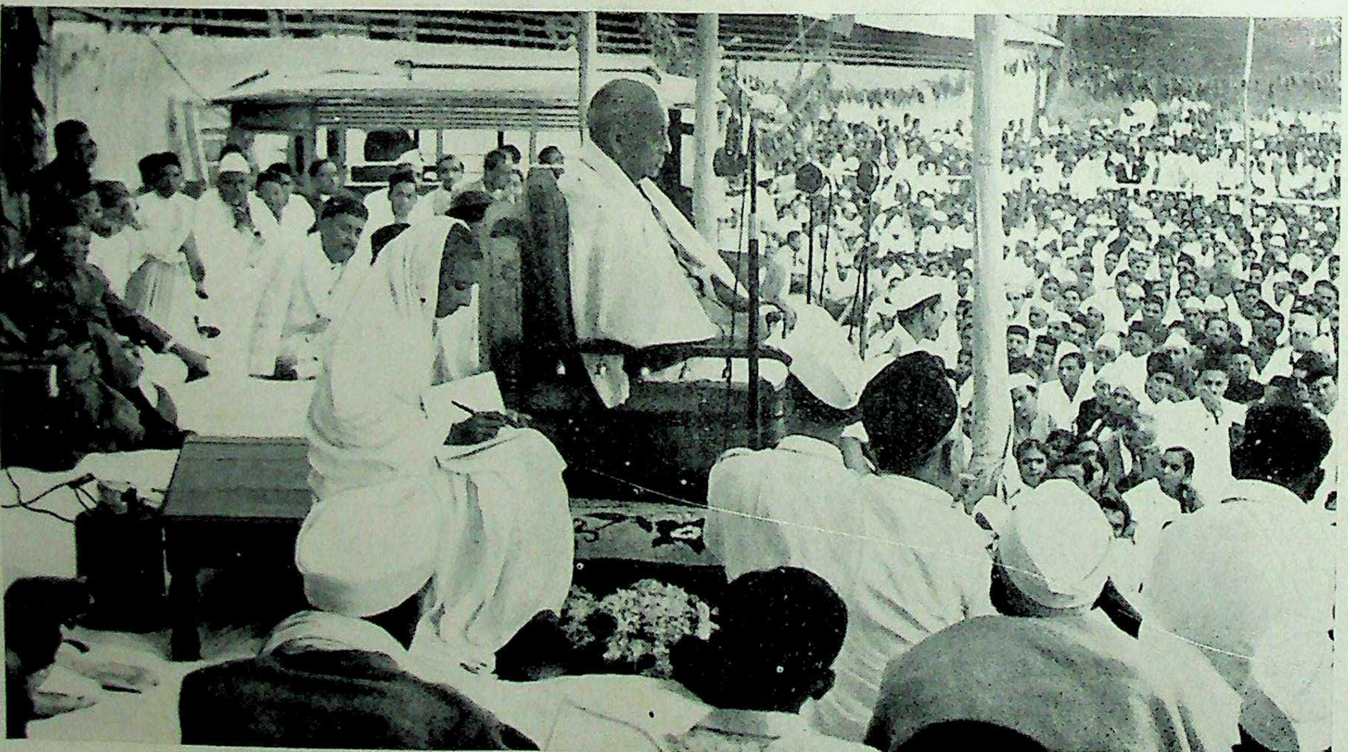
यह फैसला तो हुआ। लेकिन उसके बाद गवर्नमेंट ने फिर सोचा कि सब प्रान्तों के प्रधानों को भी बुलाना चाहिए। सो हमने सबको बुलाया। कहा कि अब यह मौका आया है कि हमें एक दफ़ा तो कन्ट्रोल हटा लेना चाहिए, पीछे जो कुछ होगा देखा जाएगा। सारे मुल्क की यही राय प्रतीत होती है कि कन्ट्रोल हटाना चाहिए। लेकिन जब हमने कन्ट्रोल हटा लिए, तो कुछ लोगों ने मिलकर बम्बई में एक प्रस्ताव पास किया कि यह बहुत बुरा किया गया है, कण्ट्रोल नहीं हटाने चाहिए। यह उनकी जिम्मेवारी और यह उनकी रेस्पांसिबिलिटी है! अब वह हमें यह कहते हैं कि आप पुराने ढंग से राज करते हो। ठीक है।

उसके बाद हमने एक कान्फ्रेन्स बुलाई कि हमारे मुल्क में अधिक दौलत पैदा होनी चाहिए। आज वह बहुत कम पैदा होती है और कारखानों में पूरा माल नहीं बनता है। जब तक उद्योगपति और मजदूर वर्ग दोनों का संगठन नहीं होगा, दोनों का मेल मिलाप नहीं होगा, दोनों आपस में मुहब्बत से काम नहीं करेंगे, तो उससे हमारा नुकसान होगा। इसलिए हमने दोनों को बुलाया, ताकि वे आपस

में मिलकर और समझ-बूझकर कुछ काम करें। इस कान्फरेंस में उनके प्रतिनिधि भी थे, कम्युनिस्ट लोग भी थे और उद्योगपति भी थे। ये सब लोग जमा हुए। तो हमारे लीडर, हमारे प्राइम मिनिस्टर पं० नेहरू ने सब को समझाया कि आज मौका ऐसा है कि हमें बार-बार स्ट्राइक (हड़ताल) नहीं करनी चाहिए। और यह भी कहा कि तीन साल के समय के लिए हम ट्रूस (सन्धि) कर लें कि इन तीन सालों में हम हड़ताल नहीं करेंगे और आपस में मिलजुल कर काम करेंगे। उसके लिए उद्योगपति को जो कुछ करना चाहिए, वह भी समझाया और मजदूर को जो कुछ करना चाहिए वह भी समझाया। सब ने मिलकर फैसला कर लिया। परन्तु उसके बाद क्या हुआ? उसके बाद वे इधर आए और इधर आकर उन्होंने प्रस्ताव किया, यह चीज़ हमको मंजूर नहीं है। हमें तो बम्बई में एक दिन की टोकन स्ट्राइक (चिह्नरूप हड़ताल) करनी चाहिए। सो इधर आकर उन्होंने टोकन स्ट्राइक की।

उसके बाद एक स्टेटमेंट (विज्ञप्ति) निकाल दिया कि अब तो बम्बई के मजदूरों के मालिक हम हैं। हम लीडर हैं, वह सिद्ध हो गया है। बस हो गया फैसला। अब तो वह कहेंगे कि हमें क्या करना चाहिए। साथ ही कहते हैं कि हम तो बाहर हैं, हम थोड़े गवर्नमेंट में हैं। तो हम चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, कि जो प्राविन्स (सूबा) तुम्हें चाहिए, हम दे देते हैं। तब कहते हैं कि आप कौन हैं देनेवाले। वह तो लोग वोट देंगे, तब देंगे। जब चुनाव खत्म होगा, तब पता लगेगा।

तो मैं कहता हूँ कि अगर हमारा काम इसी तरह चलता रहा, तो जो आज़ादी हमने पाई है, उससे कुछ भी लाभ हमको नहीं मिलेगा। वह जब एक जगह पर सरकार का बोझा उठाएँगे, तब उनको मालूम पड़ेगा यह क्या चीज़ है। गवर्नमेंट चलाने से ही मालूम होता है कि उसमें कहाँ-कहाँ काँटा लगता है, कहाँ कहाँ दुख है, और कहाँ-कहाँ क्या कुछ करना चाहिए। हमें अब समझ लेना चाहिए कि हम आज़ाद हो गए हैं, परदेसी हुकूमत से छूट गए हैं। अब हमें देखना है कि हमारा मुल्क कहाँ जा रहा है। हम अपने देश का भविष्य क्या बनाएँ, उसका नक्शा हम से लो। हम कब तक इस तरह चलाते रहेंगे और हमारा जो कुछ है, उस सब का बोझ दूसरों पर डालते रहेंगे? वह आलोचक कुछ भी कहें, लेकिन हमें रात-दिन सोचना पड़ता है कि अब हमें क्या करना है।



सरदार पटेल २२ जनवरी, १९४८ को अहमदाबाद की एक विराट सभा में भाषण देते हुए

अब मैं दो रोज से बम्बई में आया; तो इसलिए आया था कि कुछ बातें मैं आप लोगों को भी समझाऊँ। अनाज का जैसा कण्ट्रोल हमने हटाया है, ऐसा दूसरा एक कण्ट्रोल पड़ा है। वह है कपड़े का। अब कपड़े के कण्ट्रोल के लिए क्या करना चाहिए और उसमें गवर्नमेंट को क्या करना चाहिए? जो मिल-मालिक हैं, जो मजदूर वर्ग हैं, जो व्यापारी वर्ग हैं, उन सब को क्या करना चाहिए? यह सब को समझाना है, क्योंकि हमारे मुल्क में अनाज नहीं है। बम्बई शहर में तो अनाज बाहर से लाना पड़ेगा। लेकिन जो देहात हैं, अपने खाने का अनाज अपने पास रख लेते हैं, बाहर देने के लिए उनके पास कम रहता है। जो रहता है, उसका पूरा दाम हम न दें, तो फिर वे देते नहीं हैं और तब अधिक पैदा करने की कोई ख्वाहिश भी उनमें नहीं रहती है। क्योंकि पूरा दाम न मिले, तो वे पैदा क्यों करें?

इसी प्रकार हमारे मुल्क में कपड़ा भी पूरा नहीं है। तो उससे और समस्याएँ भी पैदा होती हैं, क्योंकि कपड़ा तो नहीं है। अब पाकिस्तान अलग हुआ, और कपास तो वहां ही ज्यादा पकता है। हमारे कपड़े के कारखानों को उसके आधार पर रखना पड़ता है। वह लोग वहाँ से देंगे, या नहीं देंगे? या वे हमें काफी रुई नहीं देते हैं, बाहर भेजते हैं, या बाहर भेजने का मनसूबा करते हैं, यह सब हमें सोचना है। अब वह अलग मुल्क बन गया, तो उसके ऊपर हम कहाँ तक भरोसा रखें? मान लीजिए, हमको वहाँ से रुई नहीं मिली, तो कपड़े के लिए हमें बाहर से रुई ढूंढ़नी पड़ेगी। वह हम कहां से लाएँगे? यह सब बातें हमें सोचनी हैं। लेकिन इन सब मुश्किलात के होते हुए भी हमारे पास अगर एक पूरा पिक्चर (चित्र) न हो, एक पूरे हिन्दुस्तान का चित्र हमारे सामने न हो और हम जल्दी-से-जल्दी अपनी जरूरी चीजें यहाँ ही बनाने के लिए आबोहवा पैदा न करें, तो हमारा काम चलनेवाला नहीं है और हमने जो कुछ कमाया है, वह सब गँवा देंगे। यदि हमने ऐसा किया तो हम बेवकूफ सिद्ध होंगे। इसलिए मैं जो कुछ कहता हूँ, वह किसी की टीका करने के लिए नहीं कहता, लेकिन मुझ को दर्द होता है इसलिए कहता हूँ।

हम कहाँ तक यह बोझ उठाएँ, क्योंकि मुझ को बहुत बरस हो गए। लोग ५० वर्ष के बाद पेंशन ले लेते हैं। अब मैं कहाँ तक ठहर सकूंगा? हमारी जिन्दगी की एक प्रतिज्ञा थी कि परदेसी हुकूमत उठानी है। वह काम तो पूरा हुआ। लेकिन अब दिल में एक फिकर रहती है कि यह तो किया, लेकिन अगर हमारे

नौजवानों को बिगाड़ दिया गया, तो यह बोझ वे नहीं उठा सकेंगे। इसलिए हम सब बातें कुछ-न-कुछ हद तक ठीक कर दें, यह ख्वाहिश रहती है। दूसरी ओर यह ख्वाहिश भी बहुत होती है कि किसी जगह आराम से बैठ जाऊँ। क्योंकि हमारी हिन्दू संस्कृति में यह भी एक चीज़ है कि वानप्रस्थ अवस्था आ गई, तो हमारा माला लेकर बैठ जाना उचित है। लेकिन दिल में भाला गड़ा हो, तो माला चलती ही नहीं। दिल में यह अहंकार भरा है कि ज़िन्दगी भर का हमारा जो काम है, उसे अगर हम इसी तरह फेंक देंगे, तो क्या होगा ? तो मैं अपने नौजवानों को समझाना चाहता हूँ कि हमारे दिल में जो आग जलती है, उसे उन्हें समझना चाहिए।

कल मैंने अपने नौजवानों को एक चीज़ बताई थी। वह यह कि एक दिन की हड़ताल तो आपने कर ली, परन्तु क्या इसका हिसाब आपने लगाया कि उस से कितना नुकसान हुआ ? उससे कितना कपड़ा कम पैदा हुआ ? अपने मजदूर वर्ग को यदि इसी रास्ते पर आप ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) देते रहे, तो आप का काम कैसे चलेगा ? हमारा काम तो जैसे-तैसे पूरा हो गया, लेकिन यह बोझ आपको उठाना है। आप सारी चीज़ें उठा कर मज़दूरों को दे दीजिए, इसमें भी हमें कोई इंकार नहीं है। परन्तु आपको सोचना पड़ेगा कि देश का जो बोझ आपके सिर पड़ने वाला है, उसे आप कैसे उठाएँगे ? यहाँ तो आपने एक दिन की हड़ताल की, लेकिन उधर बन्दर पर तीन सप्ताह से हड़ताल चल रही है। मुल्क में अनाज नहीं है और हमारे देहातों में और शहर में लोगों को अनाज चाहिए। मगर बन्दरगाह पर हड़ताल है। आज हमारे लोग सिन्ध से भागे-भागे आते हैं, उनको हमें अनाज देना पड़ता है, पंजाब से भागे-भागे आते हैं, उन्हें अनाज देना है। मद्रास में अनाज पूरा नहीं पकता, वहाँ लोग भूख से मरते हैं, इन सबके लिए हमें बाहर के मुल्कों से अनाज लाना पड़ता है। और जब अनाज के जहाज हमारे बन्दर पर आते हैं, तो ये मजदूरों को कहते हैं कि अनाज मत उतारो, बैठ जाओ। तो अब तीन हफ्ते से ये लोग बैठे हैं। अब हम क्या करें ?

अब यह सवाल उठता है कि इस तरह से काम होगा, तो कौन गवर्नमेंट चलने वाली है ? वह हमें सोचना पड़ेगा। प्रान्त की गवर्नमेंट तो छोड़ दीजिए। लेकिन यह पोर्ट ट्रस्ट का मामला तो सेण्ट्रल गवर्नमेंट (केन्द्रीय सरकार) का है, और हमारा जो मिनिस्टर है, वह मजदूरों पर सब से ज्यादा सहानुभूति रखने वाला है। हमने बार-बार अनुभव किया है कि उसकी सिम्पेथी (सहानुभूति) मज़-

दूरों से बहुत ज्यादा है। लेकिन असल में वह भी तंग आ गया है। अब तो उसने कहा कि ऐसा समय आ गया है, जब हमें निश्चय कर लेना चाहिए और एक जगह पर अड़ जाना चाहिए कि अब आगे किसी स्ट्राइक को हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। तब हमने कहा कि ठीक है। इस पर हमने यह फैसला कर लिया है।

आज यह जो मज़दूर वहाँ हड़ताल कर बैठ गए हैं, उनकी जगह पर हमने एक छोटी-सी फौज तैयार की है। वह लोग लश्कर में भर्ती होते हैं। ये लोग सब काम करने को तैयार रहेंगे। पब्लिक यूटिलिटी सर्विस (जन-कल्याण की सेवाएँ) के कामों में जब कभी मज़दूर स्ट्राइक करेंगे, तो हम इन लोगों से काम लेंगे। तो ऐसी एक फौज हमने बनाई है। उनसे हम कहेंगे कि यह काम तुम करो और वे लोग नहीं करते हैं, तो उसको बैठ लेने दो। तो अब यह नए लोग काम कर रहे हैं। लेकिन वह मज़दूर बैठे हैं, उसका क्या होगा? तब मैंने कॅल तो कहा है कि अब हम यह फैसला करनेवाले हैं कि इन मज़दूरों की जगह पर दूसरे मज़दूरों को भर्ती करें। और फिर यह पुराने मजदूर कहेंगे कि उनकी जगह चली गई। तब वह रोते रहेंगे।

आज अखबार में मैंने देखा कि वही एक दिन की हड़ताल करवानेवाला लीडर अब ३ हफ्ते की हड़ताल करने को कहता है। वह कहता है कि बम्बई के १० लाख मज़दूर उसके पीछे हैं। वह जो कुछ चाहता है, अगर वह नहीं मिलेगा तो बम्बई के १० लाख मज़दूर काम छोड़ देंगे। आप समझ लीजिए हम कहाँ जा रहे हैं और यह भी समझ लीजिए कि गवर्नमेंट चलानेवाले हम लोग कोई पूंजीवादी नहीं हैं। यह जो काम हो रहा है, वह तो गवर्नमेंट करती है। वहाँ से पैदा करके हमें कोई खानगी वसूली नहीं करनी है। लेकिन उनका मकसद तो यह है कि कैपिटलिस्ट में और मजदूरों में झगड़ा हो। मुझे बड़ा अफसोस होता है कि यह क्या बात हो रही है। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि अब समय आ गया है कि बम्बई की जनता यह स्थिति समझ ले। क्या बम्बई, क्या कानपुर, क्या कलकत्ता, क्या अहमदाबाद, उन सभी शहरों में जहाँ बड़े-बड़े कारखाने हैं, सब लोगों को समझना चाहिए कि गवर्नमेंट तो आप की है। लेकिन गवर्नमेंट चलानेवाले लोग अब तंग आ गए हैं। कम-से-कम मैं तो इस तरह से तंग आ गया हूँ। तो मैं इस तरह से नहीं चला सकता। क्योंकि हमारे सर पर यह बोझ तो पड़ा है, और साथ-साथ और मुसीबतें भी हैं, काश्मीर की, जूनागढ़ की, और भी बहुत-सी मुसीबतें हैं,

जिनका हमको कोई ख्याल ही नहीं आता। असल में वह सारा बोझ हमें ही झेलना पड़ रहा है।

एक रोज सुबह हम उठते हैं तो मालूम पड़ता है कि कराची में कोई हिन्दू रह नहीं सकता। उसको भाग कर इधर आना ही है। अब एकदम कराची से लोग तार-पर-तार करते हैं कि हमारे लिए बोटों का बन्दोबस्त करो। किसी-न-किसी तरह से हमें यहाँ से निकालो। अब क्या करें? क्या सामान है हमारे पास? यदि हम बोटों का बन्दोबस्त करें, तो सम्भव है कि जो मज़-दूर काम करनेवाले हैं, उनसे कहा जाए कि हड़ताल करो। उस सूरत में बोट कहाँ से जाएँगे? तो एक तो हमारे ऊपर यह बोझ है। दूसरा बोझ आप पर पड़ता है कि यह सिन्ध से ८ लाख आदमी भाग-भागकर यहाँ आएँगे, तो उसका तुरन्त ही कोई इन्तज़ाम आपको करना होगा। यह बहुत बड़ी परेशानी तो है, लेकिन हम उनसे यह नहीं कह सकते हैं कि आप बम्बई में न आएँ। हमें कहना पड़ेगा कि बम्बई जैसा हमारा है, वैसा ही आप का है। आप आ जाइए, तो जो कुछ हमारे पास है, वह हम आपस में बाँट लेंगे, वह हम मिलकर खाएँगे। यह न कहें तो हमारा काम नहीं चलेगा। क्योंकि बड़े दुख से वे लोग इधर आए हैं। कोई खुशी से अपना मकान छोड़ कर, घर-बार और जमीन-जागीर छोड़कर नहीं आएगा। जहाँ सारी उम्र बीत गई, वह सब छोड़कर आना कोई आसान काम नहीं है। वे लोग गुस्से से भरे हुए हैं, दुख से भरे हुए हैं, जब वे स्टेशन पर आएँ, बन्दर पर आएँ, तब हम उनका इन्तजाम न करें, तो बड़ी मुसीबत होती है। जिस किसी तरह यह सब हमें करना ही पड़ेगा।

तो हम कोशिश कर रहे हैं कि उनका बन्दोबस्त करें। और उन सब को हमें हिन्दुस्तान में हज़म करना है और उसके लिए हमें बदला लेने की कोई बात मन में नहीं लानी चाहिए। यह हिसाब-किताब का काम हमें आज नहीं करना चाहिए। जैसा कि मैंने कहा, यह प्रौब्लम (समस्या) नहीं है कि जो लोग सिन्ध से आते हैं, उनकी मिल्कीयत वहाँ क्या है। वे वहाँ चार-सौ, पाँच सौ करोड़ रुपया छोड़कर आते हैं, उसका हिसाब चलाने का यह वक्त नहीं है। उतने मुसलमान इधर से निकालो, इससे भी हमारा फैसला नहीं होगा। इस सारे हिसाब-किताब का एक तरह से ही फैसला हो सकता है कि दोनों गवर्नमेंटें आपस में बैठकर हिसाब करें। और यह काम बाद में करना होगा। क्या

इधर हुआ और क्या उधर हुआ, इस सब का फैसला हमें करना पड़ेगा और न करें तो राज नहीं चल सकता। न इधर, न उधर। क्योंकि हमें सफाई से काम करना पड़ेगा। गैरइन्साफ से काम नहीं चल सकता।

यह कहा जाता है कि हिन्दुस्तान में जो लोग चले आए हैं, उनको हमारे यहाँ से लौटकर पीछे जाना है और यहाँ से जो लोग उधर चले गए हैं, उनको लौटकर पीछे आना है। ठीक है, आपस में बैठकर एका कर सको, तो करो। लेकिन उसके लिए दोनों गवर्नमेंटों को अनुकूल आबोहवा पैदा करनी पड़ेगी। उसी के लिए गान्धी जी ने फाका किया। अब उसमें से कहां तक फल निकलता है, वह सब देखने की बात है। अच्छा फल निकल आए, तो बहुत अच्छी बात है। उससे बेहतर और कोई बात नहीं हो सकती। वही हम चाहते हैं। तो जब हमारी यह हालत है, तो हमें अलग-अलग जूथ बनाकर एक दूसरे को भला-बुरा कहना समझदारी की बात नहीं है। हम सब मिलकर काम करें, यही समझ का मार्ग है।

मैं कहता हूँ कि कम-से-कम तीन-चार साल तक तो मिलकर काम करो। हमें कुछ काम करने दो, तब तो कुछ काम बनेगा। लेकिन यह न करो, और लगे रहो कि चुनाव में आकर दिखाएँ तो उसके लिए ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। यदि आपको इसी तरह से करना है, तो आइए, आपस में बैठ कर हम फैसला कर लें। भाई, अगर आप बोझ उठाने को तैयार हों, तो हम देने के लिए भी तैयार हैं। क्योंकि आज तो मैं देखता हूँ कि कुछ प्रान्त की असेम्बलियों में भी अगर चार पाँच जगहें खाली हो जाएँ, तो उनका बोझ उठाने के लिए भी कोई योग्य व्यक्ति उनके पास वहाँ तो नहीं है। हां, बाहर हैं।

आपने एक दिन की हड़ताल करवाई, तो आप कहते हैं कि आपकी लीडरशिप कायम हो गई। एक दिन की हड़ताल से कभी मज़दूरों की लीडरशिप सिद्ध नहीं होती है। आपकी लीडरशिप तो तब सिद्ध होगी, जब आप मज़दूरों के पास से ऐसा काम कराएँगे, जो मज़दूरों को पसन्द नहीं, लेकिन सही काम है। अगर हम इस तरह से काम कर सकेंगे, तो हम अपने मजदूरों को स्वराज्य में सही तालीम भी दे सकेंगे। दूसरी तरह से काम नहीं चलेगा।

अब दूसरी बात यह है कि हमारा यह हिन्दुस्तान बहुत बड़ा मुल्क है। पाकिस्तान को छोड़ देने के बाद भी जो बच रहा है, वह बहुत बड़ा है। उसको हमें एक सूत्र में संगठित करना है। परन्तु हमारे में एक ख्याल पड़ गया है,

जो ख्याल हमारी आज़ादी में से उठा है। पहले भी वह थोड़ा-थोड़ा था, लेकिन अब वह ज्यादा हो गया है। हमारे में प्रान्तीय भाव बहुत ज्यादा फैल गया है। साथ ही हमारे में कौमी भाव भी बढ़ गया है। हिन्दू मुसलमान के भाव के सम्बन्ध में तो जो कुछ होनेवाला था, वह हो गया। उसको छोड़ दीजिए। लेकिन यदि यह भाव हमारे में हो कि हमें मराठा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, राजपूत, जाट, सिक्ख आदि का जाति भाव बनाए रखना है और हम सब अपना-अपना अलग-अलग कौमी या जातीय संगठन बनाने की कोशिश करें अथवा प्रान्तीय टुकड़ा करने की जल्दबाजी करें, तो हमारा सब-का-सब जरूरी काम रह जाएगा और हम इसी झगड़े में फँस जाएँगे। भारत के प्रान्तीय भाग अलग-अलग कर दिए जाएँ, मैं इसके खिलाफ़ नहीं हूँ। यदि महाराष्ट्र अलग बनना चाहे, तो मैं कभी उसका विरोध नहीं करूँगा। लेकिन आज जो बात है, वह मैं आपके सामने रख दूंगा। आज इन बातों का समय नहीं है। थोड़ा ठहर जाइए। हिन्दुस्तान को उठा लो और जब वह उठ जाए, तो उसके बाद, आप अपना हिस्सा खुशी से ले लो। क्योंकि यदि हम आज उस झगड़े में पड़ेंगे, तो यह समझ लीजिए कि यह कोई आसान बात नहीं है। हाँ, एक बात होती है कि आज महाराष्ट्र को अलग करना हो, सिद्धान्त रूप में तो उसमें कोई झगड़ा नहीं है। लेकिन जब इस सिद्धान्त को व्यवहार में लाना होगा, तो उसमें आपस में काफी झगड़ा उठ खड़ा होगा। तो यह एक महाराष्ट्र की ही बात नहीं है। कर्नाटकवाले कहते हैं कि हमारा अलग प्रान्त चाहिए। महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच में कहाँ तक किसकी सरहदें हैं, यह झगड़ा है। इसी तरह के और झगड़े हैं।

मैं अभी उड़ीसा में गया था। वहाँ कोई २८ राजा या छोटे-मोटे राजस्थान थे। उन राजाओं को मैंने बुलाया। मैंने उनको समझाया कि छोटी-छोटी जो हुकूमतें हैं, छोटे-छोटे राजस्थान हैं, उनका आप क्या करेंगे? एक छोटे-से कुएँ के एक छोटे-से मेढक बनकर आप क्या करेंगे? आप समझते हैं, कि आप राजा हैं। किसी राजकुटुम्ब में मेरा जन्म नहीं हुआ था। लेकिन आज सारे हिन्दुस्तान की हुकूमत में मेरा हिस्सा है। आप क्यों ऐसा काम नहीं करते? आज आप एक छोटे-से खड्डे में पड़े हो। आप महासागर में आओ और हमारे साथ काम करो। आपको बहुत मौका मिलेगा। दुनिया भर में हमारे एम्बेसेडर (राजदूत) जाते हैं। वहाँ जाओ, वहाँ जाने के लिए तैयारी करो। अब तो अँग्रेज चला गया। आपको उसकी सुरक्षा प्राप्त थी। अब तो आपको अपने

देश के लोगों का साथ देना पड़ेगा। आज लोग भागे-भागे राजमहल पर जाते हैं और आपको अपनी रक्षा के लिए पुलिस रखनी पड़ती है। भई, कोई ऐसा भी राजा होता है, जिसकी रक्षा करने के लिए पुलिस रखनी पड़े? वह तो बहुत बड़ी मुसीबत है। इस तरह राज करने में क्या मजा है?

मैंने यह सब कहा तो वे समझ गए। उन्होंने मान लिया कि आप जैसा कहेंगे, हम वैसा ही करेंगे। मैंने कहा कि हुकूमत हमको दे दो। तो उन्होंने हुकूमत दे दी। तो ठीक है। अब वे आराम से बैठे हैं, अब उनको अच्छी तरह से नींद आती है। सारा बोझ अब मेरे पर पड़ा है। उड़ीसावाले ख़ुश हो गए हैं कि हमारा एक प्रान्त करने की कोशिश बहुत सदियों से थी, वह पूरी हो गई। और मैंने २४ घंटे में यह सब काम किया। लोग नहीं जानते हैं कि हमने २४ घंटों में कितना काम किया। वहाँ से हवा में उड़कर नागपुर चला गया। वह कोई १८ राजा थे, जिन्हें 'सैल्यूट स्टेट' (सलामी रियासतें) कहते हैं। उन सबको मैंने बुलाया। उनमें जब कभी कोई जाता था, तो तोप छोड़कर उसकी सलामी होती थी। मैंने भी कहा : सलाम। सब ने बहुत मुहब्बत से मुझ से बातें कीं। वे भी समझ गए कि यह जो कहते हैं, वही ठीक है। दूसरा रास्ता ही नहीं है। तब मैंने कहा कि दस्तख़त दे दो। उन सब ने दस्तखत कर दिए।

अब जिस तरह से मैं काम कर रहा हूँ, इसी तरह से हमारे सब मन्त्री काम कर रहे हैं। हमारे प्राइम मिनिस्टर पर जो भारी बोझ है, उनके हिसाब से मेरा बोझ कुछ भी नहीं है। मैंने तो कहा था कि इन चार-छः महीनों में ही हमारे प्राइम मिनिस्टर की उम्र दस साल बढ़ गई है। मैं जब उनका चेहरा देखता हूँ तो मुझे दर्द होता है कि कितना बड़ा भार उनके सिर पर है। हमारे प्राइम मिनिस्टर ने भी कहा कि तीन साल का ट्रूस करो। वह तो खुद भी सोशलिस्ट के साथ ज्यादा सहानुभूति रखते हैं। मेरे बारे में कुछ तो कहते हैं कि धनिकों का एजेंट हूँ, कोई कहता है मैं राजा-महाराजाओं का एजेंट हूँ। बहुत-सी बातें लोग कहते हैं। लेकिन मेरी चमड़ी बहुत कठिन हो गई है, उस पर असर नहीं होता है। हाँ, अगर दिल पर असर करनेवाली कोई बात हो, तो उसका असर होता है। बाकी चमड़ी पर कोई असर नहीं होता।

तो मैं आपसे कह रहा था कि उड़ीसा में दो छोटी-छोटी स्टेटें थीं। ए सराय किला और दूसरी खरसवान। उनके साथ ही मैंने उड़ीसा को जो २८ स्टेटें सुपुर्द कीं, उनमें ये दोनों भी थीं। मैंने कहा कि भाई यह सब उड़ीसा

का है। ये सब आप ले लीजिए। उसके बाद मेरे पास बिहार से वहाँ के प्रधान मन्त्री का तार मुझे आया कि ये दोनों स्टेटें बिहार में जानी चाहिए, क्योंकि वह तो बिहार की ही हैं। तो मैंने उनको खबर दी कि भई, अब तो फैसला हो गया है, लेकिन आपको कुछ कहना हो तो मुझसे दिल्ली में आकर मिलो। सो वह मेरे पास दिल्ली आए। मेरे साथ बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह जो फैसला हुआ, उसके बारे में हमने कुछ सुना नहीं था, कुछ जाना नहीं था। आपने फैसला कर दिया और उसमें हमें तो बहुत नुकसान होगा। आप अपना फैसला बदल दीजिए और ये दोनों स्टेटें बिहार को दे दीजिए। तो मैंने कहा, आप भी अपने सूबे में कांग्रेस की हुकूमत चला रहे हैं, मैं भी तो कांग्रेस का एक अदना सेवक हूँ। आप इस तरह से काम करना चाहें कि आज हमने वहाँ के राजाओं और मिनिस्टरों के साथ बैठकर फैसला किया और आपके कहने से हम और आप उसे अभी बदल दें, तो इस तरह से काम नहीं चल सकता। हाँ, उसकी जाँच करनी चाहिए। कोई कोर्ट का जज हम रखेंगे, जो इस सब की जाँच-पड़ताल करेगा। यदि आपकी बात सही होगी, तो यह फैसला हम बदल देंगे। आज आप इसे आर्जी फैसला मान लीजिए, और फिक्र न कीजिए। अब उसको समझा-बुझा कर मैंने भेज दिया।

चन्द दिनों के बाद उड़ीसा की सरकार और बिहार की सरकार के अमलदार वहाँ पहुँच गए और वहाँ जंगल में रहनेवाले जो आदिवासी लोग थे, वे तीर-कमान ले कर आ गए। कोई तीस-चालीस हजार आदिवासी वहाँ जमा हो गए और उन्होंने वहाँ लड़ाई की। उन्होंने पुलिस के सामने तीर फेंके। पाँच सात तीर पुलिस को लगे। जब तीस हजार ने दंगा किया तो पुलिस ने गोली चलाई। उसमें तीस-चालीस आदमी मर गए। उन बेचारे गरीबों में से ४०-५० घायल हुए और बाकी बेचारे रोते-रोते भाग गए। इस पर दोनों प्रान्तों की सरकारें मेरे पास बड़े-बड़े तार भेजती रहीं। उधर अखबारों में यह झगड़ा चलता रहा कि दोनों कांग्रेस की गवर्नमेंट हैं। अब हमें देखना चाहिए कि हम कहाँ जा रहे हैं। हमारे प्रान्तीय झगड़े हमें कितना गिराएँगे। मैंने कहा कि इसमें लड़ने की कोई बात नहीं है। हम एक जज को मुकर्रर करके सब बातों की जाँच-पड़ताल कर अपना फैसला करेंगे। दोनों गवर्नमेंट अपना-अपना केस रख दें। अगर कोई कहे कि आज ही फैसला कर दो, तो यह कैसे हो सकता है?

जब मैं कलकत्ता गया, तो बंगालवाले मेरे पास एक बड़ा प्रतिनिधि-मण्डल लेकर आए कि बिहार और उड़ीसा का यह जो झगड़ा चल रहा है, उसमें असली हक़ तो हमारा है। वह तो बंगाल को देना चाहिए। मैं कहता हूँ कि भाई, स्वराज्य तो अभी मिला है और अभी तक हम अपने देश को मजबूत भी नहीं बना पाए कि उसके पहले बाँटने का झगड़ा शुरू हो गया है। तब इधर हमारे महाराष्ट्र भाई कहते हैं कि हमारा कर्नाटक हमें दे दो। बरारवाले कहते हैं कि हमारा बरार तो अलग होना चाहिए। इस तरह से और और बातें भी चलती हैं। मैं संगठन करने की कोशिश करता हूँ कि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान का एक संगठन करके खड़ा कर दूं और इधर इस तरह से काम चलता है।

मैं अभी काठियावाड़ में गया था। सारे हिन्दुस्तान में जितने राज नहीं हैं, उतने राज काठियावाड़ में हैं। अढ़ाई-तीन सौ छोटे-छोटे राज वहाँ हैं। यदि हर एक राज का अलग-अलग रंग नकशे में भरना हो, तो इतने रंग तो मेरे पास नहीं हैं। कैसे करूँ? इतनी हुकूमतों के अलग-अलग राज वहाँ हैं। उसमें आज एक हवा चली है कि छोटी-छोटी रियासतों के लोग भी कहते हैं कि हमको अलग-अलग रेस्पांसबिल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) दे दो। जो है नहीं, वह देगा कैसे ? वहाँ रेस्पांसबिल गवर्नमेंट बनती कैसे ? कहीं ५ हजार की आबादी है, तो कहीं १० हजार की आबादी और बहुत हुआ तो कहीं २५ हजार की आबादी। किसी राजा के पास २० गाँव हैं, किसी के पास २५ गाँव और जो सबसे बड़ी स्टेट है, उसकी आबादी छः, साढ़े छः लाख की है। यह तो गनीमत हुई कि हम जूनागढ़ लेकर बैठ गए। अब काठियावाड़ में इतने छोटे-मोटे राजा हैं, उन सबको मैंने समझाने की कोशिश की कि भाई अपने यहाँ सौराष्ट्र नाम का एक प्रान्त बना लो और इस तरह महासागर के भाग बनो, उसमें खेलो। इस तरह यह क्या कर रहे हो ? अँग्रेज गया तो उसके साथ सार्वभौम सत्ता भी चली गई। जैसे हम बरणी में आम का आचार रखते हैं, कि आचार में कीड़ा न पड़े, इसलिए कुछ तेल भी डाल देते हैं, उसी तरह आपको रखकर उसने अपने स्वाद के लिए सामान पैदा किया था। अब वह चला गया। अब आप को चाहिए कि आप ठीक हो जाओ, और अपने को हवा लगने दो। वे सब समझ गए कि यह ठीक कहता है। तो कल रात मेरे पास उनका टेलीफोन आया कि हमने फैसला कर लिया है कि हमें एक सौराष्ट्र बनाना है। इस तरह से काम चलता है।

अब महाराष्ट्र के राजा-महाराजा कल आठ-नौ बजे मुझसे मिलनेवाले हैं। यहाँ जो छोटी-मोटी १८ हुकूमतें हैं, उन सब का भी अब बहुत करके यही फैसला होगा कि भई, हमें तो बम्बई प्रान्त में मिल जाना है। तो मैं महाराष्ट्र को बड़ा बना रहा हूँ, उसे छोटा नहीं बना रहा हूँ। जैसे उड़ीसा बनाया, ऐसे ही महाराष्ट्र को बनाकर मैं आपको दूंगा। फिर आप अलग हो जाइएगा। अभी आपको इतनी जल्दी क्यों है ?

यदि हमें इस तरह से हिन्दुस्तान को एक महान देश बनाना है, तो पाकिस्तान जैसे छोटे टुकड़े से आप क्यों डरते हैं ? इसमें है क्या ? लेकिन हमें दिमाग से काम लेना चाहिए और समझ-बूझकर, आपस में संगठित होकर हिन्दुस्तान को उठाना चाहिए। तब हम सारे एशिया की लीडरशिप ले सकते हैं। इसमें मेरे दिल में कोई शक नहीं है। इसलिए मेरी कोशिश यह है कि हिन्दुस्तान को एक बना लो। कुछ लोग अन्देशा करते थे कि ऐसा नहीं होगा। कुछ राजाओं के दिल में भी शंका थी अब न जाने क्या होगा। कुछ हमारे सोशलिस्ट भाई भी शंका करते थे कि हिन्दुस्तान में राजाओं को पोज़ीशन मिल जाएगी। कुछ लोग तो कहते थे कि अब तो राजा जो चाहे सो करेंगे और हमारी कुछ भी नहीं चलेगी। मैंने कहा कि भाई, धीरज रखो। हम आज़ाद हुए, राजा भी आज़ाद हुआ है। उसको भी अपने मुल्क का ख्याल आएगा। उसके दिल में भी स्वदेशाभिमान पैदा होगा, कुछ खुद का अभिमान पैदा होगा। हमारे हिन्दुस्तान में ही बुद्ध भगवान पैदा हुए। उनकी कितनी छोटी रियासत थी। वह रियासत भी उन्होंने छोड़ दी। अपने पास न बन्दूक रखी, न तोप रखी। लेकिन हिन्दुस्तान के बाहर तक वह पहुँच गए। वह चीन और जापान तक पहुँच गए। वह सीलोन में पहुँचे, बर्मा में पहुँचे। आप क्यों घबराते हो ?

इसी तरह से मैं कहता हूँ कि हिन्दुस्तान में जो धन धरती में भरा है, उसे खोद-खोदकर हमें निकालना है। यहाँ इतना धन भरा है, जो कभी किसी ने देखा नहीं होगा। और मुल्कों में इतना धन नहीं, जितना हमारी धरती में भरा है। उसको हमें निकालना है। लेकिन इसके लिए हमें मेहनत करनी पड़ेगी। एक तरफ आप मजदूरों से कहें कि काम कम करो और दाम ज्यादा मांगो। इस तरह तो आप इनसालवेंसी (दिवाला) निकालोगे। इस तरह देश का काम नहीं चलेगा। मैं तो असल में मजदूरों का भी भला चाहता हूँ।

लेकिन भला कैसे होगा ? भला इस तरह होगा कि हम रुपया पैदा करें, और फिर उसे आपस में बाँट लें। लेकिन अगर हम कुछ पैदा ही नहीं करें, तो न कुछ मज़दूर को मिलेगा, न धनी को मिलेगा, न हमको मिलेगा।

बार-बार कहा जाता है कि हमें लीडरशिप चाहिए। नेतागीरी तो आज मुल्क में रास्ता बन गया है। किसी को नेता बनना हो तो पहले कोई स्पीच करो, कैपिटलिस्ट लोगों को गाली दो। उसके बिना तो चलता नहीं। लोग मानते ही नहीं। कैपिटलिस्ट को दो गाली दो, तो एक-दो गाली, जो सामने बैठा है, उसको दो और एक-दो गाली राजाओं को दो। बस, फिर लीडरशिप मिल गई। मगर इस तरह की लीडरशिप से किसी का क्या भला होगा ? मैं राजाओं से भी कह सकता हूँ और बहुत खरी बातें मैं उन्हें सुनाता हूँ। इसी तरह कैपिटलिस्टों से भी मुहब्बत करता हूँ, लेकिन उनको कड़ी बात भी सुनाता हूँ। लेकिन अगर मुझे समझ आ जाए कि हमारे मुल्क में एक-ए कैपिटलिस्ट की कैपिटल खत्म कर देने से हिन्दुस्तान का भला होगा, तो उसे खत्म कर देने में मेरा नम्बर पहला होगा। मैं पीछे नहीं रहूँगा।

मैंने कल भी कहा था, आज भी आप लोगों से कहता हूँ और आप भाइयों को समझाना चाहता हूँ कि मुझे सोशलिज़्म सिखाने की किसी को ज़रूरत नहीं। मार-पीट सिखाने की भी मुझे ज़रूरत नहीं है। जब से मैंने गान्धी जी का साथ दिया, और आज इस बात को बहुत साल हो गए, तभी से मैंने फैसला किया था कि यदि पब्लिक लाइफ़ (सार्वजनिक जीवन) में काम करना हो, अपनी मिल्कियत नहीं रखनी चाहिए। सोचिए ज़रा। तब से आज तक मैंने अपनी कोई चीज़ नहीं रक्खी। न मेरा कोई बैंक एकाउंट है, न मेरे पास कोई ज़मीन है, और न मेरे पास कोई अपना मकान है। मैं यह कुछ रखना ही नहीं चाहता हूँ। अगर मैं रखूं, तो मैं इसे पाप समझता हूँ। मुझे कोई सोशलिज़्म का पाठ सिखाए, तो फिर उसे सीखना पड़ेगा कि पब्लिक लाइफ़ किस तरह से चलानी है। बातें बहुत चलती हैं। किसी ने मेरा नाम सरदार कर दिया। अब यहाँ बम्बई में जो सरदार-गृह है, उसके बारे में कलकत्ता के एक अखबार में छपा कि सरदार के पास बम्बई में बड़े-बड़े मकान हैं। उसके नाम पर हैं। सरदार नाम से अब इस तरह मेरी इज्जत तो बहुत बढ़ती है और शायद उनसे मुझे क्रेडिट पर रुपया भी मिल जाए !

तो हमारे मुल्क में ऐसी धोखेबाज़ी बहुत चलती है। मगर मैं आप से यह

कहना चाहता हूँ कि आप समझते हैं कि आज हमारा काम धरती में से धन पैदा करना और बड़े-बड़े कारखाने बनाना है। क्योंकि मैंने आपसे कहा था कि यदि हमें फौज रखनी है, यदि हमें अपने मुल्क का रक्षण करना है, तो उसके लिए हमें अच्छी फौज रखनी पड़ेगी। उसके लिए हमें सेन्ट्रल गवर्नमेंट को मज़बूत बनाना होगा। उसकी रक्षा करनी पड़ेगी। मज़बूत बनाने से मतलब यह है कि देश भर के लोग उसके पीछे होने चाहिएँ। यदि आप लोग हमारे साथ न हों, तो हमारा वहाँ बैठना पाप है। तब हम वहाँ क्यों बैठें? क्या ज़रूरत है हमें? यदि आप लोग चाहते हैं कि वहाँ बैठें, और काम करें तभी हमारा काम करना उचित है। क्योंकि हम तो आपके ट्रस्टी बनकर वहाँ गए हैं और इसी हक से हम वहाँ बैठे हैं।

तो जब हम आप की तरफ से वहाँ बैठे हैं, तो हमारी बात समझ लीजिए कि मुल्क में दो चीज़ें हमें करनी हैं। एक तो हमें मुल्क में काम करने के लिए उचित आबोहवा पैदा करनी है। अगर यहाँ रात-दिन हिन्दू-मुसलमान के झगड़े में रहे तो कोई काम नहीं होगा। आज दो चाकू इधर किसी को मारा, दो छुरा किसी को मारा, एक बम उधर डाला, एक कलकत्ता में डाला, एक बम्बई में डाला, एक कानपुर में डाला और अखबार उसी सब से भरे रहें, तब तो हम कोई काम नहीं कर सकेंगे। इस तरह काट-मारकर एक साल में कितने मुसलमान मारोगे? उससे किसी को क्या फायदा मिलेगा? उधर मुसलमान भी बेचैन रहते हैं और हम न उनका उपयोग कर सकते हैं, न वे हमारा उपयोग कर सकते हैं। हमारी ३० करोड़ की आबादी में चार करोड़ मुसलमानों का हम क्या करें? तो इस तरह अगर हम झगड़ों में फँसे रहे, तो हमारा काम नहीं होगा। मुसलमान से कहो कि आप इधर हैं, तो हमारे साथ आराम से रहो और कोई फिक्र न करो। लेकिन यदि हमें लड़ना हो, तो जैसा कि मैंने कल भी कहा था, आज भी कहता हूँ कि लड़ने के लिए मौका चाहिए, लड़ने के लिए कारण चाहिए। बताना चाहिए कि किस कारण से हम लड़ते हैं। दुनिया के सामने रखना पड़ेगा कि इस चीज़ के लिए हम लड़ते हैं। लड़ने का समय और लड़ने का कारण आ जाने पर लड़ाई का पूरा सामान चाहिए, जिससे लड़ाई में हम मार न खाएँ। जब लड़ना हो, तो पूरी तैयारी से लड़ना चाहिए। तो यह चीज़ आज छुरा-छुरी से नहीं होती है। उससे तो उल्टा हमारा काम बिगड़ता है।

अगर हमें अच्छी फौजें रखनी हों, तो उसके लिए हमें कितनी चीजें चाहिएं,

यह समझ लेना चाहिए। यह भी जान लेना चाहिए कि लड़ाई में क्या सामान काम आता है। वैसे तो, हमारे बहुत-से सोल्जर्स (सिपाही) पिछली लड़ाई से डीमोबिलाईज़ (सेना से मुक्त होकर) होकर आए हैं, उनसे पूछो कि क्या-क्या चीज़ चाहिए। पहले तो सोल्जर के पास बन्दूक चाहिए। वह बन्दूकें हमारे यहां कितनी हैं और कहाँ बनती हैं ? आज नौजवान कहते हैं कि हमको भर्ती करो। हमें काश्मीर जाना है, हमें यह करना है, हमें वह करना है। लेकिन स्ट्राइक से तो यह नहीं चलेगा। भर्ती कर नौजवान को तो तालीम देनी पड़ती है और तालीम के साथ उसको फिट बनाकर उसे बन्दूक भी देनी पड़ती है। बन्दूक के साथ गोला-बारूद देना पड़ता है। वह सब कहाँ से आता है ? बन्दूकों के लिए और लड़ाई के लिए जितनी सामग्री चाहिए, उसके लिए हमें कारखाने बनाने पड़ेंगे। उन कारखानों में यदि कम सामान बनता हो, तो हमें वहाँ २४ घंटे काम करना होगा या दो शिफ्टों से काम करना होगा। अरे, वह तो कहते हैं कि स्ट्राइक करो। यही हालत रही तो हमारा काम कैसे चलेगा ? एक तो यह बात है।

दूसरी बात यह है कि आज के युग में फौज को लड़ाई के मैदान में ले जाने के लिए हजारों ट्रक्स चाहिए। उसके लिए मोटर-लारी और जीपें चाहिएँ, वह पैदल का काम नहीं है। अपनी फौज को हमें जल्दी-से-जल्दी ले जाना है, पहाड़ों पर ले जाना है, और जगह पर ले जाना है। अब जो यह हजारों ट्रक्स चाहिए वे कहाँ बनें ? उसके लिए हमें मज़दूर चाहिए। अब इधर मज़दूरों को भी कोई सिखलाता है कि ज्यादा पैदा करो ? वही तो बड़ी मुश्किल बात बन जाती है।

मज़दूरों से यह कहना चाहिए कि अपनी फौज के लिए आप को तोप, बन्दूक, गोला, एम्यूनिशन (गोला-बारूद) सब चीज़ बनानी चाहिए। तोप, बन्दूक के लिए स्टील (इस्पात) चाहिए, कौन वह पैदा करेगा ? ऊपर से तो बरसेगा नहीं। उसके लिए हमें कारखाना बनाना होगा। हमारे मुल्क में, हमारी धरती में बहुत लोहा पड़ा है, मगर उसके लिए हमें कारखाने बनाने होंगे। आज तक लोहा अँग्रेज बाहर से ले आता था और हमारा धन ले जाता था। अब स्वराज्य के बाद भी क्या हम लोहा बाहर से लाएंगे ? नहीं, वह अब हमें इधर पैदा करना है। हमारे यहाँ एक कारखाना टाटा का है। देश भर में मकान बनाने के लिए जितना लोहा चाहिए, उतना भी उससे पूरा नहीं पड़ता। तो हम अपनी

आर्मी के आर्य-एम्यूनिशन के लिए कहां से लोहा लाएँ? उसी के लिए तो आज स्टील पर कंट्रोल है और वह तोड़ा नहीं जा सकता। अनाज का, कपड़े का, शूगर (चीनी) का कण्ट्रोल हम तोड़ सकते हैं, लेकिन स्टील का कण्ट्रोल नहीं तोड़ सकते। हमारे यहाँ बहुत कम स्टील है। तो जहाँ ज्यादा-से-ज्यादा ज़रूरत होती है, वहीं हम देते हैं। आज टाटा के कारखाने में भी बार-बार स्ट्राइक होती है। तो यदि नया गवर्नमेंट का कारखाना बनाना हो तो उसमें स्ट्राइक होनी ही नहीं चाहिए।

आर्मी को कभी हमें मद्रास ले जाना है, तो कभी पंजाब। उसके लिए रेलवे चाहिए। एक बटेलियन को ही एक जगह से दूसरी जगह हटाना हो, तो उसके लिए कितनी रेलवे चाहिए? यह सब आपने देखा हो तो मालूम पड़े। लेकिन हमारी रेलवे तो अब बूढ़ी जैसी हो गई। क्योंकि यह जो पश्चिम में पिछली लड़ाई चली, उससे उसके ऊपर बहुत बोझ पड़ा। लेकिन अब लड़ाई खत्म हो गई तो उसके लिए जो कुछ वैगन चाहिए, कुछ नये इंजन चाहिए, नये बाइलर चाहिए, सब चीज़ें चाहिए। वे चीज़ें इधर बनती नहीं तो बाहर से लानी पड़ती हैं और बाहरवाले मुल्क तंग आ गए हैं। उनके पास भी पिछली लड़ाई में सफाचट मैदान हो गया है। उनको भी यही सब चाहिए। सो बहुत मुश्किल पड़ती है। उधर हम टूटी-फूटी रेलवे लाइन की मरम्मत की कोशिश करें और उधर रेलवे के काम करनेवालों को कहा जाए कि स्ट्राइक करो, तो सब खत्म हो गया। उस हालत में हम लड़ाई कैसे जीतेंगे? किस तरह हमारा काम चलेगा?

अब जितने ट्रक्स हमारे पास हैं, उनमें पेट्रोल चाहिए। पेट्रोल बिना ट्रक्स नहीं चलते। जीप नहीं चलती। पेट्रोल कहाँ से ले आएँ? जिसके पास पेट्रोल है, वह चाबी बन्द करके बैठ जाए, तो हमारी लड़ाई खत्म। तो पेट्रोल भी हिन्दुस्तान की धरती में पड़ा है। लेकिन उसे हम कैसे निकालें? उसके लिए हमें कारखाने बनाने चाहिएँ। पर हमारे भाई कहते हैं यह "की इण्डस्ट्री" (आधारभूत व्यवसाय) है। यह तो सरकार की तरफ से करना चाहिए। अरे सरकार के पास इतने काम पड़े हैं, और उसका काम चलानेवाले जो चन्द लोग हैं, उसके पास तो इतना बोझ पड़ा है। इस प्रकार का काम इन लोगों ने कभी किया भी नहीं। आज मैं सरकार की तरफ से यह नहीं कह सकता हूँ कि हम कोई ऐसी इण्डस्ट्री झटपट नेशनालाइज़ करें, जिसके बारे में हमें कोई

अनुभव न हो। उसमें तो हमें परदेशी लोगों को भी साथ लेना पड़ेगा। क्योंकि इधर हमारा कोई आदमी जानता ही नहीं कि पेट्रोल किस तरह से निकालना चाहिए। या पेट्रोल का कुआं कहाँ है ? तो उसमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।

अब हमें कोयला चाहिए। कोयले के बिना कोई कारखाना नहीं चलता। कोयला तो व्यवसाय की चाबी है। कोयले के बिना कोई काम नहीं चलता। न गाड़ी चलती है, न इंजन चलता है, न कोई कारखाना चलता है। तो कोलियारी तो धरती में पड़ी है। हमारे देश में बहुत-सी खानें हैं, जिनमें कोयला भरा है। लेकिन माइनों में से कोयला ग्रेजुएटों से नहीं निकलेगा, या सोशलिस्टों से भी नहीं निकलेगा। वह तो मज़दूरों से ही निकलवाना पड़ेगा। अभी हम मज़दूरों से मेहनत करके कोयला निकालने को कहेंगे, तो वे उनके पास पहुँच जाएँगे और कहेंगे कि हड़ताल करो।

क्या अब मैं बताऊँ आपको ? बताने की बहुत-सी बातें हैं। उसमें बहुत समय लगेगा। लेकिन जब मैं यह बातें कहता हूँ तो वे कहते हैं कि यह हमारा बिटर क्रिटिसिज़्म (कड़ी समालोचना) करता है। मैं बिटर क्रिटिसिज़्म की बात नहीं करता हूँ। मैं आपके दिल में घुसना चाहता हूँ और आप को बताना चाहता हूँ कि कितनी सदियों के बाद आज आप को यह मौका मिला है। एक हजार साल के बाद आज हमारा हिन्दुस्तान जितना संगठित हो गया है, उतना वह पहले कभी नहीं था। अपने इतिहास को पढ़ो तो सही। कभी आपने सोचा कि हमने अपना हिन्दुस्तान किस तरह गँवाया था ? अपने पागलपन से गँवाया था। हमारे राजा आपस में लड़ते थे। हमारे अपने यहाँ के लोग एक नहीं थे और हमारे ही कुछ लोगों ने दुश्मन का साथ दिया था। उसी से हमने अपना देश गँवाया। अब गान्धी जी की तपश्चर्या से यह पहला मौका आया है। कई लोगों ने बलिदान किया, तब हमारे सद्भाग्य से यह मौका हमें मिला है। यह मौका गँवाओगे तो क्या करोगे ? हमारा तो दिन खत्म हुआ। हमारा काम तो पूरा हुआ। लेकिन अपनी यह गठरी आप अपने सिर पर रख कर अपना बोझा आप उठा सकें, ऐसी शक्ति हम आपको देना चाहते हैं। सोते हुए के ऊपर गठरी रखने से क्या फायदा ?

अगर आप लोग जागृत नहीं रहेंगे, तो बम्बई गिर जानेवाला है। बम्बई आज तक तो देश में सब से पहला रहा है। इधर जो कुछ धन पैदा हुआ, इधर जो दिमाग पैदा हुआ, इधर जो पोलिटिकल लीडर पैदा हुए, उन पर आप

गर्व कर सकते हैं। लेकिन आज अगर आप उल्टे रास्ते पर चलें तो आप गिर जाएँगे। आज तो यहाँ डेमोक्रेसी है, लोक-शासन है। उसमें लोक का साथ नहीं होगा, तो कुछ भी नहीं होगा। तो जो गलत रास्ते पर चलते हैं, उनको समझाना आपका काम है। और अगर वे न मानें तो आप को उनका साथ नहीं देना चाहिए, बल्कि कोशिश करके उन्हें रोकना चाहिए। यदि आप नागरिक अपना फर्ज़ नहीं बजाते, तो स्वराज्य मिला न मिला, एक बराबर है। उससे हमारा देश गिर जाएगा।

मैंने जितनी बातें आप लोगों के सामने रखी हैं, उन पर आप गहराई से सोचें। आप अपनी ज़िम्मेवारी उठाने के लिए कोशिश करें। मेरे दिल में जो आग भरी है, वह मैं आपके सामने रखता हूँ। यह इसलिए कि जो मौका हमें मिला है, उसका हम पूरा फायदा उठावें। ईश्वर आपका कल्याण करे।

----

(५)

गान्धी जी की हत्या के एकदम बाद

दिल्ली, ३० जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

आपने मेरे प्यारे भाई पं० जवाहरलाल नेहरू का पैगाम सुन लिया। मेरा दिल दर्द से भरा हुआ है। क्या कहूँ क्या न कहूँ? जबान चलती नहीं है। आज का अवसर भारतवर्ष के लिए सब से बड़े दुख, शोक और शर्म का अवसर है। आज चार बजे मैं गान्धी जी के पास गया था और एक घंटे तक मैंने उनसे बात की थी। वह घड़ी निकालकर मुझ से कहने लगे कि मेरा प्रार्थना का समय हो गया है; अब मुझे जाने दीजिए। तो वह भगवान के मन्दिर की तरफ अपने हमेशा के समय पर चलने के लिए निकल पड़े। तब मैं वहाँ से अपने मकान की तरफ चला। मैं मकान पर अभी पहुँचा नहीं था कि उतने में रास्ते में एक भाई मेरे पास आया। उसने कहा कि एक नौजवान हिन्दू ने गान्धी जी के प्रार्थना की जगह पर जाते ही अपनी पिस्तौल से उन पर तीन गोलियाँ चलाईं, वह वहाँ गिर पड़े और उनको वहां से उठा कर घर में ले जाया गया है। मैं उसी वक्त वहां पहुँच गया। मैंने उनका चेहरा देखा। वही चेहरा था। वैसा ही शान्त चेहरा था, जैसा हमेशा रहता था। ठीक वही चेहरा था। और उनके दिल में दया और माफी के भाव अब भी उनके चेहरे से प्रकट

होते हैं। आस-पास बहुत लोग जमा हो गए। लेकिन वह तो अपना जो काम उन्हें करना था, उसे पूरा करके चले गए !

पिछले चन्द दिनों से उनका दिल खट्टा हो गया था और आप जानते हैं कि आखिर उन्होंने उपवास भी किया। उपवास में चले गए होते, तो अच्छा होता। लेकिन उनको और भी काम देना था तो रह गए। पिछले हफ्ते में एक दफा और एक हिन्दू नौजवान ने उनके ऊपर बम फेंकने की कोशिश की थी। उसमें भी वह बच गए थे। इस समय पर ही उनको जाना था। आज वह भगवान के मन्दिर में पहुँच गए ! यह बड़े दुख का, बड़े दर्द का समय है, लेकिन यह गुस्से का समय नहीं है। क्योंकि अगर हम इस वक्त गुस्सा करें, तो जो सबक उन्होंने हमको ज़िन्दगी भर सिखाया, उसे हम भूल जाएँगे। और कहा जायेगा कि उनके जीवन में तो हमने उनकी बात नहीं मानी, उनकी मृत्यु के बाद भी हमने नहीं माना। हम पर यह धब्बा लगेगा। तो मेरी प्रार्थना है कि कितना भी दर्द हो, कितना भी दुख हो, कितना भी गुस्सा आए, लेकिन गुस्सा रोककर अपने पर काबू रखिए। अपने जीवन में उन्होंने हमें जो कुछ सिखाया, आज उसी की परीक्षा का समय है। बहुत शान्ति से, बहुत अदब से, बहुत विनय से एक दूसरे के साथ मिलकर हमें मज़बूती से पैर जमीन पर रखकर खड़ा रहना है। आप जानते हैं कि हमारे ऊपर जो बोझ पड़ रहा है, वह इतना भारी है कि करीब-करीब हमारी कमर टूट जाएगी। उनका एक सहारा था और हिन्दुस्तान को वह बहुत बड़ा सहारा था। हमको तो जीवन भर उन्हीं का सहारा था। आज वह चला गया ! वह चला तो गया, लेकिन हर रोज़, हर मिनिट वह हमारी आँखों के सामने रहेगा ! हमारे हृदय के सामने रहेगा ! क्योंकि जो चीज वह हमको दे गया है, वह तो कभी हमारे पास से जाएगी नहीं !

कल चार बजे उनकी मिट्टी तो भस्म हो जाएगी, लेकिन उनकी आत्मा तो अब भी हमारे बीच में है। अभी भी वह हमें देख रही है कि हम लोग क्या कर रहे हैं। वह तो अमर है। जो नौजवान पागल हो गया था, उसने व्यर्थ सोचा कि वह उनको मार सकता है। जो चीज उनके जीवन में पूरी न हुई, शायद ईश्वर की ऐसी मर्जी हो कि उनके द्वारा इस तरह से पूरी हो। क्योंकि इस प्रकार की मृत्यु से हिन्दुस्तान के नौजवानों का जो कॉनशंस (अन्तरात्मा) है, जो हृदय है, वह जाग्रत होगा, मैं ऐसी आशा करता हूँ। मैं उम्मीद करता

हूँ और हम सब ईश्वर से यह प्रार्थना करेंगे कि जो काम वह हमारे ऊपर बाकी छोड़ गए हैं, उसे पूरा करने में हम कामयाब हों। मैं यह भी उम्मीद करता हूँ कि इस कठिन समय में भी हम पस्त नहीं हो जाएँगे, हम नाहिम्मत भी नहीं हो जाएँगे। सब को दृढ़ता से और हिम्मत से एक साथ खड़ा होकर इस बहुत बड़ी मुसीबत का मुकाबिला करना है और जो बाकी काम उन्होंने हमारे ऊपर छोड़ा है, उसे पूरा करना है। ईश्वर से प्रार्थना कर, आज हम निश्चय कर लें कि हम उनके बाकी काम को पूरा करेंगे।

----

(६)

गान्धी जी की शोक-सभा में

रामलीला मैदान,
दिल्ली,
२ फरवरी, १९४८

सदर साहब, बहनो और भाइयो,

जब दिल दर्द से भरा होता है, तब ज़बान खुलती नहीं है और कुछ कहने को दिल नहीं होता है। इस मौके पर जो कुछ कहने को था, भाई जवाहरलाल नेहरू ने कह दिया, मैं क्या कहूँ ? जब से गान्धी जी हिन्दुस्तान में आए तब से, या जब मैंने ज़ाहिर जीवन शुरू किया तब से, मैं उनके साथ रहा हूँ। अगर वे हिन्दुस्तान न आए होते, तो मैं कहाँ जाता और क्या करता, उसका जब मैं ख्याल करता हूँ तो एक हैरानी-सी होती है। तीन दिन से मैं सोच रहा हूँ कि गान्धी जी ने मेरे जीवन में कितना पल्टा किया और इसी तरह से लाखों आदमियों के जीवन में उन्होंने किस तरह से पल्टा किया ? सारे भारतवर्ष के जीवन में उन्होंने कितना पल्टा किया। यदि वह हिन्दुस्तान में न आए होते तो राष्ट्र कहाँ जाता ? हिन्दुस्तान कहाँ होता ? सदियों से हम गिरे हुए थे। वह हमें उठाकर कहाँ तक ले आए ? उन्होंने हमें आज़ाद बनाया। उनके हिन्दोस्तान आने के बाद क्या-क्या हुआ और किस तरह से उन्होंने हमें उठाया, कितनी दफा किस-किस प्रकार की तकलीफें उन्होंने उठाईं, कितनी दफे वह जेलखाने में गए और कितनी दफे उपवास किया, यह सब आज ख्याल

आता है। कितने धीरज से, कितनी शान्ति से वह तकलीफें उठाते रहे, और आखिर आज़ादी के सब दरवाज़े पार कर हमें उन्होंने आज़ादी दिलवाई।

लेकिन इसके बाद क्या हुआ ? इसके बाद खुद हमारे एक नौजवान ने उनके बदन पर गोली चलाने की हिम्मत की। यह कितनी शरम की बात है ! उसने गोली किसके ऊपर चलाई ? उसने एक बूढ़े बदन पर गोली नहीं चलाई, यह गोली तो हिन्दुस्तान के मर्म स्थान पर चलाई गई है ! और इससे हिन्दुस्तान को जो भारी जख्म लगा है, उसके भरने में बहुत समय लगेगा। बहुत बुरा काम किया ! लेकिन इतनी शरम की बात होते हुए भी हमारे बदकिस्मत मुल्क में कई लोग ऐसे हैं, जो उसमें भी कोई बहादुरी समझते हैं, कोई खुशी की बात समझते हैं। जो ऐसे पागल लोग हैं, वे हमारे मुल्क में क्या नहीं करेंगे ? और जब गान्धी जी के तन पर गोली चल सकती है, तो आप सोचिए कि कौन सलामत है ? और किस पर गोली नहीं चल सकती है ?

तो क्या गान्धी जी ने हिन्दुस्तान को जो आज़ादी दिलवाई, इसी काम के लिए ? अगर हम इसी रास्ते पर चलेंगे, तो कहाँ जा कर बैठेंगे ? हमारे पास क्या बाकी बच रहेगा ? क्या हम आज़ादी को हज़्म कर सकेंगे ? दुनिया में हमारी क्या हालत होगी ? जब गान्धी जी ने दिल्ली में यह अन्तिम उपवास किया तो मैं तो उस रोज़ इधर से चला गया था। लेकिन मुझे बहुत शक था कि इस समय वह उपवास में से बचेंगे कि नहीं। और जब वह उठे और उपवास छूट गया तो बहुत खुशी हुई। लेकिन यह खुशी कितने दिन की रही ? और कौन कह सकता है कि उपवास छूटने से फायदा हुआ, जब पीछे से उन्हें गोली से मरना हुआ। अगर वह उपवास से मरते, तो भी हमको बहुत शरम होती। लेकिन गोली से मरे, तो कोई थोड़ी शरम की बात नहीं है। सारी दुनिया में हमारा मुंह काला हो गया है।

हाँ, यह कह सकते हैं कि यह काम एक पागल आदमी ने किया। लेकिन मैं यह काम किसी अकेले पागल आदमी का नहीं मानता। इसके पीछे कितने पागल हैं ? और उसको पागल कहा जाए कि शैतान कहा जाए, यह कहना भी मुश्किल है। लेकिन जो लोग उसके पीछे हैं, उनको और बढ़ने दें, तो मुल्क में क्या नहीं आ सकता है। यह आप लोगों के सोचने की बात है। जिसके पास हुकूमत है, उसकी तो है ही। लेकिन जब तक आप लोग अपने दिल साफ

कर हिम्मत से इसका मुकाबला नहीं करेंगे, तब तक काम नहीं चलेगा। मगर उसका मतलब यह नहीं है कि आप कानून अपने हाथ में लेकर उसको सज़ा देने लग जाएँ। तब तो उससे भी बुरा होगा। क्योंकि तब तो जैसे वह पागल हो गया, वैसे ही हम भी पागल बन जाएँगे। तो कानून में हस्तक्षेप किए बिना हमें इन चीज़ों का विरोध करना चाहिए। अगर हमारे घर में ऐसे छोटे बच्चे हों, हमारे घर में ऐसे नौजवान हों, जो उसी रास्ते पर जाना पसन्द करते हों, तो उनको कहना चाहिए कि यह बहुत बुरा रास्ता है और तुम हमारे साथ नहीं रह सकते। इस तरह साफ़ बात न करें, तो ये चीज़ें बढ़ती जाएँगी। ऐसे मौकों पर इसी तरह लाखों आदमी तो ज़रूर जमा हो जाते हैं, लेकिन चन्द दिनों के बाद अगर असल चीज़ भूल गई, तो फिर उस से भी बुरा नतीजा आएगा।

तो गान्धी जी ने कोशिश करके हमको आज़ादी तो दिलवाई। लेकिन उसके बाद जिसने आज़ादी दिलवाई, उसको भी हमारे सामने मरना पड़ा। यह बहुत बुरा काम किया गया। जिन लोगों ने यह काम किया, गवर्नमेंट की तरफ से उसकी पूरी खोज की जाएगी। लेकिन सरकार की इस कोशिश में, आपको साथ देना हो और अपना धर्म बजाना हो, तो आप को इस चीज़ के प्रति अपनी नापसन्दगी और घृणा बतानी चाहिए। जब मैं इधर आ रहा था तो एक भाई ने मेरे पास चिट्ठी भेजी कि कम्युनिस्टों का एक जुलूस निकला, उस जलूस में वे कहते थे कि हम बदला लेंगे। यदि फिर भी हम इस ढंग से काम करेंगे तो माना जाएगा कि गान्धी जी की बात जिन्दगी भर तो हमने सुनी नहीं, मानी नहीं, लेकिन मरने के बाद भी उसे नहीं माना।

बदला लेना हमारा काम नहीं है। इस तरह से बदला नहीं लिया जाता है। वैसा किया गया तो हम लोग गलत रास्ते पर चले जाएँगे। तो न किसी को मारना, न किसी के घर पर हल्ला करना और न किसी को पीटना। लेकिन यदि आपको कोई चीज़ मालूम हो तो तुरन्त हुकूमत को बता देना चाहिए कि इस प्रकार लोग काम करते हैं। तो इन लोगों को रोकना चाहिए कि वे ऐसा काम न करें। जो बुरा काम करता है, उसको रोकना, उसको ठीक तरह से रोकने की कोशिश करना हमारा काम है। लेकिन इस तरह से कोई बदला लेने की बात करे, तो उसकी बात हमें नहीं सुननी चाहिए। आज हम लोगों को इतनी सालों की कोशिश के बाद जो कुछ मिला है, गान्धी जी ने जो

कुछ दिलवाया है, वह चीज़ हमें फेंक नहीं देनी है। यह थाती गान्धी जी हमारे पास रख गए हैं। इसको हमें ठीक तरह से चलाना है। इसके लिए हमें गान्धी जी के बताए हुए मार्ग को समझकर उस रास्ते पर चलने की कोशिश करना है। यही हमारा कर्तव्य है। हम ईश्वर से माँगें कि वह हमें उस रास्ते पर चलने की शक्ति दे।

---

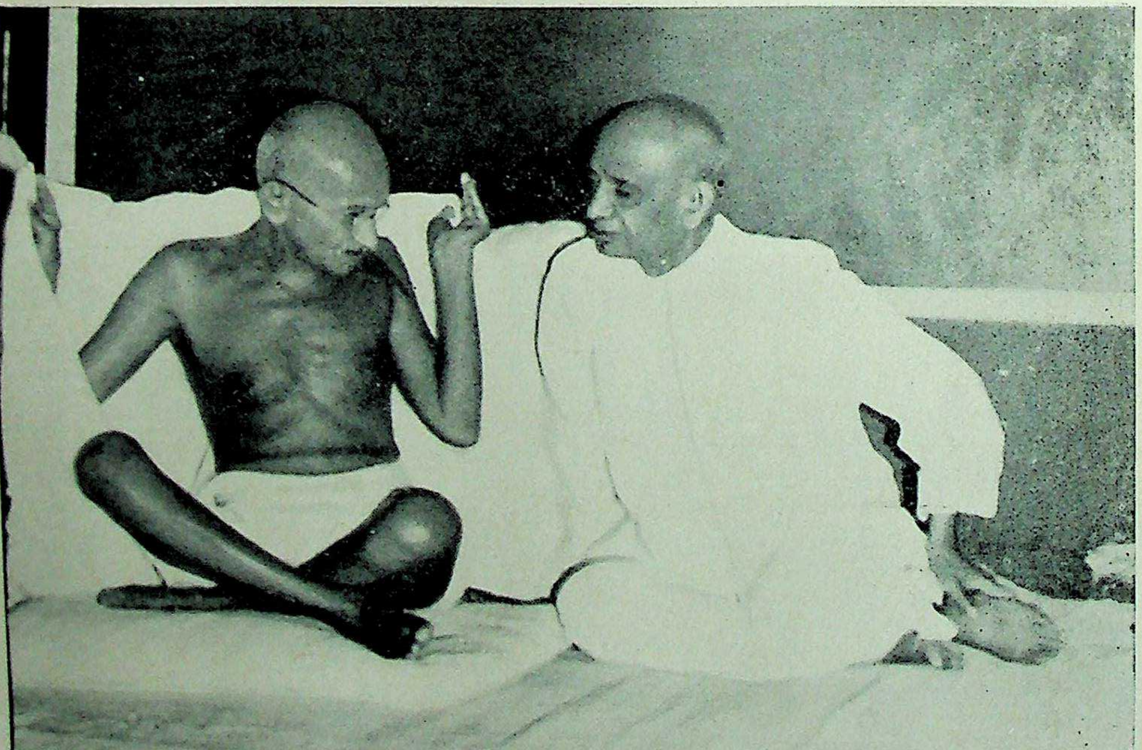
(७)

अपहृता नारियों के लिए अपील

१८ फरवरी, १९४८

देश की हज़ारों दुखित औरतों के लिए जो ज़ोरदार अपील की जा रही है, उनके पक्ष में मैं भी अपनी ओर से कुछ कहना चाहता हूँ। पिछले दिनों पूर्वी और पश्चिमी पंजाब और सीमाप्रान्त में जो अराजकता फैली थी और जिसने काश्मीर की सुन्दर वादी के कुछ भाग और जम्मू प्रान्त को भी घेर लिया था, उसमें निर्दोष औरतों और बच्चों के अपने सम्बन्धियों से ज़बरदस्ती से छीनकर दूर किये जाने और उन पर तरह-तरह के जुल्म-अत्याचार करने से जितनी हमारी इज्जत गिरी, उतनी किसी और घटना से नहीं गिरी होगी। इस प्रकार की दुर्घटनाएँ तो जानवरों के रहन-सहन के नियमों के अनुसार भी नहीं हैं। ऐसे कुकर्म समाज और सभ्यता की परम्पराओं के बिलकुल विपरीत हैं। इसलिए ऐसे लोगों के लिए इस दुनिया में कोई स्थान नहीं हो सकता। और हमारा कर्तव्य है कि सभ्यता के विरुद्ध ऐसे आचरण का हम दृढ़तापूर्वक दमन करें।

जब मैं इन माताओं और बहनों की दुर्दशा और उनके कष्टों का ख्याल करता हूँ तो मेरा हृदय शोक और पीड़ा से भर जाता है। अच्छे घराने की पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ, जिनका जीवन खुशहाली की गोद में पला, जो शान्ति से अपने परिवार वालों के साथ अपना सुरक्षित जीवन व्यतीत करती थीं, बहुत-सी स्त्रियाँ



भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में सरदार पटेल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ विचार विमर्श करते हुए

जो गरीब घरों का आभूषण थीं, आज उजाड़ और बरबाद हो गई हैं। उन्हें दुराचारियों ने अपने घरों से जबरदस्ती दूर कर ऐसी हालत में डाल दिया है, जो मानवता के नाम पर कलंक है। यदि हमें मानवता को फिर से उसके पुराने स्थान पर प्रतिष्ठित करना है, तो हमारा कर्तव्य है कि हम उन अभागी औरतों को उनकी वर्तमान पतित दशा से निकालें और उनको उनकी पुरानी परिस्थिति में पहुँचा दें। यदि हम ऐसा न कर पाएँ, तो मानव-इतिहास में हमारा कोई भी स्थान न होगा और आनेवाली पीढ़ियां हमें जानवरों से भी गया-बीता समझेंगी।

इस सत्कार्य में जो लोग हर प्रकार की मुसीबतों को झेलकर और विभिन्न बाधाओं की चिन्ता न करते हुए लगे हुए हैं, उन्होंने देश और मनुष्य जाति के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया है। इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। यह ठीक है कि यह समस्या इतनी महान है कि जो कुछ अब तक हो पाया है, वह सब तुच्छ मालूम पड़ता है। किन्तु इस थोड़े-से नतीजे को हासिल करने में ही हमें कितनी मेहनत और जी तोड़कर काम करने की ज़रूरत हुई है। अगर हम इसका विचार करें, तो हमें अनुमान हो सकता है कि यदि मानवता के खंडहरों से हमें ये आभूषण बचाने हैं, तो अभी कितना काम हमें और करना होगा। यह स्पष्ट है कि ऐसे महान कार्य को सफलता से पूरा करने के लिए जनता और सरकार का सहयोग ज़रूरी है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जनता और सरकार दोनों का यह कर्तव्य है कि इस काम में पूरी-पूरी सहायता दें। ऐसा न करना, न केवल उन आश्वासनों के खिलाफ होगा, जो दोनों सरकारों ने एक दूसरे को दिए हैं, बल्कि समाज और सभ्यता के सब सिद्धान्तों के भी प्रतिकूल होगा। हमें उन अपराधियों की आत्मा को भी जगाना है, जिनके कब्ज़े में यह औरतें हैं और जो इस प्रकार उनसे व्यवहार करते हैं कि मानो वे बाज़ार की क्रीत वस्तुएँ या जीती हुई लूट हों। मैं उनसे अपील करूँगा कि वह अपनी गलतियाँ महसूस करें और इस पर विचार करें कि उनके इस गलत रास्ते पर चलने से समाज की कितनी हानि होती है।

इस महा अपराध का दण्ड देते समय इस बात का कोई विचार नहीं किया जा सकता कि अपराधियों ने यह काम धर्म के नाम पर, या प्रतिशोध या लूट-खसोट की भावना से प्रेरित होकर किया था। यदि उन्हें फिर से मानव अधि-

कार प्राप्त करने हैं, तो उन्हें चाहिए कि वे पश्चात्ताप करें और जो बुराई उन्होंने की हैं, उसे ठीक करने में सहायता दें। यदि वे फिर से मनुष्य बनना चाहते हैं, तो उनके लिए बुरी राह छोड़ने का यही अवसर है। उन्हें चाहिए कि वे अपनी आत्मा की पुकार सुनें, अपने धर्म के आदेश, अपने समाज के नियम और जीवन के सिद्धान्त के अनुसार चलें। उन्हें चाहिए कि वे सोचें कि यदि उनकी अपनी स्त्रियों पर यह मुसीबत आती, तो वे खुद क्या करते ? मुझे विश्वास है कि अगर ये लोग शान्ति से इन बातों पर सोच-विचार करेंगे, तो अवश्य ही उन्हें अपनी भूल का अनुभव होगा और वे उन लोगों का पूरा साथ देंगे, जो इन स्त्रियों की रक्षा और सहायता का प्रबन्ध कर रहे हैं।

मैं उन अभागे और शोकग्रस्त परिवारों से भी दो-चार शब्द कहना चाहता हूँ, जिन्होंने अपनी माँ, बहनों या बेटियों को खोया है। मैं उनकी पीड़ा और घोर यातना को समझ सकता हूँ। मैं जानता हूँ कि वे अपने प्रियजनों को फिर से पाने के लिए कैसे-कैसे खतरों का सामना कर रहे हैं और करने को तैयार हैं। मुझे अभी तक ऐसा कोई आदमी नहीं मिला, जो इन दुखित व पीड़ित स्त्रियों का फिर से अपने घर में स्वागत करने के लिए राज़ी बल्कि उत्सुक न हो। मैं उनसे यही कहूँगा कि आप हिम्मत न हारें, और अपनी कोशिश बराबर जारी रखें। जहाँ सैकड़ों और हज़ारों व्यक्तियों का प्रश्न हो, वहाँ यह सम्भव नहीं कि सब काम केवल सरकारी साधनों से ही हों। व्यक्तिगत अथवा सामूहिक गैर-सरकारी कोशिश, निरी सरकारी कार्यवाही की अपेक्षा अधिक सफल होती है। मैं आशा करता हूँ कि कार्यकर्ता लोग निराशाओं और विघ्न-बाधाओं से हिम्मत नहीं हारेंगे, और उत्साह, तत्परता तथा दृढ़ निश्चय के साथ इस सत्कार्य में लगे रहेंगे।

अपनी इन शोकग्रस्त बहनों को मैं सहानुभूति और समवेदना का संदेश भेजता हूँ। उनकी दुर्दशाओं और यातनाओं ने हमारे हृदय पर गहरी चोट पहुँचाई है। हमें उनका बराबर ध्यान रहता है। उन्हें इस बात में तनिक भी संदेह न होना चाहिए कि उनके परिवारवाले उन्हें सहर्ष वापस लेने के लिए हृदय से तैयार हैं और हम उनकी रक्षा और उद्धार के कार्य में किसी प्रकार की कमी न आने देंगे। मैं जानता हूँ कि उन्हें अपने वर्तमान जीवन का एक एक पल विष का घूंट होगा। किन्तु धीरज और विश्वास से बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयां भी हल हो जाती हैं और कड़े-से-कड़ा दिल भी पिघल सकता है।

आप धीरज और विश्वास को न छोड़ें और परमात्मा से प्रार्थना करें कि जो लोग आप की रक्षा करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वे अपने शुभ कार्य में सफल हों और बुरा काम करनेवालों की सोई हुई आत्माएँ फिर से जागें, ताकि वे अपने कर्तव्य को समझ सकें।

---

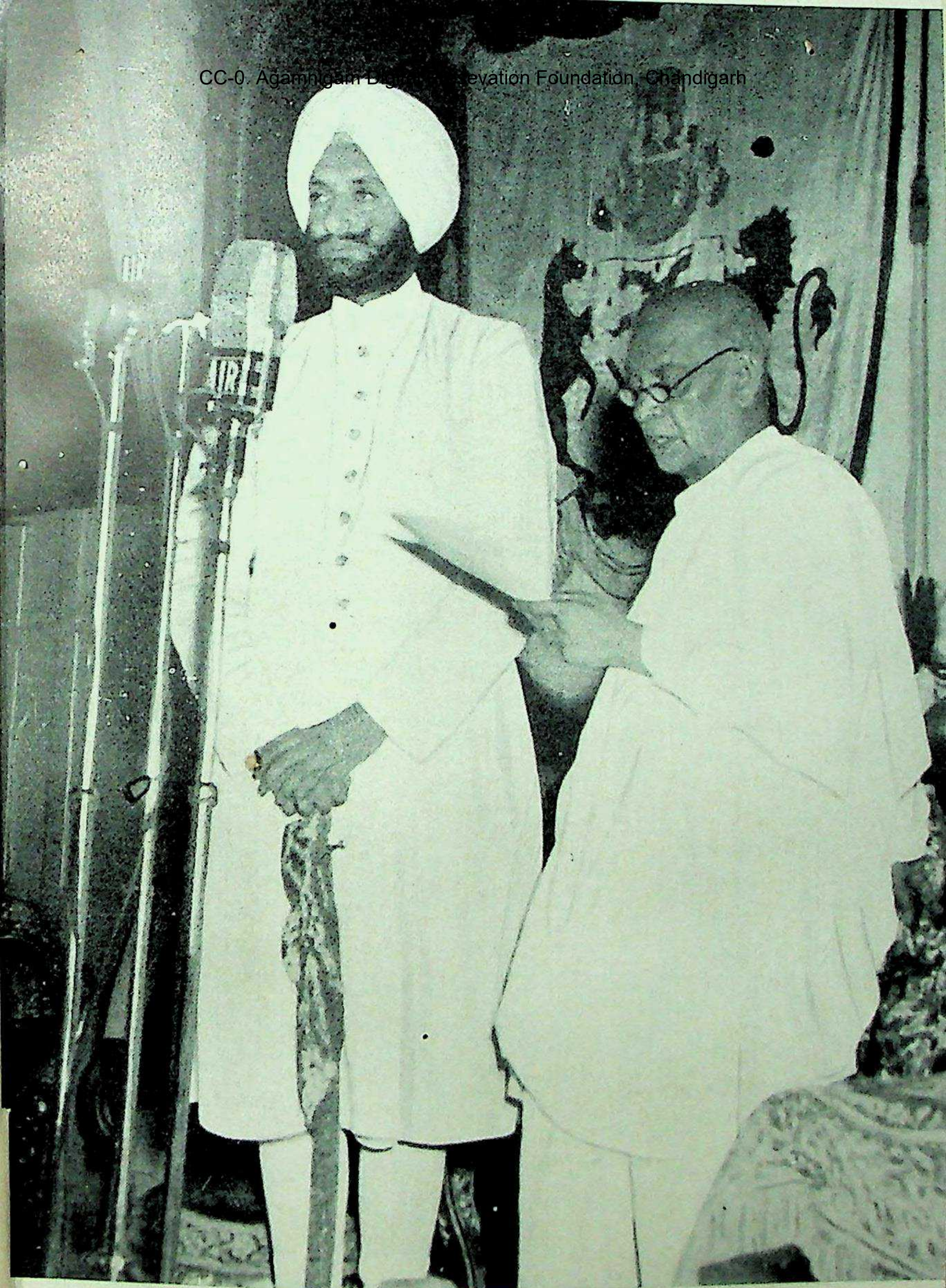
(८)

पेप्सू का उद्घाटन, पटियाला

१५ जुलाई, १९४८

भाइयो, आज हम लोग एक बड़े ऐतिहासिक प्रसंग पर यहां हाजिर हुए हैं। हिन्दुस्तान के इतिहास में आज एक नया चैप्टर (अध्याय) लिखा जाता है और इस समय पर वह नया इतिहास बनाने में हम लोगों को भी हिस्सा लेने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिए इस अवसर पर हम और हमारा देश गर्व अनुभव कर सकते हैं। इस ऐतिहासिक मौके पर जो भाई जमा हुए हैं, उन्हें इस समय पर ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारा दिल साफ कर दे। जिस पवित्र काम के लिए आज हम जमा हुए हैं, वह काम करते हुए हम किसी प्रकार का मैल अपने हृदयों में न रखें। राजा और प्रजा सब के लिए, आज हृदय-मन्थन का समय उपस्थित है।

यह अवसर आज कितनी सदियों के बाद प्राप्त हुआ है। बहुत समय से भारत गुलामी में पड़ा था और आज हमें अपने जीवन में भारत को स्वतन्त्र देखने का मौका मिला है। भारत को स्वतन्त्र बनाने में जो मुसीबतें आईं, जो विडम्बना सहन करनी पड़ी, वह सब आपने देखी है। लेकिन जब इतनी बड़ी क्रान्ति होती है, तो उसमें मुसीबतें आया ही करती हैं। हमारा तो सद्भाग्य है कि उन सब मुसीबतों से हम करीब-करीब पार निकल आए हैं। आज भी बहुत-सी कठिनाइयां हमारे सामने हैं। और यदि आज हम गलती करेंगे, तो हम



पैप्सु के उद्घाटन समारोह में सरदार पटेल महाराजा पटियाला से राजप्रमुख के
पद की शपथ ग्रहण करवाते हुए

को बड़ा नुकसान होगा। ऐसा हुआ तो भविष्य की प्रजा और इतिहास हमारे नाम पर बुराई की छाप लगाएँगे। इसलिए हमें सावधानी से अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए तैयार होना है।

आज पटियाला राज्य और ईस्टर्न (पूर्वी) पंजाब के राज्यों का एकीकरण हो रहा है। आज से एक-दो साल पहले तक इस बात का स्वप्न भी न लिया जा सकता था। आज हिन्दुस्तान से जो टुकड़ा अलग हो गया है, उसको छोड़ कर बाकी सारा हिन्दुस्तान एक हो गया है। किसी के स्वप्न में भी पहले इसका ख्याल न आ सकता था। किसे ख्याल था कि अपना हिन्दुस्तान इतना जल्द एक हो जाएगा। पहले का इतिहास देखिए, मध्यकाल का इतिहास देखिए। यह पहला मौका है कि इतने बड़े रूप में हिन्दुस्तान एक हुआ है। यह क्यों हुआ और किस तरह से हुआ, यह सब आप जानते हैं। जो हमारा पिछले दिनों का इतिहास है, उसमें हिन्दुस्तान कई सदियों से टूटा-फूटा और छिन्न-भिन्न हो गया था। उस में हमारी कितनी गल्तियाँ थीं और कितनी ज़िम्मेवारियाँ थीं, यह सब आप इतिहास में देख सकते हैं। उसके लिए आज मुझे कुछ नहीं कहना है। आज तो मैं आपको यह कहने के लिए आया हूँ कि अपने हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास से हम शिक्षा लें। अपनी जिन गल्तियों के कारण हम इतनी सदियों तक गुलाम रहे, जिन से हमें शरमिन्दा होना पड़ा, उन से अब हम बचने की कोशिश करें। आज हम आज़ाद हुए हैं, और अब हिन्दुस्तान के सुपुत्रों का यह कर्तव्य है कि वे अपने देश को फिर कभी गुलाम न बनने दें।

आज हमारा कर्तव्य है कि हम अपने देश को आगे बढ़ाएँ। हम सीखें कि आज दुनिया के क्या ढंग हैं और उन्हीं के मुआफिक हिन्दुस्तान को चलाएँ। तभी हिन्दुस्तान की आज़ादी ज़िन्दा रह सकती है और वह आगे बढ़ सकता है। तभी दुनिया के और मुल्कों के साथ हम चल सकते हैं। आज दुनिया बहुत छोटी बन गई है। आज जो यान्त्रिक शक्ति दुनिया में पैदा हुई है, उसके सामने दुनिया एक छोटे मुल्क जैसी बन गई है। आज की इस दुनिया में हमें यदि खड़ा रहना हो और हमें अपनी सच्ची जगह पकड़नी हो, तो हमारा कर्तव्य है कि हम उसके लिए तैयार हो जाएँ।

मैं आज थोड़ी-सी मुसीबत से इधर आया हूँ। आप जानते हैं कि मैं पिछले सितम्बर या अक्तूबर में इधर आया था। उसके बाद में आज इधर आ रहा

हूँ। इतने समय में तो देश में बहुत बड़ी क्रान्ति हो गई है। इधर चार-पाँच महीनों से कुछ मैं बीमार पड़ गया था। आज पहली बार मैं बाहर निकलता हूँ। मेरे डाक्टरों ने मुझे इधर आने से मना किया था। उन की नाखुशी बरदाश्त करते हुए भी मैं यहाँ आ गया हूँ। क्योंकि मैंने पटियाला महाराजा को इसके लिए वायदा दिया था। पटियाला महाराजा के साथ मेरी उतनी मुहब्वत भी है। उन्होंने मुझ को हिन्दुस्तान को गुलामी में से निकालने में और उसे एक बनाने में हृदय से साथ दिया था। मैंने उनको जो वायदा दिया था, वह वायदा पूरा करने के लिए मैं आज इधर आया हूँ।

साथ ही आप लोगों को कुछ बातें समझाने के लिए भी मैं इधर आया हूँ। क्योंकि ऐसा मौका फिर नहीं आएगा। राजाओं के पास से राज्य ले लेना आसान है। क्योंकि जब तक हमारे ऊपर परदेसी हुकूमत थी, तब राजाओं के दिल में चाहे कुछ भी रहा हो, लेकिन तब वे भी आज़ाद नहीं थे। जैसे हम तब गुलाम थे, वे हम से भी दुगुनी गुलामी में फँसे हुए थे। अब हम सब आज़ाद हैं। यह आप समझ लें कि मैंने बहुत-से राजाओं के साथ प्रजा की तरफ़ से लड़ाई की। बहुत-से राजा मुझ पर कुछ नाखुश भी थे। लेकिन आज जितनी मेरी राजाओं के साथ मुहब्बत है, उतनी और किसी की नहीं होगी। क्योंकि स्वतन्त्र राजाओं के दिल में भी देश के लिए उतना ही प्रेम है, जितना हमारे दिलों में है। उससे कम नहीं है। उससे कम होता, तो स्वतन्त्र हिन्दुस्तान में किसी का राज्य नहीं चल सकता था।

तो राजा लोग समझ गए और उन्होंने अपनी जगह समझ ली। बीच में एक मौका ऐसा आया था कि कई राजा अलग राजस्थान बनाने के लिए कोशिश कर रहे थे। जब पाकिस्तान बना तो उस समय यह हिन्दुस्तान के और टुकड़े करने की कोशिश भी हो रही थी। तब पटियाला महाराजा ने कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान के राजा हिन्दुस्तान के साथ रहेंगे। उसी समय से मेरी उन से मुहब्बत हुई। वह मुहब्बत कभी टूट नहीं सकती। और चाहे कोई भी कहे कि हम राजाओं के साथ कैसे चल सकते हैं, मगर मैं आप से कहना चाहता हूँ कि मैं खुद चल सकता हूँ, तब आप क्यों न चलें।

जब पहला स्वतन्त्र हिन्दुस्तान था, तो अपने पुराने इतिहास में हम देखें कि तब बड़े-बड़े राजर्षि हमारे देश में हो गए थे। इन्हीं राजा लोगों ने हिन्दु-

स्तान के बाहर हिन्दुस्तान की संस्कृति फैलाई थी। उसी हिन्दुस्तान में उनकी सन्तान को राज्य करने का मौका मिला था।

जब मैं पिछले सितम्बर-अक्तूबर में इधर आया था, तब आप देखते थे कि पंजाब की क्या हालत थी और हिन्दुस्तान की क्या हालत थी। जब पंजाब के दो टुकड़े हुए, तब पंजाब पर जो मुसीबतें आई थीं, वे किसने नहीं देखी हैं? कौन ऐसा दुष्ट और क्रूर है, जिस का हृदय रोता नहीं था। मेरा दिल तो तब रात-दिन रोता रहा है। मुझे वह दिन याद है, जब दस-बारह लाख मुसलमान इधर से पाकिस्तान जा रहे थे और उन के जाने का एक ही रास्ता अमृतसर शहर के बीच में से था। सिक्ख लोगों ने इन्कार किया कि वे इधर से नहीं जा सकते। उधर पश्चिमी पंजाब के एक हिस्से में हमारे हिन्दू और सिक्ख भाइयों की दस-बारह लाख की कतार थी, उसको वहाँ पाकिस्तान के मुसलमानों ने रोक लिया। उस झगड़े में लाखों आदमी मुसीबत में आ पड़े। वे न इधर जा सकते थे, न उधर। कैम्पों में रोग फैल रहा था और ऊपर पानी पड़ रहा था। सब लोगों को बहुत कष्ट हो रहा था। उस समय मैंने पटियाला महाराज को बुलाया और कहा कि मेरे साथ चलो। हम दोनों ने अमृतसर-निवासियों को समझाया कि यह पागलपन है। आज़ाद हिन्दुस्तान में हम इस तरह के पागलपन का उपयोग नहीं कर सकते। तब महाराजा पटियाला पर और मुझ पर हमारे सब सिक्ख नेताओं की बहुत मुहब्बत थी। आजकल मुझे अफसोस है कि मैं उतनी मुहब्बत नहीं देखता हूँ। उस मुहब्बत का मुझको गर्व है। क्योंकि सिक्खों को मैं इस बात का विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि उनका सब से बड़ा दोस्त और सबसे अधिक हित चाहनेवाला मैं ही हूँ। आज तो मैं आप लोगों से अपील करने के लिए आया हूँ कि यह आपस में लड़ने का समय नहीं है। अभी बड़ी-बड़ी मुसीबतें हमारे सामने आ सकती हैं। अगर हमारा जहाज किनारे पर आ कर डूब जाएगा, तो हम खुदा के सामने, मुल्क के सामने, कौम के सामने, बड़े गुनाहगार बन जाएँगे।

तो मैं आपको अमृतसर की घटना सुना रहा था। तब सब सिखों ने मेरा साथ दिया था। मैंने तब उन से कहा था कि हम को एक रास्ता करने के लिए और मुसलमानों को जाने देने के लिए फौज का उपयोग करना पड़े, पुलिस का उपयोग करना पड़े और आप पहलवान लोग हमारे किसी काम न आएँ, जिनसे हमारा लश्कर बनता है, हमारी फौज बनती है, हमारे सिपाही बनते हैं, यह

ठीक नहीं होगा। मैंने उन्हें समझाया कि आप को वालन्टियर बन कर मुसलमानों को जाने का रास्ता करना चाहिए। तब अगर वे लोग हमारे आदमियों को रोकेंगे, तो हम देखेंगे। हमारी बात उन लोगों ने मान ली। वह चीज़ भारत के इतिहास में हमेशा याद रहेगी।

इसी तरह से आज हमें स्वतन्त्र भारत का रास्ता काटना है। देश की मुसीबतों में आपको उसी तरह से काम करना है। छोटी-छोटी हुकूमतों का आपस में हिस्सा बांटने के लिए हमें लड़ाई नहीं करनी है। कौन मिनिस्टर हो, कौन न हो, कौन हाकिम हो, उस झगड़े में हमें नहीं पड़ना है। कौन कौम का सच्चा सेवक हो, हमें तो यही काम देखना है। वही रास्ता बनाने में हमारा कल्याण है। मैं आप को उसी रास्ते पर चलने के लिए निमन्त्रण देने आया हूँ।

आज आपने देख लिया है कि यहाँ हमें जो प्रधान मण्डल बनाना था, वह भी नहीं बना। पर मुझे इस बात का कोई अफसोस नहीं है। इस काम में मुझे कोई अधीरता भी नहीं है। जब हमें लोकशासन बनाना है, डिमोक्रेसी को जन्म देना है, तो हमें धीरज से काम लेना होगा। जिन लोगों ने कभी सत्ता का अमल नहीं किया है, जिसने कभी हुकूमत देखी नहीं है, उन के पास हुकूमत लेने का पहला मौका आता है, तो वह झिझकते ही हैं। लेकिन ज़रूरी बात यह है कि अपना दिल साफ़ होना चाहिए। राज्य में एक पार्टी, दो पार्टी, तीन पार्टी, चार पार्टी ऐसा पक्षापक्ष बनाने का समय अभी नहीं आया है। उसके लिए अभी जल्दी मत करो। जो मुल्क लोकशासन में चलता है, उस मुल्क का इतिहास आप देखें, तो आपको पता चलेगा कि जब राज्य में काफ़ी स्थिरता और मज़बूती आ जाती है, तभी वह अच्छी तरह से चलता है। लेकिन हमारे यहां अभी राज्य का पाया मजबूत नहीं हुआ और हमारा जहाज अभी महासागर के बीच में झोला (झकझोरा) खाता है।

कई लोग कहते हैं कि भारत में तो कांग्रेस का राज्य हुआ है। यह तो एक पार्टी का राज्य है, एक पक्ष का राज्य है। डिमोक्रेसी में तो दूसरा दल भी होना चाहिए। डिमोक्रेसी में औपोज़ीशन (विरोध) भी होना चाहिए। यह बात ठीक है। लेकिन उसका जब समय आएगा, तब हम खुद ही कहेंगे कि औपोज़ीशन बनाओ। शायद हम खुद ही औपोज़ीशन के लीडर बनकर बाहर निकल आएँ। लेकिन आज मैं यह कहना चाहता हूँ कि अभी तक तो हमारा सब जहाज़ ही ढीला-ढीला है। उसको हमें टाईट (कसना) करना है। और

जब तक हमारा जहाज मजबूत न बने, हम उस पर खेल नहीं सकते। यह आप को सम्भालना है। अगली १५ अगस्त को हमारी आज़ादी का एक साल पूरा होगा। हमारी एक साल की आज़ादी में ही हम पर कितनी मुसीबतें पड़ीं। एक छोटे-से साल भर के बच्चे पर जितनी आपत्तियाँ आ पड़ीं, उतनी मुसीबतें शायद इतिहास में किसी मुल्क पर नहीं आईं। हमने वह सब बोझ झेला है। और यदि हमें आज़ादी के इस बच्चे को मज़बूत बनाना हो तो हमें उसकी सलामती की बराबर कोशिश करनी चाहिए।

मैं आप से कहना चाहता हूँ कि आप इस बात का भी ध्यान रक्खें कि आप किस जगह रहते हैं। हमारे हिन्दुस्तान की पुरानी सरहद आज चली गई है। आज हमारी नई सरहद बनी है। उस सरहद पर एक बहुत स्ट्रैटेजिक पोज़ीशन (महत्वपूर्ण अवस्थिति) में आप रहते हैं। यहाँ रहते हुए आपकी क्या ज़िम्मेवारी है? यदि आप का अपने पड़ोसी के साथ मुहब्बत और मित्राचार होता और उसके दिल में विश्वास होता, तब भी और बात थी। आज तो अविश्वास भरा है। यदि दोनों पड़ोसियों में परस्पर मुहब्बत न हुई, एक दूसरे का विश्वास न हुआ, तो हमारा क्या कर्तव्य है? क्या इन हालतों में हम आपस में लड़ सकते हैं? तो मैं आप से यह कहना चाहता हूँ कि इस जगह पर आप लोग बैठे हैं, इसलिए आपकी सब से बड़ी ज़िम्मेवारी है। क्योंकि यहाँ रह कर आप हिन्दुस्तान की सरहद पर बैठे हैं। सरहद के सिपाही को हकूमत का ख्याल नहीं होना चाहिए। उसे तो सरहद की रक्षा करने का ही ख्याल होना चाहिए। जब लड़ाई होती है, तब सब एक हो जाते हैं। इसी प्रकार हमारा आज कर्तव्य है कि हम सब एक बनें।

कई लोग कहते हैं कि यह जो पटियाला और ईस्टर्न स्टेट्स (पूर्वी राज्यों) का यूनियन बनाया गया, उस में किसी की नियत कुछ ऐसी है कि जिस से कि उन्हें शक होता है। पर मैं यह बता देना चाहता हूँ कि मेरी नियत किसी तरफ बुरी नहीं है। लेकिन मेरी एक ख्वाहिश ज़रूर है और वह यह कि जो हिन्दुस्तान अब बना है, उसकी हमें पूरी हिफाजत करनी चाहिए। यह हर एक हिन्दुस्तानी का धर्म और पहला फर्ज है कि वह हिन्दोस्तान को अब कभी गुलाम न बनने दे; सब कुछ देकर भी उसकी आज़ादी की रक्षा करे।

मैं चाहता हूँ अब भारत की एकता में कोई कचाई न हो, उसकी स्थिरता में कोई कचाई न हो। हमारा संगठन भी पूरा बन जाए। उसमें राजाओं ने मेरा

पूरी तरह साथ दिया। आप जानते हैं कि मैं गुजरात से आता हूँ। उधर के जामनगर से पहले मैं बहुत लड़ा। तब ब्रिटिश हुकूमत थी। लेकिन आज मेरी और उनकी इतनी मुहब्बत है कि हम दोनों सगे भाई जैसे हो गए हैं। क्योंकि आखिर वे भी समझ गए और मैं भी समझ गया कि हिन्दुस्तान की सलामती न हो, तो न राजाओं की सलामती है और न हमारी सलामती है। हमारी इज्जत छोटी-छोटी रियासतों में राज्य करने से नहीं बनती, लेकिन अगर दुनिया में हिन्दुस्तान की इज्जत बढ़े, तो उसमें हमारी भी इज्जत बढ़ती है और राजाओं की भी इज्जत बढ़ती है। तो हमारा पहला फर्ज है कि हम हिन्दुस्तान को मज़बूत कर दें। तब हम इसे दुनिया के बड़े मुल्कों की कतार में खड़ा कर सकते हैं। इस काम में जितना समय हम बिगाड़ेंगे, वह हमारा ही कसूर होगा। उसमें हमारी ही गलती होगी, हमारा गिला होगा। हमें इस काम में अधिक-से-अधिक जल्दी करनी है।

कई लोग कहते हैं कि हिन्दुस्तान की रियासतों में छः महीने में ही जो क्रान्ति हो गई है, वह एक बड़ा भारी विप्लव हो गया है। वे कहते हैं कि इस काम में बहुत जल्दबाज़ी की गई है। दूसरी तरफ़ आपको यह समझना चाहिए कि हिन्दोस्तान में जो आज़ादी का दिन आया, वह एक दिन एक सदी बराबर था। आप देखिए कि आज दुनिया कैसी हालत में पड़ी हुई है। जो मुल्क लड़ाई में पड़े हुए थे, उनकी क्या हालत हुई है? जो बड़ी-बड़ी सल्तनतें दुनिया पर राज करती थीं, उन का क्या हाल हुआ है? इस अस्थिर दुनिया में हम थोड़ी स्थिरता से बैठ सकते हैं, ज़रा शान्ति से बैठ सकते हैं, तो यही सन्तोष की बात है। राजाओं का तो धर्म है कि वे रैयत का साथ दें। रैयत के लिए इस काम में धीरज रखना ठीक है। मगर कभी-कभी वह अधीर हो जाती है। कभी-कभी हम गुस्सा भी करते हैं कि इन लोगों को कैसे राज्य सुपुर्द किया जाए। लेकिन चाहे जो कुछ भी हैं, वही हमारे लोग हैं। वे चाहे जैसे हैं, हमें उन्हीं को ठीक करना है। इसलिए हमारा, हिन्दुस्तान की सरकार का काम है कि वह रियासतों की प्रजा को उन्नत करे। यह काम हम दो प्रकार से कर रहे हैं: एक तो रियासतों को आपस में मिला कर उन का एक राज्य बना देना और दूसरा यह कि छोटी-छोटी रियासतों को उनके आस-पास के प्रान्तों में मिला देना। इस तरह नए बड़े यूनिट (इकाई) बनाकर, बड़े-बड़े प्रान्त बनाकर, इन रियासतों को हम बड़े भारत का अंग बना रहे हैं। साथ ही हमारा दूसरा बड़ा कर्तव्य यह है

कि इन नए राज्यों में हमें लोकशासन का प्रवेश कराना है। यह काम भी हम दो तरह से कर रहे हैं। एक ओर तो हम लोग यह काम कर रहे हैं और दूसरी तरफ़ रियासतों के राजा भी यही काम कर रहे हैं। कितने ही राजाओं ने बड़ी खुशी से हमें अपना साथ दिया है। बहुत-सी रियासतों में उनके राजाओं के सहयोग से यह काम भली प्रकार पूरा हो गया है। अब थोड़े-से राज्य बच रहे हैं, उन में भी सब ने लोक-शासन का सिद्धान्त तो स्वीकार कर ही लिया है और उस पर अमल भी हो रहा है।

अब सिर्फ एक ही राज्य बाकी है, जो हैदराबाद है। बहुत-से लोग हिन्दुस्तान की सरकार के लिए सोचते हैं कि हैदराबाद के बारे में वह कमज़ोरी क्यों दिखा रही है। लोग खीझकर पूछते हैं कि वह क्या कर रही है और अब क्या होगा। मैंने जब जूनागढ़ में प्रवेश किया था, तभी कह दिया था कि हैदराबाद यदि नहीं समझता, तो जो हाल जूनागढ़ का हुआ है, वही हैदराबाद का भी होगा। इसके बारे में दो मत नहीं हो सकते। लेकिन मेरी उम्मीद यह थी, कम-से-कम हमारे पिछले गवर्नर-जनरल लार्ड माउन्टबेटन की पूरी उम्मीद यह थी कि उनके जाने से पहले वह निजाम सरकार को समझा सकेंगे, उन्हें उनकी जगह बता सकेंगे। मौंटेन कर हैदराबाद का सलाहकार था, वह भी अंग्रेज़ था। उसने और हमारे गवर्नर जनरल ने मिलकर मुझसे कहा था कि एक साल के लिए आप हैदराबाद से एग्रीमेण्ट (समझौता) करें। इस बीच हम समझौता कर लेंगे। मैंने यह बात मान ली। लेकिन जब समझौते की मांग हुई, तो फिर उन्होंने मौंटेन कर को भी हटा दिया। तब हमने दूसरे सलाहकार के साथ एक साल का समझौता किया। वे लोग जो समझौता करते थे, वही निजाम का राज चलाने के लिए बैठते थे। वे लोग अब लालच में पड़े कि हम को कुछ और दिया जाए।

तो हमारे गवर्नर जनरल ने हमारी तरफ से आखिरी दिन तक कोशिश की। तब तक कोशिश की, जब तक वह यहाँ रहे। लेकिन निजाम की सरकार तो एक प्रकार की ब्रिटिश सल्तनत थी। एक प्रिय वस्तु थी, और उस को ब्रिटिश शाहंशाह का एक खास दोस्त कहा जाता था। हम भी चाहते थे कि यदि हमारे गवर्नर जनरल के हाथ से, जो उनका दोस्त है, कोई चीज़ हो जाए, तो बहुत अच्छा है। लेकिन उन्हें भी आखिरी दिन तक जो उम्मीद थी, वह पूरी न हो पाई। मैंने उनसे पहले से ही कहा था कि यह चीज़ बननेवाली नहीं है। चलते

चलते उन्हें भी पूरा अनुभव हो गया। मैं चाहता था कि हम पर कोई दोष न आए, इसलिए मैंने अपने गवर्नर जनरल से कह दिया था कि ठीक है, हमारी तरफ़ से आप जितनी कोशिश चाहें, उतनी करो। कभी हमें यह नहीं कहना कि हम ने कोई गलती की, या हमने उदारता नहीं बताई। गवर्नर जनरल ने उनके साथ समझौता करने के लिए जो-जो बातें कहीं, वे सब बेकार हो गईं और उन्होंने कह दिया कि वे बातें तो पुरानी हो गईं। अब कोई समझौते की बात नहीं होगी।

अब हम भी कहते हैं कि अब समझौते की कोई बात नहीं होगी। जैसा मुल्क में और जगह पर हुआ है, वैसा ही इधर भी होगा। मुझे तो ज़रा भी उम्मीद नहीं कि किसी दूसरी तरह से हैदराबाद का फैसला हो सकता है। और राज्यों ने जो कुछ किया है, अगर हैदराबाद भी खुद इसी तरह से करने के लिए तैयार हो, तो हम उनकी इज्जत करेंगे। तब हम उनकी मुहब्बत करेंगे। लेकिन अगर वे डण्डे से, धोके से, या बाहर की मदद की उम्मीद से कोई रास्ता लेना चाहेंगे, तो वह नहीं होगा। हिन्दुस्तान इस तरह से कभी बरदाश्त नहीं करेगा। उस तरह से स्वतन्त्र हिन्दुस्तान ज़िन्दा भी नहीं रह सकता है। तो हम मानते हैं कि हमने देरी की है। उसमें देरी करने की कितनी वजह थी, वह सब हम अभी आप लोगों के सामने नहीं रख सकते हैं।

लेकिन मैं यह एक बात कहना चाहता हूँ कि जो लोग अधीरता करते हैं, उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि आप भरोसा रक्खें। आपके दिल में जितना दर्द हैदराबाद के लिए है, हमारे दिल में उससे कोई कम दर्द नहीं है। हैदराबाद की प्रजा पर जो जुल्म हो रहा है, उसके लिए हमारे दिल में बहुत दर्द है। लेकिन जब एक औपरेशन (चीरा-फाड़ी) करना होता है, तो उसमें कम-से-कम खराबी हो, कम-से-कम खून निकले, इस तरह से उसे काटना चाहिए। आप को विश्वास रखना चाहिए कि हम उसे काटनेवाले हैं। हम उसे छोड़ेंगे नहीं। बहुत दफा हमने हैदराबाद में लाठी चार्ज की बात सुनी है, बहुत दफा अपमान को बर-दाश्त किया है। लेकिन जब वक्त आएगा, तब हम आपको करके बता देंगे। इस तरह से नुकसान तो होगा। दोनों तरफ नुकसान होगा। पर उसकी जिम्मे-दारी लिए बिना हम राज्य नहीं चला सकते हैं। आज हैदराबाद राज्य के बाहर जो लोग पड़े हैं, वे वहाँ से हुकूमत चलाते हैं। ऐसे राज्य के साथ हमारा समझौता नहीं हो सकता। अगर राजा के साथ हमें समझौता करना है, तो

हुकूमत भी उसी के पास होनी चाहिए, और उसे बकवास करनेवाले को बन्द करना चाहिए। अगर वह न हो सके, तो उसके साथ वाजिब ढंग से हमें फैसला करना पड़ेगा। और उसके लिए हमारी पूरी तैयारी है। आज हिन्दुस्तान में बहुत लोग सोचते हैं कि हम क्या कर रहे हैं। हम क्यों ढील दे रहे हैं। मैं उनको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हमारे धीरज की भी परिसीमा है। लेकिन हमारे पर ज्यादा ज़िम्मेदारी है, इसलिए हम अक्लमन्दी से, अच्छी नीयत से और धीरज से काम करना चाहते हैं। इसीलिए हम इतनी देर कर रहे हैं।

कुछ लोग यह भी समझते हैं कि हमारी हिन्दुस्तान की सरकार में कोई मतभेद है। कोई कहता है कि हमारी सरकार में आपस में मतभेद है, हम आपस में लड़ते हैं। कोई आगे बढ़ना चाहते हैं, कोई पीछे हटना चाहते हैं। सचाई यह है कि ऐसी कोई बात नहीं है। आज हिन्दुस्तान की सरकार कैसी भी बनी हो, उसमें कितने भी पक्षों के लोग हों, लेकिन वे सब एक राय से और एक साथ मिलकर काम करते हैं। उन में जब ऐसा मतभेद होगा कि वे एक साथ नहीं चल सकेंगे, तो मेरे जैसा आदमी उसमें नहीं रह सकेगा। मैं आपको इस बात का विश्वास दिलाना चाहता हूँ। आज हम सब इकट्ठे बैठे हैं। क्योंकि आगे हमारे सामने का पाँच मील तक का रास्ता हम सब के एक साथ इकट्ठा चलने का है। जब तक हम वह रास्ता तै नहीं कर लेते, तब तक हम एक साथ बैठे हैं। लेकिन जब हम को मालूम पड़ेगा कि अगले मील से हम अलग-अलग चलनेवाले हैं, तब हम हट जाएँगे। क्योंकि हम बेवकूफ नहीं हैं कि हम यह न समझें कि आज हिन्दुस्तान किस जगह पर बैठा है, वह किस हालत में है और उसकी ज़रूरतें क्या हैं।

मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूँ कि अगर हमारे में कुछ लोग बेवकूफ हैं, तो राजाओं में भी कोई-कोई वैसे ही बेवकूफ हैं। कोई समझते हैं कि उन्हें किसी ज्योतिषी ने बताया है कि अगस्त में यह सरकार टूट जाएगी और उन्हें मौका मिलेगा। वे यह नहीं देखते कि इतनी बड़ी सल्तनत टूट गई और किसके हाथ से वह टूटी। ऐसी बेवकूफी की बातों में आप को नहीं आना चाहिए। कोई साधु निकलता है और कहता है कि यह राजपूतों का मौका है। कोई कहता है कि यह जाटों का मौका है। ऐसी-ऐसी बातों को माननेवाले कैसे बेवकूफ हैं? यह हमारा सौभाग्य है कि साधारण जनता में इस तरह की बेवकूफी की बातों पर विश्वास करनेवाले लोग बहुत कम हैं।

आज हमारे लिए यह बहुत खुशी की बात है कि इस जगह पर हमने अपना आखिरी यूनियन भी बना लिया है। इस जगह पर, आज जो राजा लोग बैठे हैं, उन सब को मैं मुबारकबाद देना चाहता हूँ। और बड़ी खुशी से मैं इन राजाओं की तारीफ़ करता हूँ। मैं आप सब को बधाई देता हूँ कि भारत का नया इतिहास बनने में आप लोगों ने बहुत उदारता दिखाई और बहुत दूरन्देशी दिखाई है। इसके लिए आपको मैं धन्यवाद देता हूँ, और भविष्य के लिए मैं आपसे माँगता हूँ कि भले-बुरे जैसे भी हमारे लोग हैं, उन्हीं को हमें साथ लेना है। वे गलतियाँ भी करें, तो उससे आपको बिगड़ना नहीं चाहिए। जैसे अपने बच्चे के साथ हम उदारता का बरताव रखते हैं, उसी तरह इनसे भी करना चाहिए।

मैं और सब लोगों से भी कहना चाहता हूँ कि राजाओं ने अगर बिगाड़ किया होता, तो उससे हमको बहुत नुकसान हुआ होता। लेकिन उन्होंने कोई बिगाड़ नहीं किया, और हमारे साथ रहे। हिन्दुस्तान को आगे बढ़ाने में और अपनी सत्ता अपनी इच्छा से आप लोगों को सुपुर्द करने में उन्होंने जो बहादुरी और समझदारी दिखाई है, उसके लिए आपको अब सोचना है। अब हम सोचें कि हमारा क्या कर्तव्य है ? मैं हिन्दुस्तान की रियासती प्रजा से कहना चाहता हूँ कि एक हाथ (एक व्यक्ति) से राज्य चलाना एक तरह से आसान है, लेकिन पंचायत से हुकूमत चलाना और वह भी उस पंचायत से जिन्होंने पहले कभी राज नहीं चलाया, बड़ा मुश्किल काम है। आप देख लीजिए कि जब मिनिस्टरी बनाने का वक्त आता है, तब क्या होता है ? तब कितनी मुश्किल होती है। मिनिस्टरी को जब सत्ता मिल जाती है, तब उसको चलाने के लिए कितनी मुसीबत आती है।

सब राजाओं से मेरी यह बिनती है कि आप धीरज से अपनी जनता का साथ दें। इसीलिए हिन्दुस्तान की सरकार हर जगह पर जहाँ-जहाँ रियासतों में मिनिस्ट्री बनती है, कुछ सलाहकार (एडवाइज़र) रखती है, जो अनुभवी लोग होते हैं। हम कहते हैं कि भाई इन लोगों की सलाह से आप चलो। यदि कोई मुसीबत आए, तो हमारे पास आ जाओ। उसमें भी कई मिनिस्टर लोग यह मानने लगते हैं कि हम पर यह कण्ट्रोल (नियन्त्रण) क्यों चाहिए। हिन्दुस्तान की सरकार का एडवाइज़र हम पर क्यों रखना चाहिए ? ठीक है। हम आप पर कोई एडवाइज़र लादना नहीं चाहते, क्योंकि हमारे पास तो खुद ही बहुत कम अनुभवी अमलदार हैं। काम करनेवाले होशियार लोग बहुत कम हैं। तो

हम किसी को इस तरह आपके ऊपर लादना नहीं चाहते। लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि एक-आध गलती की तो कोई बात नहीं, मगर आप अधिक गलतियां करेंगे, तो आप तो गिर जाएँगे। सिर्फ आप ही नहीं गिरेंगे, अपने यूनियन को भी आप गिरा देंगे। और अगर आप उसको गिराएँगे तो आपको तो नुकसान होगा ही, आपसे अधिक आपके मुल्क को नुकसान होगा। तो सारा हिन्दुस्तान आज देख रहा है। बाहर के लोग देख रहे हैं कि यह जो रियासतों में रेवोल्यूशन (क्रान्ति) हुआ, उसको अब हिन्दोस्तान के लोग किस तरह चलाएँगे ?

हम चाहते हैं कि लोकशासन तो अपनी जगह पर रहे और देश भर में लोगों की आवाज़ से काम चले। लेकिन साथ ही हम यह भी चाहते हैं कि उसमें कोई बड़ी गलती न हो। छोटी-मोटी गलती तो खैर सभी करते रहते हैं। क्योंकि स्वराज्य चलाने का मतलब ही यह है कि गलती करते-करते सीखना। क्योंकि जिस को पानी में तैरना है, उसे एक दिन पानी में पड़ना ही है। अगर वह सदा बाहर या किनारे पर रहेगा तो वह कभी तैरना नहीं सीखेगा। इसलिए अगर डिमोक्रेसी में हमें राज्य चलाना है, तो गलतियां तो होंगी। लेकिन कोई बहुत बड़ी गलती हो जाए, तो उसका हमको भी अफसोस होगा, जिनके पास राज्य की सत्ता होगी, उनको भी अफसोस होगा, और जिन लोगों के बारे में वह गलती होगी, उन लोगों को तो दुख होगा ही। इसलिए हम उनको राज चलाने में मदद देने के लिए अनुभवी अमलदार देते हैं। उन लोगों की सलाह आपको माननी चाहिए।

जैसा कि मैंने अभी कहा, आप हिन्दोस्तान की एक बड़ी महत्त्वपूर्ण सीमा पर रहते हैं। इससे आपकी बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है, आपके सारे यूनियन की बड़ी ज़िम्मेवारी है। और जगह कोई गलती हो, तो शायद उससे कम नुकसान होगा, लेकिन इस जगह पर अगर कोई गलती हो, तो उससे बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है और उससे मुल्क को चोट लग सकती है। इसलिए आपकी इस जगह से कोई बड़ी गलती नहीं होनी चाहिए। इसके लिए आप लोगों को अपना स्वार्थ पीछे रखकर मुल्क का स्वार्थ आगे करना है। ऐसे ही आदमियों को यहाँ बैठना है। दूसरे आदमी यहाँ बैठेंगे तो गलती करेंगे।

मैं आपको बड़ी अदब से कहना चाहता हूँ कि मजहब के मामले में आप नहीं जाइए। क्या आप यह समझते हैं कि हमने आज़ाद हिन्दुस्तान बनाने के

लिए यह जो इतनी कोशिश की, वह क्या किसी मज़हब पर हल्ला करने के लिए की ? नहीं। हमने तो उनके मज़हब पर भी कभी किसी तरह की बदनीयती नहीं की थी, जो हम से अलग हो गए हैं। उन्होंने वहाँ पाकिस्तान तो बनाया है, लेकिन आज भी पाँच-सात हज़ार मुसलमान जेल में पड़े हैं। खान अब्दुल गफ्फार खान बादशाह को भी उन्होंने जेल में बैठा दिया है। उसने मुल्क को आज़ाद कराने में जितनी कुर्बानी की, उतनी और किसने की, यह मुझे बताइए तो सही ? लेकिन उसको भी आज जेल में बैठना पड़ा। और फ्रान्टीयर ट्राइब के बहुत-से लोगों को जेल में बिठाने के बाद, उन ट्राइबों के ऊपर वज़ीरिस्तान में बम गोला किसने फेंका ? वह कोई दूसरे मज़हबवाले तो नहीं फेंक रहे। मुझे याद है कि इण्टैरिम गवर्नमेण्ट (अन्तरिम सरकार) के ज़माने में जब कांग्रेस और लीग साथ मिलकर हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट चलाते थे, तब एक समय यह मौका आया था, जब हमारे फ्रान्टीयर से गवर्नर ने प्रोपोज़ल (प्रस्ताव) भेजा था कि हमें वज़ीरिस्तान पर बम फेंकने पड़ेंगे। तब हमारे प्राइममिनिस्टर ने विरोध किया था कि ऐसा नहीं हो सकता। यह ठीक नहीं। और जो साहब आज पाकिस्तान के प्राइममिनिस्टर हैं, उन्होंने कहा था कि हम मुसलमानों पर बम्ब करने के लिए थोड़े ही सैन्कशन (अनुमति) देंगे। पर जब सत्ता आती है, तो सारी शक्ल बदल जातीहै। तो आप यह समझ लीजिए कि हम किसी के मजहब पर हाथ फेंकनेवाले नहीं हैं। आप यह भी समझ लीजिए कि यहाँ, हमारे देश में, हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, क्रिश्चियन और पारसी सभी के सब काम सलामत हैं। हमारा यह सैक्यूलर स्टेट (धर्म निरपेक्ष राज्य) है।

मजहब के नाम से पोलिटिक्स में कभी दखल नहीं करना चाहिए। मज़हब को अपने रास्ते पर चलने दो। अगर कभी आपको अपने मजहब के ऊपर कोई खतरा मालूम हो, तब हमारे पास आओ। हम आपको छोड़ के कहाँ जाएँगे ? आपके बिना हम कैसे आगे चलेंगे ? मान लीजिए कि सिक्ख धर्म के ऊपर कोई खतरा आया, तब क्या पटियाला महाराज से बढ़कर किसी और को सिक्ख धर्म के लिए ज्यादा दुख होगा ? वह क्या हम उनको चैन से बैठने देंगे ? हमारी और उनकी दोस्ती क्या ऐसी ही है ? मैं आप लोगों से कहना चाहता हूँ कि मिनिस्ट्रियों को तोड़ने-फोड़ने की यह खटपट छोड़ दो। आज हमारे पास और जरूरी काम पड़ा है।

आपके साथ ही वाले ईस्टर्न पंजाब (पूर्वी पंजाब) में हमारी हुकूमत है।

वहाँ एक साल में दो दफा मिनिस्ट्री बदली। अब हम कब तक शरारत करते रहेंगे ? आप जानते हैं कि पाकिस्तान में हमारे कितने लोग मर गए ? कितने बच्चे, कितनी औरतें, कितनी हमारी बहन-बेटियाँ वहाँ मर गईं ? कितनों की इज्ज़त गई ? कितनी लड़कियाँ परदेस में उड़ा ली गईं ? उसकी चोट तो हमारे दिल में लगी है। यह चोट रहते भी हम इस तरह से बर्ताव करेंगे, तो हम मुल्क की क्या सेवा कर सकेंगे ? मैं तो चाहता हूँ कि यहाँ जो मिनिस्ट्री बनती है, उसमें और पंजाब की मिनिस्ट्री के बीच में पूरी मुहब्बत होनी चाहिए। दोनों हुकूमतों को एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। असल में दोनों हुकूमतें तो एक ही हैं। अब दोनों ही हिन्दोस्तान की सरहद पर बैठे हैं। अगर आप आपस में लड़ते रहे, तो हमारा काम किस तरह चलेगा ?

तो मैं तो इन सब बातों के लिए इधर आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप समझ लें कि आप के ऊपर बड़ी भारी ज़िम्मेवारी है। हमने यह यूनियन बनाने का काम तो कर लिया, लेकिन यह काम हमने इस उमीद से किया है कि यहाँ आप इस तरह से चलेंगे कि जिस में आपकी भी इज्जत बढ़े, और मुल्क की भी इज्जत बढ़े। राजाओं की तरफ़ से तो हम को सहयोग का हाथ मिल ही रहा है। आपकी तरफ से भी मैं उमीद करता हूँ कि दिल की सफाई करके आप को हमारा साथ देना है। न दोगे, तो भविष्य की प्रजा आप को शाप देगी और इतिहास कहेगा कि उन लोगों को आज़ादी तो मिली, लेकिन वे नालायक लोग थे। ऐसा कभी नहीं होना चाहिए।

तो इस जगह पर आज हमें अपना दिल साफ कर ईश्वर को हाज़िर-नाज़िर समझकर प्रतिज्ञा करनी है कि हम मुल्क की सेवा के लिए एक होकर आगे चलेंगे, ताकि सारा मुल्क आगे बढ़े। हमने अगर ऐसा किया तो भविष्य के लोग कहेंगे कि हमारे पूर्वज लोग लायक थे। जिन राजाओं ने उदारता और शराफत से अपने अधिकार छोड़े हैं, भविष्य की प्रजा उन पर अभिमान करेगी। राजा लोग भी यह अनुभव करेंगे कि हमने जो कुछ किया, ठीक किया।

आज मैं जिस नये यूनियन का इनऑग्यूरेशन (उद्घाटन) कर रहा हूँ, उस का नया कान्स्टिट्यूशन (संविधान) बना है। उसमें महाराजा पटियाला महाराज प्रमुख हैं और यह मेरे पास, मेरे दाहिने हाथ, कपूरथला के महाराज बैठे हैं, वह उपराज-प्रमुख हैं। उन्हें और पटियाला महाराज को मुझे एक सौगन्ध करानी है, यह मेरे पर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। मैं कौन हूँ ? मैं

तो उनकी रैयत होना पसन्द करता ! लेकिन मुझ को आज उनका स्वागत करने का मौका मिला है । उनके ऊपर इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी है । हम दोनों मुल्क के सेवक बनना चाहते हैं, और सच्चा सेवक बनना चाहते हैं । इसलिए मैं न तो किसी राजा की हैसियत से, न किसी लीडर की हैसियत से काम करता हूँ । हम दोनों हिन्दुस्तानी की हैसियत से काम करते हैं । मैं उमीद करता हूँ कि आप लोग भी इसी हैसियत से इस चार्ज को समझ लेंगे । आप समझ जाएँगे कि आज हर हिन्दुस्तानी के ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है । तो मैं पटियाला महाराज को प्रतिज्ञा करने के लिए बिनती करूँगा । आज आप यह प्रतिज्ञा लेंगे और बाद में महाराज अपनी मिनिस्ट्री से यह प्रतिज्ञा करवाएँगे । यह जो स्टेटों का संगठन करना है, उसमें कोई एक या सवा महीने का समय लगेगा। लेकिन उसके पहले आज से जो काम शुरू करना है, उसमें यह दो प्रमुख राज प्रमुख और उपराज प्रमुख बन जाएँगे और वे अपनी प्रतिज्ञा ले लेंगे । उसके बाद यह जो प्रजा मण्डल और बाकी संस्थाएँ हैं, उनके लोग आपस में मिलकर एक हफ़्ते में अपनी मिनिस्ट्री के नाम दे देंगे । उसके बाद मिनिस्ट्री को सौगन्ध दी जाएगी ।

हम जो यह काम कर रहे हैं, उसमें हमारे सामने एक दिक्कत है । आज प्रजा के चुनाव से यहाँ कोई संस्था नहीं है । अपने प्रान्तों में हम लोग जिस तरह चुनाव करा रहे हैं, इस तरह से इधर कोई ढंग नहीं है । तो यहाँ हम चुनाव से किसी को लीडर नहीं बना सकते हैं । सवाल यह है कि हम खुद कैसे लीडर पसन्द करें ? तो यहां जो छोटी-छोटी संस्थाएँ हैं, उन्हीं के आपस के मेल-जोल से यह काम करना चाहिए । इस बारे में मुझ पर और महाराज पर बहुत बोझ डाला गया है । महाराज ने और मैंने इंकार कर दिया कि यह हमारा काम नहीं है । आप लोगों को यह ज़िम्मेवारी लेनी है कि यहां मिनि-स्टर कौन बने, प्रधान कौन बने । यह आप लोगों का काम है । यदि आप से नहीं बनेगा, तो फिर जिस तरह हमने और कई जगहों पर किया, इसी तरह से इधर भी करना पड़ेगा ।

आज आप को एक और बात भी समझनी है । वह यह कि आज जो चीज़ बनेगी या कुछ दिन बाद जो मिनिस्ट्री बनेगी, वह इन्टैरिम (अन्तरिम) मिनिस्ट्री होगी, वह ज्यादह दिन के लिए नहीं होगी । भारत के सब नागरिकों को मताधिकार दिया जाएगा और इसके बाद नया चुनाव होगा । वह चुनाव

हमें जल्दी-से-जल्दी करना है। उस चुनाव में जो पार्टी जीतेगी, उसका जो लीडर होगा, वह आपका मुख्य-मन्त्री बनेगा। लेकिन आज तो हमारे पास वैसा कोई साधन नहीं है। आज जब एक आदमी चुनना है, तो वह बोझ हमारे ऊपर नहीं डालना चाहिए। क्योंकि फिर उसमें से लोग कहने लगेंगे कि इस सरकार को तो महाराजा ने हम पर डाल दिया, या सैन्ट्रल गवर्नमेंट ने हमारे ऊपर लाद दिया। हम ऐसा नहीं कहलाना चाहते। आप को हम पूरा मौक़ा देना चाहते हैं। आप एक हफ्ता ले लें, दो हफ्ते ले लें, उससे ज्यादा टाइम न लगाना चाहिए। मुझे उमीद है कि आप जल्दी-जल्दी वह काम खत्म करेंगे। इसी में आपकी भलाई है। इसी में आपकी भी इज्जत है और हमारी भी इज्जत है। अब मैं पटियाला महाराजा को सौगन्ध दिलाने का काम शुरू करता हूँ। (तालियां।) (इसके बाद सौगन्ध दिलाई गई।)

---

(९)

इम्पीरियल होटल, नई दिल्ली

३ अक्तूबर, १९४८

लाला देशबन्धुजी, दिल्ली निवासी दोस्तो और नारियो !

आपने जो प्रेमपूर्वक मेरा स्वागत किया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। और जो मानपत्र आपने मुझे दिया है, उसके बारे में भी मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। इस समय पर मैं जो एक प्रकार का संकोच या एक प्रकार का एम्बेरेसमेंट अनुभव कर रहा हूँ, वैसा मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया है। क्योंकि इस तरह से दिल्ली में ही मेरा स्वागत करना या इस तरह से मानपत्र देना, कहाँ तक योग्य है, इस बारे में मेरा मन अतिशय शंकाशील है। और मेरे सब साथी यहाँ बैठे हैं। खुद हमारे गवर्नर-जनरल साहब और हमारे प्राइम मिनिस्टर भी यहाँ बैठे हैं। उनके सामने आप लोग मुझे अलग करके इस प्रकार का मानपत्र देते हैं, वह आपके लिए कुछ भी हो, मेरे लिए तो एक प्रकार की उद्धताई ही है और मुझ को यह चीज़ बिलकुल नापसन्द है। ६ महीने से देशबन्धु जी मेरे पीछे लगे थे। दिल्ली के चन्द और निवासी भी मेरे पीछे लगे थे। मैं टालता रहा। लेकिन मैंने समझ लिया कि इन लोगों के दिल में एक ख्याल है। ये सोचते हैं मेरे सब साथी तो ज्यादे साल तक काम करने वाले हैं, लेकिन मेरे बारे में वह समझते हैं कि इनका दिन पूरा हो गया है। क्योंकि एक तो मेरे स्वास्थ्य को बड़ी ठोकर लगी है और उसमें से मैं बहुत

मुसीबत से उठा हूँ। मेरा इस दुनिया में रहना एक प्रकार से अनुचित ही है, क्योंकि गान्धी जी के साथ मेरा जीवन भर का साथ रहा। मेरा उनका एक प्रकार का वायदा था, कौल था, कि हमें एक साथ जाना है। और मैं पीछे रह गया! उसका मुझे दुख है और मैंने कोशिश भी की लेकिन मैं तो बच गया हूँ!

अब जो कुछ बचा है, मेरी आयु के जो थोड़े दिन, और मुझ में जो थोड़ी-सी ताकत बाकी है, उसे उस काम को पूरा करने में लगाना चाहता हूँ, जो काम गान्धी जी ने छोड़ा है। क्योंकि मैं समझता हूँ कि अगर गान्धी जी जाते समय मुझ से कुछ भी कह सकते तो यही बात कहते कि तुम ठहर जाओ, और मेरा काम पूरा करो। बहुत दफ़े हमारी उनकी बात हुई है। बहुत दिन हम एक साथ रहे। अकेले साथ रहे, एक दूसरे के दुख-सुख में बहुत हिस्सा लिया। इस प्रकार वह चले जाएँगे, स्वप्न में भी मुझे इसका ख्याल नहीं था। और उनके लिए तो इस तरह चला जाना बहुत ही अच्छा हुआ। लेकिन हमारे लिए वह बहुत ही बड़ी शरम की बात है। और हम भी इतने नालायक निकले कि उनको इस तरह से जाने दिये। हमने उनका काम भी पूरा नहीं किया। वह पूरा किया होता, तो इस तरह का घृणित काम ही न होता। या हमने उनकी पूरी रक्षा की होती तो वह चीज़ न होती। लेकिन दोनों में हम गाफिल रहे। अब उसके लिए तो अफसोस ही करना है और हम कर ही क्या सकते हैं? हाँ, इतना हम ज़रूर कर सकते हैं, कि जो कुछ उन्होंने अधूरा छोड़ा है, उसी काम को पूरा करें। तभी उनके प्रति हमारी वफादारी ठीक होती है।

अभी आप ने जो मानपत्र मुझे दिया है, उसमें मेरी जो तारीफ़ की है, उसके बारे में मैं क्या कहूँ? मैं उसके दो हिस्से करता हूँ। एक तो मेरे गवर्नमेंट में आने से पहले के समय की, जब मैं भारत की आज़ादी की लड़ाई का एक सिपाही था। तब युद्ध के जितने मौके आए, उन सब में सिपाहियों के साथ मैंने भी, जो कुछ मुझ से हो सकता था, करने का प्रयत्न किया। लेकिन मैं जानता हूँ, मुझे मालूम है कि हमारे मुल्क में सैकड़ों ऐसे लोग पड़े हैं, जिन्होंने स्वाधीनता के युद्ध में अपना सब कुछ बलिदान दे दिया, अपनी जान तक दे दी। उन सब को हम भूल गए। वे सब कहां गए? कच्ची उम्र में अपने कुटुम्ब और अपनी सहूलियतों को छोड़ कर वे चले गए, वे हँसते चेहरे वाले नौजवान चले गए। उन्होंने मुल्क के लिए कुर्बानी की। उनको न कोई प्रसिद्धि मिली,

न कोई मानपत्र मिला। असल में अगर किसी को भी मानपत्र देना उचित हो, तो वह उन्हीं लोगों को दिया जाना चाहिए। अगर मैं भी मानपत्र ले सकता हूँ, तो उन्हीं के नाम से ले सकता हूँ। हाँ, आप लोगों ने बारदोली की घटना का ज़िक्र किया है, उस समय तो हर मौके गान्धी जी मेरे साथ थे। मुझ पर उनकी निगरानी थी। वह देख रहे थे कि मैं किसी गलत रास्ते पर न चलूं। उनका आशीर्वाद भी मुझे प्राप्त था। हर काम में मेरा उनका साथ रहा। जब आखिरी लड़ाई हुई, जिसमें हमें करीब-करीब तीन साल लगातार अहमदनगर के किले में रहना पड़ा, तब तक मेरे साथ हर मौके पर महादेव देसाई थे और वह गान्धी जी के सन्देश को घोल-घोल के पी गए थे। तब मुझे बहुत आसानी रहती थी और बहुत निश्चिन्तता भी रहती थी। मुझे यकीन रहता था कि मैं कोई गलती न कर पाऊँगा, क्योंकि गान्धीजी के प्रतिनिधि मेरे साथ हैं। इस तरह से मेरा काम चलता था।

लेकिन जब मैं गवर्नमेंट में आया, तब तक महादेव भाई तो चले गए थे। लेकिन गान्धी जी के साथ बात-चीत करने का समय मिलना भी कठिन हो गया था। क्योंकि मैं अपना काम छोड़ नहीं सकता था। बहुत दफ़ा कोशिश की, लेकिन समय निकलता भी नहीं था और काम भी इस प्रकार था, जो काम हमारे लिए एकदम नया था। बहुत-सी मुसीबतें आईं। ऐसा मौका आया, जब दिल्ली शहर में ऐसी हालत हो गई कि हम बड़े परेशान हो गए। दिल्ली के वे काले दिन चले गए। पर जब मैं उनका ख्याल करता हूँ तो यही मालूम होता है कि यदि खुदा की मेहरबानी न होती, तो हिन्दुस्तान बच नहीं सकता था। और आज अगर हम गिर नहीं गए तो उसकी वजह यही है कि ईश्वर की कृपा हम पर है। नहीं तो वह ऐसा मौका था कि हम डूब जाने वाले थे। लेकिन बच गए। अब हम सबको भी एक प्रकार का तजुर्बा हो गया है और हम समझ गए हैं कि हिन्दुस्तान हम सब का है, और हम सबको इधर ही रहना है। सब को हिन्दुस्तान के वाशिन्दे बन कर रहना है और आपस में मिल-जुल कर रहना है।

आज से छः महीने पहले जब मुझसे कहा गया था कि हम आप का स्वागत करना चाहते हैं, तब मैंने कहा था कि भाई, आज तो हमारी हालत भी ऐसी नहीं है, और जब तक हैदराबाद का झगड़ा खतम नहीं हो जाता, तब तक हम मानपत्र या स्वागत के बारे में बात भी नहीं करना चाहते। जब तक हमें एक

दूसरे पर भरोसा नहीं है, विश्वास नहीं है, हम मानपत्र की बात कैसे कर सकते हैं ? लेकिन आज ईश्वर की कृपा से ऐसी हालत हो गई है कि अब सारे हिन्दुस्तान में कहीं भी किसी प्रकार का कौमी बखेड़ा होने का अंदेशा नहीं रह गया है। और न उन झगड़ों के लिए अब कोई वजह ही बाकी है, क्योंकि हम सब समझ गए हैं कि जो कुछ हो गया, वह तो हो गया, कोई बुरा माने या भला माने, लेकिन वह तो हो गया! अब हमारे मुल्क का दो टुकड़ा हो गया है। अगर हमारे दिल में कोई चोरी होती, कोई अन्देशा होता या हमारी नीयत ठीक न होती, तो हम कभी वह चीज़ कबूल न करते। अब राजी-खुशी से हमने उसे कबूल किया। राजी-खुशी का यह मतलब नहीं कि हमको यह चीज़ पसन्द है। टुकड़े करने की बात हमें बिलकुल नापसन्द है। लेकिन हमने वह समझ लिया कि यदि हम यह चीज़ कबूल न करें, तो मुल्क का दो टुकड़ा तो क्या, सैकड़ों टुकड़ा होनेवाला है। इस बात को कबूल करने का मुझे कोई पश्चात्ताप नहीं है। और मुझे पूरा विश्वास है कि हमने यह चीज़ न की होती, तो हमारी बहुत बड़ी गलती होती। क्योंकि उस समय की जो हालत थी, उसका चित्र मेरे सामने से कभी हटता नहीं है। इस चीज़ का ज्यादा बयान मैं नहीं करना चाहता। लेकिन इतना मैं आपसे जरूर कहना चाहता हूँ कि जो हालत मुल्क की हो रही थी, उस हालत में से बचने का एक ही उपाय था कि हम अपने मुल्क की स्वतंत्रता ले लें और परदेशियों के दबाव से बच जाएँ। स्वतंत्र होकर भाई भाई लड़ भी सकते हैं, किसी दिन वे समझेंगे। नहीं समझेंगे, तो भी अपने अपने घर में तगड़ा बनने की कोशिश तो करेंगे।

बदकिस्मती से हमारा झगड़ा नहीं मिटा और हम गहरे पानी में चले गए। अभी भी जब कभी मैं पाकिस्तान के अखबार देखता हूँ, तो दुख होता है। कभी मैं नहीं देखता, लेकिन मेरे डिपार्टमेंट वाले मार्क कर मेरे पास भेज देते हैं। यह उनका काम है। उनके रेडियो के बयान भी वे मेरे पास भेजते रहते हैं। कभी-कभी मुझे ख्याल होता है, क्या सचमुच वे हमसे डरते हैं? कभी ख्याल आता है क्या सचमुच वे अपने आप ही से डरते हैं कि अपना संगठन ठीक रखने के लिए उनके पास कोई दूसरा उपाय ही नहीं है? खाली हिन्दुस्तान पर जहर उगलने से वे अपनी शक्ति संगठित रख सकते हैं। कभी यह ख्याल आता है, कभी वह ख्याल आता है। लेकिन हमने बार-बार उनसे कहा, हमारे मुल्क में गान्धी जी के जाने के बाद हमारे प्राइम मिनिस्टर से बढ़कर

ट्रांसपेरेंट सिन्सिएरिटी (विशुद्ध ईमानदारी) वाला व्यक्ति और कोई नहीं है। उन्होंने भी उपाय कर देखा और कहा कि "भाई क्यों डरते हो ? हम आपका बुरा नहीं चाहते, भला ही चाहते हैं।" लेकिन न तो वे सुनते हैं, और न मानते ही हैं। अब उसका क्या उपाय है ? और दूसरी ओर यह भी होता है कि जितने मुसलमान वहां ये अखबार पढ़ते हैं या उनका रेडियो सुनते हैं, उनका ठीक दृष्टिकोण हो ही किस तरह सकता है। वे दूसरी चीज़ें समझ ही नहीं सकेंगे। उसमें जब तक फर्क न आए, तब तक हमें जाग्रत और सावधान रहना है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें उनके साथ कोई झगड़ा करना है। हमें तो उनकी भलाई का ही ध्यान रखना है। लेकिन हमारे यहां उसका जहर न फैले, उतना हमें जरूर सँभालना है। हैदराबाद का किस्सा खत्म होने पर वहां जो हालत हुई और उसके बाद वहां हिन्दोस्तान के पक्ष में जो प्रदर्शन हुआ, उससे हमें पूरा विश्वास आता है और आना भी चाहिए। दुनिया को भी यह विश्वास आना चाहिए। हमें और दुनिया भर को जो चीज़ इतनी भयंकर डरवाली लग रही थी, वह सब चीज़ गलत निकली।

यह एक सचाई है कि गान्धी जी की इस प्रकार की मृत्यु से हमारे देश का वातावरण ही बदल गया। हमें यह मानना चाहिए कि उनका आशीर्वाद वहां से भी हमारे देश को बराबर प्राप्त हो रहा है। जाते हुए भी वह हमारे देश की एक बहुत बड़ी समस्या को सदा के लिए हल कर गए। उनके सन्देश को अमल में लाने की हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए।

आपने इस मानपत्र में, स्टेटों के बारे में मैंने जो कुछ किया, उसका जिक्र किया है। हैदराबाद के बारे में हमारी गवर्नमेंट ने जो कुछ किया, वह ठीक ही किया। सब स्टेटों के साथ, सब प्रिन्सों के साथ, हमने वायदा किया था कि भाई किसी प्रिन्स या किसी राजा का हमें अलग फैसला नहीं करना है। हम सब का एक ही साथ और एक ही तरह का फैसला करेंगे। लेकिन हैदराबाद के लिए हमने अलग समझौता किया। पहले तो उसने दो महीने की मोहलत मांगी कि हम को पन्द्रह अगस्त १९४७ के बाद भी दो महीना दो। १५ अगस्त ४७ के पहले और सब प्रिंसेज़ तो भारत में मिल गए थे, केवल जूनागढ़, काश्मीर और हैदराबाद ये तीन ही रह गए थे। जूनागढ़ तो एक छोटी चीज़ थी, ख्वाहमख्वाह किसी ने उस को गलत सलाह दी और वह उसमें फँस गया। लेकिन हैदराबाद का किस्सा बड़ी चीज़ थी, हमारे उस समय के गवर्नर-जनरल लार्ड

माउन्टबेटन से बढ़कर निजाम का पक्का हितेच्छुक और कोई नहीं था, इसका मैं साक्षी हूँ। उन्होंने निजाम को समझाने की बहुत कोशिश की। निजाम ने दो महीने की मोहलत और मांगी। निजाम के एडवाइज़र मौंगटन साहब ने भी कहा कि हम को दो महीने और मोहलत दो। हमारे कौंस्टीट्यूशनल गवर्नर-जनरल लार्ड माउन्टबेटन ने कहा कि दो महीने की इस नई मोहलत में वह निजाम को समझाएँगे। उनको जो कुछ करना था वह हमने उन्हें करने दिया। उसका मतलब यही था कि निजाम के साथ एक प्रकार का अँग्रेज़ लोगों का जो सम्बन्ध था, शायद वह उसका लिहाज़ करे। इसलिए जहां तक वे करना चाहते थे वहां तक हमने उन्हें करने दिया। दो महीनों के बाद उसने अपना एक समझौता बनाया। सब स्टेटों के साथ जो समझौता था, उससे अलग यह समझौता था। इसको स्टैण्डस्टिल एग्रीमेंट (standstill agreement) कहते हैं। यह एक साल के लिए किया गया। उसमें हमने बहुत छूट-छाट दी। हमारे गवर्नर-जनरल माउन्टबेटेन साहब और मौंगटन साहब दोनों ने कहा कि हम कोशिश करके एक साल के भीतर बहुत जल्दी उनको समझा लेंगे। क्योंकि हैदराबाद हिन्दुस्तान से अलग नहीं रह सकता और सब स्टेटों और सब राजाओं ने जो कुछ किया है, वह भी उसी प्रकार करेगा। तो भी हमने उन्हें वैसा ही करने दिया। उसके बाद जब स्टैण्डस्टिल समझौते पर हमारे दस्तखत करने का आखिरी दिन था, उस दिन हैदराबाद की ओर से दस्तखत करने वाले तीन आदमी थे: निजाम गवर्नमेंट के प्राइम मिनिस्टर नवाब छतारी, उनका दूसरा साथी मौंगटन साहब, और सुलतान अहमद। तीनों को वहां हैदराबाद में घेर लिया गया और निकलने ही नहीं दिया गया। आखिर तीनों ने इस्तीफा दे दिया। इन तीनों ने हम लोगों को आकर यह रिपोर्ट दी कि हम तो सकझौते के लिए चले आते, लेकिन वहां हमारी कुछ चलती नहीं।

इस पर दूसरी गवर्नमेंट बनाई गई। अब प्राइम मिनिस्टर लायकअली साहब बैठे थे। मैंने उस समय पर कहा था कि उन लोगों को स्टैण्डस्टिल एग्रीमेंट पर दस्तखत नहीं करने चाहिए। लेकिन हमारे गवर्नर-जनरल साहब ने और मौंगटन साहब ने उस समय पर भी यही कहा कि आपको व्यक्ति से क्या मतलब है, आपको तो अपना काम कर लेना चाहिए। मैंने कहा कि इसी तरह गलती होती है, क्योंकि जो इस प्रकार ज़बरदस्ती करके एक गवर्नमेंट को हटा दे, उसके साथ समझौता करना बड़ा खतरनाक है। लेकिन तब दोनों ने कहा कि

हम इनको समझा देंगे। तब हमने भी मान लिया। लेकिन लायकअली ने एक ओर तो दस्तखत किया, दूसरी ओर वह पाकिस्तान के साथ अपने २० करोड़ रुपये के लोन की बातचीत चला रहा था। हम से यह बात छिपाई गई थी। उसके बाद एक-एक करके जो काम उसने किए, उन सब का बयान हमने एक व्हाइट पेपर में निकाला है। वह सब बातें सुनाकर मैं आपका समय नहीं लेना चाहता। लेकिन मैं आपको यह ज़रूर कहना चाहता हूँ कि दुनिया में कोई ऐसी गवर्नमेंट नहीं होगी, जिसने जितनी ढीली रस्सी छोड़ी हो, जितनी इस किस्से में हमने छोड़ी। कम-से-कम अंग्रेज तो कभी ऐसा नहीं करते। जिस प्रकार की कार्रवाई हैदराबाद में हुई, वहाँ जितना लूट-पाट, अत्याचार और स्त्रियों पर बलात्कार हुआ, उसे कोई बरदाश्त नहीं कर सकता था। लेकिन हमीं जानते हैं कि हम क्यों इस खतरे में पड़े। हम नहीं चाहते थे कि हिन्दू मुसलमान में फिसाद हो। लेकिन जितनी ज्यादा कोशिश हमने की उतना ही उन लोगों ने समझा कि ये कमज़ोर हैं और इन से कुछ होनेवाला नहीं है। वे समझे कि हम लड़ नहीं सकते। हमने बार-बार उनसे कहा कि भाई, जो हाल जूनागढ़ का हुआ, वैसा ही तुम्हारा हाल भी होगा। लेकिन वे हँसते थे। अब हम क्या करते? जब आखिर कोई उपाय बाकी न रहा, तब हमने नोटिस दे दिया। उसके बाद जो काम हुआ, वह तो आपने देखा ही है।

हैदराबाद के पुलिस एक्शन को दुनिया में गलत रूप से पेश करने की कोशिश हुई है। हैदराबाद में भी गलतफहमी फैलाने की कोशिश की गई। अब हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब वहां जा रहे हैं। आशा है उनकी नेकनीयती, सचाई और काबलियत से सारी गलत-फहमी दूर हो जाएगी। हिन्दुस्तान में एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो अपने दिल में यह समझता हो कि हमने हैदराबाद के साथ कोई बुराई या नालायकी की है। जब हमको यह कहा जाता है कि हमने आक्रमण किया है, तो यह समझ नहीं आता कि हमने किसके ऊपर आक्रमण किया है। हिन्दुस्तान के अपने ही एक हिस्से पर, जो अपना ही हिस्सा है, जो लोग अपने ही हैं, उन पर आक्रमण कैसा? उसका माइना मेरी समझ में नहीं आता। लेकिन कई लोग यह समझाना ही नहीं चाहते। ईश्वर की बड़ी दया हुई, जो सारा काम ठीक से पूरा हो गया।

अब देखें कि आज हमारी हालत क्या है। यह ठीक है कि हिन्दुस्तान अब एक बन गया है और कोई खतरा बाकी नहीं रहा, कहीं कोई फिसाद अब नहीं

होगा। लेकिन हम इतने से सन्तोष मान के बैठ गए, तो हमारा काम नहीं चलेगा। अभी हमें क्या काम करना है, वही सोचना चाहिए। आप जानते हैं कि जब हमने हिस्सा-बाँट (पार्टीशन) कबूल किया तो उससे पहले हम अपनी आर्मी कम करना चाहते थे। क्योंकि हमारे पर उसके खर्चे का बहुत बड़ा बोझ है और इतना बोझ है कि हिन्दुस्तान उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। तो हम उसे कुछ कम करना चाहते थे। लेकिन जब फिसाद शुरू हुए तो हमने फौज़ कम करने का इरादा छोड़ दिया। उधर काश्मीर में झगड़ा शुरू हुआ। जब झगड़ा चलता रहा तो हम सोचने लगे कि हमें अपनी फौज तो कुछ बढ़ानी पड़ेगी। हालत यहाँ तक पहुँची कि दस बटालियन तो हमें नैपाल से लेने पड़े। अब यह सब खर्चा हम कहाँ से लाएँ और हम क्या इन्तज़ाम करें ? क्या हमारा मुल्क इस प्रकार का बोझ उठा सकता है ? क्या हमारी आमदनी बढ़ रही है ? हमारी आर्थिक दशा सुधर रही है ? ये सब चीज़ें हमारे सोचने की हैं। क्योंकि हम इन सब के बारे में न सोचें, तो हमारा बुरा हाल होगा।

तो यह जरूरी है कि जिन लोगों के पास धन है और जिनके पास इल्म है, उन दोनों का इस्तेमाल हमें करना चाहिए। हमने अभी तक न कोई गवर्नमेंट चलाई है और न हमने कोई बिजनेस या इण्डस्ट्री ही चलाई है। हमने सारी उम्र तो एक परदेसी सल्तनत के साथ लड़ने का इल्म पाया था, सो वह कर लिया। लेकिन अब मुल्क आज़ाद हो गया है, अब हमें उसको उठाना है। तो जिसके पास धन है और इण्डस्ट्री (व्यवसाय) चलाने का तजुर्बा है, वे हिन्दोस्तान की आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं। वे लोग हमसे अलग बैठे हैं, और इधर हमारे मज़दूर लोग, कारीगर लोग भी मांगते हैं कि भई ये कीमतें तो हर रोज़ बढ़ती जाती हैं और हमारे पास पूरा खाना-पीना तक भी नहीं है, सो हमको ज्यादा तनखाह दो। हमारे गवर्नमेंट सर्वेंट भी यही कहते हैं, रेलवे में लोग पड़े हैं वे भी इसी तरह की बातें करते रहते हैं। सब मांगते हैं, मगर कोई यह नहीं सोचता कि उसकी अपनी जिम्मेदारी क्या है। हम यह सब कहां से लाएँगे ?

हमारे जो एक्सपर्ट (विशेषज्ञ) लोग हैं, उनसे हम कन्सल्ट (राय लेते) करते रहते हैं। हम अपने उद्योगपतियों को भी कन्सल्ट करते हैं, लेबरवालों को भी कन्सल्ट करते हैं, सब को कन्सल्ट करते हैं। सब की राय लेकर और सब सोच-विचार कर हमें तो एक ही रास्ता समझ आया है कि बहुत दिन जिन लोगों ने

पैसा कमाया है, उन्हें अब देश की इण्डस्ट्री बढ़ाने के काम में अपना रुपया लगाना चाहिए। उन्हें अब सोचना है कि खाली बैठने से क्या होगा। उनके पास नोटों का जो तोड़ा पड़ा है, वह किस काम आएगा? सब सड़ जानेवाले हैं। उनको यों ही रक्खे रहने से न आपको फ़ायदा होगा, न मुल्क को फ़ायदा होगा। अगर आपने पूरा इन्कमटैक्स (आय कर) नहीं दिया, तो उसमें आपने चोरी की। अब अगर आप कहें कि सब ने की, तो यह भी कोई दलील नहीं हुई। किसने इन्कमटैक्स पूरा दिया, किस ने नहीं दिया, उसका फैसला हमें किस तरह से करना है?

हमने कंट्रोल हटाया तो उसका क्या नतीजा आया? जब कंट्रोल हटाया तो फ़ायदा उठानेवाले लोगों ने मनमाना फ़ायदा उठाना शुरू किया। तो मैं आपकी तारीफ़ करूँ और आप मेरी तारीफ़ करें, उससे हमारा काम चलनेवाला नहीं है। मैं हिन्दुस्तान भर के समझदार लोगों से अपील करना चाहता हूँ कि रात-दिन हमारे और आपके बीच झगड़ा रहने से हमारा काम नहीं चलेगा। यह बात हम भी समझते हैं, और आपको भी समझनी चाहिए। कहां तक आप अपना पैसा दबाकर बैठे रहेंगे? जब तक आपका पैसा घूमेगा नहीं, तब तक न आपका काम होगा, न हमारा होगा, न मुल्क का काम होगा। तो क्या हमें हमेशा डंडे से काम लेना होगा? एक आर० एस० एस० वालों ने हमारे साथ झगड़ा किया और दूसरा उन लोगों के साथ हमें झगड़ा करना पड़ता है जो अपने को कहते हैं कि हमें इधर परदेशी संस्कृति, राष्ट्रीय और आर्थिक, सब इधर लाना है। हमारी गवर्नमेंट तो एक साल से बनी है, और अभी बच्चा है। उसको तगड़ा बनाना हो, तो इस तरह से झगड़ा करने से क्या फायदा? जब तक आप लोग यह न समझेंगे कि हमारा क्या काम है, और हम सब का क्या कर्तव्य है, तब तक देश को तगड़ा करने का काम नहीं हो सकता।

कई लोग कहते हैं कि भई, देश को तगड़ा करने का रास्ता तो निकालना चाहिए। हम भी यह सब सोचते हैं, देश की इण्डस्ट्री बढ़ाने की बात सोचते हैं। असल में जिसके पास पैसा पड़ा है, उनको यह बात सोचनी चाहिए। हमारे पास पैसा होता, तो हम वह सब मुल्क का व्यवसाय बढ़ाने में लगा देते। हम अपने धनिकों से पूछते हैं कि हमको बताइए कि कौन से रास्ते से यह काम होता है, क्योंकि यह परदेसी गवर्नमेंट नहीं है। कभी आप हमारी सलाह गलत मानें, या कभी हम से गुस्सा हों, लेकिन आखिर तो इस बात का फैसला करना है।

अब तो हमें हिन्दुस्तान को इस तरह ठीक बनाना है कि जिसमें हम आगे ही बढ़ते जाएँ। और अगर हम बढ़ने का सामान पैदा न करें, तो यह मानपत्र नहीं है, यह अपमान-पत्र है। मैं तो यह कहता हूँ कि हिन्दुस्तान के जिन लोगों के पास इल्म है, उन लोगों को समझना चाहिए कि वे आपस में झगड़ा करना छोड़ दें।

दूसरी बात हमने यह की है कि हिन्दुस्तान में एक प्रकार से शान्ति हो गई है और हमारा काम अब पुलिस से चल सकता है। इधर बहुत दिनों से इन्टरनल आर्डर (आन्तरिक व्यवस्था) के लिए मिलिटरी (सेता) की जरूरत नहीं रही, और न रहनी चाहिए। एक अच्छे राज्य में इस तरह इन्टरनल आर्डर के लिए मिलिटरी का उपयोग नहीं करना चाहिए। कभी-कभी करना भी पड़ता है। लेकिन यह मौका नहीं है कि हम आराम से, चैन से, सो जायँ और यह समझ लें कि यह काम हो गया तो सब ठीक है। हमारे आस-पास अशान्ति है, दुनिया में बहुत जगह पर अशान्ति है, हमारे पड़ोस में दोनों तरफ़ अशान्ति है। अपने बौर्डर (सीमा) पर देखिए। मैंने परसों एक स्पीच दी थी, उसमें मैंने बर्मा की ज़िक्र किया था। जो कुछ मैं तब कहना चाहता था, ठीक तरह से उसका भाव उस स्पीच में नहीं आया था। उससे कुछ गलत-फहमी हुई। मैंने कहा था कि रंगून से दस मील पर बर्मा की गवर्नमेंट को शान्ति रखने के लिए फ़ायर करना (गोली चलाना) पड़ता है और वहां नार्मल गवर्नमेंट नहीं है। दस मील तक ठीक है। क्योंकि मैंने अखबार में देखा है कि वहां रंगून के बाहर जो बन्दूक छूटती है, उसकी आवाज रंगून में सुनी जाती है। तो वह डिस-आर्डर (अव्यवस्था) है, जिस के लिए वहां एक साल की गवर्नमेंट को फ़ायर करना पड़ता है। हमारे यहां भी एक साल की गवर्नमेंट है। हमारे पास आसाम से और कलकत्ता से चिट्ठी आती है कि वहां कलकत्ता और आसाम में काम करने वाले कम्यूनिस्टों का आपस में सम्बन्ध है। हमारे पास बार-बार, इस प्रकार की इन्फार्मेशन (सूचना) आती रहती है। हैदराबाद में तो दो डिस्ट्रिक्ट ही उन लोगों ने अपने कब्ज़े में कर लिए थे। कहते हैं कि अगर हम और देर से गए होते, तो वहां इस प्रकार की अराजकता और ज्यादा फैली होती। अब भी अगर हम सावधान न रहें तो हमारा हाल भी बुरा हो जाएगा। तो हमें सोच-समझ कर अपना काम सँभालना है।

मैं हिन्दोस्तान में रहनेवाले सब लोगों को, खास तौर से कहना चाहता

हूँ कि आप यह न समझिए कि यह गवर्नमेंट तो कैपिटलिस्ट की है, हालांकि बार-बार आप लोगों को ऐसी बातें कही जाती हैं। लेबर में काम करने वाले हमारे कई दोस्त, जो हमारे साथ मिलते नहीं हैं, अपने अलग ख्यालात रखते हैं। आज हमारा जो लीडर (हमारे प्रधान मन्त्री) है, वही ट्रेड यूनियन कांग्रेस के पहले प्रेसीडेन्ट थे, उन्होंने उसकी बुनियाद डाली थी। उनसे बढ़कर मजदूर का हित चाहनेवाला कोई और मैंने नहीं देखा है। अब जब यह बात लोगों के ख्याल में आती है, तब कहा जाता है कि उनका (प्रधान मंत्री का) तो कुछ चलता नहीं, वहां तो गवर्नमेंट में दो पार्टियां हैं। छोटे दिल के और पागल लोग ऐसी-ऐसी बातें करते हैं। ये समझते हैं कि हम ऐसे बेवकूफ हैं कि मुल्क की आज़ादी के लिए ज़िन्दगी भर साथ रहने के बाद अब हम आपस में इस प्रकार की लड़ाई कर लेंगे और अपनी दो पार्टियां बनाएँगे। यदि मैं अपने लीडर का साथ न दे सकूं और उनका पैर में मजबूत न कर सकूं तो मैं एक मिनट भी गवर्नमेंट में न रहूँगा। यह मेरा काम नहीं है। इस तरह की बेवफ़ाई करना मेरे चरित्र में नहीं है। क्योंकि अपने जिन लीडर (महात्मा गान्धी) के पास से मुल्क की सेवा का धर्म मैंने सीख लिया है, उसमें इस प्रकार की बेवफ़ाई आ जाए, तो मुझे अपघात (आत्महत्या) कर लेना चाहिए। लेकिन बार-बार छोटे दिल के आदमी ऐसी बातें करते हैं और भोले-भाले आदमी उनकी बात मान भी लेते हैं। हां कभी-कभी तो किसी बात के बारे में हम दोनों अपनी अलग राय भी रखते हैं। हर एक बात के बारे में हम एक दूसरे के साथ मशविरा करते हैं, नहीं तो ज्वाइंट रिस्पौंसिबिलिटी (इकट्ठा उत्तरदायित्व) कैसी होती है? डेमोक्रेसी में मशविरा ही तो किया जाता है। हम सब आपस में अलग-अलग राय रखते हैं और हर सवाल पर एक दूसरे के साथ मशविरा करते हैं। नहीं तो ज्वाइंट रिस्पौंसिबिलिटी कैसे चले? ऐसा न हो तो यहां जो पुराना राज चलता था, जिसे आटोक्रेसी (निरंकुशता) राज कहते हैं, वैसा ही चले। तो ये सब गलत ख्याल है।

तो मैं मजदूरों से बड़ी अदब से अपील करता हूँ और यह कहना चाहता हूँ कि बहुत दफ़े मेरे पर जो यह अटैक (आक्रमण) होता है कि यह तो बिड़ला जी का साथी है, अमुक का साथी है, यह सब गलत है। मैंने जब से गान्धी जी का साथ किया, तब से यह एक प्रतिज्ञा ले ली कि अपनी मिल्कियत में कोई नहीं रक्खूंगा। यह उनके पास से मैंने सीख लिया और उससे बढ़ कर सोशलिज्म

कोई और मैं नहीं मानता। गान्धी जी के पास रहकर मैंने यह भी सीख लिया कि न राजाओं से दुश्मनी करना, न कैपिटलिस्ट से दुश्मनी करना, न लैंडलार्ड से दुश्मनी करना और न किसी और से दुश्मनी करना। देश के हित के लिए सब से काम लेना, और सब में एक दूसरे के लिए मुहब्बत पैदा कर अपने-अपने काम करवा लेना, यह मैंने बापू के पास से सीख लिया। यह जो स्टेटों का मामला बना है, यह भी उन्हीं के पास मैंने कुछ इल्म पाया था। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जब यह सौराष्ट्र का या काठियावाड़ का एक गुट बना, तो उस रोज़ गान्धी जी को उसकी जितनी खुशी हुई, उतना खुश मैंने कभी उन्हें नहीं देखा था। क्योंकि वह बहुत दिनों से जो बात चाहते थे, वह हो गई।

आज आप यह मानपत्र मुझे देते हैं, यह क्या मेरी कृति है? एक आदमी से क्या होता है? यह तो मैंने बार-बार कहा है कि यह ईश्वर की कृति है। लेकिन उसके साथ मेरे कई वफ़ादार साथी भी थे। हमारी कैबिनेट तो है ही, उसके साथ बिना तो कोई चीज़ बन ही न सकती थी। लेकिन मैंने बहुत दफ़ा सुना है कि यह जो पुरानी सिविल सर्विस है, वह तो उसी परदेशी सरकार ने बनाई थी। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि इस सर्विस में ऐसे-ऐसे रत्न पड़े हैं, जिनकी कीमत बाहर के लोग नहीं जानते। हम भी उनकी कीमत न जानें तो हम राज चलाने के लायक नहीं हैं। ये लोग मेरे साथ न होते, तो यह काम न बनता। अब तो उस सर्विस में चन्द लोग ही हैं, क्योंकि सर्विस तो टूट गई है। पहले पचास-पचपन फी सदी अँग्रेज थे, ठीक-ठीक ५५ फी सदी थे। वे सब तो चले गए। अब जो थोड़े-बहुत लोग, पहले का एक चौथाई हिस्सा, सर्विस में बाकी रही है, उसमें भी चन्द लोग ऐसे हैं, जिनके दिल में यह है कि अब चलो आखिर में जितना फायदा उठा सको, उतना उठा लो। लेकिन उसमें कोई-कोई ऐसे वफ़ादार लोग हैं, जिन लोगों ने बहुत वफ़ादारी से देश की सेवा की है, उससे हमारे काम में बहुत मदद मिली है। मैं उन लोगों की कदर न करूँ, तो मैं भी नालायक हूँ।

आप यह भी समझ लें कि राजाओं ने भी अपना साथ हमें दिया। जैसे हम में सब भले नहीं हैं, बुरे भी हैं, वैसे उनमें भी भले और बुरे दोनों हैं। लेकिन जब देश आज़ाद हुआ, तो उनको भी ख्याल हुआ कि ये लोग मुल्क का कुछ भला करना चाहते हैं और इस में हमें साथ देना चाहिए। अब जिसके पास राज है उसको छोड़ देना, जिसके पास सत्ता है, उसे छोड़ देना, यह कितनी

कठिन बात है। जो छोड़े, उसी को मालूम पड़ेगा। जिसके पास नहीं है, उसका यह कहना कि यह आसान बात है; बेमतलब है। कुछ लोग कहते हैं कि हमने राजाओं को इतना पर्स दिया, इतना रुपया दिया, इतना पेंशन दिया। लेकिन जो जानता है उसको मालूम है कि यह एक प्रकार का बहुत बड़ा विप्लव है, एक बड़ा रेवोल्यूशन (क्रान्ति) है। हमें उनकी कोई खुशामद नहीं करनी पड़ी और उन्होंने देश के हित के लिए स्वयं इतना बड़ा स्वार्थत्याग किया। यह भगवान की बड़ी कृपा है और हिन्दुस्तान के सद्भाग्य और भविष्य के लिए अच्छा है।

मैंने लेबर से कहा है कि भाई, हमारे पास अगर कुछ ज्यादा हो गया, तो वह आपको ही मिलेगा। लेबर में काम करनेवाले लोग कहते हैं कि ये कैपिटलिस्ट लोग हमको बहुत तंग करते हैं। मैं भी मानता हूँ कि वे तंग करते हैं। लेकिन उसका उपाय क्या है? जब तक हम देश में अधिक धन, और अधिक इल्म नहीं पैदा करेंगे, तब तक जो कुछ हमारे पास है, उसमें से अधिक खर्च कर देने से वह खत्म हो जाएगा। जिन लोगों के पास छिपा हुआ धन पड़ा है, और वे उसे निकाल नहीं रहे हैं, क्योंकि वे डरते हैं कि वे पकड़े जाएँगे, उनके बारे में हमें कोई रास्ता करना चाहिए। वैसा न करेंगे, तो आगे हमारा कोई काम नहीं चलेगा। मैं उनसे भी अपील करता हूँ कि आपके पास यह जो अनीति का धन है, वह आपको नुकसान करेगा। और आज मौका है क्योंकि आपकी सरकार को अच्छे काम में रुपया लगाने के लिए उस धन की ज़रूरत है। आपको चाहिए कि जितना गवर्नमेंट का भाग है, वह सब दे दें, नहीं तो आप फँस जाओगे। उससे आपको कोई फायदा नहीं होगा।

एक दूसरी बात मैं आप लोगों से कहना चाहता हूँ, क्योंकि मैं घूम-फिर नहीं सकता, लेकिन मेरी बड़ी ख्वाहिश है कि मुल्क में हर राज्य में जाकर मैं कहूँ और किसानों को समझाऊँ कि तुम यह क्या कर रहे हो। आप कहते हो कि हम पैदा करते हैं, सो हमको ज्यादा दाम मिलना चाहिए। लेकिन आपका पड़ोसी भूखों मरता है, उसे अगर आप अनाज न देंगे; आपको अपने खाने के लिए जितना चाहिए उतना रख कर, बाकी अनाज आप दे न देंगे, तो हिन्दुस्तान को परदेश से माल लाकर, ज्यादा दाम देकर अपना काम चलाना पड़ेगा। यह बहुत बुरा है। उसमें आखिर आपको ही नुकसान होनेवाला है, क्योंकि उस से हिन्दुस्तान का दिवाला निकल जाएगा। वह क्यों

करते हो ? तो देश के लिए ज्यादा-से-ज्यादा धन पैदा करो, ज्यादा-से-ज्यादा अनाज पैदा करो, और ज्यादा-से-ज्यादा जितना धन और अनाज देश को दे सको, दो। उतना ही देश का काम अच्छा होगा।

इसी प्रकार कपड़े का सवाल है। चन्द लोग कपड़ा पैदा करते हैं और उसका उपयोग करनेवाले ज्यादा हैं। चन्द लोगों ने फ़ायदा उठाया, कुछ व्यापारियों ने भी फ़ायदा उठाया है। वे सब ईमानदारी बरतें तो हमें क्यों डण्डा उठाना पड़े ? उसमें किसी का फ़ायदा क्या है ? वैसा करने से दुनिया में हमारी बदनामी भी होती है। तो मैं उनसे भी कहता हूँ, व्यापारियों से भी कहना चाहता हूँ कि कष्ट के मौके पर इस तरह फ़ायदा कभी नहीं उठाना चाहिए। आज हमारा नैतिक अधःपतन हुआ है, हम बहुत गिर गए हैं। कहते हैं कि सर्विस में भी बहुत कोरप्शन (विकार) है, मैं इस बात से कहीं इनकार करता हूँ ? कितनी ही बुरी बातें भी हो गईं। लेकिन हमें किसी जगह पर अटक कर, आगे बढ़ना है। जब तक हम शुरू नहीं करेंगे तब तक यह काम सफल कैसे हो पाएगा ? और उसमें एक आदमी से काम नहीं होगा, सब को मिलकर हिन्दुस्तान की आबोहवा बदलनी होगी, एटमोस्फ़ीयर (वातावरण) बदलना होगा। जब तक हम कौमी झगड़े में फँसे थे, उसका ज़हर जब तक था, तब तक हम दूसरा काम नहीं कर सकते थे। अब यह मिट गया है, और अब अगर हम दूसरे काम में पड़ जाएँ तो यह ज़हर फिर नहीं उठेगा। लेकिन अगर हम बेकार बैठे रहेंगे, तो कुछ-न-कुछ फिसाद उठेगा।

आज मेरा स्वागत करनेवालों में कई हमारे रिफ्यूजी लोग भी हैं। ऐसा कोई रिफ्यूजी न माने कि गवर्नमेंट में जो लोग बैठे हैं, वे उनके दर्द के बारे में कुछ भी नहीं सोचते हैं। रिफ्यूजी भाइयों के दुख से हमको बहुत कष्ट हुआ है। लेकिन इतना बोझ हमारे पर पड़ गया है कि बोझा उठाना मुश्किल हो गया है। कभी आपको गुस्सा आता है, और आप समझ लेते हैं कि गवर्नमेंट कुछ करती नहीं। कभी गलत रास्ते पर ले जानेवाले लोग आप से मिलते हैं और कहते हैं कि यहां ये गवर्नमेंट वाले लोग आपकी कुछ भी परवाह नहीं करते और आपको उनके साथ लड़ना चाहिए। यदि आपको यह गवर्नमेंट पसन्द न हो, तो जो सरकार आपको पसन्द हो, आप चुन लीजिए। हम इतनी उम्र में इस झगड़े में क्यों पड़ें कि जो काम आपको पसन्द न हो, मुल्क को पसन्द न हो, वही करते चले जाएँ। मैं तो इसी उम्मीद पर बैठा हूँ कि जो थोड़े से

दिन बाकी हैं, उन्हें इस तरह इस्तेमाल करूँ जिससे मुल्क का भला हो। आप दुख बर्दाश्त करते हैं, उसके लिए हमारी सहानुभूति आपके साथ है, लेकिन अपने दिल में कोई बुरा भाव आपको पैदा नहीं करना चाहिए।

एक और बात भी मैं कहना चाहता हूँ। वह यह कि रिफ्यूजियों की आड़ में कितने ही लोग हैं, जो लूट-काट में पड़े हैं। वे लोग बहुत बुराई करते हैं। हालत यहां तक पहुँच गई कि हमारे सप्लाई डिपार्टमेंट का परसों तनख्वाह बांटने का दिन था, तब वहां एक टैक्सी लेकर, एक मोटर लेकर कुछ लोगों ने रेड (आक्रमण) किया। एक अच्छी नई मोटर में चार आदमी बैठे, उनमें एक रिवाल्वर लेकर आया था। वहां एक बेचारा क्लार्क बैठा था, उसको रिवाल्वर से गोली मार कर वे पेटी उठा कर चले गए। कोई राज इस तरह से चल सकता है ? दिल्ली शहर में, हमारे कैपिटल में इस प्रकार की गुण्डाबाजी चल सकती है ? ऐसे लोगों के साथ किसी की क्या सहानुभूति रह सकती है ? इस प्रकार के जो लोग भीतर घुसते हैं, उनको किसी भी जगह पर नहीं रहने देना चाहिए। अगर उन लोगों की तरफ़ जो लोग सहानुभूति बताएँगे, वे अपने को खतरे में डाल देंगे, गवर्नमेंट को खतरे में डाल देंगे और मुल्क को भी खतरे में डाल देंगे। हमें उम्मेद है कि वे लोग पकड़े जाएँगे। लेकिन एक चीज़ फैल रही है और वह मैं देख रहा हूँ। बहुत-से हथियार लोगों के पास आ गए हैं, बहुत-सा गोली-बारूद आ गया है। उसका नतीजा भी हम देख रहे हैं। तो उससे हमें सावधान रहना है।

दिल्ली शहर आज जितना अन-सैनिटरी (अस्वच्छ) हो गया है, इतना पहले कभी नहीं था। इसकी वजह यह है कि दिल्ली की आबादी बहुत बढ़ गई है। जितने रिफ्यूजी आए, सब यहां आबाद हुए। उन्हें कितना भी रोकें, लेकिन वे जाएँ कहां ? उनके पास रहने की जगह भी नहीं है। आए तो जिस किसी तरह पड़े हैं। ऐसी हालत में दिल्ली की नाजुक स्थिति हो गई है। यहां रहने को जगह नहीं है। जब दिल्ली में दंगा-फसाद हुआ, उसमें यहां की पुलिस टूट गई, वह किसी को मालूम नहीं हुआ। दिल्ली की पुलिस की सब शिकायत करते हैं, ठीक है। लेकिन अब यहां जो पुलिस है, उसमें से आधी पुलिस तो रिफ्यूजियों में से हैं। हम कोशिश करते हैं, समझाते हैं, उनको ट्रेंड करते हैं कि वे ठीक काम करें। लेकिन आखिर जब तक पब्लिक ओपीनियन (जनमत) हमारे साथ न रहे तब तक कुछ न होगा। चाहिए तो यह कि सब अपना धर्म समझें

कि यह दिल्ली हमारा शहर है, इसमें कुछ भी गड़बड़ होती है तो उससे हमारी बदनामी होती है, हमारी गवर्नमेंट की बदनामी होती है। हमारे शहर में हर मुल्क के एम्बेसेडर्स (राजदूत) आकर बैठे हैं। यहां तो गान्धी जी के आदर्श राज्य के मुताबिक चलना चाहिए। सब लोग मिल-जुल कर अदब से, और सभ्यता से बात करें। न कोई ऊँची आवाज़ से बात करे, न कोई किसी से लेने-देने की बात करे। सब काम सफ़ाई से करें। रात और दिन छोटे-छोटे बच्चे-बच्ची भी सब जगह निर्भय होकर घूम-फिर सकें। किसी को किसी से नफ़रत न हो, किसी को कोई दुख न हो, इस प्रकार का राज्य हमारे शहर में होना चाहिए। पुलिस की क्या ज़रूरत है? तो मैं आप सबसे, खास करके दिल्ली निवासियों से, हृदय से अपील करता हूँ कि सही स्वागत तो यह होगा कि जो हम चाहते हैं, उसमें आप हमारा साथ दें। तभी हम आगे बढ़ सकते हैं।

एक दफ़ा फिर मैं आप सब का शुक्रिया अदा करता हूँ।

---

(१०)

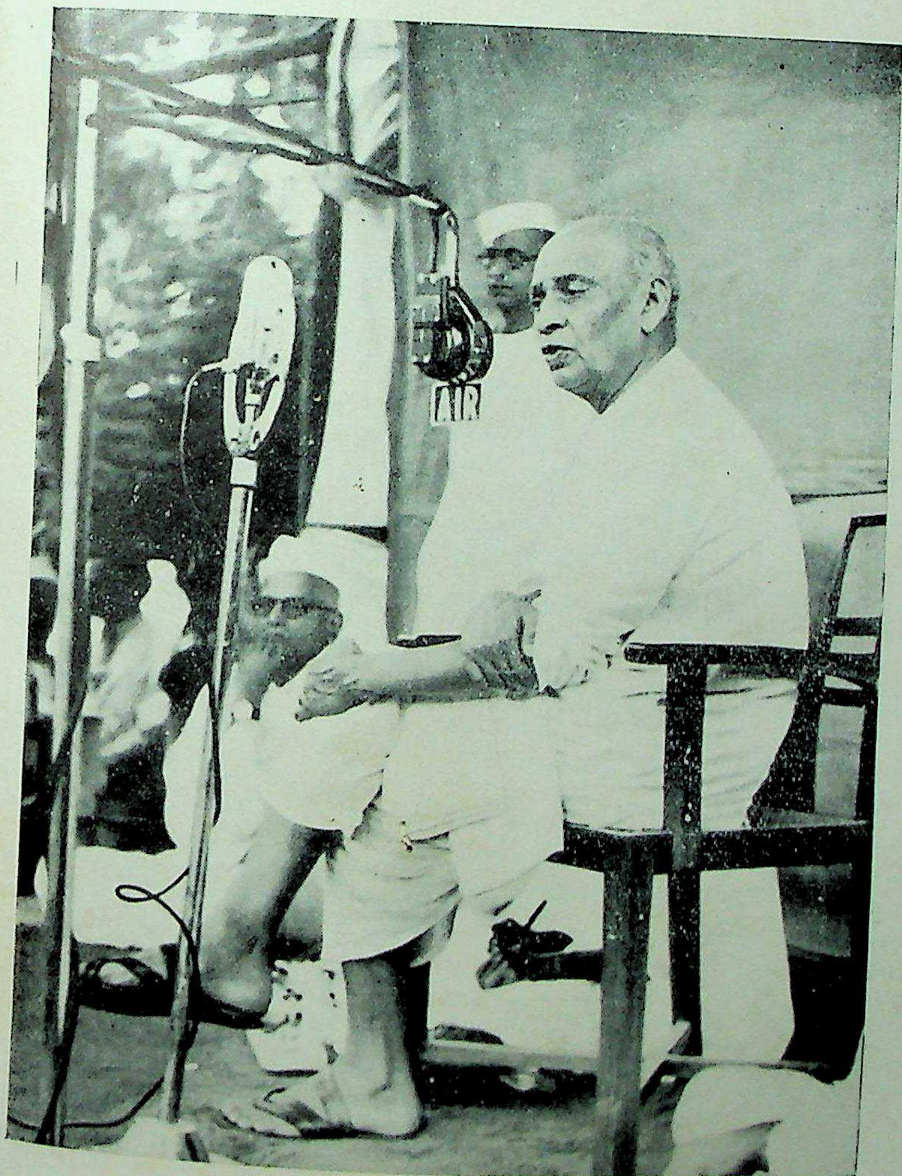
गुजरात और महाराष्ट्र समाज के अभिनन्दनोत्सव में

१२ अक्तूबर, १९४८

काका साहब, महाराष्ट्र और गुजरात के भाइयो और बहनो !

चन्द दिन हुए, काका साहब ने मुझ से कहा कि हम एक स्नेह-सम्मेलन करना चाहते हैं और गुजराती और महाराष्ट्र समाज, सब एक साथ आपसे मिलना चाहते हैं। काका साहब ने कहा तो मैं इन्कार कैसे करता ? मैंने कबूल कर लिया कि मैं आ जाऊँगा। और आज यहां आने का मतलब यह है कि एक राष्ट्र पर्व के दिन आप सब से मिलने का मौका मुझे मिले। क्योंकि आज हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा और बहुत पुराना राष्ट्र पर्व है। यह दशहरा हम सब के लिए बहुत बड़े उत्सव का दिन है, क्योंकि इस दिन हमारे देश की एक बहुत बड़ी विजय हुई थी। तभी से आज के दिन हिन्दुस्तान हर साल अपना उत्सव मनाता चला आता है।

आज हिन्दोस्तान का एक और प्रकार के उत्सव का दिन भी है। क्योंकि आज हमारे हिन्दोस्तान में कोई खतरा बाकी नहीं रहा, कोई झगड़ा-फिसाद बाकी नहीं रहा है और अब एक प्रकार से सारे हिन्दुस्तान में शान्ति का वातावरण स्थापित हो गया है। यह बहुत अच्छी बात है। क्योंकि जब तक मुल्क में शान्ति नहीं होती, तब तक मुल्क की प्रगति नहीं हो सकती और हम आगे भी नहीं बढ़ सकते। हमें आज़ादी तो मिली, पर उसके साथ देश का टुकड़ा



सरदार पटेल श्री गैडगिल के निवासस्थान पर गुजरात और महाराष्ट्र समाज
के अभिनन्दन का उत्तर देते हुए

होने से एक बदकिस्मती भी साथ मिली। इसीसे आज़ादी से जो खुशहाली होनी चाहिए, वह खुशहाली हम लोगों को नहीं मिली। यह शायद हमारे पूर्व पापों का फल होगा, या हमारी ही कुछ त्रुटियां होंगी कि जैसा हमने कभी अनुमान भी नहीं किया था, उस प्रकार का वायुमण्डल पैदा हो गया, जिसमें बहुत-सी खून-खराबी हुई और दुनिया में कम-बेश हमारी बदनामी भी हुई।

हर कौम या हर राष्ट्र खाली अपनी तलवार से वीर नहीं बनता। तलवार तो अपनी रक्षा के लिए ज़रूरी बात है, लेकिन राष्ट्र की प्रगति का माप उसकी नैतिक प्रगति से ही किया जा सकता है। पिछले कितने ही सालों से दुनिया में हमारे मुल्क की इज्जत बढ़ गई, वह हमारे एक महान् व्यक्ति की उच्चता का फल था। वह हमारे महान् नेता सारी दुनिया को नैतिक उपदेश देते रहे और हमारे मुल्क में तो रात-दिन उसका प्रचार होता रहा। तो अकेले गान्धी जी की तपश्चर्या, उनकी नैतिक शक्ति और आत्मशक्ति से हमारे गुलाम देश की भी इज्जत बढ़ गई। उनके तपोबल से हमारे देश का नैतिक स्तर भी ऊँचा उठ गया था। लेकिन पिछले साल हम झगड़े में पड़ गए और उससे खून-खराबी हुई। गुलामी से छूटने में जो बुराइयां और मुसीबतें आईं, उन्हें हम छोड़ भी नहीं सकते थे। जब हमारा हाथ पत्थर के नीचे पड़ा हो, तो उसे निकालने में मुसीबत तो होती ही है। तो गुलामी हटाने में जो मुसीबतें आईं, उसमें बहुत-से ऐसे काम हुए, जिनसे हमको नुकसान हुआ। लेकिन आज उस सब चीज़ में से हमारा देश निकल आया है। अब एक टुकड़ा हमने अलग कर दिया, जो लोग हमारे साथ नहीं रहना चाहते थे, उनको हमने अलग कर दिया और कहा कि भाई खुशी से मज़े से अपना काम करो। देखो, उसका भी स्वाद देखो कि उसमें क्या मिठास है? जब आप यह कहेंगे कि हम से गलती हुई, तब हम दोनों सोचेंगे। लेकिन अगर आपको लगे कि गलती नहीं हुई, और यह जो ज़हर के प्रचार पर आपने सारी रचना की, उसी पर आपको चलना हो, तो रहो। क्योंकि हमें मालूम है कि कोई कौम ज़हर के प्रचार पर ज़िन्दा नहीं रहती। प्रेम पर, चरित्रबल पर और नीति पर ही कौम ज़िन्दा रहती है।

जब आसपास ऐसी हालत है कि हमारा मुल्क सलामत नहीं है, तो हमारे मुल्क की रक्षा का इन्तजाम पूरा होना चाहिए। वह न करें, तो जिसके पास राज की लगाम है, वह गुनाहगार हो जाएगा। अब आजकल सत्ता हमारे हाथ में है, तो हमारा यह धर्म हो जाता है कि हम मुल्क की हिफाजत करें। लेकिन

उस का मतलब यह है कि हमारे मुल्क के भीतर जो अपने भाई-बहन हैं, मराठे, गुजराती, बंगाली, पंजाबी, मद्रासी, हर प्रान्त के अलग-अलग रहनेवाले हैं, लेकिन सब-के-सब हिन्दुस्तानी हैं, चाहे वे हिन्दू हों, मुसलमान हों, सिक्ख हों, पारसी हों, या किसी भी मजहब के हों; सबकी हमें रक्षा करनी है। इस मुल्क में जितने मज़हब हैं, जितनी भाषाएँ हैं, उतने मज़हब और उतनी भाषाएँ किसी और मुल्क में नहीं हैं। लेकिन तो भी हमारे सारे मुल्क की संस्कृति एक ही है। यह हिन्दी संस्कृति है। अब हमारे देश में इतने लोग रहते हैं, वे अगर झगड़े में पड़ जाएँ, तो इस प्रकार की हालत नहीं होनी चाहिए कि हमें फौज़ से काम लेना पड़े। यह काम पुलिस का है। भीतर मुल्क में शान्ति रखने के लिए हमें कम-से-कम पुलिस रखनी पड़े, ऐसी हालत होनी चाहिए। अब आप देखें कि गुजराती कहां-कहां पड़े हैं। पूना में जाओ तो वे वहां भी पड़े हैं, महाराष्ट्र में, शोलापुर में, जहां भी जाओ, वहां आपको गुजराती मिलेंगे। सतारा में जाओ, कोई भी जगह पर जाओ, गुजराती ज़रूर मिलेंगे। इसी तरह महाराष्ट्रीय भी सब जगह मिलेंगे। अहमदाबाद में जाओ, सूरत में जाओ, सारे प्रान्त में वे मिलेंगे। इसी प्रकार बम्बई में जाओ, तो हर प्रान्त के लोग वहां आप को मिलेंगे। वे वहां किस तरह से रहते हैं? वह किसी फौज के डर से आपस में मिलकर रहते हैं? या बन्दूक के डर से रहते हैं? नहीं, वह हमारी संस्कृति का परिणाम है कि हम एक दूसरे के साथ इस तरह रहते हैं जैसे हम सब एक बाप की प्रजा हैं। हम अनुभव करते हैं कि हम सब हिन्दोस्तानी हैं। तो हमें इस देश में मिल-जुलकर रहना है। लेकिन आप अपना मज़हब अपनी इच्छा से चला सकते हैं। हम हिन्दुओं में भी वैष्णव हैं, शैव हैं, जैन हैं और अनेक प्रकार के मज़हब हैं, लेकिन वह झगड़े की बात नहीं है। मज़हब के बारे में झगड़ा नहीं होना चाहिए। हमारी जो ईश्वर की मान्यता है, वह हमारी खुद की है। जो हमको पसन्द हो, हम मानेंगे। तो मज़हब व्यक्ति की अपनी चीज़ है। मज़हब के लिए सब को पूरी आज़ादी होनी चाहिए। उसमें दूसरे के साथ झगड़ा नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार हमारा जो रोज़गार है, जो धन्धा है, उसमें भी हमें कोई झगड़ा नहीं करना है। तो हम जो आपस में मिल-जुलकर रहते हैं, वह किसी तोप-बन्दूक के डर से नहीं रहते हैं, लेकिन मुहब्बत के बल पर रहते हैं।

इस प्रकार सारा हिन्दुस्तान बना हुआ था। बदकिस्मती से हमारे मुल्क में

परदेसी लोग आगए। पहले पहल जब परदेसी लोग आए तब हमारा समाज भी सड़ गया था, हम गिर गए थे। तो जो परदेसी लोग इधर आए, उन्होंने हमारे मजहब पर आक्रमण किया और हमारे मुल्क में जबरदस्ती अपने मज़हब का प्रचार किया और यहां के लोगों का ज़बरदस्ती धर्मान्तर किया। अब हमारे अपने लोग धर्मान्तर करके अलग मज़हब में चले गए, उसमें किसकी गलती है ? जो ज़बरदस्ती करनेवाले थे, उनकी जो गलती थी, वह तो थी ही, लेकिन हमारी अपनी गलती भी ज़रूर थी। हमारे में से लाखों लोग ईसाई हो गए, करोड़ों मुसलमान हो गए, वह क्यों ? इसमें हमारी अपनी गलती थी। हम में से जो गरीब थे, उनकी रक्षा हमने नहीं की और ज्यादातर जो लोग गए, वे गरीब थे और उन पर जबरदस्ती की गई थी। लेकिन जब एक बार गए तो पीछे वहां ही डट गए और ऐसे डट गए कि जो असली थे, वे उनसे भी अधिक बुरे बन गए। अब इस तरह से जो सिलसिला जारी रहा, उसमें आगे चलकर ऐसी हालत हो गई कि एक दूसरे देश के लोग यहां आ गए और दो सौ सालों से वे बीच में बैठ कर हिन्दू और मुसलमानों में झगड़ा पैदा करते रहे। इसी झगड़े से उनको फ़ायदा था। इसी से उनको इधर अपना राज जमाने में आसानी हो गई। बहुत समय के बाद हिन्दू और मुसलमान दोनों समझे कि यह तो बुराई हो रही है और इस से हम दोनों मर रहे हैं। तो बहुत समय के बाद दोनों समझे और कहने लगे कि हमें आपस में मिलकर इन परदेसियों को हटाना चाहिए। तब हटाने की कोशिश शुरू हुई।

इस परदेसी राज में चन्द लोग ही पढ़े-लिखे थे। इनमें से कुछ पढ़े-लिखे लोग परदेसियों के साथ मिलकर उनकी खुशामद कर कुछ इधर-उधर टुकड़ा लेते थे। थोड़ा-सा हिस्सा लेते थे। बाकी पढ़े-लिखे लोग सब से पहले अँग्रेजों की चाल को समझे। उधर सारी जनता को तो एक ही बात सिखाई जाती थी कि अँग्रेज़ के राज में बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पी सकते हैं, इसलिए उनका राज अमर रहे। जब हम पढ़ते थे, तो हमारे स्कूलों में यही चीज़ सिखाई जाती थी। तब हमको हमारी गुलामी इतनी मीठी लगने लगी कि हम तो यही समझते थे कि यह राज्य अमर रहे। अब बाकी जो पढ़े-लिखे लोग थे, जो लोग अँग्रेजों के नौकर नहीं थे, वे सब से पहले समझे कि यह चीज़ तो बुरी है। तो पढ़े-लिखे हिन्दू और मुसलमान मिलकर काम करने लगे। लेकिन जितने अँग्रेजी पढ़े-लिखे लोग थे, वे उखड़ने लगे, क्योंकि वे टिक न सकते थे।

सब से पहले आम जनता में लोकमान्य तिलक ने प्रवेश किया। उन्होंने समझ लिया कि जब तक हम जनता को साथ न लें, तब तक यह काम होने वाला नहीं है। सब से पहले लोकमान्य ने ही यह काम शुरू किया कि जनता को साथ लिया जाए। बहुत सालों तक लोकमान्य ने बहुत कष्ट उठाया और राष्ट्र की शक्ति को संगठित किया। उनकी तपश्चर्या सफल हुई और जब उनका देहान्त हुआ, तब महात्मा गांधी जी ने मुल्क के सामने एक बात रक्खी कि हमारा यह धर्म है और हमें आज यह प्रतिज्ञा करनी है कि लोकमान्य का जो काम बाकी रह गया है, उसे हम परिपूर्ण करेंगे। उन्होंने यह प्रतिज्ञा निभाई।

जब से महात्मा गान्धी हमारे नेता बने, तभी से उन्होंने कहा कि हमारे पास कोई हथियार नहीं, तो उससे क्या आता जाता है? अगर हम सरकार को, परदेसी सल्तनत को, उसका राज्य चलाने में सहयोग नहीं देंगे तो हमारे सहयोग के बिना वह राज नहीं चला सकते हैं। यह सब से बड़ी बात थी। इस चीज़ से हमारे देश में बहुत ज्यादा शक्ति पैदा हुई और दिन-पर-दिन वह बढ़ती गई। अब यह जो शक्ति बढ़ती गई, वह यहां तक पहुँच गई कि यहां जो परदेसी सल्तनत थी, उनको लगा कि अब इधर रहना मुश्किल है। एक ही तरीके से वे यहां रह सकते हैं कि यहां हिन्दू मुसलमान दोनों के बीच में झगड़ा कराएँ। तो हिन्दू मुसलमान के बीच झगड़ा पैदा हुआ। उसमें उनका तो स्वार्थ था। अपने राज्य की सलामती के लिए और राज्य करने के सुभीते के लिए उन्होंने यह सब किया। लेकिन हमारी यह बेवकूफी थी कि हम लड़े। आज अब उस झगड़े में पड़ने की कोई ज़रूरत रह नहीं गई। क्योंकि आखिर लड़ते-झगड़ते हमने फैसला किया कि भई, हम एक साथ नहीं रह सकते और जब तक हमारा आपस का फैसला नहीं हो जाता, तब तक तीसरी ताकत को हटा नहीं सकते और ज़माने की सब से बड़ी जरूरत यह है कि इस तीसरी ताकत को हटाओ। मुल्क को परदेसियों के हाथ से निकालो और गुलामी में से निकल जाओ। पीछे अपने आप सब रास्ता निकल आएगा। इसलिए हमने आपस में फैसला किया कि मुल्क को बांट दो। वह हमने कबूल कर लिया और हम अलग हो गए।

इस तरह अलग होने में जितनी बुराइयां आनेवाली थीं, वे सब आईं। जो बुराइयां आई थीं, वे अब हट गई हैं। लेकिन एक बुराई हट जाती है, तो उसमें से दूसरी बुराई निकलती है। आज हमारे देश में एक भावना पैदा हुई

है, जो हमको बहुत बड़े खतरे में डालनेवाली है। यह भावना इस बात की है कि आज बंगाली सोचने लगे हैं कि बंगाल सिर्फ बंगालियों के लिए है, महाराष्ट्र के लोग सोचने लगे हैं कि महाराष्ट्र महाराष्ट्रियों के लिए है, उधर मद्रास के लोग कहते हैं कि मद्रास मद्रासियों के लिए है। इस प्रकार के जो प्रान्तीय भाव आ गए हैं, उन से राष्ट्रीय भावना का खून होता है।

यह प्रान्तीयता का भाव एक जहर है, जिसका प्रभाव धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। आज मेरे पास बहुत-सी शिकायतें आती हैं। बंगाली और बिहारी आपस में यहां तक लड़ते हैं कि एक दूसरे के साथ काम-धन्धा नहीं कर सकते हैं, मार-पीट में पड़ जाते हैं। इसी प्रकार उड़ीसा और बिहार के और तामिल-नाद और आन्ध्रों के बीच में चलता है। उधर आसाम और बंगाल का चलता है। हम लोग गुजरात और महाराष्ट्र में इस प्रकार का काम कभी नहीं करते थे और न हमें करना ही चाहिए। आपस में कुछ भी झगड़ा हो जाए, तो उसका फैसला शराफत से कर लेना चाहिए। इसी प्रकार का काम गुजरात और महाराष्ट्र का आपस ही में नहीं, सारे हिन्दुस्तान में होना चाहिए। क्योंकि अब हिन्दुस्तान के पास यह एक पहला मौका आया है, जब सैकड़ों सालों के बाद हमने हिन्दुस्तान को एक बनाया है। इतना बड़ा हिन्दोस्तान इतिहास में और कभी नहीं था। पहले बहुत समय तक अलग अलग छोटी-छोटी रियासतें थीं। अधिकांश समयों में हमारा देश टुकड़ों में बँटा रहा। अब हमने सबको साफ करके एक नक्शा बनाया। अब हमारा काम है कि उसको उठाएँ। तो जब हिन्दुस्तान को दुनिया के और मुल्कों के मुकाबले में रखना हो, तो हमें छोटी-छोटी बातों के झगड़ों में नहीं पड़ना चाहिए।

साथ ही आपको यह भी देखना चाहिए कि यह जो हमारा एक अंग, एक अवयव काटकर अलग कर दिया गया, उसमें से बहुत खून गिरा है और वह गिरना ही था। एक ज़िन्दा अंग को काटने से खून तो गिरता ही है और उसकी चोट भी बहुत लगती है। जो पिछला विश्वयुद्ध हुआ था, उसकी चोट भी सारी दुनिया को लगी थी और उससे हम भी नहीं बचे थे। इन दो चोटों का फल यह हुआ है कि आज सामान्य लोगों के कष्टों का अन्दाज लगाना भी कठिन है। इतना अधिक कष्ट है। हर चीज़ का, यहां तक कि ज़िन्दगी की ज़रूरियात की और खाने-पीने की चीज़ों का दाम भी बहुत अधिक बढ़ गया है। इतना अधिक बढ़ गया है कि सामान्य लोग उसको बरदाश्त नहीं कर सकते। आज मज़दूर

लोग हैं, वह मजदूरी का दाम ज्यादा मांगते हैं। वे मांगेंगे भी, क्योंकि उनको भी खाने-पीने का सामान चाहिए। उनको भी आज आज़ादी मिली है। आज तक तो वे गुलाम थे और उनको बन्दूक से डराकर काम चलाया जाता था। अब तो मुहब्बत से ही काम चल सकता है। व्यापारी लोग हैं, उन्होंने पिछली लड़ाई में कुछ पैसा बनाया और अभी भी उनकी पैसा बनाने की वह आदत छूटती नहीं। क्योंकि जहां ज्यादा लालच हो जाता है, वहां नैतिक बन्धन छूट जाता है। हमारे व्यापारी आज भी ज्यादा लेने की कोशिश करते हैं। अब इसी प्रकार जो चलता गया और हम उसी ढंग से चलते गए तो हम खड्डे में गिर जाएँगे। फिर लोग अँग्रेज़ों के राज की याद करने लगेंगे और यहां तक कहने लगेंगे कि हमको आज़ादी तो मिली, लेकिन उससे गुलामी ही अच्छी थी। ऐसा कभी नहीं होना चाहिए।

हमारा नक्शा तो अब एक हो गया। लेकिन अब हमारा धर्म है कि हम आगे बढ़ें। तो उसके लिए क्या करना चाहिए? सब से ज़रूरी बात तो यह है कि अब हम मुल्क में कोई फिसाद न होने दें। झगड़े का जितना भी ज़हर हो, वह हम अभी छोड़ दें। पीछे देखा जाएगा। अभी तो ज़रूरत है कि हमारे मुल्क में ताकत आए और भाई-भाई सब तगड़े हों। जब तगड़े हो कर वे लड़ेंगे तो लड़ने में भी कुछ मजा होगा। लेकिन मुर्दा क्या लड़ेगा? आज हमारे पास कोई ताकत नहीं है और इसी कारण दुनिया में हमारी अभी तक ऐसी कोई इज्जत भी नहीं है। तो आज अगर हम अपने मुल्क की ओर सब से अधिक ध्यान देकर मुल्क में अधिक-से-अधिक धन पैदा नहीं करेंगे, तब तक हमारा काम नहीं चलेगा। जितना अनाज खाने के लिए चाहिए, उतना आज हमारे यहां पैदा नहीं होता। इसी कारण परदेस से हम अन्न मँगवाते हैं। अब परदेसी लोग समझ गए हैं कि हिन्दुस्तान में खाना नहीं है। आज़ादी से पहले एक साल में बंगाल में तीस लाख आदमी भूख से मर गए थे। दुनिया के लोगों का बराबर ख्याल है कि इधर दुष्काल पड़े, तो लोग कीड़ी के माफ़िक मरते हैं। तो जब वे जानते हैं कि हिन्दुस्तान के पास पूरा अनाज और धान नहीं है, तो वे हम से पूरा दाम लेते हैं। हमें भी अपनी नाक बन्द करके पूरा दाम देना पड़ता है। इसी प्रकार जितना कपड़ा हमको चाहिए, उतना कपड़ा हमारे यहां पैदा नहीं होता। गांधी जी ने तो बार-बार कहा और जब से वह हिन्दुस्तान में आए थे तभी से यहां चर्खा लेकर बैठे थे कि भाई अपना कपड़ा आप पैदा करो। लेकिन कोई उनकी

बात माने और करे, तब तो काम हो। गान्धी जी की जय सारा देश बोलता था, लेकिन कपड़ा पैदा करने के लिए चन्द आदमियों ने ही चर्खा चलाया। जब जनता ने चरखे को नहीं अपनाया, तो व्यापारियों ने भी पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश की।

हम सब को अब यह समझ लेना चाहिए कि कम-से-कम पांच साल तक हमें आपस में मिलकर मुल्क का काम करना है और इसके लिए अपने स्वार्थ का थोड़ा-सा त्याग करना है। गान्धी जी ने तो अपनी सारी लड़ाई त्याग के ऊपर बनाई थी। उनका कहना था कि कुर्बानी करो। जेल में जाना पड़े तो अपने कुटुम्ब की भी परवाह मत करो। फांसी पर जाना पड़े, तो फांसी पर जाओ। लेकिन इस परदेसी हुकूमत से निकल जाओ। मुल्क ने वह तो किया और परदेसी हुकूमत से भी छूट गए। जिन लोगों ने कुर्बानी की, वे लोग अब यह समझते हैं कि भई, हमें उसका बदला मिलना चाहिए। वे कहते हैं, हम जेल गए थे, हम को कुछ दो। हमारी मिल्कियत गई थी, वह हमको दो। हमारे लोगों में ऐसी भावना पैदा हो गई है। तो भाई, लोभ तो पाप का मूल है। सन्तों का कहना है कि लोभ से पाप की भावना पैदा हो जाती है। लोभ ही से ईर्ष्या होती है। ईर्ष्या से हम झगड़े में पड़ जाते हैं और तब हम एक दूसरे से डरने लगते हैं। लोभ ही के कारण पहले हम व्यक्ति से डरते हैं, फिर प्रान्तों से डरने लगते हैं।

हमारे देश में अगर प्रान्तीय भावना बढ़ गई, तो हमारे मुल्क के लिए बहुत खतरा पैदा हो जाएगा। हमने पहले भी अपने मुल्क को इसी तरह गुमाया था। तभी परदेसी इधर आए थे। हम लोग आपस में लड़ते रहे, इसी से परदेसी इधर आए। जब अँग्रेज़ आए, तो एक कौम ने उनका साथ दिया, कभी एक राजा ने उनका साथ दिया, कभी दूसरे राजा ने। वे जमा होकर यहां बैठ गए, और हम एक दूसरे से लड़ने लगे। अब ऐसा नहीं होना चाहिए। नहीं तो इतनी मेहनत के बाद आज़ादी का जो मौका हमें मिला है, वह हाथ से चला जाएगा।

यों बाहर की चिन्ता आप छोड़ दीजिए, क्योंकि आज जो वातावरण है, उसमें हमें मिलिटरी और आर्मी से मुल्क की रक्षा करनी है। उसके लिए आप की गवर्नमेंट को देखना है, और आपको उसकी परवाह नहीं करनी है। हम उसका बराबर बन्दोबस्त करेंगे। हमारे मुल्क के ऊपर कोई बाहर से हल्ला

करे, ऐसी नौबत हम कभी न आने देंगे। दुश्मन को हमारा दरवाजा कभी खुला नहीं मिलेगा। हम उसका बराबर बन्दोबस्त करेंगे। लेकिन हमारे देश के भीतर जो हालत है, उसमें हमें आप लोगों का साथ अवश्य चाहिए। आपका साथ नहीं मिलेगा, तो काम नहीं होगा। और अगर हमारी भीतर की हालत ठीक न हो, तो हम बाहर का काम भी नहीं कर सकते, क्योंकि आज की दुनिया में हमें जो फौजें रखनी पड़ती हैं, उन फौजों के साथ और भी बहुत-सी चीज़ें हमें चाहिए। आप देख लीजिए कि हमें जब एक हैदराबाद पर हल्ला करना था, तब उसी के लिए हमें कितनी तैयारी करनी पड़ी। हमें हल्ला करना पड़ा, क्योंकि हैदराबाद का दिमाग बिगड़ गया था और वे समझे थे कि अब अँग्रेज़ गए, तो हम स्वतंत्र हो गए। अगर हैदराबाद कोई व्यक्ति होता, तो हम उसे पागलखाने में भेज देते। लेकिन वह तो बम्बई जितना बड़ा है। उसमें जिन लोगों के पास सत्ता थी, उन लोगों ने यह समझा कि अब तो कौन हमको रोक सकता है। और उनको यह उम्मीद भी थी कि हम को पाकिस्तान मदद करेगा या कोई परदेसी लोग मदद करेंगे, जो उनके पुराने दोस्त थे। लेकिन उन्होंने हमारी ताकत की कोई परवाह नहीं की। वे समझे कि हम तो लड़ ही नहीं सकते, या हम में कोई ताकत है ही नहीं। हमने बार-बार कहा कि जो हाल जूनागढ़ का हुआ, वही तुम्हारा भी हो जाएगा। समझ जाओ। लेकिन उन्होंने नहीं सुना। अच्छी बात है। नहीं सुना, तो आखिर देख लिया। बहुत-से बाहर वाले लोग गुस्से भी हुए कि यह क्या हुआ? और सौ चूहे मार के बिल्ली हज करने के लिए जाती है, ऐसी अँग्रेज़ों की चाल है। सारी दुनिया में सदियों से आज तक अँग्रेज़ों ने इसी तरह से काम किया, हमने उसकी अपेक्षा बहुत अच्छी तरह से काम किया। लेकिन उनको बहुत क्रोध आया कि यह कैसे हो गया? अब वे पंच कैसे बनेंगे। ठीक है, अब यह तो भीतर की बात थी। लेकिन बाहर की बात हो, तब कितना क्या कुछ करना पड़ेगा? जब भीतर के लिए हमको इतना कुछ करना पड़ा।

हमारा पड़ोसी, जो हमारे से ही अलग हुआ, बार-बार हमको दुश्मन कहता है। हमें बार-बार दुश्मन कहकर वह हमारे साथ दोस्ती कैसे करेंगे? उसने दुश्मन होना हो तो उसकी इच्छा। हम तो चाहते हैं कि हम दोस्ती रखें। लेकिन इसी तरह से वह हमें दुश्मन-दुश्मन कहते रहें, तो दोस्ती नहीं हो सकती। मुहब्बत के लिए तो उन्हें अपनी चाल बदलनी पड़ेगी। हम तो

उनकी जगह पर जाना नहीं चाहते हैं, लेकिन वे हमारे काश्मीर में जाकर घुस गए हैं। जब तक वे वहां से नहीं हटेंगे, तब तक दोस्ती की बात उनकी ज़बान पर अच्छी नहीं लगती। अब वे कहते हैं कि काश्मीर के बिना पाकिस्तान रह नहीं सकता। नहीं रह सकता, तो आओ पीछे। किसी ने रोका है? लेकिन हम वहां से हटनेवाले नहीं हैं। हम इस तरह से कभी नहीं हटेंगे।

मैंने आपसे कहा, अब आकर हम अपने नीचे की ओर देखें। बर्मा में देखें, मलाया में देखें, चाइना में देखें और साउथ-ईस्ट की सब जगहों को देखें। सब देशों में आपस में झगड़ा-ही-झगड़ा चलता नज़र आता है। ऐसा ही अगर हिन्दुस्तान में भी हुआ, तो हमने जो कुछ पैदा किया है, वह सब गुमा देंगे। ऐसा नहीं करना चाहिए। उसके लिए हमें क्या करना है? सब से ज़रूरी बात यह है कि हमें अपनी मध्यस्थ सरकार को और भी अधिक मज़बूत बनाना चाहिए। हमारे कई लोग कहते हैं कि मध्यस्थ सरकार का कोई विरोध नहीं करता, इसलिए हमें उसका विरोध करना चाहिए। करो, ठीक है। विरोध करने में कौन ना कहता है, करो। लेकिन विरोध करने का मतलब यह नहीं कि कोई काम ही नहीं होने देना चाहिए। अब देखो, हमारे जहाज आकर वहां बन्दरगाह पर पड़े हैं। हमने परदेस से अनाज मंगवाया था, अब जहाज बम्बई के बन्दर में आकर पड़े हैं। अब वहां जो मज़दूर डॉक पर काम करनेवाले हैं, वे आज हड़ताल पर चले गए हैं। और जहाज वहां पड़े हैं। इधर मज़दूर हड़ताल करता है और उधर जिन के पास अनाज पहुँचाना चाहिए वहां पहुँचा नहीं सकते। अब उनको कोई यह नहीं कहता कि भाई, हमारे हिन्दुस्तान की आर्थिक हालत ऐसी है कि थोड़ा-सा दुख बरदाश्त करो। अगर आप यह न करेंगे तो हमारे अपने लोग भूखे मरेंगे। जब आप हड़ताल करते हैं तो हज़ारों लाखों की भूख की परवाह नहीं करते। अब यहां तक कहते हैं कि रेलवे में हिस्सा करो। रेलवे में लेबर का हिस्सा कर दो। पोस्ट आफिस चलता है, तो उसमें भी लेबर का हिस्सा कर दो। सब चीज़ों में मज़दूरों का हिस्सा कर दो। क्या दुनिया में किसी और जगह पर ऐसा हो गया है, जो अब हिन्दुस्तान में ही ऐसा करना है? कल ही तो हमारी गुलामी गई है। अभी तो हमारे पैर भी पूरी तरह मज़बूत नहीं हुए। उसके पहले यह सब चीज़ एक साथ कर दो। यह कैसे हो सकता है? हम भी चाहते हैं कि हमारे मजदूर तगड़े हों और हमारे मुल्क में

किसी एक आदमी के पास अधिक धन न हो। हम तो चाहते हैं कि सबके पास चर्खा हो। लेकिन हमें समझना चाहिए कि कहां तक हम आज खड़े हैं और कहां तक हमें जाना है।

तो मैंने कहा कि हमें अपनी मध्यस्थ सरकार को मज़बूत बनाना चाहिए। साथ ही हमें अपनी रक्षा के लिए फौज़ भी चाहिए। हमारी लशकरी ताकत ऐसी होनी चाहिए कि जिस से हमें कोई डर न रहे। पहले जैसे हैदराबाद के कुछ लोगों ने सोचा था कि ये क्या लड़ेंगे, इनके पास तो कुछ है ही नहीं, वैसी बात फिर कोई सोच न सके। अब हमारे भीतर तो सब समझ गए। बाहर का भी खूब मजबूत होना चाहिए। तो वह कैसे मजबूत हो? आज हमें फौज रखनी हो तो पुराने ढंग की फौज से काम नहीं चलेगा। अब तीर या तलवार की लड़ाई नहीं रही है। जब हैदराबाद में हमारे टैंक पहुँचे और उनकी आवाज सुनाई दी तब दुश्मनों के पेट में जो खाया था, सब हिलने लगा। वे सोचने लगे, यह तो हमने नहीं देखा था। हम तो रोज ऊपर से हवाई जहाज में पैसा खर्च कर के इतने हथियार बन्दूक लाए थे। लेकिन बन्दूक की गोली तो वे अभी चला नहीं पाए कि दूर से हमारी तोपों की आवाज़ें आने लगीं। उन्होंने सब ठंडा कर दिया। हमने तो पहले ही कहा था, मगर तब किसी ने हमारी सुनी नहीं। इसलिए हमें नश्तर तो चलाना पड़ा, मगर हम ने इस तरह नश्तर चलाया, जिस से कम-से-कम खून निकले।

लेकिन यह जो हमारे पास सामान था, उसी प्रकार का सामान कहां से आता है? और अपनी रक्षा के लिए हमें और भी क्या-क्या सामान चाहिए? वह न हो, तो काम चलता नहीं है। उसके बिना आज की कोई फौज नहीं चल सकती। उसके बिना तो, जो रज़वी का हाल हुआ, वही हाल हमारा भी हो। तो हमारे पास पूरा और अच्छा सामान चाहिए। वह सब सामान हिन्दुस्तान में बनना चाहिए। तो क्या-क्या सामान चाहिए? आर्मी को ले जाने के लिए ट्रक्स चाहिए, बहुत-सी मोटर लौरी, और जीप्स चाहिए, बड़े-बड़े टैंक्स, जिसमें तोपें रहती हैं, चाहिए। ये बड़ी-बड़ी चीज़ें हिन्दोस्तान में कहां होती हैं? हमारे यहां तो अभी कोई चीज़ नहीं बनती। अगर परदेसी लोग भी हमको ये चीज़ें न दें, तो हम बेकार हो जाएँगे। इसलिए वह चीज़ें हमें अपने मुल्क में पैदा करनी हैं। तो वह सब पैदा कैसे हो? उसका इल्म हम को जान लेना चाहिए कि उन्हें किस तरह से पैदा किया जाय। तो हमें और झगड़ा

छोड़कर अपना यह ज़रूरी काम खुद करना है। अब यह जो ट्रक्स चलते हैं, मोटरें चलती हैं, उनको घोड़े के समान पानी नहीं पिलाते, उनको पैट्रोल पिलाना पड़ता है। तो पैट्रोल कहां से लाना है? हिन्दुस्तान में तो बहुत थोड़ा-सा पैट्रोल है। जो है, उस को भी ठीक से निकालने का अभी तक कोई अच्छा इन्तज़ाम नहीं है। तो हम क्या करें? गैसोलीन हमारी धरती में काफ़ी पड़ा है, लेकिन कौन निकाले उसे? आज तक हम तो एक ही इल्म सीखे थे कि चलो जेल में। दूसरी बात तो अभी तक हम सीखे ही नहीं। लड़ाई तो हमने बहुत की, लेकिन राज चलाने का काम इस तरह से नहीं चलता। यह बहुत ही कठिन और विचित्र काम है। सो यह चीज़ भी हमें इधर पैदा करनी है। अब फौज के लिए बारूद-गोला चाहिए, तोप-बन्दूकें चाहिएँ, यह सब पैदा कैसे हों? यह किसी को ख्याल नहीं कि गोला, बारूद कहां से आता है, उसका दाम कितना देना पड़ता है? फौज के लोगों के लिए यूनीफार्म चाहिए, कपड़ा चाहिए। आप के पास टुकड़ा हो न हो, धोती हो न हो, टोपी हो न हो, तो भी काम चल सकता है, पर फौज का काम नहीं चलेगा। फौज के सिपाहियों के पेट के लिए भी आपसे तीन गुना, चार गुना खाना ज़रूर चाहिए, तभी काम चल सकता है, नहीं तो नहीं चलेगा। क्योंकि जिससे लड़ाई का काम लेना हो, उसको इस कदर खाना जरूर देना चाहिए कि वह खूब तगड़ा रहे।

सब चीज़ें अगर हम अपने मुल्क में पैदा न करें तो हमारा काम नहीं चल सकता है। और यह सब पैदा करना हो, बारूद-गोला, बन्दूक, तोप, कारें, ट्रकें, जीप्स सब पैदा करनी हों, तो बड़े-बड़े कारखाने चाहिएँ। यह काम चर्खा से नहीं होता। चर्खा की जो फ़िलॉसफी गान्धीजी की है, वह अगर हिन्दुस्तान माने और दुनिया माने, तो दुनिया में कोई दुखी न रहेगा, न कोई भूखा रहेगा, न कोई नंगा रहेगा। लेकिन वह हमने छोड़ दिया है। हम वह नहीं करते हैं। गान्धीजी ने बार-बार कहा कि हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग बेकार पड़े हैं। अगर वे सब एक घंटा भी चर्खा चलाएँ तो और कपड़े की ज़रूरत नहीं रहेगी। लेकिन वह माननेवाले नहीं हैं। यहां घर में पानी का नल लग गया तो कूंएँ पर कोई जानेवाला नहीं है। ऐसी हालत हो गई है, तो हमें समझना चाहिए कि या तो गान्धीजी के रास्ते पर चलो, तब कुछ हो सकता है, या उस रास्ते पर चलो, जो दुनिया का रास्ता है। वह रास्ता यह है कि हमारा

घर मजबूत होना चाहिए और ऐसा नहीं होना चाहिए कि घर-घर हमारी लड़किएँ बिकती रहें। गैर लोग औरतों को उठा ले जाएँ और हम बेकार रोते ही रहें। इसके लिए हमें बन्दोबस्त करना है कि हमारी केन्द्रीय सरकार और हमारी आर्मी मज़बूत हो। और अगर हमें अपनी आर्मी मजबूत रखनी हो, तो उसके लिए जितने सामान की ज़रूरत होती है, वह सब हमें इधर बनाना चाहिए और वह सब बनाने के लिए हमें कारख़ाने चाहिएँ।

तो इन कारखानों को कौन चलाए ? बहुत से लोग कहते हैं कि इन्हें नेशनलाइज़ करो। सब कारखानों को राष्ट्रीय कर दो। अरे, हम में तो अभी अपनी गवर्नमेंट चलाने की भी पूरी ताकत नहीं आई है। वह कारखाना चलाना तो फिर दिवाला निकालने की बात है। क्योंकि हम वह इल्म जानते ही नहीं हैं। तो इसके लिए हमारे जो धनिक लोग हैं, उनको समझाना पड़ेगा। उनको साथ लेना पड़ेगा। सो खाली धन का साथ नहीं है। उनके दिमाग को भी साथ लेना पड़ेगा कि मिलों को कैसे चलाया जाए। अब भी तो हमारे यहां बड़े-बड़े कारखाने बने हुए हैं। सब चीज़ें हमने गुलामी में भी बनाईं तो अब आज़ादी में इससे ज्यादा क्यों नहीं बना सकते ? बना सकते हैं। दुनिया भर में जितना इल्म है, उससे ज्यादा हमारे लोगों के दिमाग में है। लेकिन हम संगठित होकर चल नहीं सकते हैं। व्यक्तिगत अलग-अलग अपनी अपनी राय रखते हैं। वह नहीं होना चाहिए। हमें अपने समाज को संगठित करना चाहिए। तो इस संगठन के लिए पहले तो हमें निश्चय कर लेना चाहिए कि हम आपस में झगड़ा या फ़साद नहीं करेंगे।

देश के हित की खातिर पांच साल मिल कर काम कर लो। हम लोग तो अब बुड्ढे हुए। हमारा काम तो देश को गुलामी से छुड़ाना था सो वह तो पूरा हो गया। लेकिन देश को उठाने के लिए नौजवान तैयार न हों तो फिर बहुत मुश्किल हो जाएगी। यह बात नहीं है कि हमारे नौजवानों में दिमाग न हो। उनका दिमाग तो बहुत तेज़ है। बल्कि वह ज्यादे तेज़ हो गया है, उसी से मुसीबत होती है। जब दिमाग ज़रूरत से ज्यादा तेज हो जाता है, तो हर चीज़ में गलती निकालने लगता है। हर बात की टीका करना या टिप्पणी करना और उस पर प्रैक्टिकल (व्यावहारिक) निगाह से न देखना एक बहुत बड़ा दोष है। किताब में क्या लिखा है, सिर्फ़ यही देखने से काम नहीं चलता। वह तो हाथ-पांव चलाने की बात है।

हमें अपने व्यापारी और धनिक लोगों से उनका इल्म भी लेना पड़ेगा, उनका साथ भी हमें लेना पड़ेगा। उनसे भी हम कहेंगे कि आओ भाई, मुल्क जैसे हमारा है, वैसे तुम्हारा भी है। मुल्क में आज बहुत मैदान पड़ा है, उसमें जितना काम आप कर सको, करो। परदेसियों के समय जितना तुम करते थे, इससे ज्यादा करने का मौका अब तुम्हें मिलेगा। हालत यह है कि धनी हम से डरते हैं। हमारा उनको भरोसा नहीं है। हम उनका भरोसा नहीं करते। इस तरह से काम नहीं चलेगा। हमें एक दूसरे पर विश्वास पैदा करना चाहिए। तभी काम चल सकता है। मज़दूरों का धनिकों के साथ झगड़ा, प्रान्त का प्रान्त के साथ झगड़ा। हम इसी तरह से आपस में झगड़ा करते रहे, तो इस से हमारे देश का काम न चलेगा। हम हिन्दुस्तान के किसी भी प्रान्त में रहते हैं, असल में हम सब हिन्दुस्तानी हैं। हमारा यह प्रथम कर्तव्य है कि हम हिन्दुस्तान की रक्षा को मजबूत करें और हिन्दुस्तान की आज़ादी की पुष्टि करें। सब को एक साथ मिलकर दशहरे जैसे राष्ट्र के पर्व पर संकल्प करना है कि हम पहले जैसे खुशहाल थे, उसी प्रकार हम खुशहाल बनेंगे और अपने देश को उठाएँगे। आप महाराष्ट्र और गुजरात के लोग दोनों यहां मिले हैं, वह तो एक गंगा जमुना के संगम जैसा है। लेकिन हमें तो हिन्द सागर जैसा बनना है, जिस में भारत की सब नदियां मिलती हैं।

मुझे आशा है कि अब मुल्क में ईर्ष्या का ज़हर, या इसी तरह की कोई नीच भावना नहीं रहेगी और सब प्रेम से मिल-जुलकर अपना काम करेंगे। इस तरह यहां ऐसा वायुमण्डल बनेगा, जिसमें हमें मुल्क को उठाने के लिए बहुत मौका मिलेगा। हमारे नौजवानों को बहुत काम करना है। हमने तो कोशिश करके जितना हम कर सकते थे, वह कर लिया। आज हमारे नौजवानों के लिए मैदान खुला पड़ा है। और उन्हें काम करने का बहुत मौका है। लेकिन अगर वे काम करना छोड़ देंगे और ऐसा समझेंगे कि बस एक आर्टिकल लिख लिया या एक व्याख्यान दे दिया तो उस से काम न चलेगा। उससे कोई नेतागिरी अब नहीं मिलेगी। लोग तो अब उसी को पसन्द करेंगे जो काम कर के दिखाए। तो स्वराज्य की बहुत जोखिमदारी है। गुलामी में तो हमें एक ही रास्ते पर चलना था कि जिस किसी तरह परदेसी को हटाओ। लेकिन यह जो आपस में झगड़े की बात है, और आपस की कमज़ोरी है, हमारे खुद के भीतर की कमज़ोरी है, उसको हटाना बहुत ही कठिन काम है। हमें अपने में

अन्तर्दृष्टि पैदा करनी है और हमारे में जितनी कमजोरियां हैं उनको हटाकर हिन्दुस्तान को उठाने में ईश्वर का साथ मांगना है। ईश्वर से प्रार्थना कर तथा गान्धी जी को याद कर हमें अपने मुल्क को उठाने के रास्ते पर चलना है। यही हमारा कर्तव्य है।

ईश्वर आपको इसमें सफलता दे।

---

(११)

चौपाटी, बम्बई

३० अक्तूबर, १९४८

बम्बई प्रान्तिक कांग्रेस समिति के प्रतिनिधि गण, बम्बई निवासी भाइयो और बहनो !

आप लोगों ने मेरे प्रति जो अद्भुत प्रेम दिखाया है, उसके लिए प्रथम तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं आपका अत्यन्त ऋणी हूँ और आप का शुक्रिया अदा करता हूँ। जो बात भाई पाटिल ने मेरे बारे में आपके सामने कही है, उसके बारे में मैं आप का समय नहीं लूंगा और कुछ नहीं कहूँगा। संक्षेप में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि इन्सान कुछ नहीं कर सकता। जो कुछ होता है, वह तो इन्सान को प्रतीक लेकर होता है। करने वाली शक्ति जो उसके पीछे है, वह सामने नहीं आती। इसमें जो ईश्वर की इच्छा होती है, वही होता है। आज करीब एक साल के बाद मुझे आप लोगों के दर्शन करने का मौका मिला है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और मांगता हूँ कि आप लोगों का मेरे प्रति जो प्रेम है, जो सद्भावना है, मैं उसके लायक बनूं। अब मेरी उम्र भी काफी हो चुकी है और आराम करने का मेरा अधिकार हो गया है। लेकिन दिल चाहता है कि जो चन्द दिन बाकी हैं, उनमें भी कुछ काम हो जाए और हिन्दुस्तान किसी तरह से स्थिर हो जाए। हमारा देश मजबूत हो जाए और भविष्य में कोई खतरा न रहे, तो अच्छा है। इसलिए इन बचे हुए दिनों

में, जितनी भी हो सके मैं कोशिश करना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि हिन्दुस्तान पर पिछले एक साल में बहुत मुसीबतें पड़ी हैं, हमें बहुत-सी कठिनाइयों में से गुज़रना पड़ा है। हमको दिन-रात चिन्ता रहती थी कि यदि हम से कोई अपराध हो गया, तो हिन्दुस्तान नीचे गिर जाएगा। इसलिए हमें रात-दिन सावधान रहना पड़ता था।

किसी को जिस की उम्मीद नहीं थी, ख्याल तक नहीं था और न जिस का कोई मनसूबा ही था, ईश्वर की इच्छा से वही काम हो गया। जब मैंने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े मंजूर किए, तब मेरा दिल दर्द से भरा हुआ था और मेरे साथियों की भी यही हालत थी। हम लोगों ने राजी-खुशी से इस चीज़ को स्वीकार नहीं किया। हमने लाचारी से इसे कबूल किया। तो भी वह सच्चे दिल से किया। क्योंकि हमारे दिल में कोई पाप नहीं था। हम चाहते थे कि हम जब साथ नहीं रह सकते, तो अलग ही हो जाना ठीक है। और हमने यह भी देखा कि अगर आज अलग नहीं होंगे, तो हिन्दुस्तान के दो टुकड़े तो क्या टुकड़े टुकड़े होने जा रहे हैं, जिसका परिणाम बहुत बुरा होगा। हमने जो हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिए इतने साल कोशिश की, हमारी वह सारी कोशिश मिट्टी में मिल जाएगी और हमको आज़ादी नहीं मिल सकेगी। क्योंकि तब हम आपस में बुरी तरह से लड़ रहे थे। जहां-जहां मौका मिलता था, वहां एक दूसरे की जड़ काट रहे थे। इस हालत में मुल्क का आज़ाद होना मुश्किल था। तब हमारे सिर पर एक तीसरी सत्ता बैठी थी, जो उसका पूरा फ़ायदा उठाती थी। हमने सोचा कि हमारा प्रथम कर्तव्य है कि इस सत्ता को यहां से हटा दिया जाए और जितनी भी जल्दी हो सके उसे हटाया जाए। उसके लिए जितनी भी कीमत अदा करनी पड़े, हम देंगे। इसलिए हमने यह मंजूर कर लिया कि यदि हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता चन्द दिनों में स्वीकार हो जाए और विदेशी हुकूमत यहां से जल्दी हट जाए, तो हम इस प्रकार के टुकड़े हजम कर लेंगे। और हमने उन्हें हज़म भी कर लिया।

उसका जो कुछ परिणाम हुआ, हमने भोग लिया। बहुत लोगों को कष्ट हुआ और आज भी हो रहा है। एक ज़िन्दा अवयव हमारे शरीर से काट लिया गया। हमारे अंग से बहुत सा खून गिरा, बहुत नुकसान हुआ। लेकिन जो नुकसान होनेवाला था, उससे बहुत कम हुआ। उसका ख्याल मैंने अपने दिल में पूरा-पूरा रखा। इसलिए आज भी, जबकि मैंने यह विभाजन स्वीकार किया था,

उस समय का ख्याल करता हूँ तो मेरे दिल में कोई पश्चात्ताप नहीं होता। पहले मेरा ख्याल कभी यह टुकड़े मंज़ूर करने का नहीं था। लेकिन गवर्नमेंट में आने के बाद जब मैंने तजुर्बा किया तो समझ में आया कि अगर यही हालात रहे तो जिस तरह जो चीज़ है, वैसे ही चलती जाएगी, और हमारे साथ कुछ भी न रहेगा। तब हमने सोच-विचार कर यह काम किया कि पाकिस्तान के नेता लोग ही, जिस पाकिस्तान को एक प्रकार से 'चूहों का खाया हुआ पाकिस्तान' (मौथ-इटन पाकिस्तान) कहते थे, उसी पाकिस्तान को हमने मंज़ूर कर लिया। इसका क्या मतलब है ? वे उसे क्यों कबूल कर लेते हैं ? हमारे दिल में इसका पूरा चित्र था। हमने सोचा कि उनकी नीयत बुरी है और ठीक नहीं है। इस चीज़ को कबूल कर फिर आक्रमण करने की उनकी नीयत है। उसके लिए हमारा पूरा इन्तज़ाम होना चाहिए और वह भी ऐसा कि जिसमें उन्हें किसी प्रकार की सफलता न मिले। इसके पीछे उनका साथ देनेवाले बाहर के लोग थे। बड़े-बड़े लोग थे, बड़ी-बड़ी शक्तियां थीं। उनके साथ पाकिस्तान कबूल कराने में जो लोग थे, उन्होंने पीछे भी उन का साथ दिया। लेकिन जब हमने यह चीज़ देखी कि उनकी नीयत साफ नहीं है, तो हमने भी पूरी तैयारी की।

हमारे पास पांच छः सौ रियासतें थीं। इतनी रियासतों के अलग-अलग टुकड़े हो जाते, तो देश नष्ट हो जाता। ऐसी हालत थी कि तब हिन्दुस्तान के पास कोई चीज़ न थी। पुरानी हुकूमत ने हमारे साथ एक प्रकार का समझौता किया था, उसमें यह चीज़ थी कि जो सार्वभौम सत्ता थी, वह खत्म हो गई और राजाओं को छूट हो गई कि वह चाहें तो हिन्दुस्तान के साथ रहें या चाहें तो अलग रहें। इस मामले में हमने यह कभी नहीं सोचा था कि छोटे-छोटे राजा भी हिज़ मैजस्टी बन जाएँगे। कोई कोई तो अपने को हिज़ मैजस्टी कहने भी लगे। इस चीज़ से हमें सबसे बड़ा खतरा था। ईश्वर की कृपा से बहुत से राजाओं में अपने देश के प्रति प्रेम भावना थी। उन्होंने भली बुरी कोई भी बात की हो, पर उनकी नीयत अच्छी थी। हमने भी माना और उन्होंने भी कि हिन्दुस्तान के साथ रहना अच्छा है। जिन लोगों ने बाहर जाने की कोशिश की, उन्होंने धक्का खाया।

इस तरह से १५ अगस्त के पहले ही हमने सारे राज्यों को हिन्दुस्तान में शरीक होने के लिए राज़ी कर लिया। केवल तीन राज्य ही बाहर रहे। एक जूनागढ़, दूसरा हैदराबाद और तीसरा काश्मीर। अब जब झगड़े की कोई और

चीज़ बाकी न रही, तो पाकिस्तान ने इन तीनों राज्यों में अपना हाथ डाला। हमने बहुत कहा कि आपको अपना अलग हिस्सा मिल जाने के बाद आप का हमारे घर में हाथ डालना चोर डाकुओं का काम है, उसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। लेकिन वह नहीं माने और जूनागढ़ में जा कर नवाब से दस्तखत करवाए। हमने कहा कि जिन लोगों ने नवाब से दस्तखत करवाया, वही उसकी रक्षा करें, हम नहीं करेंगे। खुदा के यहां उनको इसका जवाब देना पड़ेगा। उस बेचारे नवाब को यहाँ से ले जाकर कैदी बनाकर छोड़ दिया। यहाँ की आज़ादी से पाकिस्तान की जेल उसे ज्यादा पसन्द होगी, ऐसा मेरा ख्याल है।

उसी समय काश्मीर में भी इस प्रकार की कार्रवाई हुई कि जो लोग फ्रांटियर के बाद बोर्डर (सीमा) पर थे, जो ट्राइबल एरिया में रहते थे, उन्हें बहकाया और काश्मीर में भेजा। जिसकी लड़ाई अभी तक चलती है। पहले तो ट्राइवल पीपुल (सरहदी लोगों) को वहाँ भेजा, क्योंकि सरहद का काम बड़े खतरे का था। सरहद की हालत ऐसी थी कि आज तक किसी तरह से लालच, रिश्वत और जिस किसी तरह समझा-बुझा कर इतने साल अपना काम चलाया गया था। अब जब अँग्रेज हट गए और पैरामाउंट पावर खत्म हो गई, तो उसके बाद यह ट्राइबल पीपुल पाकिस्तान के ऊपर नज़र करने लगे। अब पाकिस्तान ही की उन्हें संभालने की जिम्मेवारी थी। हमारी तो थी नहीं। उनके पास सामान पूरा था या नहीं, यह तो हमें नहीं मालूम, पर पाकिस्तान ने उन्हें हमारे ऊपर काश्मीर में भेज दिया। अब बहुत से लोग, जो बाहर के हैं, जो पूरी हालत समझ नहीं सकते हैं उनका यह कहना था कि जिस जगह ज्यादातर मुसलमान हों, वह पाकिस्तान का ही हिस्सा है, ठीक नहीं है। क्योंकि हमारे अपने मुल्क में चार करोड़ मुसलमान रहते हैं। इतने मुसलमान जहाँ रहते हों, वहाँ का राज्य साम्प्रदायिक हो ही नहीं सकता। हम किसी दूसरे सम्प्रदाय के साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकते, जैसा कि मज़हबी राज्यों में होता है। हमारे साथ काश्मीर में ज्यादा मुसलमान हैं। उन्हीं लोगों से काश्मीर की लड़ाई चल रही है, यह आप जानते ही हैं। और इसमें पाकिस्तान की ख्वारी हो रही है। पहले तो वे इस लड़ाई में भाग लेने की बात से ही इंकार करते थे। अब उन्होंने अपना लश्कर ही रख दिया है। हमारा तो उधर पड़ा ही है।

तीसरी जगह हैदराबाद थी। वहाँ भी पाकिस्तान ने हाथ डाला, हालांकि वहाँ भी उनका कोई सम्बन्ध नहीं था। बस, हिन्दुस्तान को हैरान करना

और हिन्दुस्तान को छिन्न-भिन्न करना ही उनकी नीयत थी। पहले तो कहते थे कि हमारा तो कोई इन्ट्रैस्ट (हित) है ही नहीं, हम कुछ नहीं जानते। किन्तु जब आहिस्ता-आहिस्ता सब भेद खुल गया, तो उससे मालूम पड़ा कि हैदराबाद का प्राइम मिनिस्टर ही एक प्रकार से पाकिस्तान का प्रतिनिधि था।

हैदराबाद ने जब हमारे साथ समझौता किया, तो वह ऐसा था कि जैसा हमने किसी और राजा के साथ नहीं किया था। उसमें हमने बहुत उदारता दिखाई थी। उधर उनका पाकिस्तान को २२ करोड़ रुपया देने का मशवरा भी जारी था। इस तरह हमारे साथ धोखेबाज़ी की। तो भी जब तक लार्ड माउंटबैटन यहाँ थे, हमने हैदराबाद का मामला उनकी मर्ज़ी पर छोड़ा था। क्योंकि ब्रिटिश गवर्नमेंट की नीति ऐसी थी कि शुरू से हैदराबाद के साथ अलग बर्ताव किया गया था। तो जहाँ तक हो सका, हमने भी उदारता का व्यवहार करने की कोशिश की। लेकिन गवर्नर जनरल के जाने के आखिरी दिन तक उम्मीद थी कि वह इंग्लैण्ड जाने से पहले खुद हैदराबाद जाकर निजाम से कागजात पर दस्तखत करवा लाएँगे। वह नहीं हुआ और इसका उसे बहुत दुख था। गवर्नर जनरल के जाने के बाद इस चीज़ का फैसला हमें तो करना ही था। किन्तु जब हम फैसला करने की सोच रहे थे, तब वह पाकिस्तान सरकार की मदद से और इंग्लैण्ड में उनके जो साथी और साथ देनेवाली शक्तियाँ थीं, उनकी मदद से, यूनाइटेड नेशन्स आर्गेनाईजेशन की सिक्योरिटी कौंसिल में जाने का छिपा बन्दोबस्त कर रहा था। इस बीच गोआ पोर्ट खरीदने की भी उसने कोशिश की। बाहर के मुल्कों से आर्म्स और एम्यूनीशन (हथियार और गोला-बारूद) लाकर भरने की कोशिश भी की गई। किसी तरह की कोर-कसर नहीं रखी गई। इस सब का कौन ज़िम्मेवार है, उसका फैसला आज नहीं होगा।

खुद निज़ाम साहब कहते हैं कि उनको तो एक कैदी बना कर इन लोगों ने यह सब काम किया। इन बन्दी बनाने वाले में उनके प्रीमियर आदि भी थे। अब खुद ही यह भी कहते हैं कि उन्हें यू० एन० ओ० में नहीं जाना है, और जो प्रतिनिधि उनकी तरफ़ से सिक्योरिटी कौंसिल में गए हैं, उनको वापस लौट आना चाहिए। इन प्रतिनिधियों को जो रुपया दिया गया था, उसमें से जो खर्च होने से बाकी बच रहा, वह पाकिस्तान के हाई कमिश्नर के नाम कर दिया गया। अपना कुटुम्ब तो उस प्रतिनिधि ने पहले ही पाकिस्तान भेज दिया था। इस प्रकार की नियत से तो वहाँ काम चल रहा है। उस पर तुर्रा यह

कि वह शान्ति चाहते हैं, सुलह चाहते हैं, मुहब्बत चाहते हैं। इन बातों का कोई मतलब नहीं निकलता। मैं एक और चीज़ भी बता देना चाहता हूँ कि हमने अभी तक पाकिस्तान के खिलाफ़ या उससे लड़ने का कोई काम नहीं किया।

चाहे हैदराबाद हो, या काश्मीर, जूनागढ़ हो या और कोई और, किसी भी हालत में कोई बाहर की शक्ति हमारी आन्तरिक व्यवस्था में दखल नहीं दे सकती। चाहे हिन्दुस्तान खत्म हो, या पाकिस्तान खत्म हो, या दुनिया खत्म हो जाए, हम किसी का दखल बर्दाश्त नहीं कर सकते। हमने पाकिस्तान सच्ची नीयत से कबूल किया है और आज तक भी हमारी नीयत साफ़ है और हम उसका भला ही चाहते हैं। वह अगर खुद अपने हाथों से अपना खड्डा खोदना चाहते हों, तो उसमें वे गिरें, उसमें भी हम अलग रहेंगे। मैं आज भी यही बात कहता हूँ।

लोग मुझसे कहते हैं कि हैदराबाद का क्या करोगे। कोई कहता है कि उसके टुकड़े-टुकड़े कर दो और आसपास के तीन प्रान्तों में मिला दो। कोई कहता है कि निज़ाम को उठा दो। कोई कहता है कि रेस्पांसिबल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) बना दो। सब अपनी-अपनी राय देते हैं। ठीक बात है। हम सब सुनते हैं और सोचते हैं। लेकिन एक बात पक्की है कि हैदराबाद के लोगों और हैदराबाद की जनता का भला जिस चीज़ में है, हम वही काम करेंगे। इसका फैसला भी जनता ही करेगी। हम उससे अलग नहीं हो जाएँगे।

एक दूसरी बात भी पक्की है कि निज़ाम को रखने के लिए या निज़ाम की डाइनेस्टी (वंश) रखने के लिए, या निजाम का कोई भी इन्ट्रैस्ट (हित) रखने के लिए यदि कोई बाहर वाला मदद करेगा, तो पहले उसे हमसे लड़ना होगा। इससे हम डरते नहीं हैं। यह हमारा आन्तरिक मामला है, हमारे घर का मामला है। चर्चिल हो या कोई उससे भी बड़ी शक्ति हो, हम उसे बर्दाश्त नहीं करेंगे। हमें काश्मीर के मामले में आज भी कहा जाता है, जब वहाँ के मुसलमान चाहते हैं, तो हिन्दुस्तान क्यों बीच में पड़ता है। यदि काश्मीर के मुसलमान आज हमसे कह दें कि हम चले जाएँ, तो हम तुरन्त वहाँ से हट जाएँगे। क्योंकि हम कबूल करते हैं कि काश्मीर में मुसलमान ज्यादा हैं। पर जब कि काश्मीरी मुसलमान ही हमसे कहते हैं कि उन्हें हिन्दुस्तान में रहना है,

तो हम मुसलमानों के साथ धोखाबाजी कैसे कर सकते हैं ? हमने वादा किया है कि अगर वह हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं, तो हिन्दुस्तान ख्वार ही क्यों न हो जाए, हम उनका साथ नहीं छोड़ेंगे । इस तरह से जब काश्मीर की प्रजा, हिन्दू और मुसलमान दोनों और वहाँ का राजा चाहता है कि वह हिन्दुस्तान में रहें, तो इंग्लैण्ड में रहने वाले टोरी हों या लिबरल, या कोई और शक्ति हो, उसे बीच में पड़ने का कोई अधिकार नहीं है, और न हम किसी की सुनेंगे । कोई चाहे लाख कोशिश करे । हमें बड़ा अफ़सोस होता है कि हिन्दोस्तान के हर मामले में, वह जहाँ चाहते हैं, दखल देते हैं । इसलिए मैं साफ कर देना चाहता हूँ कि जब तक यह लोग नहीं समझेंगे कि हिन्दुस्तान अब आज़ाद है, तब तक हमारा उनका साथ रहना बहुत कठिन है ।

हम उनकी भी मुहब्बत चाहते हैं, क्योंकि हम दुनिया भर की मुहब्बत चाहते हैं । मगर मुहब्बत इन तरीकों से कायम नहीं रहती । यदि इसी तरह हमारी आन्तरिक व्यवस्था में दखल दिया गया, तो हमारे सामने यह प्रश्न होगा कि हम अपनी व्यवस्था कैसे करें । लोग कहते हैं हमें कॉमनवेल्थ में रहना चाहिए । खैर, अब तो हमारे प्रधान मन्त्री वहाँ गए हैं । वह जब आएँगे, तो सब चीज़ हमारे सामने रखेंगे । तब हम देखेंगे कि हिन्दुस्तान के हित में क्या चीज़ है । हमारे सामने पहला सवाल यही रहेगा कि हिन्दुस्तान की भलाई की दृष्टि से जो बात ठीक हो, वही की जाए ।

यदि चर्चिल का यह ख्याल है कि हिन्दुस्तान को बचाने वाला वही है, तो मेरा कहना यह है कि उसको भी यह फैसला कर लेना चाहिए कि अपने इंग्लैण्ड को बचाएँ । क्योंकि वे दिन अब चले गए । वह खुमारी और वह मगरूरी के दिन अब चले गए । आज दुनिया दूसरी तरह से चल रही है । अगर सारी दुनिया एक दूसरे के साथ मिल कर मुहब्बत, सचाई और इन्साफ से नहीं चली, और दुनिया के देश गान्धी जी के बताए रास्ते पर न चले, तो दो लड़ाई तो यह दुनिया जिस किसी तरह बर्दाश्त कर सकी, पर तीसरी बरदाश्त न कर सकेगी । दुनिया खत्म हो जाएगी । दुनिया का नाश हो जाएगा । इस तरह से किसी का काम नहीं चलेगा ।

दूसरी एक बड़ी चीज़ यह है कि हमारे ऊपर जो पाकिस्तान के कारण आपत्ति आई, उसे हम भूल नहीं सकते । इससे दुनिया भर में हमारी बदनामी हुई, यह भी हम नहीं भूल सकते । लेकिन उससे ज्यादा जो हमारे ऊपर

काश्मीर और हैदराबाद का भारी संकट पड़ा, उसमें सबसे बड़ा हैदराबाद का था। जिसके कारण हमारे देश के अन्दर की कौमी हवा इतना बिगड़ रही थी कि उसको ठीक करने में बहुत दिक्कत मालूम हो रही थी। यह सब हमने किसी-न-किसी तरह संभाल लिया। बीच में और भी आपत्तियाँ आईं कि उनसे बचाव करना कठिन हो गया। देश में ऐसी कारवाही हुई कि गान्धी जी की मृत्यु इस प्रकार से हुई। हमें बड़ी शर्म से कबूल करना पड़ता है कि इस तरह की बात से हमें बहुत नुकसान हुआ। जिसे हम सुधार नहीं सकते। एक तो विभाजन की आफत, और दूसरी बापू के मरने की। जिस समय हमें उनकी सलाह, उनके साथ और उनके आशीर्वाद की सबसे अधिक ज़रूरत थी, उसी समय वह हमसे छिन गए। लेकिन मुझे कहना पड़ेगा दुनिया की दृष्टि में और उनकी अपनी दृष्टि में, यह मृत्यु जिस तरह हुई, बहुत बहादुरी की मृत्यु थी। काश कि मेरी भी ऐसी ही मृत्यु हो। जिन लोगों ने ऐसा किया, उनको अगर पश्चात्ताप न होगा, तो उनका किसी तरह भी कल्याण नहीं होगा और साथ ही हमारा भी। यह बहुत बड़ी आपत्ति थी, जिसमें से हम अभी गुज़र कर आए हैं।

हैदराबाद में इतनी ज़बर्दस्त आपत्ति होते हुए भी सारे हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमानों में कोई फ़िसाद न हुआ। इसका मतलब यह है कि हिन्दुस्तान में रहने वाली दोनों जातियों में परस्पर एक प्रकार का विश्वास पैदा हो गया है, और हम शान्ति से अपना काम कर सकते हैं। अब हम यह चाहते हैं कि इन अनुभवों से पाकिस्तान वाले भी समझदारी से काम लें और हमारे मामलों में दखल न दें। क्योंकि उनके दखल देने से हिन्दोस्तान में रहने वाले मुसलमानों को परेशानी होती है। पाकिस्तान की तरफ से उन्हें कोई मदद तो मिलती नहीं, और उलटा नुकसान होता रहता है। इससे हमको भी नुकसान होता है, क्योंकि उस हालत में हम अमन और चैन से बैठ कर कोई काम नहीं कर सकते।

एक बरस में हमने जो काम किया, वह तो ठीक ही है। समझो तो यह मैं एक सफाई दे रहा हूँ। हाँ, तो हमने हिन्दुस्तान को एक बना दिया। पर इसी से काम नहीं बनता। अभी तो हमें एक मजबूत एकता की ज़रूरत है। अभी क्या आप कह सकते हैं कि एक साल में जो सारा नक्शा बदला है, वह पक्का बन गया है ? उसका एक ही उदाहरण मैं देता हूँ। जब गान्धी जी की मृत्यु हुई, तब कोल्हापुर स्टेट के राजा के हाथों से हमने सत्ता ले ली थी और वहाँ

मन्त्रिमण्डल बनाया था। वहाँ जो लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल बना, उसने क्या काम किया, और वहाँ लोगों का क्या हाल हुआ, यह सब आप जानते ही होंगे, क्योंकि आप लोग तो पास में ही रहते हैं। वहाँ जितने भी ब्राह्मण थे, उन सबके चुन-चुन कर मकान जलाए गए। उनकी माल मिलकियत की लूट हुई। आस-पास की छोटी रियासतों में भी ब्राह्मणों को काफी परेशान किया गया। करोड़ों का माल लूट लिया गया और बहुतों को जान से मार डाला गया। यह सब इसलिए किया गया, क्योंकि गान्धी जी का ख़ून करने वाला एक ब्राह्मण था। यदि इसी प्रकार हमने काम किया, तो काम नहीं चलेगा। इससे तो पहले के हिन्दुस्तान का नक्शा ही अच्छा था। तो जिन लोगों ने अपने हाथ में सत्ता ली है, वह सत्ता किस तरह से चला रहे हैं यह भी देखना है। वहाँ के राजा की सम्मति से हमने एक कमेटी बनाई और एक हाई कोर्ट के जज को जाँच के लिए भेजा। उस कमीशन की रिपोर्ट और समरी प्रकाशित हुई। उस रिपोर्ट से आपको पता लगेगा कि वहाँ मिनिस्ट्री ने किस तरह से काम चलाया। अगर इसी तरह से राजाओं के हाथ से सत्ता लेकर हम काम चलाएँगे, तो हमारे लोग अँग्रेज़ों को याद करने लगेंगे कि इससे तो हमारा गुलाम देश अच्छा था।

अभी तक हमने जो कुछ किया है, वह एक प्रकार से अच्छी खेती के लिए खेत साफ़ करने के बराबर है। पर अब भी खेत बोने के लिए काफ़ी काम करने को बाकी पड़ा है। आज हमने राजाओं के हाथ से सत्ता लेकर प्रजा के प्रतिनिधियों को दे तो दी है, पर वहाँ किस प्रकार करम चलता है और हमारी वहाँ क्या-क्या ज़िम्मेवारी है और कितनी हद तक ज़िम्मेवारी पूरी हो रही है, अगर यह सब हम सोचें, तो हमें धक्का लगेगा। इसीलिए हमारे सामने अभी जो काम करने को बाकी है, वह बहुत बड़ा है। अभी तो हमने केवल शुरूआत भर की है। जो कुछ हमने किया है, वह भी बड़ी बात है, लेकिन इतनी बड़ी नहीं कि जो काम बाकी रहा है, उसे हम भूल जाएँ। अभी तो हमारे पास साँस लेने का भी समय नहीं है, आराम का समय नहीं है। यह सोचने का भी समय नहीं है कि हमारी आयु कितनी है। अभी तो रात-दिन हमें काम करना है। तभी हिन्दुस्तान उठ सकता है, नहीं तो वह गिर जाएगा।

हिन्दुस्तान कितने साल के बाद आज़ाद हुआ है ? जब इतनी सदियों के बाद हमारे पास आज़ादी आई है, तो हमें देखना यह है कि क्या कर्तव्य हमें बाँधता है। हमें यह भी देखना चाहिए कि हमारे आस-पास क्या हालत है।

हमारे पड़ोस में ब्रह्मा, मलाया, हिन्दचीन और चीन हैं। वहाँ क्या आप शान्ति देखते हैं ? आस-पास शान्ति नहीं है। साथ ही हमारे पड़ोसी की नीयत भी अच्छी नहीं है। तो इस प्रकार के वातावरण से ज़हर पैदा होता है। मैं बम्बई निवासियों के सामने इस चीज़ को बड़े संकोच के साथ रखता हूँ। यह मेरा पर्सनल (व्यक्तिगत) कार्य नहीं है। लेकिन आज हमें मुल्क के प्रान्तों को ठीक रूप में अलग करना है। लोग कहते हैं कि यह काम तुरन्त करो, जिस तरह हो सके, करो। यह करने में भाषा की मर्यादा भी नहीं रखनी है। कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि बम्बई को बर्लिन बना दो। इसका मायना यह है कि हम हिन्दोस्तान को खत्म करेंगे। यह तो ऐसी बात हुई कि लक्ष्मी तिलक करने आई, तो हम कपाल धोने के लिए चले गए! मेरी बड़े अदब से आपसे प्रार्थना है कि आप यह सोचें कि जब हम गुलाम थे, तब तो बड़ी मुहब्बत से रहते थे और जब आज़ाद हुए, तब आपस में क्यों लड़ें ? मैं अखबार वालों से और आप सभी से प्रार्थना करता हूँ हमें इस तरह काम नहीं करना चाहिए। इस रास्ते से हमारा हिन्दुस्तान गिर जाएगा और हमारी भविष्य में आनेवाली प्रजा हमें श्राप देगी कि हम ऐसे लोग थे कि एक महान पुरुष ने अपनी तपस्या से हिन्दुस्तान को आज़ादी दिलवाई और अपना प्राण समर्पण कर दिया और जब आज़ादी मिल गई, तब हम ऐसे गल्त रास्ते पर चले। ऐसा नहीं होना चाहिए। जो काम हमने एक साल में किया, उसके बारे में बड़ी-बड़ी बातें करने से काम नहीं चलेगा। आगे क्या करना है, यह भी हमें देखना है। जो कोई अपनी पुरानी पूंजी पर ही खाता खोलता है और पूंजी का सही उपयोग नहीं करता है; वह आखीर में इन्सालवेंट (दिवालिया) हो जाता है। तो तुरन्त ही हमें यह सोचना चाहिए कि हमारा दूसरा कदम क्या होना चाहिए।

आज हमारे सामने सबसे बड़ा प्रश्न क्या है ? सबसे बड़ा प्रश्न तो हिन्दुस्तान की शान्ति है, जिसमें हमें काफ़ी कामयाबी भी मिली है। फिर भी इस शान्ति को मज़बूत बनाओ। उसके लिए आपस में स्नेह, प्रेम और मेल चाहिए। दूसरा बड़ा प्रश्न बहुत विकट है। उसी से हम सबसे ज्यादा परेशान हैं। वह यह है कि हिन्दुस्तान में जितना अनाज चाहिए, उतना नहीं है, इसलिए बाहर से लेना पड़ता है। इस काम के लिए हमें नाक बन्द करके दाम देना पड़ता है, सो देते हैं। करोड़ों रुपया हमें बाहर देना पड़ता है और बहुत सा रुपया जहाज के किराये पर ही लग जाता है। करीब १५, १६ करोड़ रुपया तो अनाज लाने

का किराया ही होता है। हमारे पास और ज़रूरी सामान भी नहीं हैं। यदि आज हमारी सामर्थ्य होती, तो हमने अपने जहाज क्यों न बनाए होते ? हमारे पास धन हो, तो बाहर से जहाज खरीद कर ही क्यों न ले लें और उनका उपयोग करें। किराये में हमारे जहाज़ निकल आएँगे, इतना फ़ायदा हमें मिल जाएगा। पर हम ऐसा काम नहीं करते। ऐसी चीज़ें नहीं सोचते। ऐसी बहुत सी और बातें भी हैं।

हम अनाज क्यों नहीं पैदा करते ? अनाज और कपड़ा दो चीज़ें हमें चाहिए। हमारे मुल्क में खाने को रोटी और पहनने को कपड़ा ये दो चीज़ें हो जाएँ, तो हम और मुसीबतों को बरदाश्त कर सकते हैं और चैन से रह सकते हैं। इतना शान्तिप्रिय हमारा मुल्क है। कपड़ा भी हमारे पास पूरा नहीं है और इसी कारण उसका दाम बढ़ता जाता है। जितना कपड़ा हम पैदा करते हैं, उसे सबको पहुँचाने के लिए जिस तरह से व्यवस्था करनी चाहिए, वह भी नहीं होती। उसके लिए हमें क्या करना है ? उसके लिए हम कंट्रोल करते हैं। कंट्रोल के खिलाफ़ बहुत लोग हैं। कुछ लोग पक्ष में भी हैं। अगर हम कंट्रोल उठाते हैं, तो कई लोग भाव बढ़ा कर फ़ायदा उठाते हैं। कई लोग गुस्सा होते हैं। अभी हमारी एक साल की ही गवर्नमेंट है। इसे अपनी व्यवस्था ठीक रखनी है, शान्ति रखनी है और साथ ही इन चीज़ों का भी प्रबन्ध करना है।

पुरानी गवर्नमेंट की जो मशीनरी थी, वह तो टूट गई। पिछले २०० साल से जो गवर्नमेंट चलती थी, वह सिविल सर्विस के एक ढाँचे पर चलती थी, जिसे स्टील फ्रेम कहते थे। उससे मशीन ठीक चलती थी, क्योंकि वह उसी काम के लिए बनाई गई थी। लेकिन जब सत्ता हमारे पास आई, तब इस मशीन के दो टुकड़े हो गए। परदेसियों का एक टुकड़ा तो चला गया। क्योंकि ५० से ५५ प्रतिशत उसमें परदेसी थे, वह चले गए। हम लोगों ने हिन्दुस्तान के दो टुकड़े किए थे, उसमें कई दूसरे टुकड़े में चले गए। बाकी थोड़े से लोग बच रहे। हमने हर जगह अपनी एम्बेसी (दूतावास) बनाई, अपने-अपने एम्बेसेडर (राजदूत) बनाए। कई उसमें चले गए। हमारे पास बहुत कम आदमी बच रहे। इसीलिए बहुत कम आदमियों से ही हम काम चला रहे हैं। कुछ लोग कहते हैं कि सिविल सर्विसेज़ वाले लोग पुराने ढंग से काम करते हैं। वह कुछ ठीक काम नहीं करते। लेकिन जिन लोगों को अनुभव

है, वह जानते हैं वे कैसा काम करते हैं। बाहर वाले लोग कुछ भी नहीं जानते कि भीतर की हालत क्या है। राम ही जानते हैं और कोई क्या जाने! ऐसी तो हमारी हालत है। तो मैंने कहा कि बहुत थोड़े आदमी हमारे पास रहे हैं। इनमें से जो काम करने वाले लोग हैं, जिनको देश से प्रेम है, काम करने की लगन है, वे सदा हमारा साथ देते हैं। तो एक साल में रियासतों का काम हुआ और जो काश्मीर की लड़ाई का काम हो रहा है, उसमें अगर यह लोग दिल से साथ नहीं देते, तो यह काम नहीं हो पाते। जो लोग कहते हैं कि यह तो पुरानी सर्विस की रीति और ढंग है, वे एक प्रकार का अन्याय करते हैं। मैं इस मौके पर कहना चाहता हूँ कि आप इसे पूरी-पूरी तरह से समझ लें कि हमारी मुसीबत और हमारी दिक्कतें क्या हैं? काम करने वालों को क्या-क्या परेशानियाँ उठानी होती हैं, इसे भी आप पूरी तरह से समझ लें। ताकि आपको मालूम हो जाए कि हमें बाद में क्या करना है। अब जो सर्विस का खड्डा है, जो कमी है, उसे पूरने के लिए भी हम कोशिश कर रहे हैं। यह काम चन्द रोज़ में तो हो नहीं सकता। यह काम ऐसा नहीं है कि जो भी आदमी आया, उसे बैठा दिया जाए। इससे काम नहीं होगा।

अब रही यह बात कि कंट्रोल को हमने काफ़ी दिनों बाद क्यों उठाया। अब उठाया है, तो उसका नतीजा भी देख लिया। अब हम देख रहे हैं कि अनाज पूरा नहीं पड़ रहा है। कपड़े पर से भी कंट्रोल उठाया, उससे भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बहुत लोग गुस्से हुए। उनका अधिकार था। पर हम कितना भी गुस्सा करें, उससे हमारा काम नहीं चलेगा। हमें सोचना है कि हम किस तरह करें। बहुत से लोगों ने लड़ाई में पैसा कमाया। उसमें सरकार को टैक्स का पूरा भाग देना चाहिए था, वह भी नहीं दिया। वह लोग अब पैसा लेकर बैठे हैं, इधर नोटों का तोड़ा पड़ा है। वे बाहर निकालने में डरते हैं, क्योंकि पैसा बाहर निकालें, तो उस पर इन्कम टैक्स लगेगा। सो पैसा बाहर निकलता नहीं, और कोई इंडस्ट्री चलती नहीं। इधर काम बढ़ता जाता है। जब ज्यादा माल पैदा न हो, तो कीमतें बढ़ जाती हैं। मजदूरों को ज्यादा देना पड़ता है। अगर मजदूरों को ज्यादा दें, तो गवर्नमेंट सर्विस में जितने इम्प्लाइज़ (कार्य-कर्ता) काम करते हैं, उनको ज्यादा देना पड़ता है। यह जो सिलसिला चलता है, वह कहाँ जा कर खत्म होता है, यह आप देखिए।

चीन में एक जूता चाहिए, तो कितना रुपया देना पड़ता है, उसका हिसाब

मैं नहीं जानता। हमारा मुल्क नया-नया आज़ाद हुआ है, अगर यहाँ भी यही चीज़ होने वाली है, तो आज़ादी से क्या फ़ायदा ? गरीब लोग, जिनके लिए हमने इतनी मेहनत की, लोगों ने इतनी कुरबानियाँ कीं, उन्हें क्या फ़ायदा ? यह हमें समझना चाहिए। हिन्दुस्तान में मज़दूर हों, व्यापारी हों, प्रोफेसर हों, महाराज हों, जमींदार हों, कोई भी हों, सबको समझना है कि हम जिस रास्ते पर आज चल रहे हैं, अगर उसी पर चलते रहे तो देश गिर जाएगा।

हमने अपने दुश्मनों का मुकाबला किया और आगे भी करेंगे। इसमें डर काहे का है ? लेकिन जितना मुकाबला करना पड़े, उतनी ही ज्यादा तैयारी भी करनी पड़ती है। हमने जब आज़ादी ली और पाकिस्तान कबूल किया, तब हमने सोचा था कि शान्ति से रहेंगे तो कुछ आर्मी कम करेंगे, हमारा खर्चा कम हो जाएगा। ठीक है। और यदि खर्चा कम होगा, तो काम ठीक चलेगा। लेकिन काम तो उल्टा क़रना पड़ा। हमें अपनी फौज़ बढ़ानी पड़ी। एक बात बिल्कुल पक्की है कि हिन्दुस्तान की तटस्थ सरकार को मज़बूत होना चाहिए और हिन्दुस्तान की आर्मी को भी मज़बूत रखना चाहिए, क्योंकि आज के हालात में हमें चौकीदारी की ज़रूरत है। जब ये दो चीजें ठीक हों, तो हमारा काम आगे बढ़ेगा। लेकिन इन दो चीज़ों को बहुत अच्छा और मज़बूत बनाने के लिए ही और भी तो बहुत कुछ करने की ज़रूरत होती है।

आपने देखा कि करीब-करीब ६, ७ महीनों तक हैदराबाद का प्राइम मिनिस्टर कहता था कि हिन्दुस्तान के पास क्या है ? हिन्दुस्तान कभी हैदराबाद पर हमला नहीं कर सकता। उन्हें पूरा विश्वास था कि पाकिस्तान उनकी मदद करेगा, इसलिए बार-बार वे कहते भी थे हिन्दुस्तान में हिम्मत नहीं है। अब जब उसमें थोड़ा सा छेद किया, तो सारी हवा निकल गई। यह तो आपने देखा ही। मगर देखा कब ? जब हिन्दुस्तान के ५००,६०० टैंक देखे, जिनकी आवाज़ से छक्का छूट जाता है। तब समझ गए कि आए ! उस समय तक वे नहीं मानते थे कि हमारे पास यह चीज़ है। हम बराबर कहते थे कि हम उसका नश्तर बराबर करने वाले हैं, लेकिन चाकू इस तरह रखेंगे कि कम-से-कम खून निकले। ऐसी चीज़ होगी हिन्दुस्तान और हैदराबाद में। हमने ऐसा ही किया। तब उनके समझ में आई कि हम जो समझते थे कि हिन्दुस्तान के पास कुछ भी नहीं, वह गलत था। उन्होंने देखा कि ये चीज़ें तो उन्हें खत्म कर देंगी और २४ घंटे में खत्म कर देंगी। इससे ज्यादा देरी भी नहीं लगेगी। तीन दिन के

बाद जब चौथा दिन आया, तो उसमें कोई ज्यादा समय लेने की बात नहीं थी।

तो आपने देखा कि ये सब चीज़ें हमें रखनी पड़ती हैं, हिन्दुस्तान की फौज़ का पूरा सामान, हवाई जहाज़, नौका, टैंक, गोला-बारूद आदि। वह सब हम कहाँ से लाते हैं? इसके लिए कितना खर्चा करना पड़ता है? इसके लिए हमें क्या-क्या तैयारी करनी पड़ती है? इन सब चीज़ों का भी यदि आप ख्याल करें तो आप समझेंगे कि यह कोई आसान काम नहीं है, यह बहुत कठिन काम है। आप यह भी जानते हैं कि हम लोगों ने कभी राज-काज तो चलाया नहीं। हम कोई एडमिनिस्ट्रेशन (शासन) चलाने वाले तो थे नहीं। हमारे पास कोई अनुभव भी नहीं था। हमने तो केवल एक ही चीज़ सीखी थी, और वह यह कि जेल जाना, या गोली आए तो गोली भी खानी। मगर राज्य किस तरह से चलाना होता है, यह तो हम जानते नहीं थे। यह जो काम हमारे सिर आकर पड़ा, बड़ी मुसीबत का काम है। फिर भी हम कोशिश कर रहे हैं। जो लोग हमारी टीका कर रहे हैं और कहते हैं कि हमको औपोज़ीशन (विरोधी दल) की ज़रूरत है, उनसे मैं बड़ी अदब से कहता हूँ कि आज औपोज़ीशन (विरोध) की ज़रूरत नहीं, आज कोऑपरेशन (सहयोग) की ज़रूरत है। हिन्दुस्तान के सब लोग मिल कर यदि हिन्दुस्तान को नहीं उठाएँगे, तो फिर पीछे पछताना पड़ेगा। इसलिए मैं आज कहता हूँ और सबसे कहता हूँ कि भाई, ये चीज़ें छोड़ दो और झगड़ों में न पड़ो। हिन्दुस्तान जब मज़बूत बन जाएगा और एशिया की लीडरशिप लेने का उसका अधिकार हो जाएगा, तब आप जितना खेलना चाहोगे, खेलना, कूदना, लड़ना, मस्ती करना, जितना झगड़ा करना है, कर लेना। लेकिन यदि इस समय झगड़ा-फिसाद करोगे, तो बदनामी होगी। यदि इस समय पर झगड़ा होगा, तो आपके हाथ में जो चीज़ आई है, वह भी गिर जाएगी। तो मैं कहता हूँ कि इस समय तो सावधानी की बहुत अधिक ज़रूरत है।

अब मैं आपके सामने सबसे बड़ी बात रखने लगा हूँ। और वह बात अन्य जगह नहीं बन सकती, वह केवल बम्बई में ही बन सकती है। वह यह है कि हिन्दुस्तान में आज जो हमारा आर्थिक तन्त्र है, वह तितर-बितर हो गया है। और यदि हम इसे ठीक नहीं करेंगे, तो आर्मी भी गिर जाएगी, क्योंकि आर्मी के लिए जितना हमें खर्चा चाहिए, जो सामान हमें चाहिए, वह यदि हमारे पास

नहीं होगा, तो हमारी गाड़ी चल नहीं सकेगी। आज दुनिया में सारा खेल पैसे का है और पैसा केवल नासिक के कारखाने में नोट छापने से नहीं बनता। अगर ऐसा किया जाए, तो वह एक तरह की कृत्रिम चीज़ होगी और उसमें बहुत नुकसान होगा। उसे रोकना है। वह इस तरह से कि सबको थोड़ा-थोड़ा कष्ट उठाना पड़ेगा। धनी को उठाना पड़ेगा, मजदूर को उठाना पड़ेगा, व्यापारी को उठाना पड़ेगा, किसान को उठाना पड़ेगा। सब को यह समझ लेना चाहिए कि यह फ़ायदा करने का समय नहीं है, और देश की भलाई के लिए हमारे कंधों पर जो थोड़ा-थोड़ा बोझ पड़ता है, उसे हमें खुशी से उठाना चाहिए।

इसलिए बम्बई में रहने वाले जो कारखानों के लोग हैं, मिल मालिक लोग हैं, उनसे भी मैं अपील करना चाहता हूँ कि यदि आपसे कोई कहता है कि हम धनी को खतम करना चाहते हैं, तो उससे हमें डरना नहीं चाहिए। क्योंकि आपको समझना चाहिए कि धनी को खतम करने से यदि दूसरी जगह धन पैदा हो, तब तो ठीक है। नहीं तो यदि धन पैदा करने वालों को खतम कर दो, तो हिन्दुस्तान ही खतम हो जाएगा। जो ये बातें करते हैं, वे अपनी लीडरशिप रखने के लिए ही ऐसी बातें करते हैं। उनसे आपको घबराना नहीं चाहिए। पर आपको यह ज़रूर समझना चाहिए कि आज सच्चे दिल से हिन्दोस्तान का साथ देने का समय है। और आप लोगों को यह भी समझ लेना चाहिए कि यदि आप लोगों की थोड़ी सी भी बदनामी हुई, तो आपकी सारी प्रतिष्ठा चली जाएगी, सारी इज़्ज़त चली जाएगी। जब कपड़े पर से हमने कंट्रोल उठाया, तब जो परिणाम हुआ, उसमें चाहे कोई भी गुनहगार हो, किसी का भी कसूर हो, पर यदि आप का भी उसमें हिस्सा है, तो आपने बड़ी भारी ग़लती की है।

आज व्यापारी लोग मारे-मारे फिरते हैं, इनके साथ उनके गुमाश्ता लोग भी मारे-मारे फिरते हैं। वे बेकार हो गए हैं, यह मैं जानता हूँ। मगर उसमें हमारा सबका कसूर है। इस सवाल को यदि हल करना हो, तो सबको बैठ कर हल करना चाहिए। आपको देखना चाहिए कि सरकार क्या चाहती है? वह किसकी गवर्नमेंट है? क्या वह पराई सरकार है? क्या वह परदेस को पैसा भेजना चाहती है? क्या वह स्वार्थ के लिए कुछ कर रही है? हमारे लीडर (प्राइम मिनिस्टर) की दुनिया में इतनी तारीफ़ और इज़्ज़त हो रही है; जिसने सारी ज़िन्दगी इतनी कुर्बानी की, जो दिन रात इतनी मेहनत कर अपनी

ज़िन्दगी खत्म कर रहा है, दिन-रात काम करने से जिसे जवानी में बुढ़ापा आ रहा है, क्या हम उसका उतना साथ दे रहे हैं, जितना साथ हमें देना चाहिए ? यह सब हमें सोचना है। तो मैं यह कहता हूँ कि जब हम और हमारी गवर्नमेंट चाहती है कि दाम नहीं बढ़ना चाहिए, तो आप का फ़र्ज़ है कि नफ़ा छोड़ दो। लड़ाई के ज़माने में आपने बहुत कमाया, अब उसको छिपाना पड़ता है। उसे सामने लाओ तो मुसीबत। तो मेरी सलाह यह है कि आपने पहले जो कमाया, सो तो ठीक है। मगर आज आपको थोड़ा नफ़ा कमाना चाहिए और गवर्नमेंट का साथ देना चाहिए। गवर्नमेंट जितना नफ़ा मुनासिब समझे, वही आपको लेना चाहिए। आप ऐसी चीज़ें बनाएँ, जो कि सब लोगों के काम में आएँ। इससे भाव भी गिर जाएँगे, कपड़े का दाम भी गिरेगा और अनाज का दाम भी गिरेगा।

एक चीज़ का दाम गिरने से दूसरी चीज़ का दाम गिरेगा, और दूसरी से तीसरी का। इस तरह से यह चक्कर घूमता है। यह बड़ा विकट प्रश्न है, लेकिन इस प्रश्न को आप ही हल कर सकते हैं और आप ही को इसे हल करना है। गवर्नमेंट को आप अपना दुश्मन न समझें और ऐसा न मानें कि गवर्नमेंट एक तरह से हमको खत्म करना चाहती है। हाँ, खत्म करने में भी मैं ही पहला हो जाऊँ, यदि कोई मुझे रास्ता बताए कि इनको खत्म करने से मुल्क का फ़ायदा होता है। क्योंकि हमारे पास ऐसी गवर्नमेंट नहीं है, जैसी अँग्रेज़ों के पास है। उनके पास शिक्षित मैन पावर (शिक्षित जनशक्ति) है, यदि वे एक इण्डस्ट्री (व्यवसाय) चलाना चाहें और उसे नैशनलाइज़ (राष्ट्रीय करण) करना चाहें, तो वे तुरन्त वैसा कर सकते हैं। हम अगर नैशनलाइज़ करें, तो बरबाद करके छोड़ देंगे और देखेंगे कि हमने दोनों तरफ़ से खोया। हमारे पास तो राज चलाने के लिए भी जितने चाहिए, उतने आदमी नहीं हैं। पुरानी सर्विस टूट गई है। हमारे खुद की मिनिस्ट्री और जो प्रान्तों की मिनिस्ट्रियाँ हैं, वे बहुत मुसीबत से काम कर रही हैं। उसके पास भी अनुभवी आदमी कम हैं। असली काम चलाने वाले बहुत कम हैं, बाकी उनकी सलाह से चलते हैं। अनुभव न होने से वे कोई-कोई काम बिगाड़ते भी हैं।

स्टेटों (रियासतों) के जितने यूनियन बने हैं, उन सभी यूनियनों में तीन आदमी मुझे देने पड़ते हैं, एक सलाहकार, एक फाइनांशियल अडवाइज़र (आर्थिक सलाहकार) जो फाइनांस (अर्थ) की जाँच करता है और सलाह

देता है कि बजट में कितनी कमी है, कितना टैक्स लगाना चाहिए आदि और तीसरा चीफ़ सेक्रेटरी (मुख्य सचिव)। ये तीनों आदमी हम सिविल सर्विस के अफ़सरों में से देते हैं। तो भी, इतना कम होते हुए भी स्टेटवाले क्या कहते हैं? वह डरते हैं और कहते हैं कि भाई साहब, यह तो बाहर के आदमी आप हमारे ऊपर ले आए। क्या हम बाहर के आदमियों को कबूल करें? इससे तो हमारी स्वतन्त्रता पर लात पड़ती है। इससे अगले इलेक्शन (निर्वाचन) में हमको वोट्स नहीं मिलेंगे, क्योंकि अभी तक तो लोग डेमोक्रेसी (जनतंत्र) को समझते ही नहीं हैं। हम उनको समझाते तो हैं, पर हमें मालूम है कि सीखने में अभी बहुत समय लगेगा। पर क्या यह काम आसानी से हो सकता है? जो करता है, उसे ही मालूम होता है। आपने देखा कि ट्रावंकोर में खानुकुले लीडर था। उसने इलेक्शन में लड़कर ट्रावंकोर का राज्य अपने हाथों में लिया। वह वहाँ प्राइम मिनिस्टर बना। पर दो महीने भी उनकी नहीं चली और वह हटा दिया गया। दूसरा कोई आया। इसमें भलाई-बुराई की कोई बात मैं नहीं कह रहा। वहाँ जो हुआ, ठीक हुआ। लेकिन इस तरह से हमारे केन्द्र का कारबार चले, तो लोगों की मुसीबत आ जाए।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि अभी तो हमारा पहला कर्तव्य यह है कि हम चीजों का दाम कम करें। मैं व्यापारी लोगों से भी कहना चाहता हूँ कि उन्होंने जो पैसा बनाया, उसी से यह मुसीबतें आईं। गुमाश्ते लोग तो आज रोते हैं। उनका कर्तव्य था कि वे उस समय गवर्नमेंट को बताते कि व्यापारी लोग किस तरह टैक्स की चोरी करते हैं। वह नहीं बताया और अपने-अपने स्वार्थ में पड़ गए। तो भी मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कि हम सबको एक साथ मिल कर काम करना है। मैं अगर आप से नाराज़ हो जाऊँ तो क्या गाली दूं? उससे क्या फ़ायदा निकलेगा? मैं इस तरह से काम नहीं करता। मैं इस तरह की लीडरशिप नहीं कर सकता। मैं आपके हृदय में प्रवेश करना चाहता हूँ। क्योंकि जब तक बम्बई का ढंग नहीं बदलेगा, तब तक हिन्दुस्तान का कल्याण नहीं होगा। बम्बई के पास हिन्दोस्तान के कल्याण की चाबी है। तो बम्बई की सब जनता को मैं समझाना चाहता हूँ कि लड़ाई के परिणाम से जो अनीति हमारे भीतर घुस गई है, उसे हम हटाएँ, और गान्धी जी ने जो पवित्रता हमें दर्शाई थी, उस पर चलें। जैसे सत्याग्रह की लड़ाई के दिनों में आप ने कुर्बानी की और अपने पड़ोसियों का ख्याल रखा, एक दूसरे का ख्याल रखा, वैसा

ही आप अब भी करें। हमें अब भी वही आबोहवा पैदा करनी होगी, तभी हमारा काम चलेगा।

आपने जो रुपया ब्लैक मार्केट में कमाया है, वह किस तरह से कमाया है, यह याद करो। अब या तो देश का काम कर लो, या पैसा बना लो। अगर आप स्वार्थ को ही देखते रहेंगे, तो यह चीज़ आखिर सब को डुबोएगी। आज हमारा सबसे बड़ा काम यह है कि हम दाम गिराएँ। अगर दाम एक दफा गिर जाएँ, तो मजदूरों को भी यह समझ आएगी कि अब खाने-पीने का दाम गिरा, तो हमारा खर्च भी कम हो गया है, अब हमें ज्यादा माँगने की ज़रूरत नहीं है। जो लोग बराबर स्ट्राइक करवाते हैं, हड़ताल करते हैं, चन्द दिनों के लिए उन्हें लेबर की लीडरशिप मिल जाती है। लेकिन वह आखिर उन्हें ले डूबेगी। उसमें कोई तैरनेवाला नहीं है, सब डूब जाने वाले हैं। तो मज़दूरों को भी मेरी सलाह यह है कि वह न समझें कि जो मज़दूरों को हड़ताल करने की सलाह देता है, वही उनका भला चाहता है। हम जो इतनी उम्र में गवर्नमेंट का बोझ घसीट रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हम मज़दूरों के सिर पर बोझ डाल कर धनी लोगों की जेब में पैसा डालें। हम तो चाहते हैं कि आप का भला हो। लेकिन अगर कूंएँ में पानी न होगा, तो हौज़ में कैसे आएगा? कूंएँ में पानी भरा रहेगा, तो हौज़ में भी भरा रह सकेगा।

हमें सब चीज़ें अपने मुल्क में पैदा करनी हैं, तो जितना हमारे पास पैसा है, उसका उपयोग नये-नये कारखाने बनाने और इंडस्ट्री बढ़ाने में करें तो देश आगे बढ़ सकता है। नहीं तो मैं आप को फिर यह वारनिंग (चेतावनी) देता हूँ कि अभी जो कुछ यूरोप में हुआ, वही हमारे यहाँ होगा। यूरोप को उठाने के लिए अमेरिका कोशिश कर रहा है। आपने यह भी सुना होगा कि इंगलैण्ड भी ३००, ४०० करोड़ पाउंड का लोन (कर्ज़) लेता है। हमें कौन लोन देगा? हम कहाँ से पूंजी लाएँगे? और यदि आज हम लोग ले भी लें, तो भी जिन लोगों ने नोट जमा कर रखे हैं, वह तो उन्हें निकालेंगे नहीं। क्योंकि उन्हें डर है कि अगर निकालेंगे, तो इन्कम टैक्स में पकड़े जाएँगे। तो वह लोग निकालते नहीं, क्योंकि ब्लैक मार्केट में जो नफ़ा उन्होंने कमाया है, वह तो अब आता नहीं। और जब तक उसका फैसला नहीं हो जाता, तब तक काम आगे नहीं चल सकता। तो इन्कम टैक्स की चोरी करने वालों की जाँच के लिए गवर्नमेंट ने एक कमीशन बैठाया है। उसे बैठाया तो पहली मिनिस्ट्री ने था, जिसमें

लियाकत अली खां फाइनेंस मिनिस्टर (अर्थ मन्त्री) थे। उनकी नीयत दूसरी थी। पर उसके बाद जब हमारे पास यह गवर्नमेंट आई, तब हमने इसे मज़बूत बनाया। पर केवल कमीशन बनाने से तो काम नहीं चलता? उसके लिए तो एविडेंस (गवाही) चाहिए। अब कहाँ छिपा है वह पैसा? एक लम्बी-चौड़ी प्रश्नोत्तरी बना कर उनके पास भेज दी जाए, तो वे अपने वकीलों से उसका जवाब दे देंगे। अब यह काम चलते-चलते दो साल हो गए और कुछ पैसा नहीं मिला। यह काम ऐसा ही चलता रहेगा, तब व्यापारी भी अपना पैसा नहीं निकालेंगे और नोटों के गट्ठे छिपे रहेंगे। उधर गवर्नमेंट को पैसा नहीं मिलेगा और इधर कमीशन का खर्चा बढ़ता रहेगा। इससे न कोई काम होगा और न कोई फ़ायदा होगा। इस तरह से हम सब चीज़ें अगर एक दूसरे से लड़कर करेंगे, तो आखिर देश में कोई काम नहीं होगा। तो मेरी यह सलाह है कि समझदार लोग बैठ कर रास्ता निकालें। समझदार लोग कहाँ होते हैं? जो धन पैदा करते हैं उनमें बुद्धि होनी चाहिए और जो व्यापारी लोग हैं, उन्हें समझना चाहिए कि इस तरह से देश डूब जाएगा और उनका पैसा भी खत्म हो जाएगा। आपस में विश्वास और सहयोग किए बिना इस तरह से काम नहीं चलेगा।

तो मेरी सलाह यह है कि मैंने जो कहा, उस पर आप सोचें और अपना रास्ता बदलें। आप देश में शान्ति और प्रेम का वायुमण्डल पैदा करें। मुझे बड़ा अफसोस हुआ, जब मैंने सुना कि बम्बई में आज प्रान्त-प्रान्त को अलग करने के लिए आन्दोलन चल रहा है। ऐसे आन्दोलन से ज़हर फैलता है। क्यों? क्या हम गुजराती और महाराष्ट्रीय जब तक गुलाम थे, तब तक आपस में मुहब्बत से नहीं रहे? तब हम कभी झगड़ते थे? यदि आपको अलग महाराष्ट्र चाहिए, तो ले लीजिए। मगर उसका ढंग दूसरा होगा। आप इस तरह से क्यों लड़ते हैं? लड़ने की क्या ज़रूरत है? बैठ कर इंसाफ से काम कर लीजिए। न्याय से काम करनेवाले हमारे देश में बहुत लोग हैं, उनका कमीशन बना दो और वे जिस तरह कहें, काम करो। इस तरह अखबारों में ज़हर फैलाने, प्रोसेशन्स (जलूस) निकालने और मीटिंग्स करने की बातें तो तभी तक ठीक थीं, जब तक हम गुलाम थे। अब आजाद होकर हमें अनुभव करना चाहिए कि हम भले हैं, जवाबदार हैं और अपना राज्य चलानेवाले लोग हैं। हमें इस तरह से क्यों काम करना पड़े? आपका और हमारा, सबका जो लीडर था, वह भी यही

सलाह देकर गया कि भाई, एक दूसरे पर विश्वास करो और एक दूसरे से मिलकर काम करो। इसमें कोई मेरा निजी स्वार्थ नहीं है, लेकिन मैं यह सलाह देना चाहता हूँ कि आज हम कोई ज़हरीली आबोहवा पैदा न करें और समझ-बूझ कर काम अच्छी तरह से करें, मोहब्बत से काम करें।

मैंने आप से कहा कि हमें हिन्दुस्तान को मज़बूत बनाना है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से हमारा देश बहुत बड़ा बन गया है। दुनिया में ऐसे बड़े देश बहुत कम हैं, जैसा हिन्दुस्तान है। इसको यदि हम मजबूत बना लें, तो हमें किसी चीज़ की कमी न रहेगी और हमारी इज्जत बहुत बढ़ जाएगी। इसके लिए हमें सामान पैदा करना है। मैंने जैसे बताया कि हमें ज्यादा धन पैदा करना है, ज्यादा माल पैदा करना है। इस काम के लिए हम आपस में बैठ कर सोचें और सरकार के साथ मिलकर काम करें। हमें आपस में झगड़ने की ज़रूरत नहीं है। हमें आपस में विश्वास का वायुमण्डल पैदा करना है। यदि हम यह सब करें, तो हिन्दुस्तान का भला होगा। हमारा जो सबसे बड़ा नेता था, जिसने दुनिया में हमारी इतनी इज्ज़त बढ़ाई, वह महात्मा गान्धी थे। उन्हीं के बताए रास्ते पर अगर हम चलें, तो वह हमको आशीर्वाद देंगे। मैं ईश्वर से यह माँगता हूँ कि हम उसके लायक बनें। जय हिन्द!

—

(१२)

नागपुर विद्यापीठ में भाषण

३ नवम्बर, १९४८

आपके विद्यापीठ ने मेरे ऊपर जो प्रेम ज़ाहिर किया है और जिस तरह आपने मेरा स्वागत किया है, इसलिए सबसे पहले मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। दान अनेक प्रकार के होते हैं और सुपात्र को ही दान देना ठीक होता है। लेकिन जो दान के योग्य नहीं होता, उसको दान नहीं देना चाहिए। पदवी का दान पदवी के योग्य पुरुष को दिया जाता है। लेकिन आपने उसके लिए मुझको पसन्द किया है और मेरे ऊपर ज़िन्दगी भर के लिए बोझ डाल दिया है। क्योंकि पदवी-दान में आपने लिख दिया है कि इस पदवी की योग्यता मुझमें मेरी ज़िन्दगी भर में रहे। (हँसी) यह मेरे लिए बड़ी मुसीबत की बात है। इसलिए मुझे कहना पड़ता है कि पदवी दान को मैंने ज़िन्दगी में कभी स्वीकार नहीं किया। यह मेरा धर्म नहीं है, मेरा कर्म नहीं है। लेकिन आपके प्रेम में फँसा, इसलिए मैंने इसे कबूल किया। तो आप लोगों के आशीर्वाद से और ईश्वर की कृपा से मैं इस सम्मान को निबाह सकूं, तो अच्छी बात है। नहीं तो उसके लिए आप और मैं दोनों दूषित हो जाएँगे। क्योंकि आपने जिसको पसन्द किया, वह समझ-सोचकर पसन्द करना था।

नागपुर में जब मैं पिछली दफ़ा आया था, तो इसी जगह पर मैंने जो कुछ कहा था, उसका मुझे पूरा स्मरण है। आप लोगों को भी वह सब स्मरण

होगा। आज भी जब मैं नागपुर आया हूँ, तो भारतवर्ष की आधुनिक स्वतंत्रता की ड़ालई का सारा इतिहास मेरे सामने आ खड़ा हुआ है। क्योंकि नागपुर में कांग्रेस का एक बहुत बड़ा वार्षिक अधिवेशन हुआ था, उसी में भारत की स्वतंत्रता की नींव डाली गई थी। वह एक ऐतिहासिक सम्मेलन था। इसके बाद जो बनाव बने, वे सब आपके सामने बने। आज भी मेरे सामने वह चित्र आ खड़ा होता है, जब कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की बैठक हुई थी और जब पुण्य-स्मरणीय श्री जमनालाल बजाज को दो साल की सज़ा हुई थी। उसके बाद झंडा सत्याग्रह का काम कांग्रेस की कार्यकारिणी कमेटी ने मेरे सुपुर्द किया था। वह सारा चित्र मेरे सामने है। जो काम उसके बाद हुआ, वह आपके सामने है। उसके इतिहास में मैं जाना नहीं चाहता, लेकिन जितनी बातें उसमें से फलित हुई हैं, उनके सम्बन्ध में आपका ध्यान ज़रूर खींचना चाहता हूँ।

आज आज़ादी तो हम लोगों को मिल गई, लेकिन उस आज़ादी की योग्यता हममें है, इसके बारे में मुझे उसी तरह शंका है, जिस तरह उपाधिदान के सम्बन्ध में है। जो आज़ादी हिन्दुस्तान को मिली है, उसकी हिन्दुस्तान में कितनी योग्यता है, इसके बारे में हम सबको सोचना चाहिए। आज हमारे यहाँ सब लोग अपेक्षा करते हैं कि आज़ादी मिल गई, तो इसका मतलब है कि सब चीज़ हो गई। और अब भला-बुरा जो कुछ भी हो, उसका उत्तरदायित्व सरकार के ऊपर डाल देना चाहते हैं। भला करे तो वही, बुरा करे तो वही। उसी की सब ज़िम्मेवारी है। लोग समझते हैं कि हमारा काम अब समाप्त हो गया। उदाहरण के लिए ऐसा समझ लें कि आपने पदवी-दान मुझे दी, उसे मैंने स्वीकार कर लिया, और अब मुझे अपनी योग्यता के बारे में कुछ भी सोचने की ज़रूरत नहीं रह गई!

आज़ाद होकर आज हमें अपने भविष्य की ओर ध्यान देना है। ऐसा न करेंगे, तो यह बहुत बुरी बात होगी। यही आपको भी सोचना है। आज़ाद तो हम कुर्बानी से हुए हैं। जो लोग कुर्बानी करने वाले थे, उन्होंने तो खाली कुर्बानी का फल चाट लिया। लेकिन जो आज़ादी का फल है, वह देश भर को मिलना चाहिए। वह किस तरह मिले, यही रात दिन सोचने की बात है। पिछली लड़ाई में और उसके बाद से दुनिया में सब जगह कमोबेश नैतिक स्टैण्डर्ड गिर गए या टूट गए। किसी एक मुल्क में ही नहीं, कमोबेश सभी मुल्कों में; कहीं ज्यादा और कहीं कम। छोटे-मोटे स्वार्थों में अधिकांश लोग पड़ गए।



१५ फरवरी, १९४८ को सरदार पटेल सौराष्ट्र के उद्घाटन समारोह में जाम साहब नवानगर से राजप्रमुख के पद की शपथ लेते हुए

हमारी आज़ादी की जो लड़ाई थी, उस लड़ाई में त्याग, कुर्बानी, सत्य और अहिंसा आदि के तेजस्वी हथियार थे। उनका परिणाम भी बहुत उज्ज्वल नजर आता था। लेकिन जो विश्व-युद्ध हुआ, उसके जो हथियार थे, वे संहार के थे। वे सब सृष्टि संहार के हथियार थे। उसके पीछे, जिस तरह समुद्र मन्थन के बाद ज़हर निकला था, उसी प्रकार का ज़हर निकल आया। अब यह ज़हर तो निकला, पर उस ज़हर को पीने वाला कोई न निकला! परिणाम यह हुआ कि वह जलता रहा और आखिर फूट बहा। उससे दुनिया बहुत परेशान हुई। हम भी परेशान हैं। तो जो मुल्क आज़ाद थे, वे तो उसको हज़म कर सकते हैं। लेकिन हमारी तरह जो गुलाम थे, क्योंकि आज़ादी तो हमें अब आकर मिली है, उनके लिए उसको हज़म करना बहुत कठिन बन गया है। कोई ऐसा न समझे कि हम आज़ाद हो गए तो सब कुछ हमें स्वयमेव मिल गया। हमको अब काम करने की आज़ादी मिली है। यह बात हम सब को समझनी है। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आज़ादी की लड़ाई में हमने जो त्याग, कुर्बानी और बलिदान किया, उससे भी ज्यादा त्याग और बलिदान हमें आज उस आज़ादी को मजबूत बनाने में करना है। हमें अपने देश को ऊपर उठाना है, भारत को अपने पैरों पर खड़ा करना है। अभी तो वह एक साल का बच्चा है। उसको हमें अच्छी तरह से और ऐसी खुराक देनी है, जिसे वह पचा सके और जिससे उसकी भूख बढ़े।

आज हर एक हिन्दुस्तानी को अपना कर्तव्य समझना चाहिए कि उसे देश की आज़ादी की हिफ़ाज़त करनी है। जो युवक हमारे हिन्दुस्तान के विद्यापीठों में पले हैं, उन्हें यह बात विशेष रूप से समझनी है। जो विद्यार्थी यहां पढ़ रहे हैं और जो हमारे भविष्य के नागरिक हैं, उनका कर्तव्य है कि इन बातों को सोचें और समझें क्योंकि उनको कल सारे हिन्दुस्तान का बोझ उठाना है। हम समाजवाद, साम्यवाद और टीका-टिप्पणीवाद इन सब वादों को छोड़ दें। वाद का समय जब आएगा, तब हम भी उनपर बातें कर सकते हैं। परन्तु आज हमारे पास उसके लिए समय नहीं है। आज तो हमारे पास एक साल की स्वतन्त्रता है, वह भी टूटी-फूटी दशा में है। हमें सोचना है कि आज दुनिया में हमारी जगह कहाँ है? हम कहाँ बैठे हैं? हमारे आस-पास क्या वायुमण्डल है? अगर इन सब चीज़ों को हम नहीं देखेंगे, तो आज़ादी हमको हज़म नहीं होने पाएगी और भविष्य की प्रजा हमको शाप देगी, वह कहेगी एक तपस्वी ने अपनी

तपश्चर्या से हिन्दुस्तान को आज़ादी दिलवाई थी, लेकिन उस समय के लोग इतने नालायक थे कि उसे हज़म नहीं कर सके। इस चीज को हमें और आपको सोचना है।

जो विद्यार्थी भविष्य में देश के नागरिक बननेवाले हैं और जो युवक आज देश के नागरिक हैं, उन दोनों को एक बात मैं बड़ी अदब से समझाना चाहता हूँ। वह यह कि हमारा मुल्क आज़ाद तो हुआ है, लेकिन उसका पैर अभी तक जैसे सोया हुआ है। हमारे देश में बहुत सी घटनाएँ घटी हैं। एक साल में बहुत मुसीबत से हम अपने पैरों पर खड़े हुए हैं। लेकिन हमारे पैर अभी तक मज़बूत नहीं हुए। बेपरवाही से हम गिर जाएँगे। इसलिए अब किसी फन्दे में हमें नहीं पड़ना है। एक ही चीज़ पर हमें अपनी दृष्टि स्थिर करके बैठना है। वह चीज़ क्या है ? वह यह कि हमारा मुल्क किस तरह से शक्तिवान बनेगा, किस तरह मज़बूत बनेगा ? आप जानते हैं कि हमारा मुल्क तभी ताकतवान बन सकता है, जब कि हमारा दिल साफ़ हो। हम जितने भी भारत के निवासी हैं, वे सब समझ जाएँ कि उन सबका भारत के प्रति क्या ऋण है, क्या धर्म है। तभी भारत मज़बूत बन सकता है।

हम पर जो परदेसी सल्तनत इधर थी, वह तो चली गई। हम भी चाहते थे कि वह चली जाए। यह बहुत ठीक हुआ, अच्छा हुआ। हम पर जो भारी बोझ था, वह हट गया। वह बोझ तो हट गया, मगर तब हमारी हालत ऐसी नहीं थी, हमारे पास कोई ऐसा तन्त्र नहीं था कि जो हिन्दुस्तान का सारा बोझ अनुभव के साथ उठा सकता। परदेसी राज्य में जो तन्त्र चलता था, वह तो टूट गया। और वह हमारे काम का रह भी नहीं गया था। लेकिन उसकी जगह पर दूसरा तन्त्र बनाना, यह कोई एक दिन का काम नहीं था। उसके लिए तो बहुत समय लगेगा।

यह बोझ उठाने के लिए, स्वतन्त्र भारत का बोझ उठाने के लिए, जिन पर बोझ पड़ने वाला है, उनको बहुत ठीक ढंग से और अच्छी तालीम लेनी पड़ेगी। यह तालीम कुछ तो हमारे विद्यापीठ में मिलेगी, और कुछ सृष्टि के महान और खुले विद्यापीठ में। यह आसान चीज़ नहीं है। इसमें समय लगेगा। लेकिन उतने समय तक सब लोगों को बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है। आपकी विद्यापीठों से जो स्नातक निकलते हैं, उनको भी सावधान रहने की ज़रूरत है। जो शिक्षा देनेवाले आचार्यगण हैं, उनको भी सावधान रहने की ज़रूरत है,

क्योंकि नए भारत में सबसे पहली ज़रूरत होगी, चारित्र्य की ही। यदि हमारा चरित्र ठीक नहीं होगा, और यदि इस विद्यापीठ से हम चरित्र की छाप लेकर न निकले, तो जो बोझा हमारे ऊपर पड़नेवाला है, उसे हम उठा नहीं सकेंगे।

आज हमारे लिए सारे एशिया में मैदान खुला पड़ा है। उस जगह पर नेतागिरी की जगह खुली है। उसे कौन ले सकता है? यदि हिन्दुस्तान अपनी जगह सँभाल ले, यदि हम लोग सच्चे दिल से सावधान हो जाएँ, तो सारे एसिया की नेतागिरी हिन्दुस्तान के पास आ सकती है। चाहे कितनी ही मुसीबतों से हम उठे हों, चाहे हमारी कितनी ही थोड़ी उम्र हो, चाहे हमारा अनुभव कितना ही थोड़ा क्यों न हो, लेकिन पुरानी जो विरासत हमको मिली है, वह बहुत बड़ी है। जो हमारा लीडर था, उसने पिछले ३०, ३५ सालों से सारे हिन्दुस्तान को जो तालीम दी थी, उससे सारी दुनिया में हमारी प्रतिष्ठा बनी। उस चीज़ को हम सँभाल लें, तो हमारा देश एशिया का नेता बन सकता है।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि भारत एक बहुत बड़ा मुल्क है। उसका टुकड़ा तो हो गया, तो भी जो बाकी बचा है, वह भी बहुत बड़ा है। दुनिया में कम मुल्क इतने बड़े हैं, जिसमें इतनी आबादी हो, इतनी जगह हो, और इतनी समृद्धि भरी हो। हमारे देश में जो सिद्धि भरी है, उसे हमें निकालना है। हम उसे न निकालेंगे, तो कौन निकालेगा? हमारे जो नौजवान विद्यापीठ में तालीम ले रहे हैं, यह उनका काम होगा। लेकिन उसके लिए आपको पूरे ध्यान से, अपने चित्त को एकाग्र कर एक ही स्मरण करना है, एक ही रटन रटना है, वह यह कि भारत को किस प्रकार मज़बूत बनाया जाए? तभी यह चीज़ हज़म हो सकती है। जिस प्रकार का हिन्दुस्तान हम बनाना चाहते हैं, उस प्रकार का हिन्दुस्तान हम तभी बना सकते हैं।

लेकिन यदि यह हम समझें कि अब तो हम आज़ाद हो गए, इसलिए हमें सब अधिकार हड़प लेने हैं, उनके मोह में पड़ना है, और पदों के लालच में पड़ना है, तो उसमें हम बड़े संकटों और झगड़ों में पड़ जाएँगे। तब आज़ादी भी हमारे हाथ से चली जाएगी। यह चीज़ ठीक नहीं है। जिसके पास पावर (शक्ति) है, वह ठीक तरह से उसे चलाए, इसके लिए हमें उसके ऊपर चौकसी करना है। लेकिन उसके पास से सत्ता खींचकर हमारे पास आजाए, ऐसी कोशिश हमें नहीं करनी है। जो गलती करते हैं, उन्हें हम गलती न करने दें, उन्हें सावधान करके ठीक रास्ते पर ले आएँ, लेकिन हम वैर

और ईर्षा में न पड़ें। वैर और ईर्षा आदि तो हमको नुकसान करनेवाली हैं। इन सबको छोड़कर गान्धीजी ने जो मार्ग बताया है, उसी मार्ग पर चलकर हम प्रेम, सत्य और आदर का वायुमण्डल पैदा करें, तभी हम अपने देश को मज़बूत बना सकते हैं। उसके लिए भी हमारे मुल्क के नौजवानों को सावधान रहने की ज़रूरत है।

बहुत से विद्यालयों में और खुद हमारे सरकारी तन्त्रों में भी जो नौजवान हैं, उनके दिल में कहीं-कहीं भिन्न-भिन्न ख्याल डाले जाते हैं। कोई लोग यह सिखाते हैं कि कांग्रेस की गवर्नमेंट की तरफ़ से जो लोग काम चलाते हैं, उनमें मुसलमानों की तरफ कुछ ज्यादा झुकाव होता है और उससे हिन्दू संस्कृति का नुकसान होता है। यह छोटे दिल की बात है। हमने हिन्दुस्तान का टुकड़ा करके मुसलमानों के लिए एक अलग हिस्सा दे दिया। उसके बाद हम कोई ऐसी चीज़ करनेवाले नहीं हैं, जिसमें भेद-भाव रहे। हिन्दुस्तान में रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान, पारसी, क्रिश्चियन या सिख कोई भी हो, सब हमारे लिए समान हैं। यदि हम इस प्रकार का भाव पैदा न करें, इस प्रकार का वायुमण्डल पैदा न करें, तब हिन्दुस्तान खतरे में रहेगा। यह आपको समझ लेना चाहिए। मुसलमान अपनी जगह पर रहें, हिन्दू अपनी जगह पर रहें, छोटी-छोटी कौमें अपनी जगह पर रहें। सब कोई अपने मज़हब के आप मालिक हैं। जो जैसा चाहे अपना मज़हब और अपना खुदा मान ले। उसमें हमें कोई झगड़ा नहीं करना है। हिन्दुस्तान का टुकड़ा होने के बाद इस मुल्क में रहनेवाला हर एक व्यक्ति हिन्दुस्तानी है। यहाँ कोई गैर नहीं है।

हिन्दू तो यहाँ बहुत बड़ी ताकत में पड़े हैं, उनको डर क्यों लगता है? वे क्यों डर कर नौजवानों को गलत रास्ते पर चलाने की कोशिश करें? जो कोई छिपे-छिपे अपने नौजवानों को ऐसी चीज़ सिखाता है, वह हिन्दू संस्कृति और भारतीय संस्कृति को नुकसान पहुँचाता है, चाहे वह दिल में कितना ही समझता हो कि वह हिन्दू संस्कृति की रक्षा कर रहा है। आपको जो कुछ करना है, खुल्लमखुल्ला करो। जितना काम छिपाकर करोगे, आप में उतनी ही एक प्रकार की भीरुता पैदा हो जाएगी। कायरों को छिपा काम करने की ज़रूरत होती है, बहादुर मर्दों को नहीं। सो आप को जो काम करना है, खुला करो। जब परदेसी सल्तनत थी, तब दूसरी बात थी। उसका हथियार भी दूसरा था। आज किसके साथ हमें लड़ना है? आज हमें क्या आपस में

लड़ना है ? अगर ऐसा हुआ तो समझ लो कि सब फूटनेवाला है। तब आपके पास कोई चीज़ रहनेवाली नहीं है। आपस में लड़ने से बढ़कर अधिक बुरी और कोई बात नहीं हो सकती। अपने देश का पुराना इतिहास देखिए। क्यों हमें इतने साल तक गुलामी उठानी पड़ी ? इसी कारण कि हम आपस में लड़ते थे।

आज तो हमारे राजा-महाराजा भी समझ गए हैं कि हमारी रक्षा और हमारी इज्ज़त भारत की एकता में है। तो यह बात आप क्यों न समझें ? कौन-सी चीज़ ऐसी है, जिसके लिए अब आपको आपस में लड़ना है ? अब परदेसी के साथ तो आपको लड़ना है नहीं। अब तो जिसके पास राज्य की बागडोर है, उसके ऊपर वह काम छोड़ दीजिए। हमारे किसी बौर्डर (सीमा) से अगर हमें कोई खतरा हो जाए, तब तो हमें लड़ना ही पड़ेगा। वह खतरा जितना है, वह हमारे ख्याल में है। उसके ऊपर जितनी ज़रूरत है, उतना ख्याल हम रखेंगे। उस सम्बन्ध में आपको सोचने की ज़रूरत नहीं है।

आपको ज्यादा खतरा जिस चीज में है, वह आपको सोचने की ज़रूरत है। अगर देश में आपस में फूट होगी, एकता न होगी तो बहुत बड़ा खतरा है। जितना ज़हर ५, ७ साल से था, वह अब फूट गया। उसमें से मवाद निकल गया। अब वह चीज भूल जानी चाहिए। उसके ऊपर अब परदा डाल देना चाहिए। जिसको इधर रहना पसन्द नहीं है, वह यहाँ से चला जाए। लेकिन जितने इधर रहते हैं, वे अब एक कुटुम्ब में हैं और इसी तरह से उनको रहना पड़ेगा। हो सकता है कि हमारे यहाँ अभी तक कोई ऐसा हो, जिसका दिल अभी इधर ठीक नहीं हो। वह यहाँ से चला जाएगा। वह यहाँ रह ही नहीं सकता। लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि जो बाकी हिन्दुस्तान पड़ा है, वह तभी मजबूत बनेगा, कि जब आप यह समझ लें कि हम सब हिन्दुस्तानी हैं। लेकिन हमारी आज़ादी का एक साल भी नहीं हुआ, कि हम समझने लगे कि हम महाराष्ट्रियन हैं, हम गुजराती हैं, हम बंगाली हैं, हम मद्रासी हैं, हम बरारी हैं, और हमारे भाषावार अलग-अलग टुकड़े होना चाहिए, तो फिर कैसे चलेगा ? एक तरफ हम कोशिश करते हैं कि हम सारे भारतवर्ष को एक कर दें। दूसरी तरफ़ हम कोशिश करने लगें कि हमारे अलग-अलग टुकड़े हो जाएँ ! यह रास्ता तो राष्ट्रीयता को खून करने का है। उसमें से देश भर में ज़हर फैलेगा।

हाँ, समय आएगा, जब इस प्रकार का काम भी हमें करना होगा और तब हम इसे ठीक तरह करेंगे। लेकिन वह सभ्यता से और सफ़ाई से ही हो सकता है। उसके लिए हम सब में भाई का-सा प्रेम होना चाहिए। उसके लिए ज़हरी वातावरण पैदा करना मूर्ख लोगों का काम है। आज यह समय नहीं है कि हम इस प्रकार का काम करें। आप देखते हैं, अभी थोड़े ही दिन पहले हमने आपका जितना बड़ा प्रान्त है, इसी प्रकार के, बल्कि उससे भी बड़े हैदराबाद स्टेट का फैसला किया।

वहाँ कितने साल से एक प्रकार का राज्य चलता था। जिस प्रकार का वह राज्य चलता था, उससे वहाँ की राजनीति में, जो ज़हर भर गया था, क्या वह चन्द दिनों में निकल गया? नहीं। इतना बड़ा फोड़ा था, उसमें से पस निकालने के लिए उसे कितने दिनों तक धोना पड़ेगा, तब वह ठीक होगा। आपके सामने इतनी बड़ी जो एक चीज़ बन गई है, उसकी कीमत आज आप नहीं आँक सकते। इसके लिए तो बहुत समय लगेगा। भविष्य का इतिहास-कार उसको तवारीख में लिखेगा। आपको समझना है कि हमारे सिर पर बड़े-बड़े फोड़े निकले थे, और उन फोड़ों को ठीक कर हम हिन्दुस्तान में पूरी एकता और शक्ति लाने का काम कर रहे हैं।

आप को मालूम है कि हिन्दोस्तान में ५६२ रियासतें थीं। इतनी रिया-सतें हिन्दुस्तान को एक तरह अलग-अलग टुकड़े किए हुए थीं। उन सब की अलग-अलग राज्य-व्यवस्था थी। जब परदेसी सल्तनत हमको छोड़ कर चली गई, तो कौन उम्मीद करता था कि एक साल में इस सारी समस्या को हम ठीक कर लेंगे। किसे ख्याल था कि इस सारी कार्रवाही में न किसी को नुक-सान होगा, न कोई मार-पीट होगी। परमात्मा की कृपा से पूरी शान्ति से, अमन से और प्रेम से यह सब काम हो गया। मैं आपको बतलाता हूँ कि यह जो प्रान्तों को नये ढंग से अलग-अलग बनाने का काम है, वह भी हम उसी तरह कर सकते हैं। पर अभी वह करना ठीक नहीं है। इस तरह की जल्दबाजी से वह काम हो नहीं सकता। यदि महाराष्ट्र को अलग होना हो तो सब महा-राष्ट्रियनों को आपस में बैठकर बात कर लेनी है। उसके बाद जिनसे अलग होना है, उनसे बात करनी है, जैसे जिन राजाओं की राज्य-सत्ता हमें लेनी थी, हम उन सब के साथ बैठे थे।

पिछले दिसम्बर में मैं १२ घंटों के लिये इधर आया था। तब आप लोगों

को मालूम भी न पड़ा था । मैं शाम को आया था और सुबह चला गया इधर राजाओं की जितनी सत्ता थी, वह सब जेब में डालकर चला गया। यह किस तरह से हुआ ? राजाओं से पूछो कि उनको क्या चोट लगी है । लेकिन काम ऐसा हुआ कि उनको भी ठीक लगा और आप लोगों को भी ठीक लगा। इसी प्रकार यह काम भी हो सकता है। लेकिन यदि कहो कि बम्बई को हम बर्लिन बना देंगे, तो मैं यही समझूंगा कि कोई नादान यह बात कर रहा है। यह कोई समझदारी की बात नहीं है। आज जब हिन्दुस्तान की आज़ादी एक साल की हुई है तब इस जुबान से यह बात निकलने लगे, कि आज़ादी क्या चीज़ है, लोग यही नहीं समझे, तो यह कितनी बुरी बात है। इसी तरह नागपुर व बरार में से बड़ा बरार बनाना हो, तो वह भी बन सकता है। लेकिन खाली नक्शे में रंग बदल देने से कोई बड़ी चीज़ न बनेगी। जैसे हमने राजाओं के पास से सारी पावर (शक्ति) लेकर लोगों को दे दी और उससे मैप (नक्शे) में फर्क हुआ, वह तो ठीक है। उससे चित्र तो अच्छा लगता है। लेकिन क्या भीतर भी कोई फ़र्क हुआ है ? राजाओं की जो रियाया थी, उसको भी कोई फ़र्क मालूम पड़ा है ? वह न मालूम पड़ा हो, तो आपको समझना चाहिए कि कोई फ़र्क नहीं पड़ा। तब तो खाली नक्शे की शक्ल में ही फर्क हुआ है।

असली फ़र्क तो तभी होगा, जब राजा भी महसूस करें कि यह अच्छा हुआ है और रियाया भी महसूस करे कि ठीक हुआ है। जैसे हमको आज़ादी मिली। आज हिन्दुस्तान में कोई महसूस नहीं करता है कि हम को आज़ादी मिली है, क्योंकि कोई फ़र्क नहीं पड़ा है। यह फ़र्क तो तभी पड़ेगा, जब हम खाली गवर्नमेंट पर देश की भलाई-बुराई का सारा बोझ डालने की आदत छोड़कर, हम सब अपनी-अपनी ज़िम्मेवारी महसूस करेंगे। हम समझें कि हमारा क्या धर्म है, हमें क्या करना चाहिए, किस प्रकार से हमें सरकार का साथ देना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि गवर्नमेंट में कोई विरोध नहीं है। इस तरह से ठीक नहीं है। परन्तु विरोध का शौक करने का समय तो तब आएगा, जब हिन्दुस्तान ताकतवर हो जाएगा। आज विरोध करने से लाभ क्या ? आज विरोध करने से चन्द एलेक्शन (चुनाव) होंगे। एलेक्शन में विरोध करने वाले हार जाएँगे। कांग्रेस उसी जगह पर खड़ी रहेगी। इससे क्या फ़ायदा होगा ? हमें यह सीखने की ज़रूरत है कि आज हमारा कर्तव्य क्या है। हर

हिन्दुस्तानी का, हर सिटिजन (नागरिक) का धर्म क्या है यह सब सीखने-सिखाने की आज ज़रूरत है। यूनिवर्सिटी में, विद्यापीठ में सभी जगह हमें कर्तव्य का पाठ सीखना है। यह चीज़ आप सीखें, तभी काम होगा।

आज तो मैं नागपुर के हालात नहीं जानता। लेकिन बहुत-सी यूनिवर्सिटियाँ मैंने देखी हैं। जिनमें शिक्षा देनेवाले लोग यह समझते हैं कि हम समाजवाद सीखें, साम्यवाद सीखें, और उस पर बहस चलाएँ। यह ठीक है। इससे अपनी एक तर्क-वितर्क की शक्ति खिल जाएगी। लेकिन हिन्दुस्तान उससे ताकतवान नहीं बनेगा। हाँ, नौजवानों की विचार-शक्ति खिले, वह एक प्रकार की योग्यता है। लेकिन उसके साथ-साथ अगर अपनी जवाबदारी, अपनी ज़िम्मेवारी महसूस करना हम नहीं सीखेंगे और काम करने के लिए हाथ-पैर चलाना हम नहीं सीखेंगे, तो देश का काम नहीं होगा।

हमने तो कहीं तर्कवाद या वितर्कवाद नहीं सीखा। हम पर तो जो बोझ आता रहा, उसको उठाते रहे। इस तरह संसार के विद्यापीठ से हमने कुछ-न-कुछ सीख लिया। जो कुछ सीखा, अपने अनुभव से सीखा। इस विद्यालय में से, या नागपुर विद्यापीठ में से जो नौजवान निकलेंगे, वे क्या खाली तर्कवाद करते रहेंगे? क्या वे खाली टीका-टिप्पणी करने की सीख लेंगे या कुछ आर्टिकल लिखने या कुछ व्याख्यान देने की सीख लेंगे? अगर केवल यही सब हुआ, तब तो पुरानी चाल चलनेवाली बात होगी। उसमें कोई फ़ायदा न होगा। लेकिन बोझ उठाने के लिए हमें अपने कन्धे मज़बूत कर लेने चाहिए। काम करने के लिए हमें अपने पैर मज़बूती से गाड़ लेने चाहिए और काम करने की सीख लेनी चाहिए। हम भले ही न बोलें, मगर हमारा काम बोले। मैं तो चाहता हूँ कि हमारी जुबान कम बोले, काम ज्यादा बोले। इस प्रकार काम करने की बात आप सीख लेंगे, तो उससे आपका और देश का बहुत बड़ा फ़ायदा होगा।

---

(१३)

स्टेट्स एडवाइज़री कौंसिल का उद्घाटन, नागपुर

४ नवम्बर, १९४८

प्रधान मन्त्री, महाराजाओ और अन्य सज्जनो,

मैं मध्यप्रान्त में विद्यापीठ के आमन्त्रण पर आया था। इस मौके पर आपने एडवाइज़री कौन्सिल का इनआगुरेशन (उद्घाटन) मेरे हाथ से करवाने का निश्चय कर लिया । इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ । क्योंकि इस बारे में मैं आप लोगों को चन्द बातें कहना चाहता हूँ । ऐसा मौका बार-बार नहीं आ सकता । हिन्दुस्तान में यह जो बड़ा भारी विप्लव हुआ है, जिससे देशी रियासतों की समस्या इतने थोड़े समय में हल हो गई है । यह सब क्योंकर हुआ, किस तरह से हुआ, इसे अभी कम लोग जानते हैं। उससे क्या लाभालाभ हुए, उन सब के मूल्य आँकने में अभी समय लगेगा। जो कुछ हुआ, उसे कम लोग जानते हैं ।

आप लोगों ने मुझे जो मानपत्र दिया है और इस मानपत्र में आपने मेरे काम की कदर बूझी है, इसलिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ । संक्षेप में मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि मेरे दिल में रियासतों को एकत्रित करने की और उन्हें हिन्दुस्तान में मिलाने की कल्पना किस तरह उद्भूत हुई, उसका ख्याल मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ । जब मैंने हिन्दुस्तान सरकार के गृहमन्त्री का पद स्वीकार किया, तब मुझे कोई ख्याल न था कि इन देशी रियासतों का काम मेरे पास आनेवाला है । उनका क्या नक्शा बनेगा, यह तो

मैंने कभी सोचा ही नहीं था। लेकिन थोड़े दिनों के बाद मुझे मालूम पड़ा कि मध्यप्रान्त में बस्तर नाम की एक रियासत है। उस रियासत की धरती में काफी धन भरा हुआ है। उसका उपयोग कौन करे, किस तरह से करे, इसके बारे में मेरे पास किसी ने एक रिपोर्ट भेजी। इस रिपोर्ट में मुझे सावधान किया गया था कि बस्तर में कच्चा सोना भरा है, लेकिन उसका उपयोग हिन्दुस्तान के हित में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के अहित में होनेवाला है। यह कह कर उसमें सारा बयान दिया गया था। उस रिपोर्ट में विस्तार से लिखा था कि बस्तर स्टेट की भूमि में क्या-क्या कीमती चीज़ें भरी हैं और उनको किस तरह से मार्टगेज़ किया जाता है। उसमें लिखा था कि हैदराबाद रियासत को बहुत बड़ी लम्बी लीज़ (ठेके की अवधि) के लिए सारी स्टेट का यह अमूल्य धन दिया जा रहा है। पोलिटिकल डिपार्टमेंट यह काम कर रहा है। बस्तर स्टेट का राजा समीर (नाबालिक) है, और वालिए (शासक : गार्जियन) परदेसी हैं। ये परदेसी लोग वहाँ काम कर रहे हैं और बहुत ज़ोरों से यह काम चल रहा है।

जब मैंने यह देखा तो मैंने पोलिटिकल डिपार्टमेंट से पुछवाया कि बस्तर स्टेट में कोई लीज़ हो रही है ? और उसके बारे में आप लोगों ने क्या प्रोग्राम बनाया है। वह सब मुझको बतलाओ। पहले तो उन लोगों ने थोड़ी आनाकानी की। लेकिन फिर मेरे पास यह चीज़ आई कि हैदराबाद स्टेट के साथ बस्तर का सम्बन्ध रेलवे से बनाया जाए। और यह रेलवे हैदराबाद स्टेट बनवाए। बस्तर की माइन्स (खानों) में जितना खनिज है, उनका लीज़ किया जाए और बहुत लम्बे पीरियड (समय) के लिए यह लीज़ दिया जाए। पोलिटिकल डिपार्टमेंट में यह सब कोशिश हो रही थी। यह भी कि बहुत जल्द यह काम हो जाए। पर उस पर दस्तखत कौन करे ? मैंने पोलिटिकल डिपार्टमेंट से कहा कि यह चीज़ आप नहीं कर सकते। अब आपको तो यहाँ से जाना ही है। उन्होंने कहा कि प्रस्ताव करने वाले स्टेट के शासक हैं। हमने कहा कि अब आपको इस झगड़े में नहीं पड़ना है। इस समय पर तो वे खुद दस्तखत नहीं कर सकते थे, क्योंकि हमने इसमें रोड़ा डाल दिया था। तब उन्होंने राजा को, जो अभी छोटा था, गद्दी पर बैठा दिया। क्योंकि उसकी दस्तखत लेना आसान था। वह अभी कच्चा बच्चा था। यह सब दांव-पेच अभी समझता नहीं था।

तब उनको मैंने दिल्ली में बुलवाया। महाराजा अभी इतना समझदार नहीं था; इसलिए मैंने उनके रिश्तेदार मयूरभंज के महाराजा को भी साथ ही बुलाया। तब वे दोनों दिल्ली में आए। मयूरभंज के महाराजा सयाने आदमी हैं, लेकिन वह बस्तर पर कुछ प्रभाव डाल सकेंगे, ऐसा मैंने नहीं पाया। महाराजा बस्तर तो अभी बहुत ही नाअनुभवी बच्चा था। उस निर्दोष से दस्तखत कराना मेरी राय से एक प्रकार का गुनाह था। उसको राज्य चलाने का न कोई अनुभव था और न इल्म था। तब इस मामले का क्या बनेगा, यह चीज कहाँ बैठेगी, इस बात का मुझे अन्देशा हुआ। मैंने सोचा कि जल्द ही पोलिटिकल डिपार्टमेंट को हटाया जाए, तो यह काम हो सकता है। यही एक किस्सा नहीं था। और भी बहुत से किस्से थे। कितने ही छोटे-छोटे लड़कों को गद्दी पर बिठा दिया गया था।

तब हमारी यह कोशिश हुई कि हम इस पोलिटिकल डिपार्टमेंट से जितनी जल्द फारिग हो जाएँ, उतना ही अच्छा हो। पोलिटिकल डिपार्टमेंट भी कोशिश कर रहा था कि जाते-जाते जितना काम उसे अपने हित में करना है, वह सब कर लें। उधर मैं सोच रहा था कि भविष्य में रियासतों का क्या होना चाहिए, और किस तरह से काम होना चाहिए।

तब मैंने एक ड्राफ्ट तैयार किया, जिसके अनुसार वह हक भारत सरकार को मिल जानेवाले थे। मैंने उन महाराजाओं को बुलाया और कहा कि इस बात पर विचार करने के लिए यदि आपको वक्त चाहिए, तो वक्त लो। लेकिन अपनी ज़िम्मेदारी समझ कर इस पर दस्तखत करो, तब मैं कबूल करूँगा। उन लोगों ने नहीं किया। मैं चला गया। मैं स्टेशन पर गया। वहाँ मैं रेल में बैठा था। वहाँ पर उन लोगों ने दस्तखत नहीं किए। लेकिन मेरे पीछे उन लोगों ने एक पैगाम भेजा कि एक घंटा ठहर जाइए। तो मैं रेलगाड़ी में ही ठहर गया और मेरा सेक्रेटरी उनके पास रहा। उसने उन लोगों को समझाया। तब उन लोगों ने दस्तखत कर दिए और मुझको ये दस्तखत रेल में भेज दिए।

अब लोग तरह-तरह की बातें कहते हैं। बहुत से लोग तो समझकर कहते हैं और तारीफ़ करते हैं। और कई लोग यह कहते हैं कि यह तो हिटलर का काम किया। उन लोगों को यह मालूम नहीं था कि मैंने दस्तखत करवाए नहीं थ। मैंने तो उन्हीं पर छोड़ दिया था और मैं चला गया था। लेकिन उन

लोगों ने दस्तखत कर के मेरे पास भेज दिया। खुद उनके दिल में आ गया कि हिन्दुस्तान के हित में, उनके अपने हित में, और रियासत के हित में यह चीज़ है। तभी उन्होंने दस्तखत किए। हाँ, एक बात मैंने ज़रूर कही थी कि यह चीज़ जल्द करने की है, क्योंकि मेरा काम एक ही रियासत के साथ नहीं है। मेरा तो छोटी-बड़ी सभी रियासतों के साथ काम है। मुझे यह काम जल्द पूरा करना है। अगर जल्दी यह काम नहीं हुआ, तो उसमें रुकावट डालनेवाली शक्तियाँ पड़ी हैं, वे सब काम बिगाड़ देंगी। तो वे लोग समझ गए और उन्होंने दस्तखत कर दिए।

वहाँ से मैं सीधा नागपुर आया। नागपुर में भी मैं कोई ज्यादा ठहरा नहीं था। जो राजा-महाराजा यहाँ बैठे हैं, वे जानते हैं कि मैंने उन पर कोई दबाव नहीं डाला और न किसी प्रकार का लालच उनको दिया। ऐसा कोई काम मैंने नहीं किया। खाली उनको समझाया कि यह सब क्या चीज़ है। उन लोगों ने पूरी समझपूर्वक चन्द घण्टों में अपने दस्तखत मुझे दे दिए और सुबह मैं चला गया। यह तो उस सारे काम की शुरुआत हुई थी। लेकिन जब यह काम हो गया, तब सारे हिन्दुस्तान में और हिन्दुस्तान के बाहर भी एक चमत्कार सा हो गया। सबको हैरानी हुई कि यह क्या हो गया। लेकिन जिन रियासतों ने दस्तखत किए थे वह तो कर दिया, लेकिन उसके बाद जो काम हुआ, उसका सारा यश यहाँ के राजा महाराजाओं को मिला, जिन्होंने समझपूर्वक जल्दी-जल्दी दस्तखत किए थे। मैंने उसमें कुछ नहीं किया। खाली मैंने उन्हें समझाया कि मेरी योजना क्या है और हिन्दुस्तान किस तरह से चलनेवाला है। (तालियाँ)

आपकी सलामती भी इसी में है, हिन्दुस्तान की सलामती भी इसी में है। जिन लोगों के दिल में देशप्रेम जागृत हुआ, उन लोगों ने दस्तखत किए। उसके बाद तो आप जानते हैं कि मुझे सौराष्ट्र, जहाँ सारे हिन्दुस्तान के बराबर रियासतें पड़ी थीं, बल्कि उससे भी ज्यादा रियासतें वहाँ थीं, उनको मिलाने का बहुत बड़ा और विकट काम था। यह काम करने में मुझे उन लोगों से सहायता मिली, क्योंकि उन लोगों ने अच्छे समय पर शुरुआत की थी। लेकिन जिन लोगों से मैंने कोई उम्मीद नहीं रखी थी, ऐसे लोगों ने भी सौराष्ट्र में मेरा साथ दिया। यह बात ठीक है। तो करीब-करीब २५०-३०० रियासतों का एक गुट बन गया और इससे एक सौराष्ट्र का जन्म हुआ।

महाराष्ट्र की जितनी रियासतें थीं, उन लोगों ने तब तक अलग रहने का एक इन्तज़ाम किया था। जिसकी आधारभूत बात थी एक प्रकार का जवाबदार राजतन्त्र अपनी प्रजा को देना, और काम चलाना। लेकिन इस सम्बन्ध में जो काम की शुरुआत हो गई थी, उसका असर महाराष्ट्र पर पड़ा और वहाँ जितने नौजवान राजा थे, वे सब मेरे पास आए और कहने लगे कि हम तो बम्बई राज्य में मिलना चाहते हैं। हम इस तरह से अलग नहीं रहना चाहते। मैंने कहा कि आपको मुबारकबाद है। उन्होंने कहा कि हम तो यह करना चाहते हैं लेकिन क्या आप हमको ऐसा करने देंगे? मैंने कहा कि क्यों नहीं? तब उन्होंने कहा कि कुछ और राजा कहते हैं कि क्योंकि उन लोगों ने कांग्रेस के साथ इस प्रकार का समझौता कर लिया है कि उन्हें अलग रहना है, तो इस प्रकार पृथक कायम रहने से उन्हें रक्षण मिलेगा। मैंने कहा कि यह बात तो गलत है। कांग्रेस ने किसी के साथ न ऐसा समझौता किया है, न कोई ऐसा बन्दोवस्त किया है और न किसी को इस प्रकार की गारण्टी दी है।

तब सब राजाओं का एक डेपुटेशन आया और मैंने उनको समझाया कि यदि आप यह समझते हैं कि छोटी-छोटी रियासतें एक प्रकार अपनी प्रजा को जवाबदार राज्यतन्त्र का अधिकार देकर अपने पृथक् भविष्य को कायम रखने की गारण्टी ले लेंगी, तो आप का यह ख्याल गलत है। वह बन नहीं सकता। जवाबदार राज्यतन्त्र कोई हँसी खेल नहीं है। रेस्पांसिबिल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) का मायना यह नहीं है कि हमारे मुल्क में इस प्रकार के छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर हम अँग्रेजों के रेस्पांसिबिल गवर्नमेंट की नकल करेंगे। वह तो हमारे मर जाने की बात हो जाएगी। इस तरह से नहीं हो सकता। यह न आपके इंटरेस्ट (हित) में है और न हमारे। आपको मिल जाना हो तो मिलो। नहीं तो भविष्य में यदि कभी आप प्रोटेक्शन (सुरक्षा) के लिए सेण्ट्रल गवर्नमेंट (केन्द्रीय सरकार) के पास या कांग्रेस के पास आना चाहेंगे तो आपको कोई रक्षण नहीं मिलेगा। तब सेण्ट्रल गवर्नमेंट भी आपको प्रजा के सामने इस प्रकार का रक्षण नहीं देगी। क्योंकि अब युग बदल गया है। उससे तो यही अच्छा है कि आप अपने आप ही समझ-बूझ कर किसी राज्य में शामिल हो जाओ।

तब उन लोगों ने मान लिया और कहा कि आप जो कहते हैं, वही ठीक

बात है। पीछे गुजरात के सब राजा भी मिल गए। इस प्रकार सब रियासतें मिलने लगीं। उन पर किसी का भी दबाव नहीं था। इसका एक उदाहरण आपको देना चाहता हूँ। मयूरभंज के महाराजा मेरे पास आए और कहने लगे कि मैंने अपनी प्रजा को वचन दिया है कि हम तुम्हें जवाबदार राजतन्त्र देनेवाले हैं। इसके लिए हमारे यहाँ आजकल चुनाव भी चल रहा है। उन्होंने कहा कि उन लोगों को इस प्रकार का वचन देने के बाद अगर मैं उसमें से हट जाऊँ, तो मेरे ऊपर वचन भंग करने का आरोप आएगा। तब मैंने कहा कि मैं किसी पर दबाव नहीं डालूंगा। आप खुशी से अलग रहिए। लेकिन पीछे आपको पछताना पड़ेगा। तब मुझे याद करोगे। वह अलग रहे। आज तक भी वह अलग हैं। लेकिन आज जब ये रियासतें उसमें मिल गईं, तब से वह अपने राज्य में अभी तक नहीं गए और न वहाँ जाना ही चाहते हैं। जब तक उनका राज्य उसमें न मिल जाए, तब तक वह वहाँ नहीं जाएँगे। अनुभव से उनको मालूम हो गया कि उसमें कोई मिठास नहीं है। तो अब वहाँ रेस्पां-सिबिल गवर्नमेंट के जो लोग थे, जिन्हें प्रतिनिधि मण्डल कहा जाता है, उन्होंने कहा कि हमें उड़ीसा में मिला दो। लोग भी यही कहते हैं। महाराजा का दिल भी उन्होंने देख लिया, और वे खुद भी चाहते हैं। तो अनुभव से उन लोगों को यह सब मालूम हुआ।

लेकिन मध्यप्रान्त की सरकार और यहाँ के महाराजाओं ने बहुत सभ्यता और बहुत समझदारी से काम किया। उसके लिए मैं इन लोगों को मुबारकबाद देना चाहता हूँ। (तालियाँ) क्योंकि एक साल पूरा बीत गया, और मेरे पास एक भी शिकायत नहीं आई। न रैयत की ही तरफ़ से, न राजाओं की तरफ़ से और न गवर्नमेंट की तरफ़ से ही। यह बहुत खुशी की बात है। अब यह सब काम तो हुआ। छोटी-मोटी रियासतें सब मिल गईं।

उसके बाद हैदराबाद का जो सवाल आया, वह तो आपके सामने ही है। जो अभी बना है, उसे बताने में आपका समय नहीं लूंगा। लेकिन कहने का मतलब यह है कि मेरे काम की जो कदर आप करते हैं, उसका समय अभी नहीं आया। यह तो थोड़े से समय में इतना परिवर्तन हो गया है। राजाओं ने त्याग किया, उन्होंने अपनी सत्ता छोड़ दी। जिसे अपनी कोई कीमती चीज छोड़नी पड़ती है, वही इस तरह के काम की कदर कर सकता है। जिसने कभी कोई त्याग नहीं किया वह उसकी पूरी कदर नहीं कर सकता। मेरे दिल में इन

महाराजाओं के काम की पूरी कदर है और मैंने इन लोगों से हिन्दुस्तान सरकार की तरफ़ से वादा किया है कि आप लोगों की इज्जत और आप लोगों की जगह कायम बनी रहेगी। क्योंकि आपने पूरी सभ्यता से हिन्दुस्तान का साथ दिया है।

लेकिन मैंने जो अभी कहा था कि अभी कदर करने का समय नहीं आया, उसका मतलब यह है कि अभी तो यह परिवर्तन मैप (नक्शे) का ही हुआ है। अभी हमें पता लगाना है कि दिल का परिवर्तन कितना हुआ है। जब यह काम चलता जाएगा, तब हमारी रियासतों के लोगों को मालूम पड़ेगा कि यह अच्छा हुआ है और इससे उनका भला हुआ। आज जो यह क्रान्ति हुई है, उसका मिठास जब उनको मिलेगा, तब वे उसकी कदर कर सकेंगे। बस्तर स्टेट की जो रिद्धि-सिद्धि है, वह जब निकलेगी, तब लोगों को फ़ायदा मिलेगा, प्रान्त को फ़ायदा मिलेगा, मुल्क को फ़ायदा मिले तब लोगों को उस चीज का पता चलेगा। इसी तरह हमारी रियासतों में बहुत ही ऋद्धि-सिद्धि भरी हुई है। उस को हमें बाहर निकालना है और हिन्दुस्तान की नस में उसका खून देकर हिन्दुस्तान को ताकतवान बनाना है। तभी हमारे इस काम की कदर होनेवाली है। मुझे मानपत्र के देने का अवसर आज नहीं है, वह अवसर तो तब आएगा, जब यह सब काम सिद्ध हो जाएगा। अभी तो जैसा यह नक्शे का फेर-फार हुआ है, वही ठीक है।

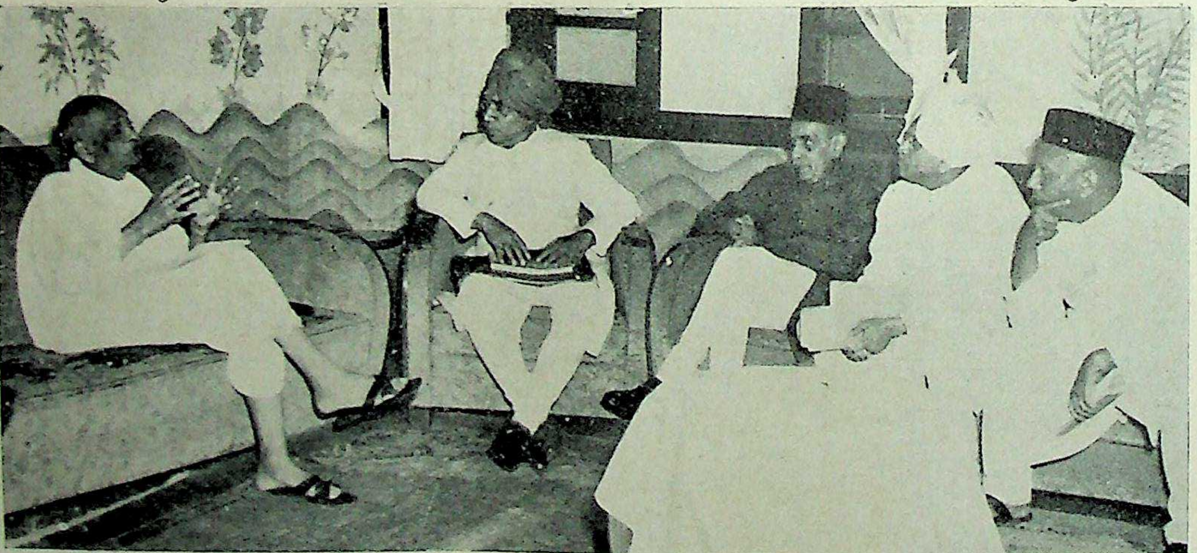
जिस तरह से आप लोगों ने इस काम में मेरा साथ दिया, उससे मुझे इतना फ़ायदा मिला कि और जिस जगह काम में मुसीबत आती थी, वहाँ पर मैं आपका उदाहरण देता था। मैं उनसे कहता था कि भाई, यह करते हो। देखो मध्यप्रान्त के राजा-महाराजा, वहाँ की सरकार, और वहाँ के लोग किस तरह और किस खूबी से मिल कर काम करते हैं। उसी तरह से तुम भी काम करो। अब परदेसी यहाँ नहीं हैं। वे सब चले गए हैं। अब हमारे रास्ते में कोई रुकावट नहीं है। अब हमें आपस में मिलकर हिन्दुस्तान को मज़बूत बनाना है। उससे काम में आप झगड़ा क्यों करते हैं? इस काम में इस झगड़े से क्या फायदा कि एक स्टेट बिहार में मिले या उड़ीसा में। और आपका काम देखकर और राजा भी मेरे पास आते हैं और कहते हैं कि भाई, हम तो और जगह पर राज्य के समूह में मिल गए थे। लेकिन हमें तो प्रान्त में मिल जाना है, क्योंकि वहाँ हमारी इज्जत भी बराबर रहती है, हमारी

शान भी रहती है। वहीं हमको सुख मिलेगा। इसलिए हमको प्रान्त में मिला दो। हमें अलग नहीं रहना है। उसका कारण यही है कि आप लोगों का काम बहुत अच्छा चल रहा है।

आपने इस काम को आगे बढ़ाने में एक और स्टेप (कदम) भी लिया है। यह कदम है एडवाइज़र्स बोर्ड (सलाहकार मण्डल) बनाने का। क्योंकि आज जब तक कानून में फ़र्क नहीं होता, तब तक दूसरा काम नहीं हो सकता। मैंने शुरू में कहा था कि कुछ लोगों को अपने साथ लेने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए। इस प्रकार के लोगों को हमें अपने साथ लेना चाहिए, जिन्हें काम का कुछ-कुछ अनुभव भी हो। अगर कोई लोग क्राउड (भीड़) बनाकर चिल्लाने लगें, तो उससे लोकशाही नहीं बनती है। यह बहुत जवाबदारी का काम है। तो उसको आहिस्ते से सीखना पड़ेगा। क्योंकि रियासत में जिस प्रकार का काम एक तरह से चलता था, यह दूसरे ढंग का था। एक हाथ से काम करना एक तरह से आसान भी है और एक तरह से कुछ अच्छा भी है। उससे भी ठीक काम तो चल सकता है। लेकिन उसमें लोगों का साथ न हो, तो न उससे लोगों को राहत मिलती है और न उसका फायदा ही मालूम पड़ता है। तो चाहे थोड़ा बिगाड़ भी हो तो भी लोगों को उसमें लेने की कोशिश करनी चाहिए। यह एडवाइज़री बोर्ड बनाकर आप पहला कदम आगे उठाते हैं, और मेरे पास से इस काम की शुरुआत कराते हैं, तो हमारा यह कर्तव्य है कि उसका पूरा फ़ायदा लोगों को पहुँचाएँ। इस तरह से हमें यह काम करना चाहिए।

हमारी रियासतों में, और ख़ासकर मध्यप्रान्त की रियासतों में, बहुत-से लोग ऐसे हैं, जो पिछड़े हुए हैं। राजाओं-महाराजाओं की जो मर्यादा है, उनकी जितनी कदर होनी चाहिए, वह तो हमेशा होनी ही चाहिए। क्योंकि हमारे पास मुल्क का बोझ उठाने के लिए जितने आदमी चाहिए, उतने भी आदमी नहीं हैं। बहुत कम आदमी हैं।

आज हमारे लोग छोटी-मोटी बातों के लिए, छोटी-मोटी जगहों के लिए लड़ते हैं। इस सब में क्या पड़ा है? हमारे देश में इतनी जगह पड़ी है। हम पर हिन्दुस्तान का राज्य आकर पड़ा है। उसमें से परदेसी हट गए हैं। उन लोगों की वह सारी जगह हमारे पास पड़ी है। उस जगह को सम्हालने के लिए हमारे पास आदमी नहीं है। तो इसमें लड़ाई-झगड़े की क्या जरूरत है? यदि लोग लायक बन जाएँ, तो काम करने के लिए इतना बड़ा मैदान चारों तरफ



सरदार पटेल बम्बई में दक्कन की रियासतों के महाराजाओं से बातचीत करते हुए

खुला पड़ा है। लेकिन हमें उसके लिए लायक बनना है। तभी हमारा काम होगा। केवल हमारे देश का ही नहीं, सारे एशिया का मैदान खाली पड़ा है। हम में शक्ति होनी चाहिए, हमारे पास ताकत होनी चाहिए, हम में बुद्धि होनी चाहिए। हम सबको एक साथ मिलकर सारे देश को ऊँचा उठाना है। जिस प्रेम से आपने मेरे काम की कदर की, मैं उसके लिए एक बार और आपको धन्यवाद देता हूँ।

———

(१४)

भारत में बने दूसरे जहाज* का जल-प्रवेश

दिल्ली,
२० जनवरी, १९४८

सिन्धिया कम्पनी के डाइरेक्टर गण तथा नारियो और गृहस्थो,

मुझे बड़ी खुशी होती अगर मैं खुद विजगापत्तन के यार्ड पर पहुँच गया होता। लेकिन मेरी शारीरिक अवस्था देख कर सिन्धिया कम्पनी ने जो यह प्रबन्ध करने की मेहरबानी की, इसके लिए मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करना चाहता हूँ। कुछ कुदरत के हाथ की बात है कि जहाज पानी में तभी जा सकता है कि जब उसके योग्य मिनिट या समय आ जाए। तो वहाँ से जब तक हम को सिगनल नहीं मिलता है, तब तक यह बटन दबाने का काम मैं नहीं कर सकता। इसलिए आप लोगों का और मेरा समय व्यर्थ न जाए, इस इच्छा से, मुझे जो कुछ कहना है, वह मैं पहले ही कह देना चाहता हूँ। इस रस्म में हिस्सा लेने का मुझको मौका दिया, इसके लिए मैं सिन्धिया कम्पनी को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मेरा और सिन्धिया कम्पनी का परिचय बहुत दिनों का है, यहाँ मैं उसकी याद दिलाना चाहता हूँ। सिन्धिया कम्पनी ने जो काम किया है, वह काम बहुत कम लोगों को मालूम है। यहाँ जब पिछली परदेसी हुकूमत थी, उसके

*इस जहाज का जल-प्रवेश सरदार पटेल ने दिल्ली बैठे-बैठे ही किया था। बटन दबाते ही जहाज पानी में उतर गया था।

साथ जिस प्रकार हमारी आज़ादी की लड़ाई चलती रही, उसी प्रकार बल्कि उसके साथ-साथ, सिन्धिया कम्पनी की अपने क्षेत्र में लड़ाई चलती रही। जैसी कुर्बानी हम लोगों को यहाँ करनी पड़ी, उसी प्रकार की कुछ दूसरे ढंग से, इन लोगों को भी करनी पड़ी। उनका इतिहास, जो लोग उसमें हित रखते हैं, उन्हें मालूम है। और जब हम इस शिपिंग कम्पनी का इतिहास याद करते हैं, तब ऊपर से इन्हें दबाने की कितनी कोशिश की गई, वह सारा इतिहास भी हमारे सामने खड़ा हो जाता है। और ऐसे मौके पर हमें सबसे पहले ड्यूटी कुरीन का स्मरण आता है, जो एक स्वदेशाभिमानी गृहस्थ था और जिसका नाम चिदम्बरम् पिल्लाइ था। उसे किन-किन तरीकों से दबाया गया, उसे कितनी-कितनी कठिनाइयाँ और मुसीबतें सहन करनी पड़ीं, वह सब हमारे सामने आ जाता है।

सिन्धिया कम्पनी ने यह सब लड़ाइयाँ अच्छी तरह से और वीरता से लड़ीं और आखीर में उनमें सफलता पाई, जैसे हमने भी सफलता पाई। उनका और हमारा काम एक ही साथ पूरा हुआ है। दूसरी तरह से उनका भी काम स्वाधीनता-प्राप्ति से शुरू होता है, और हमारा भी शुरू होता है। हमारी आज़ादी एक साल की है। उनका जो काम सफल हुआ है, वह भी एक साल से शुरू हुआ है, जब हमारे प्रधान मन्त्री ने उनके बनाए पहले जहाज़ का जल-प्रवेश करवाया था। जैसी उनकी समस्याएँ हैं, जैसी उनकी ज़रूरतें हैं और जैसी उनकी मुसीबतें हैं, ठीक वैसी ही हमारी भी हैं। सिन्धिया कम्पनी अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश कर रही है, हाथ-पैर फेंक रही है और इधर-उधर से मदद की माँग कर रही है। हम भी यही कोशिश कर रहे हैं और चाह रहे हैं कि जिस किसी तरह से हम अपने पैरों पर खड़े हो जाएँ। हमें आशा है कि चन्द दिनों में हम इन सब मुसीबतों का मुकाबला कर लेंगे लेकिन हमारे खुद खड़े रहने की कोशिश में हमें सिन्धिया कम्पनी की फ़तह-मन्दी की ज़रूरत है। क्योंकि उनके हित में हमारा हित भी समाया हुआ है। साथ ही हमारे हित में उनका हित है।

सिन्धिया कम्पनी के संचालकों ने भारत सरकार के पास एक आवेदन-पत्र भेजा है और वे बहुत जल्दी कुछ-न-कुछ जवाब चाहते हैं। मेरा इस प्रकार यहाँ उसका जवाब देना कहाँ तक सही होगा, वह मैं नहीं जानता हूँ। क्योंकि हमारे उद्योग मन्त्री भी यहाँ ही बैठे हैं, और उस कोने पर अन्य नाना मन्त्री

भी यहां बैठे हैं, उनकी सहानुभूति और उसकी सम्मति न हो, तो गवर्नमेंट की तरफ से किसी को कोई वायदा देना बड़ी मुसीबत हो जाती है और दें भी, तो भी सफल वही होता है, जिसमें सबकी सहमति हो। जब हमारे प्रधान मन्त्री ने पिछले साल आपको भरोसा दिया था, तो मेरी भी हिम्मत चलती है कि जो कुछ इशारा आपने किया है, उसके सम्बन्ध में यह कहूँ कि उस पर हम लोग बहुत सहानुभूति से और जितना हो सके उतना जल्दी, उसका फैसला करेंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि जो वागवटा का काम है, शिपिंग इण्डस्ट्रीज का काम है, वह सबसे बड़ा ज़रूरी काम है और इसीलिए गवर्नमेंट ने पिछले अप्रैल में एलान किया है, कि यह एक ऐसी इण्डस्ट्री है, जिसे गवर्नमेंट अपने हाथ में लेना चाहती है। और अगर सरकार ने अपने हाथ में ले लिया तो भी जो काम सिन्धिया कम्पनी ने किया है, जो योजना सिन्धिया कम्पनी ने बनाई है, उसको वह अच्छी तरह से आगे बढ़ाना चाहती है। उसे आगे बढ़ाने में सिन्धिया कम्पनी का भी साथ लेना है। और हम कुछ भी काम करें, शिपिंग इण्डस्ट्री में गवर्नमेंट और सिन्धिया कम्पनी की एक दूसरे की सहायता और परस्पर सहयोग के बिना यह उद्योग आगे चलनेवाला नहीं है। उनका जो अनुभव है, उसका हम पूरा फ़ायदा उठाना चाहते हैं। हमारा और उनका सहयोग प्राप्त कर मुल्क को फ़ायदा देना यही हमारी इच्छा है। आप भी यही चाहते हैं और हम भी यही चाहते हैं।

अब जो लड़ाइयाँ आपने लड़ीं, बड़ी सफलता और बड़ी कुशलता से लड़ीं। इसलिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। उसका सबूत तो पिछले साल उसी समय मिल गया था, जब प्रधान मन्त्री ने अपना पहला जहाज़ पानी में उतारा था। बहुत दिन नहीं हुए, जब विदेशी वेस्टिड इन्टरैस्टों (विदेशी हितों) ने, हमारे मुल्क में, बहुत समय से पैर जमा कर बैठी हुई विदेशी सरकार की मदद से, हमारे इस उद्योग को रोकने की और इसे रौंदने की काफी कोशिश की थी। वालचन्द भाई ने मुझे मेरा वह भाषण याद दिलाया, जो आज से दस साल पहले सिन्धिया हाउस की ओपनिंग सेरिमनी (उद्घाटन समारोह) करते हुए, मैंने दिया था। आज आप की यह उन्नति देखकर मुझे बड़ी खुशी होती है। तब मैंने जो कुछ कहा था, वह सम्पूर्ण सही निकला है। आज हिन्दुस्तान की सरकार पर वह धब्बा नहीं है, जिसकी उसने याद दिलाई है। तो सिन्धिया कम्पनी ने अपने सीधे रास्ते पर खड़े रह कर, सीधे मार्ग पर चलने की कोशिश

की, उसमें जो रुकावटें थीं वे सब निकल गईं। मुझे उम्मीद है कि अब उनके रास्ते में कोई ऐसी रुकावट नहीं आएगी, जिससे आगे की प्रगति अटकानी पड़े।

इस मौके पर मुझे कुछ ज्यादा कहने को नहीं है। लेकिन आखिरी धन्यवाद से पहले मैं उन मज़दूरों, कारीगरों और स्टाफ के लोगों से, जिन लोगों की तरफ से मुझको मानपत्र दिया गया है, दो शब्द कहना चाहता हूँ। मैंने इसका भी डर नहीं रखा है कि मुझे कोई गैर समझेगा, और इसकी मुझे परवाह भी नहीं है। लेकिन बड़ी मुहब्बत से हर मौके पर मैंने मज़दूरों को सावधान किया है और साफ-साफ बात की है ? क्योंकि जो साफ बात कहता है, वही अपना सच्चा हितकर है, यह हमें समझना चाहिए। तो मुझे मज़दूरों की तरफ़ से जो मानपत्र दिया गया है, उसके लिए मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ। लेकिन मैं बड़े प्रेम से एक सलाह भी उन्हें देना चाहता हूँ कि यदि कूएँ में पानी नहीं होगा, तो हमारे गुजरात में एक कहावत है कि, जो हमारा 'ध्वारा' यानी चौबच्चा है (जिसमें से जानवर पानी पीते हैं) में भी पानी नहीं आएगा। तो हमारा प्रथम कर्तव्य यह है कि जिस इण्डस्ट्री के साथ हमारा पाला पड़ा है, जिससे हमें रोटी पैदा करनी है, उस इण्डस्ट्री को किसी भी तरह से चोट न लगे, उसका किसी तरह से बिगाड़ न हो। इतना सँभाल के जितना माँग सकते हैं, उतना माँगना चाहिए। वह हमारा हक है। और उस हक़ के लेने-देने में अगर ज्यादा-से-ज्यादा मदद आज कोई गवर्नमेंट कर सकती है, तो कांग्रेस गवर्नमेंट ही कर सकती है। क्योंकि हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में मजदूरों ने जो साथ दिया है, उसको हम कभी भूल नहीं सकते हैं। और आख़िर आज़ादी की लड़ाई लड़ कर हिन्दुस्तान की आज़ादी लेने का हमारा उद्देश्य क्या था ? जब हमारे मुल्क में गरीब-से-गरीब लोगों को, जो मज़दूरी करते हैं, मेहनत करते हैं, और .पसीना बहा कर अपनी रोटी पैदा करते हैं, आज़ादी का स्वाद न मिले, तब तक आज़ादी का कोई मतलब नहीं, कोई फल नहीं। हमेशा हमारी यही कोशिश रहेगी कि आपको ज्यादा-से-ज्यादा मिले। लेकिन ऐसी गलती कभी न करना, जैसा बार-बार और जगह-जगह पर किया जाता है। आपके यहाँ भी दो-तीन महीने की एक स्ट्राइक हुई थी, ऐसा मुझे स्मरण है। उसमें लाखों रुपये का नुकसान हुआ था। चाहे एम्प्लायर्स (मालिक) की गलती हो और चाहे हमारी गलती हो, हमें ऐसी ज़िद कभी नहीं करनी चाहिए, जिससे देश का नुकसान हो। जैसा महात्मा गान्धी जी ने पहले से

अहमदाबाद के मज़दूरों से मंज़ूर करवाया था, उसी तरह अपने झगड़ों का फैसला हमें पंचायत से करना है। वही सबसे अच्छा तरीका है और आज अपनी सरकार से बढ़कर कौन पंचायत आप लोगों के हित में सबसे अच्छी होगी? यह तो आप की अपनी सरकार है। आज मज़दूरों को सलाह देनेवाले बहुत लोग ऐसे हैं, जो अपनी नेतागिरी के लिए ज्यादा-से-ज्यादा माँग करवाते हैं और फिर फसाद करवाते हैं। आपके सच्चे सेवक की हैसियत से मैं कहता हूँ कि आपने मुझे जो मानपत्र दिया है, वह अगर सही हो, वह अगर दिल से हो, तो मेरी बात पर अच्छी तरह सोचिए और अपनी सरकार की, अपने लोगों की और अपने मुल्क की सहानुभूति कभी न गमाइए। अगर आप जनता के हित को भी सामने रखकर अपना काम करेंगे तो आपका हमारा साथ हमेशा रहेगा।

अब मुझे आपका ज्यादा समय नहीं लेना है। आज जो अपने मुल्क में यह दूसरा जहाज़ बना है, उसकी जल-प्रवेश-विधि करने का, इस रस्म में हिस्सा लेने का जो मौका आपने मुझे दिया, उसके लिए मैं आपको, सिन्धिया कम्पनी को और वालचन्द भाई को मुबारकबाद देना चाहता हूँ, धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैं उम्मीद और प्रार्थना करता हूँ कि ये जहाज़ और इनके साथ जिनका कभी भी सम्बन्ध होगा, वे सब सुखी हों और आबाद हों। ऐसे नए-नए जहाज़ विजगापत्तन की गोदी में बहुत से बनें और जल्दी-जल्दी बनें, ऐसी उम्मीद भी हम रखते हैं। ये सब जहाज़ दुनिया के और देशों की बन्दरगाहों में पहुँचें और झंडे की इज्जत बढ़ाएँ, क्योंकि वह हमारे देश का झंडा है। हर जगह पर वे अपना नाम और अपनी कीर्ति कायम रखें। इतना कह कर मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और आप सबसे भी चाहता हूँ कि आप सब भी यही प्रार्थना करें कि हमारा यह नया जहाज़ हिन्दुस्तान के बाहर सब मुल्कों के बन्दरगाहों में हिन्दुस्तान की इज्जत बढ़ाए और अपनी भी इज्जत बढ़ाए।

जयहिन्द !

(१५)

अल्लाहाबाद युनिवर्सिटी का कन्वोकेशन भाषण

२५ नवम्बर, १९४८

गवर्नर साहिबा, वाइस चांसलर साहब, नवस्नातको, विद्यार्थियो और बहनो,

आपने इस कन्वोकेशन में इकट्ठे हुए मान्य जनों के सामने प्रवचन देने के लिए मुझे बुला कर, और मुझको 'डाक्टर आफ़ लाज़' की डिग्री देकर मेरा जो सम्मान किया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। जब मैं उन मान्य व्यक्तियों और योग्य पुरुषों का ध्यान करता हूँ, जिन्होंने पूर्व काल में आपके सामने प्रवचन दिए हैं और जिन्हें आपकी तरफ़ से आनरेरी डिग्रियाँ मिली हैं, तो मैं अपने आपको एक अपरिचित समाज में पाता हूँ। स्कूल कालेज की पढ़ाई में मैंने कोई खास नाम पाया हो, मैं कोई ऐसा दावा नहीं करता। मैंने जो कुछ पाठ पढ़े हैं, वे जीवन के महान विश्वविद्यालय में पढ़े हैं। मैं विद्वान होने का कोई दावा नहीं करता। कला या साइन्स के विशाल गगन में भी मैंने कोई उड़ान नहीं भरी है। मेरा काम तो कच्ची झोपड़ियों में और गरीब किसानों के खेतों, ऊसर ज़मीनों या शहरों के गन्दे मकानों और मोरियों में रहा है। सार्वजनिक जीवन में भी मैं कोई नीतिज्ञ या कोई पालिटीशन नहीं, बल्कि मार्क एन्टनी की तरह एक सीधा-सादा अक्खड़ आदमी रहा हूँ। आज ये सम्मानित उपाधि आपने मुझे दी है। वह मेरे दिल और दिमाग के किन्हीं विशेष गुणों की प्रशंसा में नहीं, बल्कि साधारण आदमियों के उन

गरीब वर्ग के मर्द-औरतों के सम्मान में दी है, जिनकी सेवा करने का गौरव मुझे मिला है।

जब पिछले साल हमारे राष्ट्र के नेता हमारे प्रधान मन्त्री ने आपके कन्वोकेशन में प्रवचन दिया था उस समय बड़ी अदल-बदल और उथल-पुथल हो रही थी। पंजाब में जो कांड हुए थे, उनकी बाढ़ में तो हम लगभग बह ही गए थे। तब हमारी बुद्धि संदेह और निराशा से मलिन हो गई थी और हमारे दिलों पर क्रोध और बुरी भावनाओं का राज्य था। प्रधान मन्त्री ने उस समय कुछ खास उद्देश्यों का ज़िक्र किया था और हमारे सामने चाल-चलन जैसे नियम रखे थे। उस समय वह फैली हुई शक्तियों पर विजय पाने का मार्ग बताते थे। आज सौभाग्य से हम उस काली घड़ी में से निकल आए हैं, जो कि आज़ादी पाने के इतनी जल्दी बाद ही निर्मम विधि ने हम पर डाली थी। हमारे इतिहास में हमको यह सबसे भारी धक्का लगा था। मगर अपनी सच्ची अन्तर्भावना और सच्ची श्रद्धा के बल से हमने उसे सहार लिया। कभी-कभी ऐसा मालूम होता था कि हमारी आज़ादी का आधार ही भारी खतरे में पड़ गया है। फिर भी उसे हमने जिस किसी तरह सँभाल लिया था।

आज मैं बड़ी गम्भीरता से आपसे पूछता हूँ कि क्या हमने उस आज़ादी का असल मतलब समझा है, जो वर्षों की कोशिशों के बाद और इतने दुख झेल कर हमने पाई ? क्या हमने अपने आपको इस काबिल बनाया है कि आज़ादी के साथ जो ज़िम्मेदारियाँ हम पर आ गई हैं उन्हें हम निभा सकें ? मैं चाहता हूँ कि आप गम्भीरता से इस बात को सोचें कि क्या हमारे चलन में आजादी के प्रेमियों की सच्ची भावना पाई जाती है ? क्या हम अपने कर्तव्य और अनुशासन का ध्यान रखते हुए उसी तरह काम कर रहे हैं, जैसा कि हम उस समय करते थे, जब हम आज़ादी की लड़ाइयाँ लड़ रहे थे ? आप में से हर एक को यह देखना चाहिए कि आज़ादी ने हमारे लिए क्या-क्या समस्याएँ खड़ी कर दी हैं और आप उन्हें हल करने में क्या मदद कर रहे हैं। अगर हर एक देशवासी अपना फर्ज़ अदा करने लगे तो राष्ट्र उन समस्याओं को पक्के और असरदार ढंग से सुलझा सकेगा। अनुभव से सीखना बड़ा महँगा पड़ता है। पर अनुभव से भी अगर हमने कुछ न सीखा, तो निश्चय ही हम बरबादी और तबाही की ओर चले जाएँगे।

मैं आपको उस लड़ाई की कुछ बातें बताने लगा हूँ, जिसके अन्त में हमने

वह अनमोल निधि पाई, जो आज हमारे पास है। मुझे आशा है, आप उन्हें धीरज से सुनेंगे। सत्य और अहिंसा उस लड़ाई के प्रधान गुण थे। आत्म-बलिदान, दुख और त्याग उन सिपाहियों के बैज थे, जिन्होंने यह लड़ाई लड़ी। सहिष्णुता और एकता हमारे संकेत शब्द थे और सेवाभाव हमारा पथ-प्रदर्शन करता था, स्वार्थ भावना नहीं। हमने घोर युद्ध किया, परन्तु स्वच्छता के साथ। संकुचित स्थानीय विचारों ने हमें कभी नहीं डिगाया, बल्कि हमने अपने देश के बड़े हितों को सदा अपने सामने रक्खा। शक्ति और अधिकार के पदों का हमारे लिए कोई आकर्षण नहीं था। हम छोटे-से-छोटे लोगों के साथ रहे। उन्हीं के साथ हमने सभी तरह के दुख भी उठाए और देश के बड़े-से-बड़े लोगों के साथ टक्कर ली। मैं यह सब कुछ डींग मारने के लिए नहीं कह रहा हूँ। बल्कि एक गर्व की भावना से यह सब आप को बता रहा हूँ। क्योंकि जो कुछ मैंने कहा है वह, सब बीते समय के इतिहास के पन्नों पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है।

परन्तु आज देश का जो नक्शा हमारे सामने है, वह उससे कितना भिन्न है। ऐसा लगता है, मानो एक बरस में ही हममें से वह भावना और वह गुण निकल गए हैं, जो उस लड़ाई में थे। जो भावना हमने उस महान गुरू की प्रेरणा से और उसकी रहनुमाई में पाई थी, खेद है कि अब हमारा वह नेता हमारे साथ नहीं। उसका चला जाना, और उससे जो भारी चोट हमें लगी, वे दोनों स्वयं इस बात का फलस्वरूप थी कि हम उस मार्ग से हट गए थे, जो उसने हमारे लिए बनाया था और जिस पर एक वक्त हम ऐसी सफलता के साथ चले थे। अब तो ऐसा मालूम होता है कि हमें जालसाजियाँ करने में और सत्ता पाने के लिए दौड़धूप करने में आनन्द आता है। आज हमारे जो मुकाबले होते हैं, उनमें खेल के स्वस्थ नियमों का ध्यान न कर हम उन्हें गन्दा बना देते हैं। हम केवल चाल के रूप में सत्य को सराहते हैं, जब कि हमारे मिजाजों और दिलों पर हिंसा का राज है। हमारी बुद्धि और हमारे काम सिकुड़े मार्ग में ही चलते हैं। हमारे बड़े-बड़े उद्देश्य और देश के महान हित हमारी आँखों से ओझल होते जा रहे हैं। हमारे दिलों में गड़बड़ी और बेतरतीबी फैली हुई है। सिपाहियों का वह समस्त अनुशासन और जनता के प्रति अपने धर्म की भावना हम लोगों में कम होती जा रही है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस चित्र में मैं कोई बात बढ़ा कर नहीं दिखा रहा हूँ। हाँ, जो परिवर्तन हुआ

है, उस पर मैं जानबूझ कर ज़ोर दे रहा हूँ। क्योंकि मैं समझता हूँ कि आज जो हालत है और जो समस्याएँ मुल्क के सामने हैं, उन्हें हम तभी सुलझा सकेंगे, जब कि हम उस भावना और उन गुणों पर और भी अधिक ज़ोर दें, जिनसे बीते ज़माने में हमें इतना लाभ हुआ था।

आखिर इस बात को तो हमें ध्यान में रखना ही चाहिए कि हमें आज़ादी ऐसे समय में मिली है, जब कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में हमारे चारों ओर समस्याओं का एक तूफ़ानी समुद्र-सा फैला हुआ है। मनोवैज्ञानिक और भौतिक दोनों रूपों से युद्ध से शान्ति की ओर परिवर्तन बहुत देर से हुआ और इसका फल यह हुआ कि हम अब भी घबराहट और अनिश्चितता की परिस्थितियों में फँसे हुए हैं। हमारी सारी आर्थिक व्यवस्था बिगड़ गई है और हमारी नागरिकता की भावना एक ओर तो युद्ध की तबाहियों और दूसरी ओर युद्ध-जनित बड़े मुनाफों के कारण पतित हो गई है। युद्ध के कारण हर जगह बन्धन ढीले पड़ गए। इस कारण ज़रूरत से अधिक उत्साह से आजादी की एक विचित्र सी कल्पना व्याप्त हो गई है। वास्तव में यह आज़ादी नहीं, बल्कि उच्छृङ्खलता है। हमारी उदार अन्तर्भावनाओं में से ज़िम्मेदारी का वह गुण निकल गया है, जिसके बिना हमारे विचारों और कामों में न कोई व्यवस्था रह सकती है न कोई ढंग ही। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी आजकल जिस तरह एकमात्र शक्ति-नीति और आपसी संदेह का प्रभुत्व है, वह लड़ाई से पहले नहीं था।

हमारे अपने घर में भी ज़रा छोटे क्षेत्र में, वही दुखदायक बातें नज़र आती हैं। उनके अतिरिक्त हमारी अपनी निजी समस्याएँ भी हैं। राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से हम इस समय एक गढ़े के किनारे खड़े हैं। एक भी गलत कदम उठाया कि तबाही अवश्यम्भावी है। हमारे रहने का खर्च असाधारण रूप से बढ़ गया है। हम जो पैदा करते हैं, वह उतना नहीं होता, जितनी की हमें ज़रूरत है। ज़रूरी चीज़ों को बाहर से मँगाना हमको बहुत महँगा पड़ रहा है। इतना खर्च सहने की हममें शक्ति नहीं है। जो कुछ हमारे पास है, वह भी आसानी से और न्यायोचित हिस्से से सबको नहीं मिलता। हमारे कारबार पर और हमारे माली ढाँचे पर एक पक्षाघात सा गिर गया है। हमारे हाथ में सत्ता आने के साथ ही देश का बँटवारा हो जाने के कारण भी देश में अनेक कठिनाइयाँ और पेचीदा समस्याएँ खड़ी हो गई हैं। शासन को चलाने के प्रधान

यन्त्र में भी योग्य आदमियों की कमी हो गई है। हमें शासन सम्बन्धी कामों और नीतियों को देश की नई सीमाओं के अनुकूल बनाना है। हमें अपने आर्थिक, भौगोलिक, आदर्शवादी और सांस्कृतिक प्रश्नों को एक राजनीतिक तथ्य के आधीन करना पड़ रहा है। यह काम स्वयं ही अत्यन्त विशाल और दुष्कर है। इधर हमारी रक्षा की सर्विसेज़ भी अभी शैशवावस्था में हैं। उन्हें हमें मज़-बूत बनाना है और आवश्यक शस्त्र देने हैं। हमें एक ओर तो ज़मींदारों और ज़मीन को जोतने वाले किसानों के और दूसरी ओर मिल मालिकों और कार-खानों में काम करने वाले मज़दूरों के बीच के सम्बन्धों को ठीक करना है। इस सब के साथ-ही-साथ हमें अपनी सीमाओं पर भी उत्तर में, दक्षिण में, पूर्व में और पश्चिम में सभी ओर हमें सावधान रहना है। एशिया के बाकी देशों में भी घरेलू झगड़े हो रहे हैं। कितने ही देशों में आपस में युद्ध छिड़े हुए हैं। मुल्क की आज़ादी के दुश्मन अक्सर अन्दर ही होते हैं, वे बाहर से कम आते हैं। हमको बड़ी सावधानी से अपने राष्ट्र की एकता, पूर्णता, और सुरक्षा का एक ओर तो अन्दर की फूट डालने वाली शक्तियों से बचाव करना है, दूसरी ओर बाहर वालों के आक्रमण के मनसूबों से अपने देश को बचाना है। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में दूसरे काम भी अभी हमें करने हैं। इनमें प्रधान हैं, अपने जीवन स्तर को ऊँचा करना और अपने राष्ट्रीय चरित्र को ऊँचा बनाना। पहले काम के लिए हमें अपनी प्राकृतिक शक्तियों से काम लेना है और साइन्स के साधनों से पूरा फ़ायदा उठाना है। दूसरे काम के लिए हमें अपनी समस्त राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को बिलकुल बदल देना होगा।

भाइयो और बहनो, मुझे आशा है कि मैंने आपको इस बात का काफी परिचय दे दिया है कि एक राष्ट्र की हैसियत से और विश्व के नागरिक होने के नाते हमारे सामने जो समस्याएँ हैं, वे कितनी कठिन और नाज़ुक हैं। अब हमें यह सोचना चाहिए कि क्या हम इन समस्याओं की विशालता और जल्दी-से-जल्दी उनको सुलझाने कीं आवश्यकता को पूरी तरह समझते हुए अपने कर्तव्य-पथ की ओर चल रहे हैं? मेरा विचार था कि ऐसी घड़ी में हम अपना पूरा ध्यान अपनी एकता और अपने सामूहिक बल पर देंगे। मगर इसकी जगह हम अपनी शक्तियों को व्यर्थ के अन्तर्प्रान्तीय डाह में खो रहे हैं और छोटी-छोटी भाषाओं के आधार पर पृथक-पृथक इकाइयाँ बनाने की बात सोच रहे हैं। और यह सब कुछ उस समय किया जा रहा है जब कि हमें राष्ट्र की

माँग और उसकी जरूरतों की ओर अपना पूरा ध्यान देना चाहिए। इस समय जब कि हम सबको मिल कर एक हो जाना चाहिए था, हम अलग-अलग होने की कोशिश कर रहे हैं और यह भी किसी महत्वपूर्ण विचारों के भेद के कारण नहीं, बल्कि स्वयं नेता बनने की इच्छा के आधार पर।

आज तो इस बात की आवश्यकता है कि हम अपनी सारी शक्ति लगा कर ज्यादा-से-ज्यादा औद्योगिक कारखाने खड़े करें। परन्तु उसकी जगह हम बराबर धमकियाँ देकर और हड़तालें संगठित कर अपनी पैदावार में भारी कमी कर रहे हैं। इस तरह हम अपनी औद्योगिक उन्नति को रोक रहे हैं और देश को नुकसान पहुँचा रहे हैं। हम अपने गड़े धन को दबाए बैठे हैं जब कि हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम उसे राष्ट्र के हित के लिए पैदावार के काम में लगाएँ और वह किसी से पीछे न रह जाएँ। आज हमारा मज़दूर वर्ग भी धन पैदा करने से पहले ही उसके बँटवारे पर झगड़ा करने लगा है। इस समय, जब कि हमें ज्यादा-से-ज्यादा बचत करनी चाहिए और अपने साधनों से बड़ी किफ़ायत से काम लेना चाहिए, हम अनावश्यक खर्च कर रहे हैं और अपने आराम और आसाइश की गैर ज़रूरी चीज़ों पर, जिनके बिना हमारा काम मज़े में चल सकता है, रुपया गवाँ रहे हैं। साथ ही हम लोगों में नैतिक मूल्यों की अनुभूति स्पष्ट रूप से कम हो गई है। लड़ाई के समय की जो अनैतिकता फैल गई थी, उसके कारण घूसखोरी और बेईमानी अभी तक ज़ोरों पर है। हम नागरिकता के प्रारम्भिक कर्तव्य और ज़िम्मेवारियाँ भी नहीं जानते। कानून की साख बनाए रखने की बजाय हम अपने रोज के जीवन में उसे तोड़ते हैं। अनुशासन, ऊँचा चरित्र और शारीरिक तन्दुरुस्ती ये तीनों एक स्वस्थ राष्ट्र के जीवित चिन्ह हैं। आप अपने अन्दर देखिए और बताइए आप में ये तीनों ज़रूरी चीज़ें कहाँ तक हैं? जीवन के किसी भाग को लीजिए, विद्यार्थी, अध्यापक मज़दूर, नौकरी देनेवाले, व्यापारी, सरकारी नौकर, राजनीतिज्ञ चाहे आप कोई भी हों, आप अपने से एक प्रश्न कीजिए कि क्या आप एक स्वस्थ राष्ट्र के नागरिकों की तरह काम कर रहे हैं? मुझे विश्वास है कि इसका जवाब पक्की तरह हाँ में बहुत कम जगह मिलेगा। हम सबको शरम के साथ यह मानना पड़ेगा कि हमने ज़रूरत के समय अपने राष्ट्र का साथ नहीं दिया।

मैं आपको यह भी साफ़-साफ़ बता देना चाहता हूँ कि मैं जो यह अन्तरा-

वलोकन कर रहा हूँ, वह एक निपट निराशावादी या विश्वासहीन व्यक्ति के रूप में नहीं कर रहा। बल्कि यह तो मैं एक पैदायशी आशावादी के रूप मे कर रहा हूँ। मुझसे ज्यादा उन गुणों को और कौन जान सकता है, जो हमने, हमारे देश ने, अपनी आज़ादी के पहले ही साल में दिखाए हैं और जिन बातों से हमारी साख बढ़ी है। अगर मैं अपने अवगुणों पर ज़ोर दे रहा हूँ, तो वह केवल एक चेतावनी के रूप में दे रहा हूँ, जिससे कि हम गाफ़िल न हो जाएँ। जिससे हम अपने कौमी पुर्ननिर्माण के काम में पक्के इरादे से लग जाएँ। हमारा कर्तव्य है कि आज जब हमारी आज़ादी का यह शिशु केवल साल भर का है, हम इस बात का पक्का प्रवन्ध करें कि यह बालक बड़ा हो और स्वस्थ, ताकतवान् और हट्टा-कट्टा बने।

मैं यह नहीं चाहता कि इसको सब तरफ़ से बचाकर रखा जाए। इसको तो जीवन संघर्ष के बीच में रह कर ही बढ़ना चाहिए। उसी हवा में पलने से यह तगड़ा होगा। तभी इसमें तेज आएगा। उसी तेज के बल पर यह दुनिया का सामना करेगा। हमें अपनी आज़ादी की बुनियाद मज़बूती से और बिलकुल ठीक-ठीक रखनी चाहिए क्योंकि इसी बुनियाद पर हमें एक विशाल भवन बनाना है। एक ऐसा भवन, जो हमारे पूर्वजों से मिली हमारी महान सम्पत्ति के योग्य होगा, जो आजकल के युग का गर्व होगा और जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अनमोल विरासत होगा। केवल आज़ादी की रक्षा करना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि हमें तो यह साबित करना है कि हम इसके योग्य हैं। इस देश में जो छोटे-से-छोटा भी है, हमें उसे भी यह महसूस कराना है कि वह आज़ाद है। खेत में काम करने वाले किसानों, झोंपड़ों में रहने वाले गरीबों और कारखानों में काम करने वाले मज़दूरों—सभी को इस योग्य होना चाहिए कि वे गुलामी और आज़ादी के भेद को समझ सकें। तभी हम यह कह सकेंगे कि हमने आज़ादी ली है और उसके योग्य बन गए हैं।

इसलिए हमें अपनी आज़ादी को संगठित करना है अपनी एकता और शक्ति को बनाना है। पिछले ज़माने में जो हम पिछड़ गए थे, उस कमी को आज हमें पूरा करना है और इस मुल्क को पहले से बहुत अधिक अच्छा और स्वस्थ बनाना है। यह कर लेने पर ही हम अपने संकुचित उद्देश्यों और क्षुद्र आकांक्षाओं पर ध्यान दे सकते हैं। लोगों को यह समझना चाहिए कि जिस समय हमने आज़ादी पाई, अगर उस समय हम आज़ाद न हुए होते तो हमें कैसे-कैसे

संकटों का सामना करना पड़ता। हम लोग उन परिस्थितियों को भी जानते हैं, जिनसे भारी तबाही हो सकती थी और जिनका हमने पिछले वर्ष में सफलता से मुकाबला किया है। यह सब कुछ इसी कारण सम्भव हुआ कि राष्ट्र का हृदय सच्चा है, और हमारी सच्ची अन्तर्भावनाएँ और हमारी श्रद्धा शुरू के इन झगड़ों को सफलतापूर्वक सम्हाल सकती थी।

अगर हमने उन बुरी प्रवृत्तियों को, जो अब दिखाई दे रही हैं और जिनकी चर्चा मैंने अभी-अभी की है, बढ़ने दिया तो इससे बहुत से खतरे पैदा हो जाएँगे। हम लोग मुसीबतों में फँस जाएँगे और दल-दल में धँसते चले जाएँगे। वैसा हुआ तो हम अपनी आज़ादी का गला, उसके पैदा होने के लगभग तुरन्त बाद ही घोंट देंगे। हिन्द का इतिहास हमें बताता है कि हमने अपनी आज़ादी उन संकुचित उद्देश्यों और स्वार्थपूर्ण आकांक्षाओं के बदले में दे डाली थी, जिन्होंने हमारे बड़े उद्देश्यों और राष्ट्रीय अभिलाषाओं को ढक लिया था। राष्ट्रीय संकट के उस युग में जब हर एक का यह कर्तव्य था कि वह देश की रक्षा में अपना कन्धा लगाए, हमारे देश के कई भागों में फूट पड़ गई और वह अलग-अलग दलों में बँट गया। व्यक्तिगत आकांक्षाओं ने हमें राष्ट्रीय हितों की ओर से अन्धा कर दिया और आपसी नफ़रत ने एकता और अनुशासन की सारी भावनाओं को नष्ट कर दिया। आज हमें यह समझ लेना चाहिए कि किसी कौम के लिए अपने इतिहास के पाठ को भूल जाना खतरे से खाली नहीं होता।

मैं आपसे और आपके ज़रिए मुल्क भर से यह अपील करता हूँ कि हमें अपनी शक्ति को किफायत से बरतना चाहिए। हमें अपने सीमित बल का संचय करना चाहिए, जिससे कि हम उन संकटों का मुकाबला कर सकें, जिनसे हमारे कौमी अस्तित्व को भी खतरा है। अपने राष्ट्र को सच्चे और स्वस्थ ढंग पर बढ़ाना हमारा कर्तव्य है। जो राष्ट्रीय एकता हमने इतनी कठिनाई से प्राप्त की है, पहले उसे हम संगठित और एकरूप तो कर लें, उसके बाद हम और विभिन्नताओं की बात करें। हम उन्हीं बातों पर ध्यान दें, जिनसे कि एकता पैदा होती है, न कि उन पर जो हमें अलग-अलग करती हैं। हालत ऐसी है और समस्याएँ इतनी विशाल और पेचीदा हैं कि जो कुछ हमने कर लिया है, उसी पर सन्तोष करके हम बैठ नहीं सकते। आज़ादी के पहले वर्ष में हमने जो कुछ करने की कोशिश की है—विदेशों में दूतावास, लीगेशन, कांस्युलेट आदि स्थापित करना, विदेशी मामलों में हमारा भाग लेना, रियासतों को समस्त राष्ट्र का अंग

बनाना और उनको प्रजातान्त्रिक रूप देना, शासन और रक्षा की सर्विसों का पुनर्निर्माण, अपनी आन्तरिक सुरक्षा को मज़बूत बनाना, उन्नति की अनेक योजनाओं को तैयार करना और उन पर अमल करना, शरणार्थियों को लाना, और उनको फिर से बसाना--यह सब असल में उन बड़े कामों की शुरुआत हैं, जिनको अभी अपने हाथ में लेना है ।

कोई भी विदेशी नीति, चाहे वह कितनी भी अच्छी तरह सोची हुई क्यों न हो, विदेशों में हमारी कोई संस्था, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, कोई विशेष असर नहीं डाल सकती, जब तक कि उसके पीछे एक ठोस शक्ति न हो । आज की अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं में किसी मामले की विजय केवल इसी कारण नहीं होती है, कि वह सच्चा है और उसमें नैतिक बल है । किसी सच्चे और बलवान मामले को भी उसे प्रस्तुत करनेवाले देश की शक्ति और साख का समर्थन प्राप्त होना चाहिए । विदेशी मामलों में हिन्द को एक काफ़ी बड़े क्षेत्र में अनेक अवसर प्राप्त हैं । एशिया में उसका सब से ऊँचा स्थान है और आज की परिस्थितियों में इस विशाल महाद्वीप में अकेला यही देश अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को स्थिर करनेवाला बन सकता है । इस प्रदेश में हिन्द को पर्याप्त और उचित मात्रा में काम करना चाहिए । हमारी बचाव की सेनाएँ पूरी तरह कुशल हैं । वे असरदार ढंग से काम कर सकें, इसके लिए उनके पीछे एक महान औद्योगिक प्रयत्न होना ज़रूरी है । अगर हमको बचाव के ज़रूरी सामान के लिए विदेशों के आसरे रहना पड़ा, तो हमारे अस्तित्व के लिए भी संकट पैदा हो जाएगा ।

संसार की वर्तमान आर्थिक व्यवस्था में हमें विदेशी मुद्रा को किफ़ायत से काम में लाना चाहिए । हमें विदेशों से आए हुए माल पर बहुत कम निर्भर रहना चाहिए । और अपनी ज़रूरी चीज़ें, जहाँ तक सम्भव हो, खुद पैदा कर लेनी चाहिए । आज हमें जहाज़ भी बनाने हैं, जो हमारा माल विदेशों में ले जाएँगे और जरूरी सामान इधर लाएँगे । हमारा समुद्रतट बहुत लम्बा होने के कारण हमारे अस्तित्व के लिए एक मज़बूत समुद्री फौज़ और एक तिजारती बेड़ा होना भी ज़रूरी है। अगर हमें अपने लोगों का पेट भरना है, तो हमें अपने यहाँ अधिक अनाज पैदा करना चाहिये । अगर हमें अपने सब लोगों को उनकी कम-से-कम जरूरत के लायक कपड़ा भी पहनाना है, तो अब की अपेक्षा हमें कहीं अधिक कपड़ा बनाना होगा । पानी से बिजली निकालने का भी एक विशाल

प्रोग्राम हमें हाथ में लेना है, जो साधारण लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा करने का साधन बनेगा। दामोदर घाटी बाँध, हीरा कुद बाँध, भाखड़ा बाँध, और इसी तरह चंबल, कोसी, तुंगभद्रा, गोदावरी, नर्मदा और ताप्ती की बहु-उद्देशी योजनाएँ इस बड़े प्रोग्राम के कुछ उदाहरण हैं। हमें देश की छिपी हुई दौलत से लाभ उठाना है। पेट्रोलियम, कोयला, लोहा, बाक्साइट, और दूसरे खनिज जो इस मुल्क में बहुतायत से पाए जाते हैं, परन्तु अनुभवी आदमियों और कारीगरों की कमी और पर्याप्त पूंजी के अभाव के कारण उनकी ओर हम ध्यान नहीं दे सके थे। अब उधर भी हमें काम करना है।

पर यह सब करके भी हम अपनी विशाल आजादी के एक छोटे-से भाग को ही छू सकेंगे। हमारा देश कृषि प्रधान है और हमारे सामने खेती के मज-दूरों की एक बहुत बड़ी संख्या की भी समस्या है, जो साल में काफी समय के लिए खाली रहते हैं। उनके लिए और उन पर आश्रित उनके परिवारों के लिए हमें को-आपरेटिव ढंग पर घरेलू धंधों की एक कुशल और सुसंगठित व्यवस्था बनानी है और उसको बढ़ाना है। हमें एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा की बुनियाद भी रखनी है, जो हमारे लोगों की प्रकृति, उनकी ज़रूरतों और उनकी विशेष योग्यता के अनुकूल हो। हमें स्वस्थ बुद्धि और स्वस्थ शरीरों के आधार पर एक स्वस्थ और सबल राष्ट्र बनाना है।

अब रियासतों को लीजिए। जिस सफल ढंग से रियासतों को राष्ट्र का अंग बना लिया गया है और उन्हें प्रजातान्त्रिक रूप देने की कार्रवाई की जा सकी है, उसके लिए मुझे बहुत-सी बधाइयाँ और मानपत्र दिए गए हैं, और मेरी बहुत प्रशंसा की गई है। मगर जैसा मैंने अपने नागपुर के भाषण में कहा था, कि अगर मैं इन सब का अधिकारी भी हूँ तब भी अभी बधाई देने का समय नहीं आया। असली काम तो अब शुरू हुआ है। वह यह है कि सदियों से जो कुछ हमने खोया है, उसको पूरा किया जाए और रियासतों में एक ऐसी शासन व्यवस्था बनाई जाए, जो एकदम मज़बूत और कुशल हो। हमें इस बात का पक्का प्रबन्ध करना है कि पुराने और नये को मिलाकर एक ऐसा सुन्दर चित्र बनाया जाए, जो कुल हिन्द के नक्शे में ठीक बैठ जाए। आप इस बात का ध्यान रखें कि बहुत-सी रियासतों में जनतन्त्र-शासन के प्रारम्भिक साधन भी नहीं थे और बहुत-सी रियासतों में स्थानीय पंचायतें आदि भी नहीं थीं, और

अगर कहीं थीं भी, तो वे अपनी शैशव अवस्था में ही थीं। इस सम्वन्ध में वे बाकी भारत से वहुत अधिक पिछड़ी हुई थीं। इन रियासतों में भी हमने करीब-करीब रातों-रात में आधुनिक शासन व्यवस्था का भवन खड़ा कर दिया है। इसके लिए प्रेरणा और बढ़ावा हमें ऊपर से मिला है, नीचे से नहीं। यह पौदा बाहर से लाकर वहाँ लगाया गया है, और जब तक यह वहाँ की धरती में जड़ नहीं पकड़ता, तब तक इसके गिर जाने का खतरा है।

कुछ ऐसे विशेष उत्साही लोग भी हैं, जो यह समझते हैं कि रियासतों की समस्या हल हो गई है। ये लोग अभी से आगे बढ़ने को उतावले हैं। मैं उन लोगों से रियासतों की समस्या के इस चित्र पर शान्ति से विचार करने को कहूँगा, जो अभी मैंने आप के सामने खींचा है। असलियत को न देखना मूर्खता होगी। अगर कहीं तथ्यों को सचाई के साथ देखने से इंकार कर दिया जाता है, तो वे अपना बदला लेते हैं।

मैंने अब तक आपके सामने उन कठिन और भारी ज़िम्मेवारियों का चित्र रखा है, जो उन लोगों पर पड़ी हैं, जिन्हें इस देश के भावी शासन का निर्माण करना है। मुझे विश्वास है कि आप मुझसे सहमत होंगे कि इन जिम्मेवारियों का परिणाम ऐसा है कि, जो हमारा सारा ध्यान अपनी ओर मांगता है। आज हमारे पास तुच्छ झगड़ों में नष्ट करने के लिए ज़रा भी समय नहीं है। यह समय दलबन्दियों और निजी प्रतिद्वन्द्विता का नहीं है। अगर आज़ादी की लड़ाई के लिए हमें भरपूर बलिदान देने और कष्ट सहन करने की आवश्यकता थी, तो राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण के काम में भी पूरी कोशिश और पक्के इरादे से काम करने की ज़रूरत है। बल्कि देश के हित में निःस्वार्थ भाव से जुट जाने की ज़रूरत आज आज़ादी की लड़ाई के ज़माने से भी ज्यादा है। यह हमारे अस्तित्व का प्रश्न है और इसी प्रश्न को हल कर हम अपनी आज़ादी की रक्षा कर सकते हैं, जिस आज़ादी को कीमत देकर हमने प्राप्त किया है। हमें उन भारी ज़िम्मेदारियों को समझना चाहिए, जो आज़ादी के साथ हम पर आई हैं। जो कीमती विरासत हमें अपने महान नेता की तपस्या से और अपने शहीदों के बलिदान से मिली है, उसे हमें फेंक नहीं देना है। अगर हम इस मौके पर ऊपर नहीं उठें और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के इस पवित्र काम में हमने अपने-अपने क्षेत्र अपनी शक्ति के अनुसार भाग नहीं लिया तो इतिहास और आगे आनेवाली हमारी सन्तानें हमें कभी क्षमा नहीं करेंगी।

ज़रूरत की इस घड़ी में देश सेवा की खास ज़िम्मेवारी आप लोगों पर है। पुरानी पीढ़ी के हम लोगों के जीवन का अब सायंकाल आ रहा है। हमें तो सूर्यास्त और सन्ध्या के तारे की प्रतीक्षा है। हमारे दिन अब बीत गए हैं, और हमें गर्व है कि अपनी ज़िन्दगी में ही हमने देश की आज़ादी हासिल कर ली। हम अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं कि हमको कुछ वर्ष ऐसे भी मिल गए हैं, उनमें इस आज़ादी को संगठित करने की यथाशक्ति कुछ सेवा भी कर सके। देश के नेतृत्व का बीड़ा जल्दी ही आपको उठाना पड़ेगा और सार्वजनिक कामों का संचालन करना होगा। आप अपने जीवन की उस अवस्था पर हैं, जब मनुष्य का वास्तविक निर्माण होता है। आप विश्व-विद्यालय को छोड़कर जा रहे हैं और अपने व्यावहारिक तथा सांसारिक जीवन के द्वार पर खड़े हैं। अपने-अपने व्यवसायों में आपको मातृभूमि की सेवा करने के बहुत-से मौके मिलेंगे। आपमें से जो अभी पढ़ाई जारी रक्खेंगे, या जो अपनी पढ़ाई समाप्त कर जीवन के महान विश्वविद्यालय में दाखिल हो जाएँगे वे सब भविष्य के लोग हैं। आप को अपनी बुद्धि, आत्मा और शरीर को उन कामों के योग्य बनाना है, जो आपके सामने हैं। हमने आपको वह सब से कीमती उपहार दिया, जो हम दे सकते थे। जिन जंजीरों और बेड़ियों से हमारी भारत माता के हाथ पैर जकड़े हुए थे, वे आज तोड़ दी गई हैं। हिन्द अब आज़ाद लोगों का देश है। अब आपको गुलामों की तरह व्यवहार नहीं करना पड़ेगा, जैसा कि पहले किसी समय में करना पड़ता था। आज़ाद लोगों की हैसियत से अब आपको अपना मस्तक ऊँचा रखना है। आपको अपनी आज़ादी की इज्जत और उसका नाम बनाए रखना है। जब हम गुलाम थे, तो हम अपनी कमियों और बुराइयों के लिये बहाने ढूंढ़ सकते थे। तब हमारे पास दोष धरने के लिए बने-बनाये पात्र मौजूद थे और अपनी सभी कमियों के लिए हम अपनी परतन्त्रता का नाम ले सकते थे। परन्तु अब हम इस अयोग्यता की बिना पर दूसरों से सहानुभूति या अनुकम्पा नहीं प्राप्त कर सकते। अब अपने भाग्य के निर्माता हम ही हैं और इसे जैसा हम चाहें वैसा बना सकते हैं।

इसलिए मैं आपसे अपील करता हूँ कि जो समस्याएँ मैंने आपके सामने रखी हैं, उन पर आप रचनात्मक रूप से विचार कीजिए। याद रखिए कि विध्वंस करना आसान है, परन्तु निर्माण के काम में असीम शान्ति और मेहनत की ज़रूरत होती है। पुरानी इमारत ढाने से पहले अपने नये भवन का रूप निश्चित

कर लो। उन लोगों के बहकाने में मत आओ, जिनकी विध्वंस वृत्ति, उस पेड़ की जड़ तक काट डालने में संकोच नहीं करती, जो उन्हें छाया और आश्रय देता है। आपको धोखे में आकर किसी नयी विचारधारा को नहीं अपनाना चाहिए। जब तक कि आपका निश्चित मत न हो जाए तब तक किसी नई विचार-धारा के अनुसार आपको आचरण नहीं करना चाहिए। और आज तो आपके सामने एक ही मापदण्ड होना चाहिए, वह यह है कि जो कुछ आप कर रहे हैं उससे राष्ट्र की समस्याओं को सुलझाने में कोई रचनात्मक मदद मिलेगी या नहीं। अधसोचे हल पहले-पहल किसी को भले ही आकर्षक लगें, पर अन्त में उनसे हानि और विनाश ही होता है। आज हमारे पास तजर्बे करने के लिए भी समय नहीं है। जितना समय हमारे पास है, वह सब-का-सब हमें अपनी आर्थिक व्यवस्था ठीक करने में, अपने साधनों को बढ़ाने के काम में लगाना है, ताकि उन लोगों की बढ़ती हुई माँगें पूरी की जा सकें, जो काफी समय से बेहद गरीबी की हालत में पड़े हुए हैं। आपको पूरी ज़िम्मेदारी और विवेक की भावना से काम करना है। मेरा कथन है कि जीवन का निचोड़ अनुशासन है। अनुशासन के बिना मनुष्य समाज या राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकते, अनुशासन आपकी जमातों में और खेल के मैदानों में भी उतना ही ज़रूरी है, जितना वह आपके भावी व्यवसाय में है।

देश को इस समय सधे हुए और अनुशासन की शिक्षा प्राप्त युवकों की ज़रूरत है न कि गैर ज़िम्मेदार उत्पात मचानेवालों की। इस तरह आपके पास दृष्टि भी होनी चाहिए और आदर्श भी। जब तक कि आपके सामने अपनी मातृ-भूमि के भविष्य का यह गौरवमय दृश्य और उसकी महानता और उसके भाग्य की एक आदर्श कल्पना नहीं है, तब तक आप अपने वर्तमान कर्तव्यों और ज़िम्मे-दारियों को सच्चे रूप में नहीं समझ सकते। पर आपको यह अवश्य ही समझ लेना चाहिए कि अपने जीवन में कुछ कर सकने के लिए आपको अपने पैर हमेशा मज़-बूती से पृथ्वी पर जमाए रखने चाहिए। केवल दृष्टि और आदर्शवाद से कुछ न होगा। आपको इन्हें ठोस कार्य के रूप में बदलना होगा और अपने उद्देश्यों को वास्तविकता के कठोर क्षेत्र में पाना होगा। आपको यह याद रखना चाहिए कि अपनी उच्च आकांक्षाओं को अन्य आकांक्षाओं द्वारा ही परास्त कर देना एक बड़ी दर्दनाक घटना है। आप को उस धातु का बनना चाहिए, जो पूर्व निर्धा-रित भाग्य को चुनौती देकर आपत्तियों पर हँस सकती है। सबसे पहले मातृ-

भूमि की सेवा और लगन तथा ध्यान की प्राप्ति होनी चाहिए। आप चाहे किसी भी देश या भू-भाग में जाएँ, आपका कुछ भी व्यवसाय या धन्धा क्यों न हो, आपको सदा अपने देश के हितों का ध्यान रखना चाहिए और अपने दरिद्र देश-वासियों की नैतिक और भौतिक उन्नति को अपना आदर्श बनाना चाहिए। आप ऐसा कोई काम न करें जिससे आपके देश की आज़ादी खतरे में पड़े। बल्कि अपना जीवन देकर भी आप उसकी रक्षा का प्रयत्न कीजिए।

जयहिन्द !

---

(१६)

कांग्रेस विषय समिति, जयपुर

१७ दिसम्बर, १९४८

सदर साहब, जो प्रस्ताव आपके सामने रखा गया है, उस पर बहुत-से संशोधन भी रखे गए हैं। प्रश्न बड़ा विकट है, इससे इसपर बहुत बहस हुई है। दूसरे इस विषय पर दिल खोलकर बोलने से तकलीफ़ होती है। फिर भी अगर चन्द बातें मैं आपके सामने न रखूं, तो मैं शरणार्थियों की कुसेवा करूँगा। इस बात में हमारा मतभेद नहीं है कि शरणार्थियों की पूरी मदद की जाए। मतभेद इसमें होता है कि जो कुछ किया गया है, उसकी थोड़ी-सी तारीफ़ तो छोड़ दो। तब मुझे कुछ तकलीफ़ नहीं होगी। आज आपकी गवर्नमेंट है। वह अपना कर्तव्य पालन नहीं करती है, तो उसे उठा क्यों नहीं देते ? चाहे कोई भी गवर्नमेंट बनाओ, इस मामले में वह कोई पूरा सन्तोष नहीं दे सकेगी, यह इतनी कठिन समस्या है। साथ-साथ जो मुसीबत हम पर आई, उसका भी सामना हमें करना है। केवल प्रस्ताव और संशोधन पास करने से मकान नहीं बन जाते। हर एक आदमी अलग-अलग राय बताता है। मकान तो तब बनेगा, जब उसके लिए

कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन की विषय समिति में शरणार्थियों के बारे में प्रस्ताव पेश करते हुए सरदार पटेल ने १७ दिसम्बर ४८, शुक्रवार की दोपहर के १२½ बजे यह भाषण दिया था।

जरूरी सामान मिलेगा। कौन ऐसा मूर्ख होगा, निष्ठुर होगा, जिसकी सहानुभूति शरणार्थियों से न होगी। लेकिन इस सहानुभूति से शरणार्थी के पेट को कुछ नहीं मिलेगा। इस प्रस्ताव में हमें ऐसी भाषा का उपयोग नहीं करना चाहिए, जिस से शरणार्थी का दिमाग उलटा चले। आपका मकसद दूसरा हो, तो अलग बात है।

आप लोगों से मैं यह कहना चाहता हूँ कि गुस्से में आकर जो लोग बोलते हैं, उस से आपको क्रोध में बह नहीं जाना चाहिये। आप को देखना चाहिए कि जो लोग उस प्रश्न पर काम कर रहे हैं, वे क्या करते हैं और क्यों करते हैं।

देश भर पर टैक्स डाल दो, यह कहना तो आसान है। हमारी कुछ गलती हो तो हमारे पास आओ, हम से बहस करो, हमें समझाओ। मगर कोई आकर कहते हैं कि नहीं करोगे, तो शान्ति नहीं रहेगी। मैं कहता हूँ कोई भी कुछ भी धमकी दे, मुल्क में अशान्ति नहीं होगी। आपको दुख है, तो वह क्रोध की आग बढ़ाने से कम नहीं होगा। मैं अनुभव से कहता हूँ कि आपके लिए देश भर में पूरी सहानुभूति थी। मगर आप जिस तरह से काम करते हैं, सहानुभूति कम होती जाती है। यह कठिन प्रश्न हल करने के लिए दिमाग ठण्डा रख कर जो कुछ भी हो सके, वह हमें करना है। हमारी गवर्नमेंट में कोई भी ऐसा नहीं है, जिसे शरणार्थियों से पूरी सहानुभूति न हो। फिर भी अगर यों ही गवर्नमेंट पर हल्ला किया जाएगा, तो उसका बुरा परिणाम आएगा। हमने रिफ्यूजी मिनिस्टरी बनाई, इसी काम के लिए केबिनेट की कमेटी बनाई। मगर गवर्नमेंट पर हल्ला करने से शरणार्थियों को नुकसान होगा। शरणार्थियों को अगर आप बहका दें और मुल्क में अशान्ति करवाएँ, तो उसकी ज़िम्मेवारी आप पर होगी। अगर कांग्रेस ज़िन्दा नहीं है, तो मुरदे के पास चिल्लाने से क्या फ़ायदा ?

कोई राजा-महाराजा हो, चोर-डाकू हो या कोई दुखी आदमी हो, मगर किसी को अशान्ति करने का अधिकार नहीं है। सिन्ध, पंजाब, बलूचिस्तान और फ्रंटियर में तो मामला साफ़ हो गया। वहाँ कोई हिन्दू सिख रहेगा ही नहीं। परन्तु पूर्व बंगाल का मामला कठिन है। वहाँ के हिन्दू नरम और कमज़ोर लोग हैं। मगर पंजाबी लोग तगड़े हैं। हमारे पास आकर भी वे झगड़ते हैं, उन में इतनी ज़िन्दगी है। पूर्व बंगाल के लोगों की मुसीबत इसलिए ज्यादा है कि वहां तो लोग खाली भूखे मरते हैं, वहाँ इज्जत का भी सवाल है। इसलिए मैंने कहा कि साथ बैठकर फैसला करो। कोई दूसरा रास्ता हो तो मुझे बताइए।

मुझे जो बात सूझी, वह मैंने कही। मैं तो हमेशा शान्ति चाहता हूँ। अगर शान्ति नहीं चाहता, तो जिन्दगी भर गान्धी जी के पास कैसे रहता? मेरे दिल में जो बात आती है, कह देता हूँ। हिन्दू को बुरा लगे, मुसलमान को बुरा लगे, इसकी मुझे परवाह नहीं। जिस भाषा में कहना चाहिए, शायद वह मैं नहीं सीखा हूँ। इतनी कमी ज़रूर है। दूसरी ज़िन्दगी में इस काम के लिए पुनः मुझे गान्धी जी के पास जाना पड़ेगा।

हमने हिन्दुस्तान की जो जवाबदारी ली है, उसे हम छोड़नेवाले नहीं हैं। अगर हमारे बौर्डर (सीमा) पर कोई आए, तो उसके लिए हमारी पूरी तैयारी है। यही मैंने ऐसा कहा था। जो कुछ व्यावहारिक हो, वही करने की नीति से हमारा काम होगा। हमारी उम्मीद तो यह है कि जितने लोग पूर्व बंगाल से आए हैं, उनको वापस जाना ही है। डाक्टर चोइथराम और मेहरचन्द के कहने से हमने हाई पावर कमेटी भी बनाई।

आपको मेरी यही सलाह रहेगी कि शरणार्थी की सेवा करनी हो, तो सरकार की सहानुभूति प्राप्त करो। जो लोग आज पड़े हैं, उन्होंने कभी हाथ पाँव नहीं चलाया। वे शहरों के रहनेवाले हैं। उनका काम कठिन है। केवल प्रान्तों के मन्त्रि-मंडलों से यह काम नहीं होगा। उनको यहाँ रहना है, यहीं धंधा-रोजगार करना है, तो यह सब उनकी सहानुभूति से होगा।

मैंने जो बातें कही हैं, वे सब आपके भले के लिए ही कही हैं। कुछ कड़ी बात भी कही हो, पर बुरे दिल से नहीं कही।

----

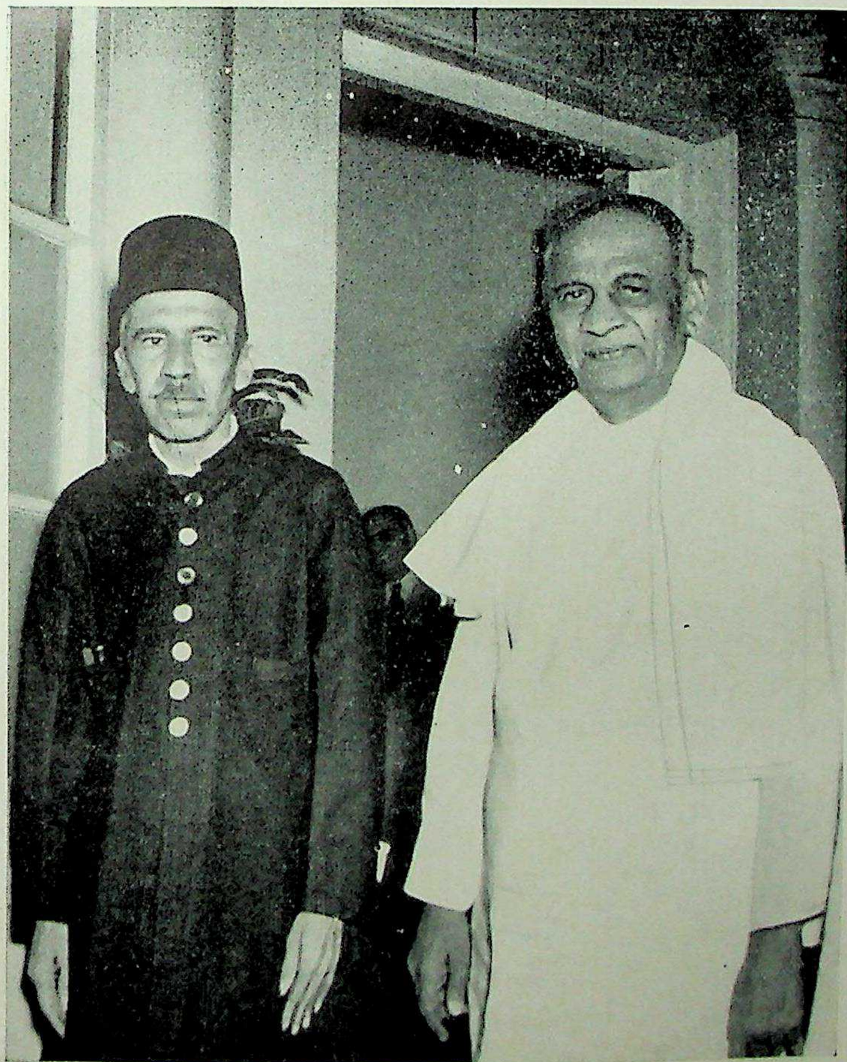
(१७)

फतह मैदान, हैदराबाद

२० फरवरी, १९४९

हैदराबाद रियासत के रहनेवाले भाइयो और बहनो,

आप लोगों से मिलने का यह पहला ही मौका मुझे मिला है और इस मुलाकात से मैं बहुत खुश हूँ। बहुत दिनों से आपसे मिलने की मेरी इच्छा थी। आप जानते हैं कि पिछले कुछ दिनों में आप लोगों को बहुत कष्ट उठाना पड़ा और उधर हम लोगों को भी आपकी वजह से एक प्रकार की निद्राविहीन रातें काटनी पड़ीं। हम सब को बहुत परेशानी हुई, लेकिन परमात्मा की कृपा से सारा काम इस तरह हो गया कि आप लोगों का कष्ट भी कम हो गया और हमारी इज्जत भी बच गई। नहीं तो, काम तो होता ही, लेकिन दुनिया में हमारी बदनामी होती और नुकसान भी बहुत होता। अब कई लोग मुझको सलाह दे रहे हैं कि मुझे क्या करना चाहिए। बहुत से लोग बिना माँगे ही अच्छी-अच्छी राय दे रहे हैं और मुझे सबकी राय सुननी भी चाहिए। सो मैं सुन भी रहा हूँ। जब यह मुसीबत उठी थी, तब भी बहुत लोगों ने मुझे इसी तरह राय दी थी और जवाब में मैंने कहा था कि आप लोग हम पर भरोसा कीजिए और ईश्वर पर भरोसा कीजिए; सब ठीक हो जाएगा। आपने देखा कि ईश्वर पर भरोसा रखने से हमारा काम बिगड़ता नहीं है। तो आज भी जो लोग मुझे अच्छी-अच्छी सलाहें दे रहे हैं, कि मैं जल्दी में सब बातों का फैसला कर



सरदार पटेल हैदराबाद के राजप्रमुख निज़ाम साहब के साथ

दूं। हम इसको उठा दें, उसको उठा दें या इसको बैठावें, उसको बैठावें। उन सबको मैं अदब से एक सलाह देना चाहता हूँ कि जैसी आप लोगों की चिन्ता है, उससे हमारी चिन्ता कम नहीं है। हम भी रात-दिन यही बातें सोचते हैं। हैदराबाद के दो करोड़ निवासियों की भी हमको बहुत फ़िकर रहती है। आपकी सलाह के लिए मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। लेकिन काम तो मुझे अपनी अक्ल से ही करना होगा। आप भरोसा कीजिए कि हम वही कार्य करेंगे जिससे हैदराबाद के लोगों का भला होगा, दूसरी तरह का कोई काम हम नहीं करेंगे। तो आपको हम पर भरोसा रखना चाहिए।

आपको समझना चाहिए कि जब तक हैदराबाद रियासत में पूरी शान्ति नहीं होती, तब तक रियासत में राज्य की क्रान्ति करना यह बड़ी भयंकर चीज़ है। हमें यहाँ कोई ऐसा एक्सपेरीमेंट या तजुर्बा नहीं करना है कि जिससे हैदराबाद की रियासत को जोखिम हो या इसके लोगों का नुकसान हो। हमने एक बात तो आप से पहले ही साफ़-साफ कह दी थी, कि हैदराबाद का भविष्य क्या होगा, इसका फैसला आप लोगों को करना है, हमें नहीं करना है। सारी दुनिया में हमने एलान किया है कि हैदराबाद का भविष्य भला या बुरा बनाना उसके निवासियों का काम है। लेकिन उसमें हमारी भी काफ़ी ज़िम्मेवारी है, इस लिए अपना बोझ भी हम फेंक नहीं सकते। तो आप सबको यह समझ लेना चाहिए कि किस रास्ते पर चलने से हैदराबाद का भला होगा और हम क्या करें जिससे दुनिया के लोग और मुल्क के लोग समझ लें कि हैदराबाद के लोग सयाने और समझदार हैं। इसी से आपकी इज्जत बढ़ेगी और इसी से आपका भला होगा। जब आपके यहाँ कौमी ज़हर का वायुमण्डल बन गया था और ज़हर की बाढ़ें चलती थीं, तो उसमें भले-बुरे सभी लोग बह गए थे। जो काम कभी नहीं करने चाहिए, वे काम भी किए गए। लेकिन उस बुराई का नतीजा भी सब को भोगना पड़ा, बुरे लोगों को, आपको और कुछ दरजे तक हमको भी भोगना पड़ा। क्योंकि जब आग भड़कती है, तो उसमें से जो चिनगारियां उड़ती हैं, उनसे आस-पासवालों को भी कुछ-न-कुछ नुकसान पहुँचता ही है। तो अब वह बाढ़ निकल गई है। जो मैल उभर आया था, वह अब बैठ रहा है। अब पानी शान्त और निर्मल हो गया है। उसको हमें फिर से मैला नहीं करना, बल्कि गंगा के जैसा निर्मल करना है। उसका इलाज यही है कि सब कौमों के लोग पिछली बातें भूल जाएँ। ऐसा समझ लें कि उन्होंने एक बुरा स्वप्न देखा था। अब तो सही रास्ते पर

चलने के लिए हमें अपना मार्ग साफ़ करना है। हमें भी इस काम में आप लोगों को मदद देनी है। आपको यह समझ लेना चाहिए कि आपको हैदराबाद का भविष्य स्वयं बनाना है। इसमें हमारा और कोई स्वार्थ नहीं है।

अगर हमें अपनी प्रणाली बदलनी है, तो वह इस प्रकार से बदलनी चाहिए, जैसा कि हमने पहला काम किया। उसमें कम-से-कम नुकसान हुआ है। यह ढाँचा भी हमें इस सफ़ाई से बदलना चाहिए कि जिससे कम-से-कम नुकसान हो। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमने अभी जो इतना बड़ा काम किया है, वह भी हम बिगाड़ देंगे। इसमें आपका भी भला नहीं है और हमारे लिए तो वह बदनामी का कारण बनेगा ही। हम बदनामी नहीं चाहते। आप हिन्दुस्तान के बीच में पड़े हैं। एक तरह से हिन्दुस्तान के दो हिस्से हो गए हैं और जिन लोगों ने हमारे मुल्क में इस प्रकार का आन्दोलन शुरू किया था, वे लोग जो चाहते थे, वह उन्हें मिल गया। अब हमारे मुल्क में वैसे ही कोई लोग हों, जो मानते हों कि हमारे मुल्क में दो अलग-अलग नेशन (कौम) हैं, तो उन लोगों को बहुत जल्द, वहीं अपना स्थान बना लेना चाहिए, जहां उनकी नेशन के लोग गए हैं। किसी के दिल में ऐसी ख्वाहिश हो, और जिसकी सहानुभूति रात दिन वहीं रहती हो, जिसकी वफादारी वहीं रहती हो, वह खुदा को याद करके वहीं चले जाएँ, तो अच्छा होगा। क्योंकि ऐसा न करने से उनको भी नुकसान होगा, पाकिस्तान को भी नुकसान होगा और हमको भी नुकसान होगा। तो, मैं यह नहीं मानता हूँ कि अब ऐसे कोई लोग भारत में हैं और मैं यह भी मानता हूँ कि यदि हैदराबाद में कोई लोग ऐसे हैं, जिनके दिमाग में अभी तक कोई ऐसी चीज़ बाकी है कि हैदराबाद का भविष्य बनाने में, या हैदराबाद की हुकूमत को रखने या पलटने में बाहर की कोई सत्ता या बाहर का कोई इंसान, किसी तरह से दखल दे सकता है। अगर कोई है, तो वह धोखे में है और यह उसका पागलपन है। मैं कहता हूँ कि बाहर की कोई ताकत हमारे मुल्क में दखल नहीं दे सकती, क्योंकि यह हमारा भीतरी मामला है। कोई उसमें किसी प्रकार की न मदद कर सकता है, न किसी प्रकार का दखल दे सकता है। इसी तरह हैदराबाद का भविष्य क्या होगा, यह निश्चय करना आप ही लोगों का काम है। इसमें दूसरा कोई कुछ नहीं कर सकता। लेकिन मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि मुझे इस बात की बड़ी फिक्र है कि जिन लोगों पर यह बोझ पड़नेवाला है, उन लोगों के कन्धे इतने मजबूत नहीं हैं कि वे इस बोझ को आराम से उठा सकें। तो

इसके लिए मैं आप सब लोगों से खास करके उन लोगों से, जिन्होंने पिछले ५, १० सालों में कुछ कुर्बानियाँ की हैं, बहुत नम्रता से कहूँगा कि आप लोगों का प्रथम कर्त्तव्य यह है कि आप हैदराबाद का वायुमण्डल बदलें। उसमें आप की पूरी ज़िम्मेवारी रहेगी।

जो लोग उम्मीद रखते हैं कि हैदराबाद की रियासत का बोझ उन्हें उठाना है, उनको मैं मुबारकबाद दूंगा। लेकिन साथ ही मैं यह भी कहूँगा कि यह बोझ उठाना बहुत बड़ी बात है। यह आसान बात नहीं है। आपका यह सद्भाग्य है कि इस युग में आपका जन्म हुआ, जब कि हिन्दुस्तान की तवारीख़ लिखी जा रही है, इतिहास बनाया जा रहा है और इस ज़माने में आप इस महत्वपूर्ण ज़िम्मेवारी पर बैठे हैं। तो आपको यह देखना चाहिए कि हैदराबाद के जिन निवासियों ने कुछ बुराइयाँ या गलतियाँ भी की हैं और आज वे हैदराबाद के नव-निर्माण में भाग लेने के लिए तैयार हैं, तो उन्होंने जो कुछ पहले किया है, वह सब आपको भूल जाना चाहिए। अब वैसी कोई चीज़ आपको बीच में नहीं लानी है। तो, जिन लोगों ने स्वतन्त्रता के मैदान में कुर्बानी की, उनको मुबारक है। वे उसके लिए मगरूब हो सकते हैं। मगर जिन लोगों ने कुर्बानी की, उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि अब और भी ज्यादा कुर्बानी करने का वक्त आया है। अब आप दिखाइए कि आपके कन्धों में कितनी ताकत है। तब आपकी कदर होगी और तब इतिहास में आपको जगह मिलेगी। यह पावर पोलिटिक्स (शक्ति राजनीति) का मामला नहीं है, यह पद के लिए दौड़-धूप करने का मामला नहीं है और मेरी उम्मीद है कि हैदराबाद की कांग्रेस पर चाहे हमारा कुछ भी प्रभाव न हो, लेकिन हिन्दुस्तान की कांग्रेस का नाम उसने लिया है और इस तरह हिन्दुस्तान की कांग्रेस का वह बच्चा है। उसके हाथ में हिन्दुस्तान की कांग्रेस की इज़्जत है। तो अगर उनके कामों से उनकी इज्जत में कुछ भी बट्टा लगे, तो वे हैदराबाद को नुकसान पहुँचाएँगे और मुल्क को नुकसान पहुँचाएँगे। मुझे आशा है कि ये लोग अपनी ज़िम्मेवारी समझेंगे।

यह देख कर मुझे बहुत खुशी होती है कि आपमें से बहुत से लोगों ने यह वायदा दिया है कि इस प्रकार का कोई काम नहीं करेंगे, जिससे हमें उनके लिए कोई चिन्ता करने की ज़रूरत पड़े। मैं उन सबको मुबारकबाद देता हूँ। इन लोगों ने काफी काम किया है, काफी कुर्बानी की है। कई लोग कहते हैं कि ऐसे लोगों को राज देने से क्या होगा। यों तो लोग हमारे बारे में भी

कहते थे कि जो ज़िन्दगी भर जेल में पड़े रहे, वे लोग क्या राज करेंगे ? लेकिन अब ज़माना बदल गया है और जो लोग प्रजा के प्रतिनिधि हैं, उन्हीं के पास राजसत्ता जाने वाली है। लोग पूछते हैं कि आपका लीडर कौन होगा ? आप जिसे चुनेंगे, वही आपका नेता होगा। हमने आज जो इन्तज़ाम किया है, वह तो एक टैम्परेरी (अस्थाई) चीज़ है। हमने हैदराबाद में आज जो कुछ व्यवस्था बनाई है, यह व्यवस्था एक "केअर टेकर गवर्नमेंट" (इन्तज़ामी सरकार) है, जिसका मतलब यह है कि आप लोग अपना बोझ उठाने के लिए जब तक अपने लीडर तैयार कर लेंगे, वहाँ तक के लिए यह सरकार है। लेकिन उसका जो स्थायी ढाँचा बनाने का काम है, वह आपके हाथ में है।

कई लोग कहते हैं कि जल्दी-से-जल्दी इस गवर्नमेंट को हटा कर दूसरी लोक सरकार बनानी चाहिए। हम भी चाहते हैं कि हम क्यों बोझ उठाएँ। हम अपने हाथ में ज़िम्मेवारी क्यों रखें ? आप लोग खुद अपनी ज़िम्मेवारी उठाइए। हम यह करने के लिए तैयार हैं। लेकिन हम इस प्रकार की गाड़ी आपके सुपुर्द करना चाहते हैं कि यदि आप कुछ धक्का भी न लगाएँ, तो कई दिन तो अपने-आप ही चलती रहे। लेकिन हम आपको ऐसी गाड़ी भी नहीं देना चाहते जो शुरू ही में पटरी से उतर जाए। ऐसा हो तो उसमें आप लोग मर जाएँगे और हमारी भी बदनामी होगी। ऐसी सलाह जो लोग देते हैं, उनसे मैं कहता हूँ कि आप हैदराबाद की आबोहवा तुरन्त ऐसी बना लें, जिसमें हम जल्दी-से-जल्दी अपने अफ़सरों को यहाँ से हटा लें। हमारे पास अपने लिए भी पूरे आफीसर्स नहीं हैं। लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि ९० फी सदी या उससे भी ज्यादा पुराने अफसरों या पुराने काम करने वाले लोगों का दिल दूसरी तरफ़ था, उनकी राय दूसरी थी, अब हमें उनको रास्ते पर लाना है। उनको तुरन्त फेंक देना ठीक नहीं। उनका दोष भी नहीं था। हम इस तरह कर भी नहीं सकते, क्योंकि इस तरह राज नहीं चल सकता। उनको उठा-उठा कर फेंक देना, यह कोई लायक आदमियों का काम नहीं है। उन पुराने लोगों में से जो वफ़ादारी से और योग्यता से काम करने के लिए तैयार हैं, उनको तो हमने रखा ही है। भले पिछली हुकूमत के ज़माने में उन्होंने कुछ गलत भी काम किया हो। वे गलतियाँ हमें याद नहीं करनी चाहिए। भविष्य में वे क्या करने वाले हैं, यह हमें देखना है। कई लोग हम से

कहते हैं कि उनका विश्वास कैसे किया जाय। उनमें से मैंने बहुत से ऐसे अफ़सरों का विश्वास किया है, जिनके साथ हम ज़िन्दगी भर लड़े, जिन्होंने हमें जेलों में डाला। विश्वास रखना हमारा काम है, लेकिन जो विश्वासघात करे, उसका घात करना भी हमारा धर्म हो जाता है। (तालियाँ)

तो आप लोगों को पुराने अफ़सरों से डरना नहीं चाहिए। लेकिन परमात्मा ने हमको हैदराबाद के दो करोड़ आदमियों की ज़िम्मेवारी दी है और यह ज़िम्मेवारी हम फेंक नहीं देंगे। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि हम लोग हैदराबाद में आए और यहाँ हम ने एक केअर टेकर गवर्नमेंट बनाई, उसको कितना टाइम लगा? पिछले दिनों में यहाँ कितनी मार-काट हुई? मैंने सुना है कि अभी तक यहाँ ऐसे लोग हैं जो औरों को भी मारने की तैयारी में हैं। हमें चीन और बर्मा से सबक लेना चाहिए। हमारे देश के आसपास जो चल रहा है, जो आग फैल रही है, उसी आग में हमें हिन्दुस्तान को नहीं जलाना है। सारी ज़िन्दगी बरबाद कर हम लोगों ने आज़ादी इसलिए नहीं ली। यह जो आज़ादी हमें मिल गई है, वह हमें हजंम करनी है। हमें ऐसा काम भी नहीं करना है कि हिन्दुस्तान के लोग कहने लगें कि इस आज़ादी से तो पहली गुलामी ही बेहतर थी। हम लोग जो रात-दिन मेहनत कर रहे हैं, उसका उद्देश्य यही ह कि आप लोग खुद अपना बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाओ। हमारे जो चन्द कांग्रेस के काम करने वाले लोग इतने दिनों के बाद बाहर आए हैं, मालूम नहीं पिछले दिनों वह क्या काम करते थे? चन्द दिनों से वे बाहर निकले हैं। वह देख ही रहे हैं कि कितने लोग उनका साथ देते हैं।

आप लोग खाली एक-एक वोट देने के लिए तैयार हो जाएँ, केवल उससे काम नहीं चलेगा। यहाँ हैदराबाद में जो पुरानी पोलीस है, उनका दिल किसी चीज़ में नहीं है। वे इस प्रकार की हालत में पड़े हैं कि सारी ज़िन्दगी जो काम किया, अब उसी से उल्टा काम करना पड़ता है। हम लोगों ने जो थोड़ी-सी पोलीस बाहर से लाकर रक्खी है, वह यहाँ के लोगों को जानती नहीं, उनको पहिचानती नहीं। उन्हें अभी यह मालूम नहीं कि यहाँ चोर कौन है और साहूकार कौन है। और जब पकड़ने का समय आता है, तो बहुत से लोग कहने लगते हैं, मैं तो कोई साम्यवादी नहीं हूँ, समाजवादी नहीं हूँ, मैं तो कांग्रेसमैन हूँ। लेकिन जब पकड़ने वाले लोग चले जाते हैं, तो तुरन्त मालूम पड़ जाता है कि वह तो झूठ बात कहते थे। तो आज तक हैदराबाद में

एक तरह से काम चला। हमारे लोगों के इधर आने तक कांग्रेस वाले यहाँ काम करते थे। कांग्रेस ने यहाँ काफ़ी कुर्बानी की। लेकिन जिस तरह से काम करना चाहिए, उस तरह से सब लोग काम नहीं कर सके। क्योंकि कई लोग समझे कि अगर हम अहिंसा से, सत्य से, और ठीक तरह से काम लेने के लिए जाएँगे तो हमको कोई मौका मिलने वाला नहीं है। तो जो हथियार सामने आया, उसी का उपयोग करने लगे। कई लोग तो मेरे पास भी आए और कहते थे कि हमको ५,००० राइफल दो तो हम हैदराबाद सर करेंगे। मैं उनसे कहता था कि अपना दिमाग ठीक करके आओ, तुम पागल हो। हम लोग जानते हैं कि हमारे पास राइफलें तो बहुत पड़ी हैं, लेकिन यह काम राइफल का नहीं है। यह काम इस तरह से नहीं हो सकता। जिन लोगों ने यहाँ रात-दिन काम किया, उनमें से बहुत से कांग्रेसमैन हैं। असल में कांग्रेस का जो दो प्रकार का काम था, उसमें से एक प्रकार का काम तो बिल्कुल नहीं किया गया। यह काम था प्रजा की सेवा करना, रचनात्मक काम करना और लोगों को सही रास्ते पर लाना। वह काम बिलकुल नहीं किया गया। जो प्रजा की सेवा करना चाहता है, वह कैसी भी हुकूमत क्यों न हो, चुपचाप प्रजा की सेवा करता है। लेकिन अब तो हमें सेवा का सारा दरवाज़ा खोल देना है। आप लोग उसके लिए तैयार हो जाओ। लेकिन अब हम किसी को वह रास्ता देने वाले नहीं है, जिसमें लूटमार का मौका हो, जिसमें धोखाबाज़ी का मौका हो और जहाँ खाली पोलिटिक्स के पीछे दौड़ना हो।

मैं यह सिर्फ़ बात ही नहीं करता। यह हमें अमल में करके दिखाना है। यह परमात्मा के सामने हमारा दायित्व है। यह हैदराबाद के दो करोड़ निवासियों के भविष्य का सवाल है। इसमें चन्द आदमी आके धोखाबाजी करते हैं, एक प्रकार टैररिज्म (आतंक) फैलाते हैं कि यहाँ कोई काम न करने दो। वह सब अब नहीं चलेगा। जब आप लड़ते थे, तो उसमें भले बुरे सभी शामिल हो जाते थे। वह अब चल नहीं सकता। यदि कांग्रेसमैन यहाँ खुद उनकी बन्दूक से मारता है, तो ऐसी हालत में अच्छा यह है कि तुम गाड़ी मत चलाओ। इस तरह से मैं आपके हाथ ज़िम्मेवारी दूंगा नहीं क्योंकि मैं हिन्दुस्तान की हुकूमत की तरफ़ से आप लोगों को सलाह देने के लिए आया हूँ। पूरी ज़िम्मेवारी के साथ मैं आपको यह सलाह देता हूँ कि पिछली सब बातों को भूल जाओ, क्योंकि हमें जल्दी ही आगे चलना है। हैदराबाद हिन्दुस्तान के पेट के समान

है। हिन्दुस्तान के जिगर में, हिन्द के पेट में, यदि टच्यूमर (पेट का फोड़ा) पड़ा है, तो हिन्दुस्तान तन्दुरुस्त नहीं रह सकता। तो जो पुरानी हुकूमत यहां थी, वह तो हट गई। परन्तु उसी से हमारा रोग चला गया, या टच्यूमर मिट गया, ऐसा नहीं हो सकता। जब तक आप लोग स्वच्छ न हो जाएँ, आप लोग सावधान न हो जायँ और आप लोग आपस में मिल न जाएँ, तब तक इस रोग का इलाज नहीं होगा। तो हमारी रियासत में जितने लोग हैं, उनको पिछली बातें भूल जानी चाहिए। हिन्दू हों, मुसलमान हों, हरिजन हों, किसी भी कौम के लोग हों, सबको आपस में एक दूसरे का भय निकाल देना है और एक दूसरे के साथ अविश्वास को निकाल देना है। सबको यह समझना चाहिए कि वह पुरानी रात चली गई है, और अब नई सुबह आई है। प्रातः काल के बाद पिछली रात के दुःस्वप्न को हमें याद नहीं करना चाहिए। जिन लोगों को इधर रहना है, उन सबको एक हो जाना चाहिए। जिसमें एक होने की शक्ति न हो, उनको मैं अभी से सलाह देता हूँ कि वे जल्दी-से-जल्दी हैदराबाद को छोड़कर चले जाएँ।

मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूँ कि रियासत में जो भी सरकार बनेगी, वह लोकमत से बनेगी। हमें सबको मौका देना है। लेकिन जिनकी यहाँ महान ताकत है और बड़ी जमात है, उनको यहाँ बड़ा हिस्सा मिलने ही वाला है। उसको कोई रोक नहीं सकता। क्योंकि डेमोक्रेसी (प्रजातन्त्र) की यह नीति है कि जो मेजोरिटी (बहुमत) है, उनको ज्यादा हिस्सा मिलता ही है। लेकिन यहाँ जो माइनोरिटी (अल्पमत) है, उसके दिल में भी यह विश्वास पैदा हो जाना चाहिए कि यदि हम हैदराबाद के प्रति वफ़ादार रहेंगे, तो हमें कोई खतरा नहीं है। उनको भी मौका मिलेगा, जैसे सब को मिलता है। जिस प्रकार की डेमोक्रेसी सारे हिन्दुस्तान में है, उसी प्रकार की डेमोक्रेसी हैदराबाद में भी होगी। तो आप जल्दी से अपना उत्तरदायित्व सम्भालने की तैयारी करें। पिछले डेढ़-दो सालों में जो काम यहाँ किया गया, वह सब उल्टा हुआ और उससे बहुत नुकसान हुआ। उसने हैदराबाद की हालत बिगाड़ दी। इतना ही नहीं, बल्कि हैदराबाद में कोई काम ही नहीं होने दिया। यहाँ ऐसे लोग हुकूमत कर रहे थे, जो एक तरफ़ हमारे साथ समझौता कर रहे थे और दूसरी तरफ़ पाकिस्तान को लोन (कर्ज) देने की कोशिश कर रहे थे। क्या मैं भी उन चीज़ों को याद करना नहीं चाहता? मुझे ऐसी चीज़ की याद करने से दुख होता है।

लेकिन अभी भी वहाँ से सामान आता है। क्या हैदराबाद का भी दिमाग उन लोगों में पड़ा है ?

तो मैं कहना चाहता हूँ कि हैदराबाद का सवाल हैदराबाद को हल करना है। इसके लिए कोई बाहर से आने वाला नहीं है, कोई और बाहर से सलाह नहीं दे सकता। हैदराबाद को हिन्दोस्तान कभी छोड़ भी नहीं सकता और न कभी उसको नेगलेक्ट (उपेक्षित) कर सकता है। तो हमारे ऊपर एक ज़िम्मेवारी है कि हम हैदराबाद को जल्दी-से-जल्दी ठीक कर लें। इसमें मुझे कोई सलाह देने की ज़रूरत नहीं है। अगर यहाँ बोझे उठाने के लिए कोई लोग तैयार हों, और दूसरे सब कोई उन्हें मदद देने के लिए तैयार हों तो उन्हें उत्तरदायित्व देने में जितनी मदद बन सकेगी मैं दूंगा। लेकिन मेरे हाथ से कोई मैला काम नहीं होगा। क्योंकि मैं हिन्दुस्तान की तरफ़ से ज़िम्मेदारी से बोल रहा हूँ। मैं सबसे पुनः कहूँगा कि यदि कोई पुराना पाप अपने दिल में रखेगा, या पुराना ज़हर बाहर निकालेगा तो वह हैदराबाद का नुकसान करेगा और खुद अपना भी नुकसान करेगा। पिछली बातों को भूल जाओ और जल्दी से हैदराबाद की आबोहवा साफ़ कर दो। साफ़ करने का मतलब यह है कि हम एक दूसरे के साथ मिलकर हैदराबाद की आर्थिक और राष्ट्रीय स्थिति ठीक करने में लग जाएँ। यहाँ जो साम्यवादी या कम्युनिस्ट लोग हैं, जो नौजवान कम्युनिस्ट बनके इधर हैदराबाद में बढ़ आए हैं, उनमें कई लोग तो सिर्फ उत्पात करने के लिए इधर आए हैं, क्योंकि इस तरह उन्हें काफी पैसा मिलता है। मैं उनसे कहता हूँ कि हैदराबाद को छोड़ दो, दूसरी जगह पर जाओ, क्योंकि हैदराबाद में एक कम्युनिस्ट को भी मैं सहन नहीं करूँगा। (तालियाँ)

मेरी बात का मतलब यह है कि हैदराबाद में जो ज़हर फैल रहा है, वह सारे हिन्दुस्तान का काम बिगाड़ रहा है। इसीलिए इन लोगों को हैदराबाद छोड़ कर बाहर चले जाने की सलाह मैं दे रहा हूँ। तो बहुत से लोग आस-पास से आ कर इधर पड़े हैं। जितने कम्युनिस्ट यहाँ पकड़े जाते हैं, वह बाहर से आए हैं। वह बाहर से क्यों आए ? इसीसे मैं उनसे कहता हूँ कि तुम बाहर जाओ, जहाँ तुम्हारे लोग हैं, वहाँ जाओ। तुम इधर क्यों आए ? जब इस तरफ़ हैदराबाद की आज़ादी की लड़ाई चलती थी, तब कुछ-न-कुछ बहाना निकाल कर वे इधर आ गए। उसमें उन्होंने क्या काम किया, वह मैं कहना नहीं चाहता। भला किया, बुरा किया, रुकावट की, वह सब कुछ मैं कहना नहीं चाहता। लेकिन

मैं यह ज़रूर कहना चाहता हूँ कि अब काम बिगाड़ने का समय नहीं रहा। कोई कहता है कि इन लोगों ने अच्छा काम किया। ठीक है, अच्छा किया होगा। लेकिन अच्छा और बुरा दोनों को मिलाने से नतीजा जो निकलता है, वह बुराई का ही होता है। आज हैदराबाद का सारा काम इसीलिए रुक रहा है। देखिए, हमें अब चुनाव का काम करना है। तो यदि यहां मतपत्रक बन जाए, इलेक्टोरल रोल बन जाए तब तो हमारा काम आगे चले। और इलेक्टोरल रोल बनाने के लिए हमें बाहर से आफ़िसर ला के रखने हैं। यह कम्युनिस्ट लोग वहाँ भी पहुँच गए हैं और इलेक्टोरल रोल बनाने के काम में भी रुकावट डालते हैं।

साथ-ही-साथ एक और काम भी आप को करना है। हमारे मुल्क में, जैसा कई और जगहों पर है, हजारों लोग अस्पृश्य माने जाते हैं। उनकी हालत बहुत बुरी है। इन अस्पृश्य लोगों की सेवा भी आज हमें करनी है। हम कोई ऐसा काम न करें, जिसकी वजह से उनके दिल में ऐसी भावना पैदा हो जाए कि हैदराबाद तो आज़ाद हुआ, लेकिन हमारी आज़ादी अभी नहीं आई। जैसी गुलामी पहले थी, वैसी गुलामी अब भी है। हमने सारे हिन्दुस्तान में से अस्पृश्यता को नष्ट करने के लिए आन्दोलन शुरू किया है, कानूनों से हमने अस्पृश्यता को बन्द किया है। यहाँ की कांग्रेस का यह भी कर्तव्य हो जाता है। हमें अपनी सारी ताक़त इन लोगों को उठाने के लिए खर्च करनी है।

दूसरा काम मज़दूरों का है। हैदराबाद में जो कारखाने चलते हैं, जो इण्डस्ट्रीज़ चलती हैं, उनमें मज़दूरों को क्या वेतन मिलता है? यह आज तक कुछ भी चला हो, लेकिन अब इस तरह से नहीं चल सकता। हिन्दुस्तान में मजदूरों के लिए जो कानून है, हिन्दुस्तान में उन्हें जो वेतन मिलता है और जिस प्रकार उनका संगठन बनता है, वह सब हमें यहाँ भी करना है। इस प्रकार मज़दूर को राहत मिलनी चाहिए और उसको उत्तेजना मिलनी चाहिए, ताकि वह ज्यादा से-ज्यादा काम करे। लेकिन यह जो कम्युनिस्ट लोग यहाँ आए हैं, और जो हमारे यहाँ फले-फूले हैं, उसका कारण हम भी तो हैं, कि हमने मजदूरों और गरीबों को दबा रखा है। हमने किसानों को भी इसी तरह दबाया, मज़दूरों को इसी तरह से दबाया और उससे कम्युनिस्टों को उनमें काम करने का मौका मिला। तो जिस प्रकार मछली को पानी में घूमने की जगह मिलती है, मौज मिलती है, उस प्रकार कम्युनिस्ट लोगों को इधर मौज मिल गई।

हमें अब यह सोचना चाहिए कि हमें किस रास्ते पर चलना है। हैदराबाद रियासत में यदि हमें जल्दी से राष्ट्रीय और आर्थिक उन्नति करनी है, तो हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम जल्दी से-जल्दी स्वस्थ हो जाएँ। मैं यह देखने के लिए आया हूँ कि हैदराबाद की हालत क्या है। और मैं खुश हूँ कि आप लोगों ने अब ऊपर की शान्ति तो पैदा कर ली है। लेकिन मैं भीतर की हालत देखना चाहता हूँ। जब तक भीतर की शान्ति ठीक न हो, ऊपर की शान्ति कभी भी टूट जाएगी। यह टूटनी नहीं चाहिए। क्योंकि जब तक पूरी शान्ति न हो जाए, तब तक हमारी प्रगति नहीं चल सकती। तो, हमें यहाँ पूरी शान्ति पैदा करनी है। यह भी आपको देखना है कि आज तक हैदराबाद के राज्य का कारोबार एक साथ में था और इस वजह से यहाँ की एक कौम में ज्यादा प्रगति नहीं हुई। अब आप लोगों की ख्वाहिश है कि आपको भी उसमें हिस्सा मिले। हिन्दुस्तान में भी यही हालत थी। हम सब लोग उसी कोशिश में थे कि हिन्दुस्तान विदेशियों के हाथ में से छूट जाए। तब जैसी कुर्बानी आप लोगों ने की, हम लोगों ने भी की थी। हमें आजादी मिली, आप लोगों को भी मिली। लेकिन हम लोगों ने सत्ता अपने हाथ में ले ली है, आप लोगों को अभी सत्ता नहीं मिली।

हम लोगों ने जब सत्ता हाथ में ली, तो वहाँ बहुत बिगाड़ हुआ। हमारे न चाहते हुए भी बिगाड़ हुआ और सारी दुनिया में हमारी बदनामी हुई। उसी प्रकार इधर नहीं होना चाहिए। हमारे यहाँ बिगाड़ इसलिए हुआ कि हमें मज-बूरी से मुल्क के दो हिस्से करने पड़े। वहाँ पहले ही काफी ज़हर भरा हुआ था, वह फूट गया। हैदराबाद में भी जहर तो भरा हुआ है, लेकिन इस ज़हर को हमने फूटने नहीं दिया। अगर यहाँ परदेसी हुकूमत होती, तो उसी तरह से होने वाला था। यहाँ बहुत लोगों ने कोशिश भी की थी कि वैसा ही हो। लेकिन खुदा की मेहरबानी से हम लोग बच गए। अब जब बच गए हैं, तो हमें इस प्रकार काम करना है कि ज्यादा बिगाड़ न हो। इसी में आप सबका हित है। हमारे मुल्क में नौजवान बिगड़ जाते हैं और गलत रास्ते पर चलते हैं। मैं चाहता हूँ कि उन्हें गलत रास्ते पर चलने का मौका न मिले। इसलिए जितना काम करना है, वह तो हमें करना ही है, लेकिन हमें किसी भी तरह हैदराबाद में लाठी से काम लेने वालों को चलने नहीं देना है। बन्दूक से और लाठी से काम लेना हो तो वह फौज का और पोलीस का काम है, दूसरे का नहीं। वह उनके पास रहनी चाहिए, क्योंकि वह समझते हैं कि कहाँ बन्दूक चलानी है, कहाँ नहीं

चलानी। यह दूसरे का काम नहीं है। जिसे कलम से काम लेना है, उसको बन्दूक दे देने से वह अपनी खुदकुशी करेगा, या दूसरे को मार आएगा। तो मैं आपसे अदब से कहना चाहता हूँ कि हमारे मुल्क में, हमारे राज्य में, जब कोई नौजवान गलत रास्ते पर चलते हैं, तो उनको समझाने की कोशिश करना आपका काम है। यह खाली कांग्रेस का ही काम नहीं। यह सबका काम है। यदि कोई गलत रास्ते पर चलना चाहे, हिंसा से काम लेना चाहे, तो उसको वैसा नहीं करने देना चाहिए। उसको पुलिस के सुपुर्द कर देना चाहिए।

कई लोग मुझसे कहते हैं कि पुलिस में या और जगह पर बिना झूठ के काम नहीं चलता। मैं मानता हूँ कि नहीं चलता होगा। क्योंकि जहाँ बुराइयों के लिए काफी अवकाश है, वहाँ वे होती ही होंगी। अभी तक तो समय भी बहुत कम हुआ है। अभी तक लोगों में विश्वास पैदा करने का काम नहीं हो पाया है। वह काम खाली अमलदारों से या आफीसरों से नहीं होगा। लोक नियुक्त संस्था कांग्रेस के ऊपर यह बोझ है। उसको यह काम करना है। कांग्रेस का दरवाज़ा हम खोल दें। उसमें ऐसे सब लोगों को हमें स्थान देना है, जो कांग्रेस का प्रोग्राम कबूल कर लें। अगर उसमें लोग इस ख्याल से आएँगे कि भीतर घुस के कुछ गड़बड़ करेंगे,तो वह कुछ नहीं कर सकेंगे। आप लोगों को घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। कांग्रेस यदि हैदराबाद की रियासत के लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार हो, और थोड़ा-सा दरवाज़ा खोलकर कुछ गिने-चुने लोगों को आने दे, तो उससे काम नहीं चलेगा। अपना दरवाज़ा खुला रखो, हिम्मत से काम लो और साफ़ काम करो तो सारी रियासत आपके पीछे चलेगी, कोई भी उसमें रुकावट नहीं डाल सकेगा।

जो चन्द बातें मैंने आपके सामने रखी हैं, उन सबके बारे में आपको सोचना है। मैंने कोई कड़ुवी बातें कही हो, तो आपको यह समझना है कि वह दवा है। दवा कड़ुवी तो होती है, पर बहुत फ़ायदा करने वाली होती है। मैंने आपको जो दवा दी है, वह घोलकर अगर आप लोग पी जाएँगे, तो उससे आपको बहुत फ़ायदा होगा और आपकी तबियत ठीक हो जाएगी। आपकी तबियत जल्दी ठीक हो, तो मुझे बहुत बड़ी खुशी होगी, क्योंकि हम लोग अपने सिर का बोझ आपके सिर पर डालना चाहते हैं। आप उसे उठा लीजिए। आपका बोझ हमारे ऊपर ज्यादा दिन नहीं रहना चाहिए। क्योंकि हमको दुख होता है कि कहाँ तक हम आपका बोझ उठाएँ ? तो हम आपसे ज्यादा परेशान हैं।

यह बोझ आप सब जल्दी उठाएँ। उसकी तैयारी करें। जो कांग्रेस में नहीं है, वह भी हमसे कहते हैं कि भई जल्दी यह काम करो। यह राजकाज कांग्रेस वालों को ही दे दो। इससे हमें कोई नुकसान नहीं है और न कोई बखेड़ा होने वाला है। ऐसा हो जाए, तो हमारी फौज अपनी बैरकों में बैठकर मौज करे। वह इधर क्यों आए? आपके सामने मिलिटरी को क्यों लाना पड़े? यह तो जब जमाना था, तब उसे लाना पड़ा। अब वह चला गया और अब फौज की क्या ज़रूरत है? उसको हम क्यों तकलीफ़ दें? जब हिन्दुस्तान पर मुसीबत हो, तब उनका काम है।

और जो हैदराबाद की पुरानी पुलिस है, उसको मैं बड़े अदब से कहना चाहता हूँ कि खुदा का नाम याद करके जो तुम खाते हो, उसको हराम न करो। यदि आप से यह काम नहीं होता, तो मेहरबानी करके छोड़ दो। क्योंकि अब ज़माना बदल गया है। अब हमें इन्साफ़ से और वफ़ादारी से काम करना है। जितना पैसा हम लेते हैं, उसको हराम नहीं करना है। हमें पूरा काम करना है। न हो सके तो हट जाएँ। हैदराबाद की रियासत में जो अमलदार लोग पड़े हैं, उनसे भी मैं कहूँगा कि आप लोगों को पिछला सभी कुछ भुलकर ठीक तरह से काम करना है। क्योंकि यदि आपके दिल में कभी कोई ख्वाहिश हो कि हैदराबाद में कोई पलटा हो जाए तो कोई दूसरी चीज़ आएगी, यह होने वाला नहीं है। हिन्दुस्तान का इतिहास बदल गया, उसका भूगोल बदल गया और अब हम इस तरह से काम करना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के रहने वाले सब लोगों का कल्याण हो और सब का भला हो। सबको अच्छी तरह से खाना-पीना मिले, कोई दुखी न रहे। उस काम में आप लोगों को साथ देना है। पहले हम गलत रास्ते पर चलते थे, अब हमें सही रास्ते पर जाना है। तो सही रास्ते पर चलने में आप लोगों को मदद करनी है। नहीं करनी, तो मेहरबानी करके छोड़ दीजिए।

मैं आप सबसे यह कहना चाहता हूँ कि जो ढाँचा, जो तन्त्र हमारे पास है, वह इस प्रकार का तन्त्र है कि यदि वह आपके हाथ में देंगे, तो आप उसे चला न सकेंगे। जो कुछ भी बनेगा, वह आखिर हमारे पास तो रहने वाला नहीं है। जब चुनाव होगा, तो जिसे आप वोट देंगे, सत्ता उसी के पास जाएगी। तब इसके भीतर बैठकर आप इस चीज़ को किस तरह से चलाएँगे, वह आपका ही काम होगा। तो आपको ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिसमें आपका

ही नुकसान हो। उससे खाली आपका ही नहीं, सारे हिन्दुस्तान का नुकसान होगा। आज दुनिया बहुत छोटी हो गई है। कोई भली-बुरी चीज़ हम इधर करें, तो वह सारी दुनिया में जाती है। दुनिया कहती है कि ये ऐसे पागल और बेवकूफ़ हैं कि इस तरह से काम करते हैं। हैदराबाद का दरवाज़ा सब तरफ़ से खुला है। परदेशी लोग तो इधर आते हैं और देखते हैं। हमें कोई धोखा नहीं करना था, जो हम हैदराबाद के दरवाज़े बन्द करते। क्यों हम धोखा करें? हमने एलान कर दिया कि हैदराबाद का भविष्य हैदराबाद के लोगों के सुपुर्द है। आज सारी दुनिया का एक ही रास्ता है। डेमोक्रेसी (प्रजातन्त्र) को सब कबूल करते हैं। कोई दूसरा रास्ता हो ही नहीं सकता। तो हम किसी को रोकने की कोशिश क्यों करे? क्या हमारे में कोई ऐब है? क्या हम कोई ऐसी बुरी चीज़ करना चाहते हैं, जिसे हम दुनिया से छिपाएँ? हम ऐसा कोई काम नहीं करना चाहते, जो हमें छिपाना पड़े।

हैदराबाद में आपकी सरकार बन जाय, ऐसी मेरी ख्वाहिश है। उसमें मेरी जो कुछ मदद होगी, उसे करने को मैं तैयार रहूँगा। मैं आपसे बहुत अदब से और प्रेम से प्रार्थना करूँगा कि आप लोग खुदा की बन्दगी करते रहें कि बहुत दिनों तक हमने दुख उठाए हैं और अब अधिक दुख हमारे सर पर न आएँ। साथ ही यह भी कि हम योग्यता प्राप्त करें और ईश्वर हमको गलत रास्ते पर न चलने दे। मैं एक दफे फिर भी नौजवानों से प्रार्थना करता हूँ कि गलत रास्ते पर न चलो। हमको मजबूर न करो कि हमारे हाथ से आप लोगों को जेल में जाना पड़े या आपके पीछे गोली लेकर सिपाहियों को भेजना पड़े। यह बहुत बुरा काम है, इससे हमको बहुत कष्ट होता है। इससे आपको भी कष्ट होना चाहिए। इतिहास में कई सदियों के बाद हिन्दुस्तान को मौका मिला है। इतना बड़ा एक हिन्दुस्तान, आज़ाद हिन्दुस्तान, पहले कब था? अब उसकी जगह कहाँ होनी चाहिए? दुनिया के मुल्कों में अपनी जगह पर बैठाने का जो सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है, उसको हम फेंक दें तो इससे अधिक बुरा और क्या होगा। हमें ऐसे काम करने चाहिए कि भविष्य की प्रजा कहे कि हमारे पूर्वज बड़े लायक थे, बहुत नेक थे। आपकी औलाद होना वे गर्व की बात समझें। देखिए, आपके सामने क्या हो रहा है? हमारे लोग मारे-पीटे जाते हैं। देखिए, बर्मा में क्या हो रहा है। वहाँ से भाग-भागकर लोग मद्रास में आ रहे हैं। हम तो आज़ाद हुए, लेकिन हमारे जो लोग पड़े हैं, उनकी अब तक जो इज्जत होनी

चाहिए, वह नहीं हुई। क्यों ? इसलिए कि हम खुद आज़ाद तो हुए, लेकिन हम स्वस्थ नहीं हुए। हमारी आज़ादी ऐसी होनी चाहिए कि दुनिया में सब जगह हमारी इज्जत बढ़े और सब लोग मानें कि हम लोग नेक हैं। इसी प्रकार की आज़ादी के लिए हमने काम किया था। उसमें हैदराबाद अलग नहीं रह सकता। उसको भी हमें साथ लेना है। उसको साथ लेने की हमने भरसक कोशिश की है। इसी में आप सब का सुख है। एक दूसरे के साथ किसी का वैर बढ़ा कर नुकसान करने के लिए हमने वैसा नहीं किया।

आज आप लोगों ने बड़े प्रेम से मेरा जो स्वागत किया, इसके लिए मैं आपका ऋणी हूँ। आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। बहुत धूप में भी आप इतनी बड़ी संख्या में इतने समय से मेरी बात सुनने के लिए बैठे रहे। इससे मुझे बहुत खुशी होती है। लेकिन अगर आप मेरा स्वागत करते हैं, मुझ पर प्रीति रखते हैं, तो मेरी बात आपको सुननी चाहिए और उसे मानना चाहिए। मैं जो कुछ कहता हूँ, आपकी भलाई के लिए कहता हूँ, मुल्क की भलाई के लिए कहता हूँ। खुदा हाफिज़ !

---

(१८)

उस्मानिया युनिवर्सिटी में

२१ फरवरी, १९४९

उस्मानिया विद्यालय के कुलपति, कुलनायक, सभ्यगण, विद्यार्थी भाइयो और बहनो,

आप लोगों ने मुझ पर जो इतनी इज्जत बख्शी, उसके लिए मैं आप का शुक्रिया अदा करता हूँ। चन्द दिनों पहले जब आपके विश्वविद्यालय के कुल-नायक मुझे निमन्त्रित करने मेरे पास दिल्ली में आए और पदवीदान की बात मेरे सामने रखी, तो मैं झिझकने लगा। क्योंकि मैं नहीं समझता हूँ कि विश्वविद्यालय की किसी पदवी के लिए मुझ में कोई योग्यता है। मैंने तो दुनिया के खुले विद्यालय की शिक्षा पाई है, और अनुभव से दुनिया का कुछ-न कुछ रंग-ढंग देख लिया है। लेकिन जब मैं यह आलीशान महल देखता हूँ, और इनमें जो खूबियाँ भरी हैं, अपनी कल्पनाशक्ति से जब मैं उनका ख्याल करता हूँ, तब मैं डरता हूँ कि क्या सचमुच इस विद्यालय की डिग्री लेने की मेरी योग्यता है ? (हँसी)

मैं जो कहता हूँ यह हँसी मज़ाक की बात नहीं है। मैं सही बात कहता हूँ। इसमें सारे भारतवर्ष के पुराने से लेकर आजतक के जो कल्चर (संस्कृति) थे, उन सबको जिस तरह मिलाया गया है, वह एक बहुत बड़ी खूबी है। उसी खूबी को यदि हमने समझ लिया होता और हमारे जो अलग-अलग कल्चर

हैं, उनको हमने दिल से मिला दिया होता, तो आज हिन्दुस्तान की शक्ल ही दूसरी होती। लेकिन हम भूले-भटके लोग गलत रास्ते पर चले और उसके बुरे असर से हिन्दुस्तान की कोई यूनिवर्सिटी भी बच नहीं सकी। तो आप कैसे बचते ? मैं इसमें आप का कोई दोष नहीं निकालूंगा। लेकिन मैं हृदय से आपसे एक विनती करूँगा, जिसके ऊपर आपको पूरी तरह सोचना है। इस विश्वविद्यालय में जिन नौजवानों ने शिक्षा पाई है और जिनको आज पदवी दी जाती है, उन लोगों के ऊपर जो ज़िम्मेवारी आने वाली है, उसका ख्याल करने के लिए मैं बड़े अदब से आप से अर्ज़ करूँगा। क्योंकि आप लोगों ने इतने बड़े जल्से में, इतने साक्षियों के सामने आज शपथ ली है। आपने प्रतिज्ञा की है कि यह पदवी लेकर आप ज़िन्दगी भर इस प्रकार की कोशिश करते रहेंगे कि योग्यता से अपना जीवन निबाहें। यदि इतने नौजवान सच्चे दिल से यह कोशिश करते रहें, तो मेरे दिल में पक्का विश्वास है कि हिन्दुस्तान का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। और इतने नौजवान यदि समझ लें कि जिस प्रकार इस विश्वविद्यालय में कल्चरों का मिलान किया गया है, उसी तरह से हमें अपने दिलों का मिलान करना है, तब हमारी भलाई होगी।

जो कुछ हमारी किस्मत में था, वह हो गया। और जो कुछ हुआ, उसके ऊपर हमें परदा डाल देना चाहिए। अब तो अपना भविष्य, और अपने मुल्क का भविष्य बनाने का काम हमारे सिर आ पड़ा है। हम में इस बात की योग्यता है या नहीं, यह तो खुदा को ही मालूम है। लेकिन मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान में चार करोड़ मुसलमान रहते हैं। उन्हें ३० करोड़ बाकी गैर-मुसलमानों के साथ मिलकर रहना है। हम सब को मिलकर हिन्दुस्तान का भविष्य बनाना है। यदि पाकिस्तान का भविष्य ठीक करना हो, तो वह भी हमीं लोग कर सकते हैं, वह दूसरों से नहीं हो सकता। (तालियाँ) क्योंकि आप को यह समझना चाहिए कि हम इस भूमि में पैदा हुए, इसी मिट्टी से बने और आखिर में इसी मिट्टी में हमें मिल जाना है। तो जैसा महात्मा गान्धी ने ज़िन्दगी भर हमको सिखाया, कि सब मजहबों में जो अच्छी बातें हैं, सब मजहबों में जो सही चीज़ें हैं, उन्हें घोल-घोल कर पी जाने की कोशिश करनी चाहिए। हमारा अपना मज़हब तो अच्छा है ही, मगर और मजहब भी अच्छे हैं। मजहब में जाने-अनजाने जो बुराई और गुस्सा आ गया है, उसको हमें निकाल देना है। उससे हमें अलग रहना है। इस विश्वविद्यालय के जो

प्रोफ़ेसर और आचार्य लोग हैं, उन पर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। आप लोग, जो इस में शिक्षा पाते हैं और जो पदवी लेने की कोशिश कर रहे हैं, उन पर इससे भी बड़ी ज़िम्मेदारी है। क्योंकि कल हिन्दुस्तान के भविष्य का बोझ आप लोगों के ऊपर पड़ने वाला है।

मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि बहुत दिनों के बाद हमारा मुल्क गुलामी से छूट गया है और आज हमारे सामने बहुत से मैदान हैं। काम करने का बड़ा मैदान हमारे सामने खुला पड़ा है। यदि हमारे में योग्यता होगी, तो हमें बहुत से ओपनिंग (निकास) मिलने वाले हैं। लोगों को डिग्री लेने के बाद पहले चाकरी हासिल करने के लिए जो दौड़भाग करनी पड़ती थी, वह आप लोगों को नहीं करनी पड़ेगी। परन्तु यह तभी होगा, यदि आप में योग्यता होगी। कई सदियों के बाद यह मौका हमें मिला है। तो हमारा कर्तव्य है कि इससे लाभ उठाएँ। यह डिग्री लेकर हमने यह प्रतिज्ञा ली कि हम खुदा की बन्दगी करेंगे और अपने फर्ज़ पूरे करेंगे, इसके लिए खुदा हमें योग्यता दें। हमें नम्रता से कहना चाहिए कि यह हमारा मुल्क है, जिसमें हमारा जन्म हुआ, जिसमें हमने शिक्षा पाई और जिसमें हमें अपनी ज़िन्दगी बसर करनी है। अपने मुल्क की तरक्की के लिए हमारा क्या कर्तव्य है, क्या ज़िम्मेदारी है, यह सब चीज़ हमारे ख्याल रखने की है। पीछे जो हमारी गल्तियाँ हुईं, खुदा वैसी गल्ती हमसे फिर न कराए, इसके लिए भी हमें प्रार्थना करनी है। खुदा की इबादत करना और भाई भाई की तरह हिन्दुस्तान में रहना हमारा फर्ज़ है। हिन्दुस्तान की इज्जत बढ़ाने के लिए, हिन्दुस्तान के सच्चे सपूत के मुआफिक हम रहें और रहना सीख लें, तभी यूनिवर्सिटी की जो डिग्री हमने पाई है, इसकी योग्यता हममें होगी।

वाइस चांसलर साहब ने मेरे बारे में जो बातें कहीं, उनके बारे में मैं आपसे कुछ न कहूँगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ हूँ और मेरा स्थान क्या है। मुझे यदि अपनी जगह का ख्याल न होता, तब तो मैं पागल हो जाता। लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं हिन्दुस्तान के एक वफ़ादार सिपाही की जगह पर खड़े रहना चाहता हूँ और यदि वफ़ादारी के इस मार्ग से मैं एक कदम भी चूक जाऊँ, तो मैं खुदा से प्रार्थना करूँगा कि मेरा जीवन उसी समय खत्म हो जाए। क्योंकि इन्सान की असली कदर तो उसके जीवन के बाद होती है। मरने तक जो गल्ती नहीं करता, तभी उसका जीवन ठीक होता है। लेकिन ऐसे लोग कितने हैं, जिन्हें यकीन हो कि वे कभी गल्ती न करेंगे? ऐसा दावा कौन कर

सकता है ? तो हमारी प्रार्थना होनी चाहिए कि जबतक खुदा हमें ज़िन्दगी दे, तब तक हम सही रास्ते पर चलें और कोई गल्ती न करें। बड़ी नम्रता से हमें हमेशा खुदा से यही प्रार्थना करनी चाहिए।

अपने जीवन में हम जो कुछ कर पाते हैं, वह कोई बड़ी बात नहीं है, जिसके लिए हम मगरूरी ले सकें। क्योंकि जो कुछ हम करते हैं, उसमें हमारा क्या भाग है ? असल में कराने वाला तो खुदा है। इन्सान तो खाली एक हथियार बनता है। इन्सान यदि जागृत हो तो उसका यह धर्म हो जाता है कि हमेशा प्रार्थना करें और कोशिश करें कि उससे कोई गल्ती न हो। अभी आप नौजवानों ने खुदा से प्रार्थना की है। आप नौजवानों को और जिन विद्यार्थियों को उम्मीद है कि आगे चल कर उन्हें भी ऐसी पदवी मिले, उनसे मैं एक ही बात कहूँगा कि हमारे देश की इज्जत को कोई भी दाग लगे, ऐसा कोई काम आप से कभी न हो। आप के कारनामों से हमारी इज्जत हमेशा बढ़ती रहे और दुनिया में लोग कहें कि हिन्दुस्तान के नौजवान भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद दूसरे प्रकार के बन गए हैं। हमारे लोग भी समझें और दुनिया के लोग भी समझें कि भारत की जो पुरानी संस्कृति थी, ये नौजवान उसके वारिस हैं।

उस जमाने का नाम लेकर आजकल जो लोग युनिर्वसिटियों के नौजवानों को गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं, वह मुल्क की भलाई की नहीं, बल्कि मुल्क को गिराने की कोशिश कर रहे हैं। वे आपस में लड़ते हैं और देश तथा नौजवानों का नुकसान ही करते हैं। वे लोग असली भारतीय संस्कृति को छोड़ कर पराई संस्कृति के मोह में पड़े हैं और वे मुल्क को आगे ले जाने वाले नहीं है।

आपने अपनी यूनिवर्सिटी की तरफ़ से मुझे भी पदवी-दान दिया है। जैसे आपको प्रयत्न करना है, वैसे ही मुझे भी कोशिश करनी है कि इस पदवी के लिए खुदा मुझ को योग्यता दे। और मैं उसकी कोशिश करूँगा। खुदा आपका भला करे।

———

(१९)

मैसूर म्युनिसिपैलिटी के अभिनन्दनोत्सव में

२५ फरवरी, १९४९

मैसूर म्यूनिसिपैलिटी के अध्यक्ष और म्यूनिसिपैलिटी के सभ्यगण,

आप लोगों ने मुझे जो मानपत्र दिया, उसके लिए मैं आपका आभार मानता हूँ। मैं इधर कोई दस-बारह साल के बाद आया हूँ। इस बीच में दुनिया बहुत उलट-पलट हो गई है। हिन्दुस्तान में भी उलट-पलट हुई है और आपके यहाँ भी काफी उलट-पुलट हुई है। देश में कुछ अच्छी और कुछ बुरी बातें हुई हैं, लेकिन ईश्वर की कृपा से आपके यहाँ कोई बुराई नहीं हुई, और ठीक शान्ति से मैसूर राज्य की प्रगति हो रही है।

दुनिया में आज सभी जगह अशान्ति है। आज दुनिया में जो एक प्रकार की बाहर की शान्ति दिखाई पड़ती है, वह असल में शान्ति नहीं है। हर मुल्क में बहुत सी तकलीफ़ें हैं, बहुत बेचैनी है। यूरोप, एशिया जहाँ कहीं देखें, जिस प्रकार का अमन और शान्ति होनी चाहिए, वैसी नहीं है। हिन्दुस्तान में हम लोगों की इच्छा थी कि हम हिन्दुस्तान को आज़ाद कर दें, वह इच्छा एक तरह से पूरी हुई। दूसरी तरह से जो उम्मीद रखी थी, वह पूरी नहीं हुई। एक तरफ़ तो हमने विदेशी राज को हिन्दुस्तान से हटाया। दूसरी तरफ़ हमने जिस प्रकार आपस में मार पीट की, गुण्डागर्दी की और दुनिया के सामने जो

प्रदर्शन किया, वह हमारी संस्कृति के खिलाफ़ और महात्मा गान्धी के शिक्षण के बिलकुल विरुद्ध था। उससे गांधी जी को बहुत कष्ट हुआ। उनकी तपस्या से हमको आज़ादी तो मिल गई, लेकिन हमने उनका खुद का प्राण लिया। यह बहुत ही बुरा हुआ। इससे दुनिया में हमारी बदनामी हुई, बेइज्जती हुई। लेकिन उनके मरने के बाद हमने कुछ शान्ति पैदा कर ली है। एक तरह से मुल्क में अब कोई खतरा नहीं है। छोटी-मोटी बातें होती हैं, कभी-कभी हमें अपने नवजवानों को जेल में भेजना पड़ता है और दण्ड का उपयोग करना पड़ता है, पुलिस से काम लेना पड़ता है। इससे हमें कष्ट होता है। लेकिन एक तरह से यह जो छोटी-मोटी बातें हो रही हैं, इनसे मुल्क को कोई खतरा नहीं है। इसी प्रकार मुल्क पर बाहर से आक्रमण का भी कोई खतरा नहीं है। तो भी जो पिछला महान युद्ध हुआ, उसकी जो प्रसादी दुनिया भर को मिली, वह बहुत बुरी है। उसमें से हम बचे नहीं है, और यदि हम सावधान न रहें और जिस तरह काम करना चाहिए, उस तरह न करें, तो उससे हमें बहुत बड़ा खतरा है।

आप जानते हैं कि हमारे मुल्क में जब राज्य पलटा और हमने सत्ता अपने हाथ में ली, तब, जैसा आपने मानपत्र में बयान किया है, हिन्दुस्तान में छोटी-छोटी करीब-करीब पाँच -छः सौ रियासतें थीं। उनका क्या किया जाए, यह एक बहुत बड़ा विकट प्रश्न था। लेकिन एक बड़ी बात यह हो गई कि सब राजा-महाराजाओं ने बहुत सोच-समझ कर मुल्क का साथ देने का निश्चय किया। मैं बार-बार इन लोगों को इस स्वदेशाभिमान के लिए मुबारकबाद देता आया हूँ। इस मौके पर आज भी मैं यह कहना चाहता हूँ कि राजाओं ने अगर समय को पहचान न लिया होता और देशभक्ति का प्रदर्शन न किया होता, तो उससे देश को बहुत तकलीफ़ होती। हमारे मुल्क के दो टुकड़े तो हुए ही थे, उससे और भी अनेक टुकड़े हो जाने का बहुत बड़ा खतरा था। और इस प्रकार के टुकड़े करने की पूरी कोशिश भी जारी थी। आपने देखा होगा कि जब हमने राज्यों का संगठन करना शुरू किया, तो उससे पहले ही जूनागढ़ में गड़बड़ शुरू हो गई थी। आप को मालूम ही है कि हिन्दुस्तान में जितनी रियासतें थी, उसकी आधी रियासतें तो अकेले काठियावाड़ में पड़ी हुई थीं। उन्हीं में एक जूनागढ़ स्टेट भी थी। पाकिस्तान ने उसे अपने साथ लेने की कोशिश की और उसका दस्तखत भी ले लिया।

तब से हमको एक प्रकार का नोटिस मिल गया कि हमें सावधान रहने की कितनी ज़रूरत है। इसके बाद का इतिहास आप जानते ही हैं। आप के पड़ोस में ही जो एक बहुत बड़ी रियासत, देश की सबसे बड़ी रियासत है, उसने क्या किया, वह भी आप जानते हैं। उस सबका इतिहास बताने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन यदि उस समय पर हिन्दुस्तान की और रियासतों ने भी यही सोच लिया होता कि हमें भी हिन्दुस्तान से अलग अपना अड्डा बनाना है, तो उससे हमको बहुत नुकसान होता। हमारी उन्नति रुक जाती। बहुत दिनों से आप लोग अपना राजतन्त्र लेने की कोशिश कर रहे थे। हम और आप उसके लिए एक साथ लड़ाई कर रहे थे। और, जैसा कि आपने कहा, एक समय पर मैं आप लोगों के नेतागणों को मिलने के लिए बैंगलोर के जेल में आया भी था। उस समय में और आज के समय में बहुत फर्क आ गया है।

मैसूर के महाराजा ने समय की माँग को समझ कर अपनी सत्ता जनता के प्रतिनिधियों को दे दी, और हिन्दुस्तान में मिल जाने की स्वीकृति दे दी। यह बहुत अच्छा हुआ कि एक भी राज्य ऐसा न रहा, जो हमारे साथ मिल नहीं गया। सब आ गए, जो नहीं आए, उनका भी हिसाब पूरा हो गया। अब कोई चीज़ बाकी नहीं रही। हिन्दुस्तान में एक प्रकार से शान्ति स्थापित हो गई है। लेकिन हिन्दुस्तान में आज भी जो तकलीफ़ है, उस तकलीफ़ का अगर हम ख्याल न रखें, तो हमको जो स्वराज मिला, वह स्वराज गान्धी जी की इच्छा का स्वराज नहीं होगा।

हिन्दुस्तान के बदन पर हड्डी और चमड़ी के सिवा कोई चीज़ बाकी नहीं रही। तो यदि भारत को मज़बूत बनाना हो और सच्चा स्वराज हमें पैदा करना हो, तो गान्धी जी ने जो रास्ता हमें बताया था, शुरू से वही रास्ता हमें पकड़ना होगा। हमने जब हिन्दुस्तान में स्वतन्त्रता के लिए युद्ध शुरू किया, आन्दोलन शुरू किया, तब वह दो तरीकों से किया। एक तो परदेशी सल्तनत को इधर से हटाना। उसे हटाने के लिए गान्धीजी के पास एक अद्‌भुत शस्त्र था, असहयोग और सत्याग्रह। उन्होंने सत्य और अहिंसा द्वारा विदेशी सत्ता को इधर से हटाने के लिए तपस्या शुरू की। उसमें हम लोगों ने भी थोड़ा-बहुत उनका साथ दिया। लेकिन कोई सच्चा साथ दिया, ऐसा किसी को नहीं मानना चाहिए। यदि कोई समझे कि उसकी कुर्बानी से आज़ादी मिल

गई है, तो वह बेवकूफी की बात होगी। एक महान व्यक्ति की तपस्या से ही परदेसी सल्तनत यहाँ से हट गई। लेकिन शुरू ही से उन्होंने कहा था कि यदि हमें सच्चा स्वराज चाहिए, जिसको वह रामराज्य भी कहते थे, तो वह रामराज्य हमको तब मिलेगा, जब हम खुद ही इस प्रकार का राज बनाएँ। और वैसा राज्य बनाने के लिए उन्होंने एक प्रोग्राम भी रखा था। एक तो यह कि मुल्क में अनेक प्रकार के मज़हब के लोग हैं, हिन्दू, मुसलमान, पारसी, क्रिश्चियन, सिख आदि। जितने मज़हब के लोग हिन्दुस्तान में रहते हैं, उतने और किसी जगह पर नहीं होंगे। तो हम सब लोगों को मिलजुल कर रहना चाहिए, प्रेम से रहना चाहिए। हमें आपस में लड़ना नहीं चाहिए। मज़हब को पालिटिक्स (राजनीति) से और राष्ट्रीय क्षेत्र से कोई मतलब नहीं है। अपना-अपना धर्म पालन करना प्रत्येक की व्यक्तिगत इच्छा की बात है। उसमें राज्य कोई दखल नहीं दे सकता, न और किसी को दखल देना चाहिए। लेकिन पराई हूकूमत ने इस देश में अपना राज्य सुभीते से चलाने के लिए धर्म को या मजहब को पालिटिक्स में डाल दिया। इससे कौम-कौम के बीच में अन्तर बढ़ गया और इसका नतीजा यह हुआ कि आखिर हमारे मुल्क के दो हिस्से करने पड़े। लेकिन जब गान्धी जी ने आन्दोलन शुरू किया था, तभी से कहा था कि सच्चा स्वराज तो हमको तभी मिलेगा, जब हम दोनों कौमें, बल्कि देश की सब कौमें, आपस में मिल जाएँगी और दिल-से-दिल मिला लेंगी। उनकी यह इच्छा पूरी हुई नहीं। इससे जिस प्रकार का स्वराज हम चाहते थे और वह चाहते थे, उस प्रकार का स्वराज हमें नहीं मिला।

दूसरा गान्धी जी ने शुरू ही से कहा था कि यदि हिन्दुस्तान को सच्ची स्वतन्त्रता चाहिए, तो हमारे मुल्क में अस्पृश्यता जैसी चीज़ बाकी नहीं रहनी चाहिए। देश भर में कोई अछूत नहीं होना चाहिए। ऊँच-नीच का भेद भाव नहीं होना चाहिए। कौम-कौम के बीच जिस प्रकार के छोटे-मोटे बाड़े बने हैं, वह नहीं रहना चाहिए। हमारे मुल्क में यह जो बहुत बड़ा ऐब है, इसको निकाल देना चाहिए। परन्तु आज भी वह चीज़ गई नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि गुलामी की जड़ हमारे इतना भीतर चली गई है कि उसके मूल उसमें से निकलते ही नहीं। तो यदि हमें सच्चा स्वराज चाहिए, तो हमें गान्धीजी की बताई हुई समाज-रचना करनी पड़ेगी। इसलिए मैं पुकार-पुकार कर सब जगह कह रहा हूँ कि आप गलत रास्ते पर चल रहे हैं। हम सबको मिलकर, जैसे

हम पहले स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए काम कर रहे थे, उसे भी ज्यादा काम करने की जरूरत है। नहीं तो हमारा काम नहीं चलेगा। देश में गान्धी जी के स्वप्न का रामराज्य स्थापित नहीं होगा।

अब मैसूर राज्य आज़ाद है, लेकिन यदि मध्यस्थ सरकार से आप लोगों को पूरा अनाज नहीं मिलेगा, तो आपको बड़ी मुसीबत का सामना करना होगा। क्योंकि आपको जितना खाना चाहिए, उतना इधर पैदा नहीं होता। इसका नाम स्वराज नहीं है। वह तो हमें दूसरों पर अवलम्बित रहना पड़ रहा है। तो हमारे मैसूर स्टेट में जितनी खुराक चाहिए, उतनी यहीं पैदा होना चाहिए, जितना कपड़ा हमारे लिए चाहिए, उतना यहां ही पैदा होना चाहिए। गांधी जी ने तो बार-बार यही बात कही और मरते दम तक वह अपना चरखा कातते रहे। उनके मरने से पहले, आखिरी समय पर, मैं ही उनसे मिला था। उस वक्त भी वह चरखा चला रहे थे, और मुझ से बातचीत करते जाते थे। अब वह दृश्य मेरे सामने रोज़ खड़ा होता है। तो सारे हिन्दुस्तान में घूम-घूम कर उन्होंने कहा कि अपना कपड़ा खुद बनाओ। लेकिन हमने यह काम नहीं किया। आज तो दुनिया की ऐसी हालत हो गई है कि हम बनाना चाहें, तो भी मुश्किल पड़ेगा। क्योंकि अब मिलवाले भी कहते हैं कि हमारे मुल्क में जितनी रुई चाहिए, उतनी यहाँ पैदा नहीं होती। बाहर से भी उतनी रुई नहीं आती। हर मुल्क को आज यही शिकायत है। अब हमारे मुल्क का टुकड़ा हुआ। पाकिस्तान से बहुत रुई आती थी, अब वह नहीं आती। और वह जिस से ज्यादा पैसा मिल जाएगा, उसी को बेच डालेगा। तो हमें अनाज भी चाहिए और कपड़ा भी चाहिए। दोनों के लिए हमारे मुल्क को स्वतन्त्र होना चाहिए। उसके लिए जितनी कोशिश हमें करनी चाहिए, उतनी हम न करें, तो इस आज़ादी से हमें क्या लाभ होगा? इस स्वतन्त्रता को हम क्या करेंगे? जिस प्रकार हम आज चल रहे हैं, इसी तरह से आगे भी चलते रहेंगे, तो कुछ दिनों के बाद लोग कहने लगेंगे कि इस से तो अंग्रेज़ों का राज अच्छा था। तब कम-से-कम खाना तो मिलता था।

मैं यह बात जो हर जगह पर बार-बार कह रहा हूँ, उसका मतलब यह है कि हमें बहुत सावधान रहना चाहिए। साथ ही हमें घबराने की भी ज़रूरत नहीं है। क्योंकि हमारे मुल्क में जगह की भी कमी नहीं है और हमारी धरती के भीतर में धन भी बहुत गड़ा है। यदि आज हम समझ जाएँ, तो जितना चाहिए

उतना अनाज हम पैदा कर सकते हैं। उससे ज्यादा भी पैदा कर सकते हैं। लेकिन मैंने यह भी कहा कि हमारे मुल्क में सात फी सदी शार्टेज (कमी) है। इसे पूरा करना क्या बड़ी बात है ? यदि हमारे पास सात फी सदी अनाज कम है, तो हम आसानी से उसका बन्दोबस्त कर सकते हैं। बाहर से इतना अनाज मंगवाने में जो तकलीफ़ उठानी पड़ती है, और जो रुपया देना पड़ता है, वह हम क्यों करें ? उससे तो हमारी आर्थिक स्थिति ही बरबाद हो जाती है। आज हम एक सौ तीस (१३०) करोड़ रुपये का अनाज बाहर से मँगवाते हैं और साथ ही हमें एक सौ साठ करोड़ (१६०) रुपया अपनी फौज़ पर खर्च करना पड़ता है। इतना रुपया हम कहाँ से लाएँ ? हमारे जो नौजवान मज़दूरों में काम करते हैं, वे उन्हें कहते हैं कि ज्यादा तनख्वाह मांगो और न मिले, तो रेलवे में हड़ताल कर दो। वे कहते हैं कि आज कारखाने बन्द कराएँगे। एक तरफ़ खर्चा बढ़ाओ और दूसरी तरफ़ कारखाने बन्द कर दो। हमारे सरकारी कर्मचारी भी माँगते हैं कि हमको ज्यादा तनख्वाह दो। कम में हमारा काम नहीं चलता। उधर बेचारा स्कूल मास्टर तो रोता ही रहता है। उसका तो कोई नाम भी नहीं लेता। वह कहता है कि झाड़ू निकालनेवाले भंगी को भी हम से ज्यादा तनख्वाह मिलती है। इस तरह से सब जगह ज्यादा तनख्वाह मांगते हैं। दूसरी तरफ़ हमारे पास फ़ालतू पैसा है नहीं। तो कैसे काम चलेगा ?

यह किस प्रकार का स्वराज हमको मिला है, यह आपको समझ लेना है। असली हालत को अगर हम अभी से नहीं समझ लेंगे, तो स्वराज में हमें कोई मज़ा नहीं आएगा। इसलिए अभी से हमें तैयारी करनी है। क्योंकि अब शान्ति स्थापित हो गई है। अगर शान्ति न हो, तब तो कोई काम हो नहीं सकता। हमारे हिन्द में शान्ति तो हुई, लेकिन साथ-साथ हमें जितना रचनात्मक काम करना चाहिए, उतना हम नहीं कर सके, तो भी हमारा काम नहीं चलेगा। इसलिए हम सब को मिलकर हर जगह पर समझ-सोच कर काम करना है।

अनाज के लिए हमें पहला यह काम करना है कि जिन लोगों को खाना मिलता है, उन लोगों को अनाज का एक दाना भी बिगाड़ नहीं करना चाहिए। जहां तक हो सके, जितना ज़रूरी है, इतना ही पकाना, इतना ही खाना चाहिए। बाकी का अनाज बचाना चाहिए। बहुत लोग अपनी बेपरवाही से अनाज को बरबाद करते हैं। वे अपनी ज़िम्मेवारी नहीं समझते कि इस मुल्क में अनाज की कमी है। दूसरा एक काम हमें यह भी करना चाहिए कि इस मुल्क के जिस

प्रान्त में, जिस जगह पर जो अनाज ज्यादा पकता है, उसे अपनी ज़िम्मेवारी और समझ से बचा कर दूसरे प्रान्त में, जहाँ वह अनाज कम है, देने के लिए गवर्नमेंट को दे देना चाहिए। तीसरा हमारे मुल्क में जिस किसी जगह पर, जहां हम पहुँच सकें या कुछ भी खाद्य पैदा कर सकें, वहां उसे ज़रूर पैदा करना चाहिए। फल, साग, सब्ज़ी, तरकारी, यहां तक कि अनाज भी हम अपने कम्पाउण्ड (चारदीवारी) में पैदा कर सकते हैं, अपने स्टेट में पैदा कर सकते हैं। जहाँ भी कोई खाली जगह पड़ी हो, वहाँ हमें ये चीज़ें ज़रूर पैदा करनी चाहिए। तभी हमारा काम चल सकता है।

हमारे मुल्क में अनाज पैदा करने के लिए और इरिगेशन (सिंचाई) के लिए बहुत-सी बड़ी-बड़ी स्कीमें हैं। वह तो जब होंगी, तब होंगी। लेकिन पाँच-सात साल में वे पूरी न हुई तो इस पांच-सात साल के बीच यह जो गढ़ा पड़ जाएगा, उसे हम किसी भी दिन भर नहीं सकेंगे। इसलिए हमें यह सब करना है। गान्धी जी ने जो कहा था कि इस रास्ते पर चलते-चलते हम आपस में झगड़ा कम करें, तो उससे पुलिस का और आर्मी (फौज़) का खर्च भी कम होगा। साथ ही अगर हम गरीबों और अछूतों से सहानुभूति बता कर उनका साथ दें, और उनके साथ कपड़ा बुनने का काम भी कर सकें, तो उससे देश का कल्याण ही होगा। इस प्रकार के रचनात्मक काम में न लगकर अगर हम सब लोग सिर्फ गवर्नमेंट से ही उम्मीद करेंगे और गवर्नमेंट की शिकायत करते रहेंगे कि उसने यह नहीं किया, वह नहीं किया, तो उससे काम नहीं चलेगा।

यह सब चीज़ें हमारे करने की हैं। इसलिए मानपत्र में आपने जो लिखा है कि पीछे हमने जो कुछ किया, वही बार बार करते रहेंगे, या आपने यह किया, वह किया, इस सब चीज़ को मैं नहीं मानता। क्योंकि पीछे जो किया, वह उस समय पर ठीक था, लेकिन आज वह काम की चीज़ नहीं है। आगे तो करने का बहुत काम बाकी पड़ा है। और हमारी पिछली कार्रवाई से हमारा काम नहीं चलेगा। हमें आगे ज्यादा कमाई करनी चाहिए। इसलिए आपने जो पिछले कामों के बारे में जिक्र किया कि मैंने यह किया, वह किया, उसका अधिक महत्व नहीं है। मैं जानता हूँ कि तब मेरे साथ गान्धी जी का आशीर्वाद था और तब उनकी सलाह भी मुझे मिलती थी। उससे मैं जो काम करता था, वह सब काम ठीक हो जाता था। लेकिन उसके बाद जिस प्रकार का

काम वह चाहते थे, वैसा काम नहीं हुआ। इसका मुझ को दर्द है। इसी की मुझे तकलीफ़ है। इसलिए मैं आप लोगों से बड़ी इज्जत से यह कहना चाहता हूँ कि आप लोगों को जो स्वराज मिला और रेस्पान्सिबल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) मिली, वह तो बहुत अच्छा हुआ, वह बहुत ठीक हुआ। लेकिन उससे आप लोगों के ऊपर जो ज़िम्मेवारी आ पड़ी है अगर उसे आप नहीं समझेंगे, तो आपको बहुत तकलीफ़ होगी। और जब हमारे लोग तकलीफ़ में आ जाएंगे, तब वे कहेंगे कि वह जो पहला राज्य था, ठीक था। तब आपको बहुत मुश्किल पड़ेगी और हमको भी मुश्किल का सामना करना पड़ेगा।

अब हिन्दुस्तान में हम किसी जगह पर इस प्रकार का अलग राज्य नहीं रहने देना चाहते, जो सब के साथ न चले। अब तो सारे हिन्दुस्तान को एक साथ चलना है। कोई आगे और कोई पीछे नहीं रह सकता। हम सब को एक साथ चलना है। तो सब राज्यों में, सब रियासतों में, सब स्टेटों में, सब प्रान्तों में करीब-करीब एक ही प्रकार का राजतन्त्र बँध जाए और सबकी प्रगति एक साथ चले। एक-एक जगह पर खड़ा रहे और दूसरा किसी और जगह पर, तो काम नहीं चल सकता। तो इस काम में आप सब लोगों का साथ हमें चाहिए।

एक उदार राजतन्त्र की प्रथा मैसूर में चली आ रही है। मैसूर में काम करनेवाले लोग कुशल और अनुभवी हैं। उन लोगों को सावधान करने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं। वह सब समझते हैं। लेकिन तो भी, सब समझते हुए भी, देश की जो पहली ज़रूरियात हैं, उन्हें अपने सामने रखना चाहिए। क्योंकि आज दुनिया अजीब हालत में पड़ी हुई है। अगर हम अपनी गदा न सम्भालें तो जिस जगह पर हमें दुनिया में रहना चाहिए, उस जगह पर हम नहीं पहुँच सकते। हमारे मुल्क के दो टुकड़े हो गए, तो भी यह एक बहुत बड़ा मुल्क है। इसमें बहुत धन पड़ा है और यहाँ के लोग बहुत समझदार हैं। सब मिलकर और झगड़े छोड़कर अगर अपना काम करने लगें, तो हमें किसी चीज़ की कमी न रहे। यों मुझे कोई डर की वात मालूम नहीं होती। मैं जो लोगों को सावधान करता हूँ, तो उसका यह मतलब नहीं है कि मेरे दिल में कोई अविश्वास है, या शंका है। लेकिन मैं लोगों को हमेशा जागृत रखने का काम करता हूँ। क्योंकि यदि हमें अपने मुल्क को आगे बढ़ाना है, तो हमें हमेशा जागृत रहना चाहिए। हमारा मुल्क बहुत बड़ा है और हम पर जो

ज़िम्मेवारी एकदम आकर पड़ी है, वह बहुत बड़ी है। आजतक जो बोझ हमने उठाया है, वह इतना भारी बोझ नहीं था। आज से पहले तक हम जो काम करते थे, वह दूसरी प्रकार का था। लेकिन आज जो काम हम पर आकर पड़ा है, वह इतना ज़बरदस्त काम है कि उसमें आप सब का साथ और सहयोग न हो तो हमारा काम चल ही नहीं सकता।

जब हमने इतने लोगों के प्रतिनिधित्व का दावा कर लिया, तब हमारा कर्तव्य हो जाता है, हमारा यह धर्म हो जाता है कि हमारे देश में जो गरीब लोग हैं, उनको पहला लाभ मिले, उसके बाद उन लोगों को भाग मिलना चाहिए जो अपनी आवाज़ नहीं पहुँचा सकते हैं। जो मज़बूत लोग हैं, जो धनवान हैं, कुशल हैं, पढ़े-लिखे हैं, वह अपना काम किसी-न-किसी तरह निपटा सकते हैं, वे राजदरबार में पहुँच सकते हैं। लेकिन जो गरीब लोग हैं, मज़दूर लोग हैं, जो झोपड़ियों में रहते हैं, उनकी आवाज़ कहीं पहुँच नहीं सकती। इसलिए डेमोक्रेसी (जनतन्त्र) में जो जनता के प्रतिनिधि या नेता लोग हैं, उनका यह धर्म हो जाता है कि उनका पहला ध्यान देश के गरीबों की तरफ़ जाए।

अब आपकी म्युनिसिपैलिटियों के बारे में भी राज्य की ओर से धन की काफी मदद होती होगी। लेकिन आपको हमेशा यह समझना चाहिए कि म्युनिसिपैलिटी का यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपने को सेल्फ़ सफ़िशन्सी (आत्म निर्भरता) की ओर ले जाए। राज्य आज तो मदद दे, और कल न दे? अगर राज्य में ऐसी शक्ति पैदा हो जाए, जो कहे कि हमारा धन देहात में से आ जाता है, उसे शहर में क्यों खर्च किया जाए? गाँववाले कहें कि हमारा हिस्सा हम को मिलना चाहिए। यह चीज़ डेमोक्रेसी (जनतन्त्र) में पैदा होनेवाली है, क्योंकि देहात को जागृत करना ही पंचायत राज्य का अर्थ है। तो शहरों में रहनेवाले बहुत से लोग अगर अपनी जिम्मेवारी न समझें और हमेशा यही शिकायत करते रहें कि हम पर कर का बोझ ज्यादा है, तो म्युनिसिपैलिटी का कारोबार कभी अच्छा नहीं चलेगा। उसकी तिजोरी हमेशा ठीक रहनी चाहिए और सब शहरियों को समझना चाहिए कि म्युनिसिपैलिटी हमारी है। तो स्वराज में हमेशा यह तैयारी रखनी चाहिए कि अपना बोझा हमें खुद उठाना है, क्योंकि अब तो बोझा उठानेवाला, न केवल कोई महाराजा है और न केवल कोई आफ़िसर। हमारे यहाँ किसी एक व्यक्ति की

पूरी पावर (शक्ति) नहीं है कि वह जो चाहे, सो कर सके। तो हम सब को यह बोझ मिल कर उठाना है। इसके लिए सब को अपना-अपना जेब थोड़ा-थोड़ा काट कर रखना पड़ेगा। हाँ, यह सम्हालना हमारा काम है कि आपके पैसे का खर्च ठीक होता रहे। राज्य की एफ़िशन्सी (कार्यदक्षता) तभी कायम रहेगी, जब हमारे प्रतिनिधि जागृत रहें और हम उनको जागृत रक्खें। यह दोनों बातें साथ-साथ होंगी, तभी काम चलेगा। यदि हम निगरानी छोड़ देंगे, तो उससे काम नहीं चलेगा। म्युनिसिपैलिटी की एफ़िशन्सी भी तभी कायम रहेगी।

मैंने जो चन्द बातें आपके सामने रखी हैं, वे अनुभव की बातें हैं। मैंने म्युनिसिपैलिटी में काफी काम किया है और मैं आप से कहना चाहता हूँ कि म्युनिसिपैलिटी का काम करने में मन की और दिल की जितनी शान्ति रहती है, वह दूसरी जगह पर नहीं रहती। पौलिटिक्स (राजनीति) का क्षेत्र बड़ा मैला है। यह मैला काम है, गन्दा काम है। म्युनिसिपैलिटी को लोग कंजर्वेन्सी (मलनिवारण) का काम कहते हैं। लेकिन म्युनिसिपैलिटी में जितनी गन्दगी है, उसे कहीं ज्यादा गन्दगी पालिटिक्स (राजनीति) में है। म्युनिसिपैलिटी में तो गटर्स (नालियां) ही साफ़ करने की है, लेकिन राष्ट्रीय क्षेत्र के भीतर जो गटर्स हैं, वे बहुत बड़े डर की चीज़ हैं। उनको साफ़ करना बहुत ही कठिन काम है। जो अपना दिल साफ़ न रक्खे, वह राज्य का बोझ नहीं उठा सकता।

तो मैंने म्युनिसिपैलिटी में बहुत सालों तक काम किया। उन दिनों मुझे रात को बहुत अच्छी नींद आती थी। क्योंकि मैं जब शहर की सफ़ाई का या शहर के गरीब लोगों की सेवा का काम करता था, तो मुझे शाम को यह अनुभव होता था कि मैंने दिन भर में कुछ काम किया है। इस से बहुत अच्छी नींद आती थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि म्युनिसिपैलिटी का काम बहुत ही अच्छा बल्कि सब से अच्छा काम है। इसलिए म्युनिसिपैलिटी के प्रमुख को भंगी कहते हैं। वह भंगी की प्रतिमा है। वह झाड़ू का काम करनेवाला है। इसका मतलब यह है कि शहर को साफ़ रखना और शहर को सुखी रखना, यह म्युनिसिपैलिटी के अधिकारियों का कर्तव्य है।

आप लोगों ने जो मानपत्र मुझे दिया, इसलिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। बाकी मुझे मानपत्र की क्या ज़रूरत है? आप लोगों का इतना प्रेम और इतना मान का भाव है, वही मेरे लिए मानपत्र है। तो भी जिस प्रेम से

आपने मेरा स्वागत किया, उसके लिए मैं आपका ऋणी हूँ। आप जो पूजा का पत्थर या (नींव) रखने का काम मुझ से करवाते हैं, वह बहुत बड़ा बोझ का काम है। और मैं इस बोझ से काँपता हूँ। यह काम कौन कर सकता है? आज आप इसकी स्थापना कर रहे हैं, तो हर रोज़ आपको इस स्थान को और इस मूर्ति को याद रखना पड़ेगा। और उसे ध्यान में रखते हुए अपना दिल साफ़ रखकर आपको अपना काम करना होगा। यदि आप यह न करें, या आपके किसी काम से उनके नाम को कोई लाज लगे, तो आज की इस प्रतिष्ठा से कोई फ़ायदा नहीं होगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि जब आपने यह काम उठाया है, तो आपने उसकी पूरी ज़िम्मेवारी को समझ लिया है। उनका आशीर्वाद आप लोगों को मिले, यही मेरी इच्छा है।

———

(२०)

पञ्जाब युनिवर्सिटी की ओर से डाक्टरेट मिलने पर

अम्बाला,

५ मार्च, १९४९

सज्जनो !

आप लोगों की तरफ़ से जब मुझे पदवीदान का निमन्त्रण मिला तो मैं सोचता रहा कि मुझे क्या करना चाहिए। क्योंकि जिन लोगों को आज पदवी-दान देना है, उनमें बहुत से ऐसे हैं, जिन्होंने पदवी पाने के लिए बड़ी मेहनत की है, यह उनका हक है। मैं उन्हें मुबारकबाद देता हूँ। लेकिन तीन आदमियों को आपने शोभा की पदवी देने के लिए चुना है। उनमें से दो ऐसे हैं, जिन्होंने आपके प्रान्त की मुसीबत की हालत में बहुत सेवा की। इनमें से एक ने पहले भी सेवा की थी। दूसरे, जो आपके कुलपति (चांसलर) हैं, उनका भी अधिकार है। उन्हें डिगरी क्यों न मिलें ? (तालियाँ)

लेकिन इस जगह पर यह पदवी प्राप्त करने की कोई योग्यता मुझ में नहीं है। इसलिए मैं दुविधा में था कि मुझे क्या करना चाहिए। दूसरी ओर मुझे ख्याल आया कि मुझे घायल पंजाब से निमन्त्रण मिला है और मेरा धर्म है कि मैं उसको स्वीकार करूँ। (तालियाँ) इसलिए मैंने स्वीकार कर लिया। आपकी यूनिवर्सिटी का अभी प्रारम्भ ही हुआ है, प्रारम्भ ही में आपने मुझे

डिग्री दी । इसे मैं बड़ी इज्जत समझता हूँ । इसके लिए मैं आप सब को धन्यवाद देता हूँ ।

हमारे प्रान्त पर जो मुसीबत पड़ी, उसे हम कैसे भूल सकते हैं । अभी यह ज़ख्म ताज़ा है । लेकिन इस समय के बाद भी, जब यह ज़ख्म ठीक हो जाएगा, तब भी हम कभी नहीं भूलेंगे कि हमारे सूबे की युनिवर्सिटी की शुरू-शुरू में क्या हालत थी । इस बात को हम कभी भूल नहीं सकते । न भूलना चाहिए । क्योंकि आजकल हम पर बोझ पड़ा है । हमें सोचना है कि भविष्य के लिए हमें अपने मुल्क, अपनी युनिवर्सिटी और अपने सूबे के लिए क्या करना है ।

मैंने बहुत जगहों पर युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को डिग्रियाँ पाते देखा है । लेकिन जिस हालत में आप आज डिग्री पा रहे हैं, वैसी हालत मैंने आज तक भी अभी न देखी थी । मैं आप के प्रति सिर्फ़ खाली सहानुभूति प्रदर्शन करने नहीं आया । मैं आपको यह बताने भी आया हूँ कि अब समय आया है कि हम अपना रास्ता देख लें । हमें क्या करना है और हम क्या कर सकते हैं, यह भी हमें देखना है । हमारे सामने भविष्य के सम्बन्ध में कौन-सा चित्र होना चाहिए । पंजाब हिन्दुस्तान का दिल है । उसे ज़ख्म लगा है, और जब तक यह ठीक नहीं होगा, तब तक हिन्दुस्तान बेचैन रहेगा । तब तक वह कोई और काम नहीं कर सकेगा । इसलिए आपको जल्द ही अपना दिमाग ठीक करना है । अपने सूबे का दिमाग ठीक करना है ।

हमको जो जख्म लगा है, वैसा जख्म इतिहास में कितने ही मुल्कों को लगा । लेकिन अब हमें इस चीज़ को ठीक जगह रख कर सोचना है । यदि हमें आगे चलना है, तो हमें गुस्सा छोड़ देना चाहिए और सावधान बनना चाहिए । चोट लगे, तो गुस्सा भी आता है । कितनी ही गलतियाँ हुईं, बुराइयाँ हुईं, जिन्हें हमने बरदाश्त किया । हमें अच्छी अच्छी चीज़ें छोड़नी पड़ीं । अपना सारा माल-मत्ता और जायदाद हमें छोड़नी पड़ी । हमारे बहुत-से आदमियों ने दुख उठाया । सूबा छोड़ा । अपना सभी कुछ छोड़ा । इस पर भी हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि रोने से कोई फ़ायदा नहीं । अब हमें सोचना है कि हमारा क्या फर्ज है । जितना हिस्सा हमारे हक में आया है, उसे ठीक करना है । और यह आसान काम नहीं । यह बड़ा मुश्किल काम है ।

लेकिन मैं मानता हूँ कि पंजाबी बड़े बहादुर हैं । जो दुख आपके सिर पर पड़ा, वह और लोगों पर पड़ा होता, तो वे उसे उठा न सकते । लेकिन आप

में यह हिम्मत है। और अगर आप तै कर लें, तो जैसा लाहौर था, पंजाब में कई दूसरे शहर थे, मिंटगुमरी का बागीचा था, और भी कितनी ही जगहें थीं, वैसे शहर और वैसी जगहें आप यहाँ भी बना सकते हैं। क्योंकि आप में इतनी हिम्मत है, आप में ऐसी ताकत है। मैं मानता हूँ कि जैसी आफत आप पर पड़ी, दूसरे उसे बरदाश्त न कर सकते और पागल हो जाते। कोई और होता, तो हिन्दुस्तान को उठने ही न देता। जो बहादुरी आपने दिखाई है, उसके लिए मैं आपको सच्चे दिल से मुबारकबाद देता हूँ। आपने कितना दुख उठाया है। लेकिन आपने जिस तरह इतमीनान और हिम्मत से काम करके दिखाया है, हमें कम-से-कम परेशान किया है, उसके लिए भी मैं आपका शुक्रिया करता हूँ। हां, हम कुछ कर नहीं सके। जब पंजाब से भागे हुए रिफ्यूजी आए, तो मैं उन्हें रिफ्यूजी नहीं मानता। मैं अब भी उन्हें हिन्दुस्तान के सर पर बैठनेवाले कहता हूँ। लेकिन लोग भागे-भागे आए, जहाँ भी उन्हें जगह मिली चले गए। लेकिन जिस सूबे में वे इज्जत से नहीं रह सकते थे, उसे उन्होंने खुद छोड़ दिया। यह बहादुरों का काम है और आपने यह काम किया। लेकिन हम ऐसी हालत में पड़े हैं कि जिस तरह आप की मदद करनी चाहिए थी, उतना हम नहीं कर सके। लेकिन आपने इसे भी बरदाश्त किया, इसलिए आपका धन्यवाद। आपको बहुत बड़ा जख्म लगा और उसमें से इतना खून बह गया कि अब इसमें हमें नया खून डालना है। हमारा धर्म है कि हम पंजाब को ठीक कर लें और जो कुछ गया है, उसको भूल जाएँ।

अब मैं आपके सामने कुछ और बातें रखना चाहता हूँ। हमारे साथी, हमारे अकाली दल के नेता मास्टर तारासिंह हैं। हमें अफ़सोस है कि हमें उन्हें जेल में रखना पड़ा। जो चीज़ हम बनाना चाहते हैं, वह उसे तोड़ते हैं। उनके दिमाग में यह बात बैठती नहीं। मैं यहाँ बैठकर अकाली लोगों से प्रार्थना करना चाहता हूँ। मैंने सदा पंजाब का साथ दिया है और अब भी साथ देना चाहता हूँ। इससे क्या फायदा कि तुम्हारी तलवार हमारी गर्दन पर बनी रहे। जब तक हिन्दुस्तान के सिपाही मेरे पास हैं, मुझे हिन्दुस्तान की रक्षा करनी है। मैं पंजाब को ठीक हालत में देखना चाहता हूँ। मैं अकाली भाइयों से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूँ कि ठीक रास्ते पर चलो और हमारा साथ दो। मास्टर तारासिंह को भी समझाओ। इस तरह से काम नहीं चलेगा। जब तक हम

ठीक दिमाग से काम नहीं करेंगे, तब तक हमारा काम पूरा नहीं होगा। जितनी चोट मास्टर तारासिंह को अपनी कौम के बारे में लगी है, उतनी ही चोट मुझे भी लगी है। जब हम ने पंजाब की तकसीम को कबूल किया था, उस वक्त मैंने देखा था कि पंजाब का हर आदमी बँटवारा चाहता था। बँटवारे में खतरा ज़रूर था। लेकिन हमने फिर भी उसे कबूल कर लिया। जो कष्ट बँटवारे से आया है, उसको हमने आपस में बाँटना है। लेकिन हम ही इस चीज़ को ठीक कर सकते हैं। जैसा हिन्दुस्तान है, उससे बेहतर हिन्दुस्तान हम बना सकते हैं।

जो रुकावट हमारे रास्ते में थी, वह अब दूर हो गई है। विदेशी हुकूमत जब तक हमारे सर पर बैठी थी, हम कुछ नहीं कर सकते थे। यह बँटवारा विदेशी हुकूमत का नतीजा ही था। मैंने सब समझकर उसे मान लिया। हमने देख लिया कि आज की हालत में यह मुसीबत हमें सर पर लेनी ही है। मेरे साथ एक-एक पंजाबी भी शरीक है। अगर आज भी कोई कहे कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मिल जाएँ, तो मैं इससे इन्कार कर दूंगा। अभी सांस लेने दो उन लोगों को। जब उनका दिमाग ठीक हो जाएगा, तो हम इस बात को भी मान लेंगे। अभी उन लोगों को वहाँ ही रहने दो। लेकिन मास्टर तारासिंह बार-बार कहते हैं कि हमें पाकिस्तान खत्म करना है। यह बात ठीक नहीं। पहले अपना घर तो ठीक कर लो। अगर पाकिस्तान ठीक हो जाए, तो इससे भी हमारा बोझ कम हो जाएगा। जहाँ हमारी इज्जत नहीं, वहाँ हम क्यों जाएँ। पाकिस्तान कोई इस तरह से जा सकता है ? क्या आप समझते हैं कि पाकिस्तान को हम चाकू और छुरी से ले सकते हैं ? हमने तो अपने मुल्क का हिस्सा करके उन्हें दे दिया, कि जाओ यह तुम्हारा हिस्सा है। अब अगर कुछ करना है, तो अक्ल से करो। क्रोध से यह काम नहीं करना चाहिए। यह क्रोध का रास्ता गलत है। इस चीज़ पर तो हम दोनों के दस्तखत हैं। कई लोग कहते हैं कि दिल्ली जत्था भेजो। आज़ाद हिन्दुस्तान अभी एक साल का बच्चा है। ऐसी क्रोधभरी बातें कर वे खुदकुशी करना चाहते हैं। क्या एक छोटे-से बच्चे को, जिसमें चलने की ताकत भी नहीं आई, हम दौड़ाएँ ?

मैंने जो पदवी आपसे ली है, उसे मैंने इसलिए कबूल कर लिया कि आप लोगों को समझाने का मौका मुझे मिले। इस तरह मेरा काम हल्का हो सकता है। मैंने बहुत साल जेल काटी है, वहाँ जितना आराम था, इतना अब भी

मुझे नहीं है। मैं मास्टर तारासिंह के साथ जेल में बैठकर खुश हूँगा, क्योंकि वहां मुझे शान्ति मिलेगी। मैंने अपने हाथ से मास्टर तारासिंह को जेल भेजा है जिससे मुझे बहुत दुख हुआ। इतनी शर्म ज़िन्दगी में मुझे कभी नहीं आई थी। जो लोग कहते हैं कि हम जत्था भेजेंगे, वे सोचें कि इससे क्या होगा। मैं तो इस बोझ से छुटकारा चाहता हूँ। लेकिन मेरी जगह पर जो कोई भी आएगा, वह भी यही करेगा। अगर वह ऐसा न करेगा, तो मुल्क तबाह हो जाएगा। मैंने संघवालों को भी जेल में भर दिया। लोग कहते थे कि हिन्दुस्तान में एक ऐसा आदमी है जो हर शख्स का पक्ष लेता है। कुछ हद तक वे ठीक कहते थे। जैसा भाषण सरदार तारासिंह देते हैं, वैसा मैं भी दे सकता हूँ। उस भाषण से कुछ लोग पागल ज़रूर हो जाएँगे। यह समय लड़ने का नहीं है। सिख अलग अलग क्यों बैठे हैं? वे एक क्यों नहीं हो जाते? मैं उन नौजवानों को, जिन्हें पदवी मिली, समझाना चाहता हूँ कि उनका क्या फर्ज़ है। हम सिख और हिन्दू आपस में क्यों लड़ें? क्या इस बात पर कि हमको इतना टुकड़ा अलग चाहिए? हमने जो इतनी मुसीबत उठाई, इतने लोग बेइज़्ज़त हो गए, वह सब क्या इसी-लिए कि हम आपस में एक दूसरे का गला काटें? कांग्रेस में आ जाओ और जो चाहो ले लो। अलग होकर हिन्दुस्तान को पहले ही नुकसान हुआ है। मैं कहता हूँ, हमारा समय तो पूरा हो गया। मैं अब ७४ साल का बूढ़ा हो गया हूँ। पेंशन लेकर मैं शान्ति से बैठकर ईश्वर का नाम लेना चाहता हूँ। लेकिन वे मुझे छोड़ते नहीं। मैं चाहता था कि गान्धी जी के साथ चला जाऊँ। मैंने कोशिश भी की थी। लेकिन लोग कहते हैं कि मुझे तो ज्यादा जीना है। वे कहते हैं कि जो काम बाकी रह गया है, उसे मुझे पूरा करना है। मेरे पास बहुत समय नहीं है। मैं चाहता हूँ कि आपको मज़बूत हिन्दुस्तान मिल जाए। ऐसा हिन्दोस्तान, जिसमें किसी चीज़ की कमी न हो।

आप पर जो मुसीबत पड़ी, जो धन से भरा हुआ देश छोड़ कर आप इधर आ गए, उसमें आप को बड़ी तकलीफ़ उठानी पड़ी। क्योंकि अभी तो आप को ज़मीन पर ही बैठना पड़ता है। अभी रहने की झोपड़ी भी आपको नए सिरे से बनानी है। जमीन में अनाज भी पैदा करना है। अभी आप वह पैदा नहीं कर सकते। आपके कितने ही भाई दूसरे सूबों में बैठे हैं। अभी हमें करोड़ों रुपये का माल बाहर से लाना पड़ता है। आपकी असेम्बली में चार आदमी ज्यादा गए तो उस से क्या होगा। जितने आदमी असेम्बली में जाते हैं, इस ख्याल से

जाते हैं कि वे तुम्हारे लिए जाते हैं। और अगर वे तुम्हारे लिए काम नहीं करते, तो वे मुल्क के दुश्मन हैं।

और मैं आज भी उन्हें कहता हूँ कि आप झगड़ा छोड़ कर अपना काम करें। अगर आप छोटी-सी कौम में इतना झगड़ा करते हैं, तो हिन्दुस्तान का बोझ आप उठाएँगे? अगर आप नौकरी में रियायत चाहेंगे, तो उससे काम कैसे बनेगा?

हमारी फौज़ में जितने आफ़िसर हैं, उसमें सब से ज्यादा आपकी कौम के हैं। हमने जानबूझ कर उन्हें रखा है। छोटी-सी कौम के हाथ में हमने अपनी तलवार दे दी। क्यों? क्योंकि आपकी तलवार पर हमें पूरा भरोसा है। आज के ज़माने में कोई कौम यह दावा नहीं कर सकती कि वही मार्शल है। वे दिन चले गए, जब इस तरह की बातें सोची जाती थीं। पिछली लड़ाई में मद्रास के लोगों ने, साउथ इण्डिया के लोगों ने, बड़ी बहादुरी दिखाई। आज हैदराबाद में फौज़ की बागडोर हमने एक बंगाली सेनापति को सौंप दी है। हमने मिलिट्री गवर्नर भी बंगाली रखा है। तो यह किसी कौम का दावा नहीं कि तलवार सिर्फ उसी के हाथ में है। आजकल ऐटम बम का ज़माना है। अक्ल का ज़माना है। अब अकेली जिस्मानी ताकत काम नहीं कर सकती। आज अक्ल वाले के हाथ में ही सब की बागडोर है।

मैं यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि हम और सब ख्याल छोड़ दें, और सोचें कि पंजाब को किस तरह बुलन्द करना चाहिए। उसी से हिन्दुस्तान ठीक होगा। जितना आपको चाहिए, ले लीजिए। मैं तो चाहूँगा कि हम सारा राज सिक्खों को दे दें। लेकिन आप ऐसा नहीं करने देते। आप आगे चलते नहीं और न हमें चलने देते हैं। हमारे मुल्क में एक मसल है—"उत्तम खेती और अधम चाकरी।" खेती सब से अच्छी है और नौकरी सब से बुरी। खेती में न कोई खुशामद करनी पड़ती है न पाप। किसान अपने लिए मेहनत करके धरती से अनाज पैदा करते हैं, खुद खाते हैं और दूसरों को खिलाते हैं। किसान को ही अन्नदाता कहते हैं, जो पाप नहीं करता। इसीलिए आप पंजाब की ज़मीन में अनाज पैदा करने की तरफ़ अपना ध्यान दें। तो "उत्तम खेती, मध्यम व्यापार और अधम चाकरी।"

व्यापार के काम में थोड़ा-सा पाप तो करना पड़ता है। लेकिन सब से तुच्छ नौकरी है। उस नौकरी के लिए क्यों लड़ते हो? अगर नौकरी चाहते हो तो तलवार क्यों रखते हो?

नौकरी की इच्छा तो हम विदेशी राज में सीखे। सिक्खों में मैंने देखा है कि वे सारी दुनिया में हर किस्म का कारोबार करते हैं। बिज़िनेस में, जंग में, खेती में, रोजगार में हर जगह यह बहादुर कौम काम कर सकती है। इसको बेचारगी क्यों है? मैं पूछता हूँ सिक्ख क्या ऊपर से गिरे? वे कहाँ से आ गए? वे पहले कौन थे? वे हमसे अलग क्यों होना चाहते हैं? हमारी कमज़ोरी में भी आपने बहादुरी से काम किया। बहुत अच्छा किया। लेकिन अब तलवार का ज़माना नहीं। अब कहीं दुनिया में तलवार नहीं चलती। कहीं देख लीजिए। तो अपना दिमाग ठिकाने रखो। समझो कि हिन्दुस्तान की सरकार के वज़ीर आपके खिलाफ़ नहीं हैं। अगर हों, तो यह राज कैसे रहेगा? कोई भी राजनीति के बगैर नहीं चलेगा।

हमारा पहला काम अपने इखलाक को मजबूत बनाना है। हिन्दुस्तान में जितने मज़हब हैं, अलग-अलग कौमें हैं, अलहदा-अलहदा रंग हैं, अलग-अलग कपड़े हैं, यहां तक कि बाल बनाने के ढंग भी अलहदा अलहदा हैं। इस मुल्क में सब चीज़ें अलहदा-अलहदा हैं। उसके लिए राजनीति ज़रूरी है। हमें गान्धी जी के बताए हुए रास्ते पर चलना है। साथ-ही-साथ मुल्क की हिफ़ाज़त के सामान पैदा करना भी आपका फर्ज़ है। दुनिया की हालत देखकर हमें सोच समझ कर काम करना चाहिए। खाली तलवार से या धमकी से काम नहीं चलेगा। इनसे तो काम बिगड़ेगा।

पंजाब में जब पिछली बार मैं आया था, उस वक्त हालत बहुत बुरी थी। मैंने सिक्ख लीडरों को जमा किया और उन्हें समझाया कि आप मुत्तहिद हो जाएँ। आजकल झगड़ा करने से काम खराब होगा। हमारे दस लाख आदमी पाकिस्तान से इधर न आ सकेंगे। उधर जो मुसलमान जा रहे हैं, उन्हें रास्ता न देने से असुविधा होगी। आप रास्ता नहीं देते। इधर बारिश हो रही है। खाने का ठिकाना नहीं है। दुनिया कहती है कि क्या हम पागल हो गए हैं। अंग्रेज़ों ने तो हमें आज़ाद कर दिया पर हम खुद निभा नहीं रहे। मुसलमानों को जाने का रास्ता दे दीजिये। नहीं तो हम बदनाम होंगे। मैंने यह सब कहा तो उस वक्त सिक्ख लीडरों ने मान लिया और रास्ता दे दिया। हमारे लोग इधर चले आए और उनके उधर चले गए।

अब हालत यह है कि ज़ख्म से खून आना तो बन्द हो गया है, लेकिन ज़ख्म ठीक नहीं हुआ। तो पहला काम तो यह होना चाहिए कि नया खून न निकले।

फिर आहिस्ता-आहिस्ता ज़ख्म ठीक हो जाएगा। उसके लिए काम करना है। तो मास्टर तारासिंह इस ज़ख्म पर ठोकर लगा रहे हैं। यह गलत बात है। इससे तो ज़ख्म में से फिर से ख़ून बहने लगेगा। ज़ख्म बन्द नहीं होगा। मैंने बहुत कोशिश की और कहा कि इस तरह न करो।

मैं सब सिक्ख भाइयों से अपील करता हूँ कि आपका भला इसी में है। आप मास्टर तारासिंह को समझाइए कि वह गलत रास्ते पर चलना छोड़ दें। अगर आप उनके साथ रहेंगे, जत्थे भेजेंगे, तो काम खराब होगा। अमृतसर से, पटियाला से जत्थे आएँगे। आप लोगों को भी तकलीफ होगी, हमें भी।

मास्टर तारासिंह जी को रिहा कराना आपका काम है। वह मेरे हाथ म नहीं। मैं पंजाब हुकूमत से कहूँगा कि अपना घर ठीक करो। आज की हालत में यदि हुकूमत रखनी है, तो सबको आपस में झगड़ा नहीं करना चाहिए। यह लोकराज है। सब को एक साथ रहना है। हमें एक दिल होकर काम करना चाहिए। पंजाब का काम भी हमें एक दिल होकर करना है। असेम्बली के मेंबरों से भी मैं कहूँगा कि उन्हें भूलना नहीं चाहिए कि हम पर कितना बोझ पड़ा है। तुम आपस में झगड़कर हमारे मुल्क की तरक्की रोक रहे हो। तुम में इत्तफ़ाक होना चाहिए, एक दूसरे का मैल धो देना चाहिए, एक ही आवाज़ से काम करना चाहिए और जितनी जल्दी हो सके, पंजाब का नए सिरे से निर्माण करना चाहिए।

शायद आप समझते हैं कि मैं कड़ी बात कहता हूँ। लेकिन आपको समझना चाहिए कि मैं अपने दिल का दर्द आपको सुना रहा हूँ। मेरी बात आप को माननी चाहिए। उसका हौसला बँधाना चाहिए। आज हिन्दुस्तान पर मुसीबत है, यह आपको हर समय याद रखना चाहिए।

आप का भविष्य आप के भूत की तरह शानदार है। आप दुनिया में सब से बड़ी पदवी हासिल कर सकते हैं। हमारे मुल्क में गान्धी जी जैसी हस्ती पैदा हुई। दुनिया भर के लोग उनके रास्ते पर चल रहे हैं। और वही रास्ता सही है।

मैंने अगर कोई कड़ी बात कही है, तो आपकी भलाई के लिए कही है। मेरे इधर आने का खास मकसद ही यही था कि आप लोगों के सामने खास सवालों का नक्शा पेश करूँ। आप लोगों ने मुझे इतनी बड़ी इज्जत दी, मेरा

प्रेम से स्वागत किया, इसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ और फिर परमात्मा को भी नमस्कार करता हूँ। मैंने जो बातें आपसे कही हैं, उन्हें समझ कर पंजाब को आगे बढ़ाने के लिए आप परमात्मा से प्रार्थना करें तो आपको सफलता प्राप्त होगी।

जयहिन्द !

---

(२१)

संयुक्त राजस्थान का उद्‌घाटन करते हुए

जयपुर
३० मार्च, १९५४

जयपुर नरेश, अन्य माननीय नरेशो, सन्नारियो तथा सद्‌गृहस्थो !

आज एक महान् ऐतिहासिक प्रसंग के समय आप सब यहाँ जमा हुए हैं। संयुक्त राजस्थान के उद्‌घाटन का मान मुझको दिया गया है, इसके लिए मैं ईश्वर का और आप सब का ऋणी हूँ। मैं जानता हूँ कि यह कितने बड़े महत्त्व का अवसर है और हमारे सिर पर इस समय कितनी बड़ी जवाबदारी आ पड़ी है।

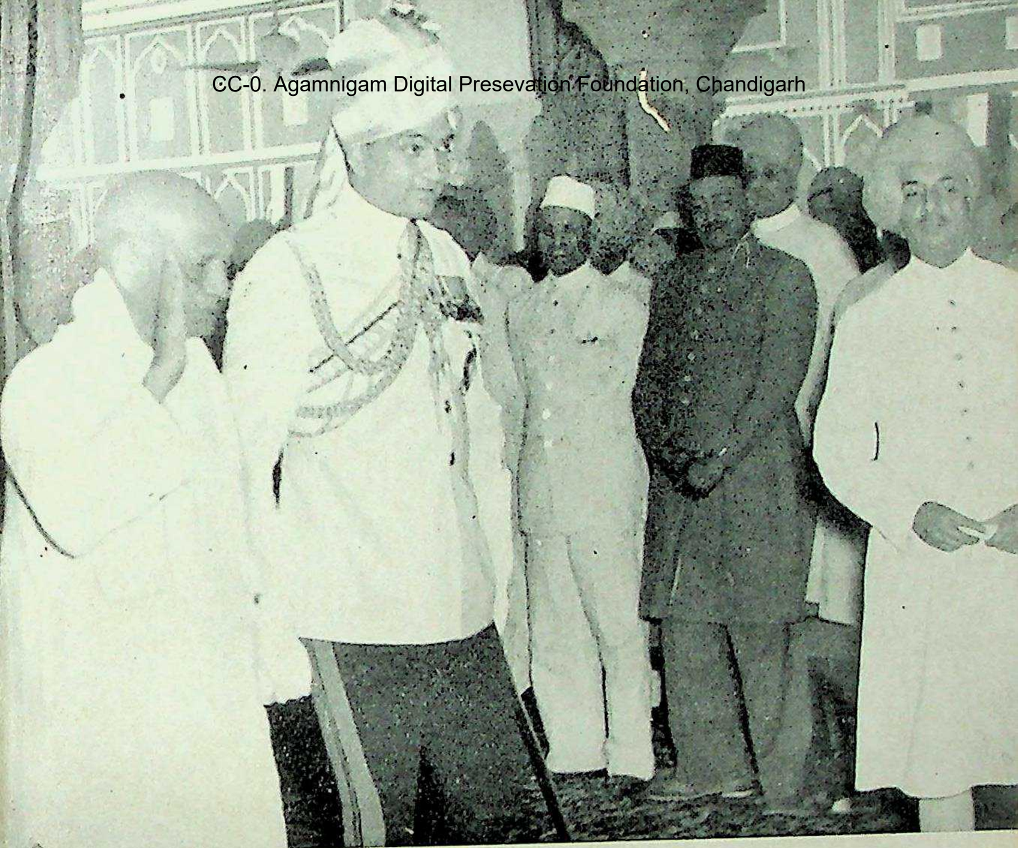
कल मैंने आप लोगों को कुछ कष्ट दिया, क्योंकि मैं समय पर नहीं आ सका और उस से आप लोगों को कुछ तकलीफ़ उठानी पड़ी; उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।* लेकिन वह जो परिस्थिति पैदा हुई, वह मेरे लिए और आप सबके लिए ईश्वर के स्मरण का प्रश्न था। मेरी दृष्टि से वह इस बात का ईश्वरीय संकेत था कि हम यह जो बड़े महत्त्व का कार्य कर रहे हैं, उसे हमें अवश्य पूरा करना है। तभी ईश्वर ने मेरी रक्षा की। ईश्वर को यह भी मंजूर

*जयपुर जाते हुए सरदार पटेल के हवाई जहाज में कुछ खराबी आगई थी और पाइलेट ने बड़ी होशियारी से उसे नीचे उतार लिया था। सम्पूर्ण देश के कुछ घंटे तब बड़ी चिन्ता में कटे थे।

था कि हमें जिस शुभ अवसर पर यह कार्य करना है, उसमें कोई फ़र्क न पड़े। ईश्वर का आशीर्वाद हमारे ऊपर है। इसलिए हम अकस्मात बिल्कुल सुरक्षित निकल आए और हम एक तरह से मृत्यु के दर्शन कर वापस लौट आए। वाकई हमको चिन्ता बहुत हुई कि आप लोगों के दिलों में क्या कष्ट होगा और सारे हिन्दुस्तान में भी लोगों के दिलों में परेशानी होगी। क्योंकि हम दो-तीन घंटे के लिए दुनिया से कट गए थे। लेकिन ईश्वर ने हम पर इतनी कृपा की कि समय पर हमको इधर भेज दिया। तो आज के शुभ अवसर पर सब से पहले हमें ईश्वर को याद करना है कि इस महान् प्रसंग पर हमें अपनी जवाबदारी समझने और उसको अदा करने के लिए ईश्वर हमें शक्ति दे।

इस प्रसंग पर जयपुर महाराजा साहब को जो राजप्रमुख का मान दिया गया है, उसके लिए मैं उनको मुबारकबाद देना चाहता हूँ। आज तक तो यह जयपुर के सेवक थे। क्योंकि असल में हमारे हिन्दुस्तान की संस्कृति के अनुसार राजा राज्य का प्रधान तो ज़रूर है, लेकिन उससे भी ज्यादा वह प्रजा का सेवक है। तो आज तक यह जयपुर की प्रजा के सेवक थे, आज से यह सम्पूर्ण राजस्थान की प्रजा के सेवक बनते हैं। हमारे महाराज प्रमुख (महाराणा उदयपुर) आज हाज़िर नहीं हैं क्योंकि उनकी शारीरिक दशा हम जानते हैं। पर उनको हम कभी भूल नहीं सकते। राणा प्रताप ने राजपूताना को एक बनाने के लिए ज़िन्दगी भर कोशिश की। राजपूताना का एकीकरण करने के लिए जितना कार्य और जितनी कोशिश राणा प्रताप ने की, उतनी और किसी ने नहीं की। उनका संकल्प परिपूर्ण करने का सौभाग्य आज हम लोगों को प्राप्त हुआ है, इसलिए आज हमारे अभिमान का दिवस है। इसके लिए हम महाराजप्रमुख साहिब को भी मुबारकबाद देते हैं। हम उम्मीद करते हैं कि जो संकल्प महाराणा प्रताप के मुरब्बियों ने किया था, और जिस मतलब से वह किया गया था, उसे हम परिपूर्ण करेंगे और उसके लिए हम योग्यता प्राप्त करेंगे। इसके लिए हम अपने पूर्वजों का आशीर्वाद माँगते हैं और ईश्वर का भी आशीर्वाद माँगते हैं।

जिन सब महाराजाओं ने इस काम में साथ दिया और समय को पहचान कर जो त्याग किया, उसके लिए मैं उनको भी धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैंने जो यह रियासतों के सम्बन्ध में कुछ कार्य किया है, उसके लिए मेरी तारीफ़ की जाती है। मगर असल में तो इसके लिए हिन्दुस्तान के राजा-महाराजाओं की



२९ मार्च, १९४९ को सरदार पटल राजस्थान का उद्घाटन करते हुए। सरदार पटेल के साथ राजस्थान के राजप्रमुख महाराजा जयपुर हैं और सब से दाहिनी ओर उपराजप्रमुख महाराजा कोटा।

तारीफ़ की जानी चाहिए। यदि सच्चे दिल से उन लोगों ने साथ न दिया होता, तो आज हिन्दुस्तान का इतिहास जिस तरह बदल रहा है, वह इस तरह बदल नहीं सका होता। बेसमझ लोग उसकी कदर न करें, तो इसमें किसी का कुछ आता-जाता नहीं। मैं तो उसकी पूरी कदर करता हूँ और सारे हिन्दुस्तान में इस बात की कदर कराने की कोशिश करता हूँ। क्योंकि ऐसा करना मैं अपना फर्ज समझता हूँ। दुनिया जिस रास्ते पर चल रही है, उस रास्ते पर हमें नज़र रखनी है और सोचना है कि हमें कहां जाना है। दुनिया में हमारी जगह कहां रहनी चाहिए, हमारा पुराना इतिहास क्या है, पुरानी संस्कृति क्या है, भारत का भविष्य क्या होना चाहिए, इन सब चीज़ों के बारे में राजा महाराजाओं के साथ बैठकर मैंने एक दो दफ़े नहीं, बल्कि अनेक दफ़ा विचार किया है। हमने समझ लिया कि हिन्दुस्तान के लिए आज जो सब से अच्छा रास्ता है, वही हमें पकड़ना है, और वही हमने पकड़ा भी। इसीलिए आज हिन्दुस्तान का गौरव और हिन्दुस्तान की प्रतिष्ठा दुनिया में बढ़ रही है। और जिस रास्ते पर, जिस तेज़ी से हम चल रहे हैं, उसी रास्ते पर, उसी तेज़ी से हम चलते जाएँगे, तो हमारा भविष्य उज्ज्वल है। उसमें जिन लोगों ने त्याग किया है, उनको उसका पूरा बदला मिल जाएगा। दुनिया में आखिर सब से बड़ी चीज़ क्या है? धन कोई बड़ी चीज़ नहीं है, न सत्ता ही कोई बड़ी चीज़ है। दुनिया में सब से बड़ी चीज़ इज़्ज़त या कीर्ति है। आख़िर महात्मा गान्धी के पास और क्या चीज़ थी? उनके पास न कोई राजगद्दी थी, न उनके पास शमशेर थी, न उनके पास धन था। लेकिन उनके त्याग और उनके चरित्र की जो प्रतिष्ठा थी, वह और किसी के पास नहीं है। वही हमारे हिन्दुस्तान की संस्कृति है। आज भी हिन्दोस्तान के राजा-महाराजाओं ने अपनी रियासत के लिए, अपने लोगों के लिए त्याग किया है। वे सदा से ऐसा करते आए हैं और करते रहेंगे। तो इस मौके पर मैं एक दफ़ा फिर आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ और मैं उम्मीद करता हूँ कि आप लोग आगे बननेवाले इतिहास की ओर भी तटस्थ नहीं रहेंगे और न इस तरह से रहेंगे, जिससे आपके दिल साफ़ न हो। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप लोगों ने जिस तरह से यह त्याग किया है, इसी से आगे तरह इतिहास में भी आप देश का साथ देते रहेंगे।

अब मैं आप लोगों को इस बात का स्मरण कराना चाहता हूँ कि हमारे हिन्दुस्तान में जो गुलामी आई, वह किस तरह से आई और वह इतनी

सदियों तक घर करके क्यों बैठ गई ? वह सब आज हमें याद करना है और निश्चय कर लेना है कि जिस कारण से गुलामी आई, उस कारण को हमें फिर आगे नहीं आने देना है । हम गुलाम इसलिए बने थे कि हम आपस में एक दूसरे के साथ लड़े, खतरे के समय हम लोगों ने एक दूसरे का साथ नहीं दिया था। हम छोटे-छोटे टुकड़े बनाकर बैठ गए और अपने-अपने संकुचित क्षेत्रों में, अपने स्वार्थों में पड़ गए । अपने संकुचित क्षेत्र में भले ही हमने कुछ सेवा भी की हो, लेकिन उससे हमको नुकसान ही हुआ और जब समय आया तो हम एक साथ खड़े न रह सके । आज यह पहला मौका है, जब हिन्दुस्तान एकत्र हुआ है । अब वह इतना बड़ा है, जितना इतिहास में पहले कभी नहीं था । तो जो एकता आज हुई है, उसको हम मज़बूत बनाएँ, जिससे भविष्य में हमारी स्वतन्त्रता को कभी कोई हिला न सके । इस कार्य में आप सब लोग राजपूताना के सब नरेश गण और प्रजाजन साथ दें । आप के राजपूताना का एक-एक पत्थर वीरता के इतिहास से भरा हुआ है, बलिदान के सुनहले कारनामों से भरा हुआ है । आप के राजपुताना की पुरानी कीर्ति आज भी हमारे दिल को अभिमान, हर्ष और उत्साह से भर देती है । आज से उसी राजस्थान को नई दुनिया के योग्य नया इतिहास बनाने का अवसर प्राप्त होता है, यह कितने सौभाग्य की बात है ।

इस अवसर पर हमें समझ लेना चाहिए कि हमारा क्या कर्तव्य और क्या धर्म है ? पहले तो हमने कितनी ही बड़ी-बड़ी रियासतों को मिलाया है । जब हम मिलते हैं, तो हमारे दिल में कोई संकुचित ख्याल नहीं रहना चाहिए कि हम जयपुर के हैं, हम उदयपुर के हैं, हम जोधपुर के हैं, हम बीकानेर के हैं, या किसी और छोटी-मोटी जगह के हैं । ऐसा ख्याल हमारे दिल में बाकी नहीं रहना चाहिए । हम राजपूताना के हैं भी, तो सब से पहले हम हिन्दुस्तानी हैं, उसके बाद हम राजपूताना के हैं । इस प्रकार के ख्याल से हमें यह कार्य करना है । हाँ, यह ठीक है कि हर जयपुरवासी को जयपुर का गर्व होना चाहिए; उदयपुर के रहनेवाले को अपने दिल में उदयपुर का गर्व रहना चाहिए । वैसे ही सब रियासतों में होना चाहिए । जिस जगह पर हमारा जन्म हुआ, जिस जगह की मिट्टी में से हम पैदा हुए, जिस मिट्टी में से हम अपनी शक्ति बढ़ाते रहे और बढ़ा रहे हैं, जिस मिट्टी में आखिर हमको मिलना है, उसको हम कैसे भूल सकते हैं ? लेकिन एक छोटे से कुएँ में जो मेढक रहता है,

उसका दिमाग फैलता नहीं है, उसकी शक्ति भी बढ़ती नहीं है। परन्तु महासागर में जो मगरमच्छ रहते हैं, वह जो खेल कर सकते हैं, वह कुएँ के मेढक नहीं कर सकते। तो असल में हम सब हिन्दोस्तान के हैं और हमारा दिल हिन्दुस्तान से भरना चाहिए। हिन्दुस्तान के लिए हमारी वफ़ादारी चाहिए। जिस वफ़ादारी के लिए आज जयपुर महाराजा ने प्रतिज्ञा ली है, और महाराणा ने प्रतिज्ञा ली है, जिस मुल्क की वफ़ादारी के लिए, जिस सारे राजपूताना की वफ़ादारी के लिए आपने, राजपूताना की सभी प्रजा ने, मिल कर अपना प्रधानमन्त्री चुना है, और जिस प्रधानमन्त्री से भी हम ने प्रतिज्ञा दिलवाई है उसका महत्व हम सब को समझ लेना चाहिए। हिन्दुस्तान की वफ़ादारी का क्या मतलब है? आज समय की क्या माँग है? मुल्क की क्या माँग है? ये सब चीज़ें इस प्रतिज्ञा से जुड़ी हुई हैं।

तो यह जो राजप्रमुख ने प्रतिज्ञा ली, हमारे प्रधानमन्त्री ने प्रतिज्ञा ली और हमारे उप-राजप्रमुख ने जो प्रतिज्ञा ली उस सबका महत्व हम सब को समझना चाहिए। क्योंकि यह किसी व्यक्ति की प्रतिज्ञा नहीं है। वह सारे राजपूताना की तरफ़ से प्रतिज्ञा है। मैं जो इधर यह संयुक्त राजस्थान का उद्घाटन करने के लिए आया हूँ, अपनी व्यक्तिगत हैसियत से नहीं आया हूँ, न मेरी यह ताकत है, न मेरी यह लियाकत है। मैं आया हूँ हिन्दुस्तान की सरकार की ओर से और हिन्दुस्तान के एक वफ़ादार सेवक की हैसियत से। मैं किसी एक गिरोह का सेवक नहीं हूँ। मैं राजा-महाराजाओं का वफ़ादार सेवक हूँ, रियासत की प्रजा का मैं वफ़ादार सेवक हूँ, हिन्दुस्तान की प्रजा का मैं वफ़ादार सेवक हूँ, और इसी हैसियत से यहाँ आया हूँ। इस हैसियत से मैंने इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी ली कि महाराजा को प्रतिज्ञा दिलवाई, नहीं तो मेरी क्या हैसियत कि मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसी उद्धताई कर सकूं? मैं अपनी मर्यादा को समझता हूँ। तो आप जितने भाई-बहन इधर आए हैं, उन से मैं नम्रतापूर्वक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि आप लोग इस समय का महत्व समझ लें और साथ ही अपनी जवाबदारी भी समझ लें। आज से हम इस चीज़ को भूल जाएँ कि हमारे बीच में कोई पर्दा है, कोई अन्तर है और कोई भेद-भाव है। आज सारा राजपूताना एक है। हम उसे एक दृष्टि से देखेंगे, तभी हम आगे बढ़ सकेंगे।

आज हमने एक बड़ा राजस्थान बनाया है, उसका मतलब क्या है? राजाओं ने अपनी राज-सत्ता छोड़ दी, उसका मतलब क्या है? यह काम हम क्यों करते

हैं ? आपको समझना है कि आज दुनिया जिस तेज़ी से आगे चल रही है, उस तेज़ी से हम आगे न चलें, तो एक तो हम पहले ही पीछे थे, अगर आज भी मन्द गति से चलें तो और भी अधिक पिछड़ जानेवाले हैं। सारे एशिया का हाल देखिए, आज कहाँ क्या चल रहा है ? दुनिया के और मुल्कों में क्या कुछ चल रहा है ? हम अपनी छोटी-सी रियासत में या छोटे-से किले में बैठकर बाहर की ओर नज़र न करें, तो हमारी रक्षा नहीं हो सकती। आज तलवार का ज़माना नहीं है, ऐटम बम का ज़माना है। आज हमें यह समझ लेना है कि तलवार का अधिकार किसी एक गिरोह का अधिकार नहीं है। आज आप जानते हैं कि आज मद्रास के लोगों को भी काश्मीर के पहाड़ों में हिन्दोस्तान के लिए लड़ाई लड़ने का मौका मिलता है, और हमारे कमांडर-इन-चीफ़ साहब इसी रेजीमेंट की तारीफ़ भी करते हैं कि वे बड़ी बहादुरी से काम कर रहे हैं। तो मैं आप राजपूतों से, जिन्होंने हिन्दुस्तान का इतिहास बनाया है, सच्चे दिल से अपील करूँगा कि हमें आज का ज़माना पहचान लेना चाहिए। और ज़माने को पहचान कर उसी रास्ते पर हमें चलना चाहिए। आज के ज़माने में हमें ऊँच-नीच का भेद निकाल देना है, गरीब और अमीर का भेद निकालना है, राय़ और रंक का भेद निकालना है। हम सब ईश्वर के बालक हैं, यह सचाई हमें महसूस करनी है। इस रास्ते पर चलने की सच्चे दिल से कोशिश करना हमारा कर्तव्य है। मैं जानता हूँ कि जब हम सदियों तक एक ही रास्ते पर चलते रहे हैं, तो दूसरे रास्ते पर चलने की बात दिल जल्दी कबूल नहीं करता है। यह कठिनाई हम सब महसूस करते हैं। लेकिन जो समय को नहीं पहचाना, उसको पछताना पड़ता है।

मैं अपने जागीरदार लोगों को भी मोहब्बत से और प्रेम से समझाने की कोशिश करता हूँ और मेरी उम्मीद है कि मैं उन लोगों को भी उसी तरह समझा सकूंगा, जिस तरह मैंने राजा-महाराजाओं को समझाया। क्योंकि मैं मानता हूँ कि उनका खुद का हित उसी चीज में है। सारा हिन्दुस्तान आज़ाद होने के बाद हमारे लिए पूरा मैदान खुला है और बहुत सी जगहें हमारे पास हैं, जहाँ हम मानपूर्वक अच्छी तरह से काम कर सकते हैं। यह सम्भव बना सकते हैं कि आज तक जो हमारा स्थान रहा है, उससे भी आगे हम जाएँ। लेकिन, अगर हम यही समझ लें कि हमारे पूर्वज, या पूर्वजों के बाप-दादा को जो जगह मिली थी, उसी जगह पर हम भी बैठे रहेंगे और उतने ही

संकुचित क्षेत्र में हम खेलते रहेंगे, तो हम गिर जाएँगे। उसमें हमको लाभ नहीं होगा। उससे हमारी उन्नति नहीं होगी, हमारी प्रगति नहीं होगी। तो जो चीज़ आखिर हमको ज़बरदस्ती करनी पड़े, लाचारी से करनी पड़े, उसे स्वेच्छा से करना और समय देखकर समझपूर्वक करना, उसी में हमारी इज्जत है, उसी में हमारी सभ्यता है। तो भारत की संस्कृति और राजपूताना की संस्कृति की आज की यह मांग है कि हम समय को पहचान लें और अपने चारों तरफ देखें। आप देखें कि चाइना में क्या हो रहा है? हमारा अपना मुल्क भी बहुत बड़ा है, चीन उस से भी बड़ा है। हमारी जितनी आबादी है, उससे उसकी आबादी ज्यादा है। वह गुलाम मुल्क भी नहीं है। हम तो गुलामी में बहुत साल सड़े हैं, हमारी आज़ादी तो अभी केवल एक-डेढ़ साल की ही है। स्वतन्त्र भारत तो अभी डेढ़ साल का बच्चा है। लेकिन उधर चाइना में जो लोग बड़े-बड़े जागीरदार थे, और जिन लोगों के पास बहुत धन था, उन्होंने समय को नहीं पहचाना। उसका जो परिणाम हुआ, वह सामने है। आजकल की दुनिया में क्या भला है, क्या बुरा है, उसका भी ख्याल हम न करें। लेकिन हमारा अपना भी तो पुराना इतिहास है, हमारी अपनी भी पुरानी संस्कृति है। हम धर्मपरायण, धर्मप्राण लोग परदेसी संस्कृति में ज़बरदस्ती घसीटे जाएँ और मजबूरन् कोई रास्ता हमें लेना पड़े, वह हमारे लिए ठीक नहीं।

राजस्थान के जितने जागीरदार लोग यहाँ आए हैं और जो बाहर पड़े हैं, उन सब से इस समय मैं सच्चे हृदय से प्रार्थना करना चाहता हूँ, और आप लोगों के सच्चे सेवक की हैसियत से मैं कहना चाहता हूँ कि आप को समय की मांग को समझना चाहिए। आज हमारे मुल्क में जो पिछड़े हुए लोग हैं, उनको हम नहीं उठाएँगे, तो वे हमारी चाँद पर वह बैठनेवाले हैं। ऐसा समय नहीं आने देना चाहिए। हमें उनका हाथ पकड़कर उठाना है। जो गरीब लोग आज हमारे सामने झुक जाते हैं, उनको सिखाना है कि इन्सान को इन्सान के सामने नहीं झुकना, खुदा के सामने, सिर्फ ईश्वर के सामने झुकना है। हमें उनको अपना भाई, अपना सहोदर बनाना है। तो हमारे मुल्क में जो ३३ कोटि देवता माने जाते हैं, वह सब असल में हमारे देशवासी ही हैं, उनको हमें देवता बनाना है। है। इस काम के लिए उनमें जो मनुष्यत्व है, उस पर का मैल और उसपर की अज्ञानता को निकाल कर साफ़ कर देना है। यह हम कैसे कर सकते हैं? जब तक हमारी खुद की अज्ञानता न चली जाए, तब तक हम क्या कर सकते हैं?

तो मैं आप लोगों से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि आप लोग अपनी जगह समझ लें और साथ ही आज के समय को भी पहचान लें।

यहाँ जो लोग कांग्रेस में काम करनेवाले हैं, उनसे भी मैं चन्द बातें कहना चाहता हूँ। उसमें किसी को बुरा नहीं मानना चाहिए, क्योंकि मैं खुद कांग्रेस का सेवक हूँ और कांग्रेस के सिपाही की हैसियत से बहुत साल तक मैंने काम किया है। मैं खुद मानता हूँ कि मैं अभी तक भी एक सिपाही हूँ। लेकिन लोग ज़बरदस्ती मुझ से कहते हैं कि मैं सिपाही नहीं, सरदार हूँ। लेकिन असल में मैं सेवक हूँ। इसलिए मेरी सरदारी अगर हो भी, तो वह कोई चीज़ नहीं है। मैं अपने कांग्रेस के सिपाहियों से अदब के साथ कहना चाहता हूँ कि आप लोगों को समझना चाहिए कि हमारी इज्जत या हमारी प्रतिष्ठा किस किस चीज़ में है? हम लोग यह दावा करते हैं कि हमारी जगह आगे होनी चाहिए, हमको सत्ता मिलनी चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि हमारा हक क्या है? क्योंकि हम दावा करते हैं? तो दावा करने का हमारा अधिकार तो इसलिए बना कि हम महात्मा गान्धी जी के पीछे चलते थे? इसीलिए वह जगह हमें मिली। आज यदि हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हुआ है, तो हमारी कुर्बानी से हुआ है, ऐसा कोई गर्व न करे। हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं, जो समझते हैं कि हमने बहुत कुर्बानी की। की होगी, ठीक है। लेकिन जो नई कुर्बानी करनी चाहिए, वह कुर्बानी न करो, तो पिछली की गई कुर्बानी भी व्यर्थ हो जाती है। जेल जाने से कुर्बानी नहीं होती। या हमारी कोई मिलिकियत छिन गई, उससे कुर्बानी नहीं होती। कुर्बानी होती है, कड़ुवा घूंट पीने से। हम मान अपमान भी सहन कर जाएँ और सच्चे दिल से गरीबों की सेवा करते जाएँ, तो कुर्बानी उसी में है। उसी रास्ते पर चलने से हमारी असली इज्जत होगी। आज किसी-किसी जगह पर मैं देखता हूँ तो मुझे दर्द होता है कि हम में जो नम्रता होनी चाहिए, उसका अभाव है। जब मैं यह देखता हूँ, तब मुझे कष्ट होता है।

कांग्रेसमैन का पहला कर्तव्य तो यह है कि वह नम्र बने। सेवक बनने का जिसका दावा है, वह अगर नम्रता छोड़ दे और उसमें अभिमान का अंश पैदा हो जाए, तो वह सेवा किस तरह करेगा? सत्ता लेने के लिए कोशिश करना हमारा काम नहीं है। सत्ता हम पर ठूंसी जाए, तब वह और बात है। सत्ता खींचने के लिए हम अपनी शक्ति लगाएँ और कहें कि हमको मिनिस्टर बनना है, तो यह शर्म की बात है। हमारे लिए यह कहना भी ठीक नहीं कि

हमारी राजधानी इस जगह पर होनी चाहिए या उस जगह होनी चाहिए। इन छोटी-छोटी चीज़ों का आग्रह करनेवाले लोग कांग्रेस को नहीं पहचानते। ऐसी बातें वही कर सकते हैं, जिन्होंने कांग्रेस में सच्चा काम नहीं किया है। लेकिन सच्चे कांग्रेसमैन को तो लोग धक्का मार कर आगे बैठाएँगे। क्योंकि वह सच्चा सेवक होगा। तो मैं आप से कहना चाहता हूँ कि मैं कई सालों तक कभी कांग्रेस के प्लेटफार्म पर भी नहीं गया था। मैं कभी व्याख्यान नहीं देता था और आज भी मुझे जब कोई व्याख्यान देना पड़ता है, तो मुझे कँपकँपी छूटती है। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरी ज़बान से कोई भी ऐसा शब्द निकल जाए, जिससे किसी को चोट लगे, जिससे किसी को दर्द हो, जिससे किसी को नुक-सान पहुँचे। मुंह से ऐसा व्यर्थ शब्द निकालना अच्छी बात नहीं है। यह सेवा का काम नहीं है। तो मैं यह कहता हूँ कि जो सिपाही है, वह धरती पर चलता है, इसलिए उसको गिरने का कोई डर नहीं है। मैंने कहा कि सिपाही सदा ज़मीन पर चलता है। लेकिन जो अधिकारी बन गया, अमलदार बन गया, वह ऊपर चढ़ गया, उसको तो कभी गिरना ही है। यदि वह अपनी मर्यादा न रखे और मर्यादा की जगह न संभाले तो वह गिर जाएगा, और उसको चोट लगेगी।

तो जो अधिकारी बनता है, उसको अधिकारी पद संभालने के लिए रात-दिन जाग्रत रहना चाहिए। यदि आप जाग्रत न रहेंगे, तो आप को ज़रूर गिरना है। मैं कांग्रेस के कार्यवाहकों से उम्मेद रखूंगा कि हम अधिकार के पद की इच्छा न करें, मोह न करें, लालच न करें। जहाँ तक काम करने के लायक और लोग हमें मिल सकें, उन्हें हम आगे करें और उनसे काम लें। यदि खुद हमारे लिए इस जगह पर बैठना आवश्यक हो गया, तो हमारा हाथ साफ़ होना चाहिए, हमारा दिल साफ़ होना चाहिए, हमारी आँख साफ़ होनी चाहिए और हमारी ज़बान साफ़ होनी चाहिए। इस तरह से आप काम न करें तो आप अधिकार के योग्य नहीं हैं। तो आज तक जिनके पास सत्ता थी, उनकी हम टीका भी करते थे और सारा कसूर उन्हीं पर डालते थे। आज वह सारा बोझ हम पर आ गया है। अब राजपूताना भर में कहीं कुछ भी बिगाड़ होगा, तो उसका सब बोझ हमारे ऊपर पड़ेगा। उसमें यदि कोई भलाई होगी, तो उसके श्रेय का पहला हिस्सा उन लोगों को मिलना चाहिए, जिन्होंने सत्ता छोड़ी। आज से राजपूताना में यदि कोई बुराई होगी, तो कोई भी उसका दोष राजाओं

को नहीं दे सकेगा। जितनी बुराई होगी, उसका सारा दोष कांग्रेस पर आएगा। इसलिए मैं आपके हृदय से अपील कर आपको जाग्रत करना चाहता हूँ। यदि सच्चा त्याग करना हो, तो मान-अपमान का त्याग करने और निःस्वार्थ सेवा करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

आज हीरालाल शास्त्री ने जो प्रतिज्ञा ली है, वह प्रतिज्ञा उनकी व्यक्तिगत प्रतिज्ञा नहीं है। वह सारी कांग्रेस की प्रतिज्ञा है। मैं उनको मुबारकबाद तो देता हूँ, क्योंकि वह आज राजपूताना के प्रथम सेवक बनते हैं। लेकिन इस जगह पर बैठने से उन पर जो जवाबदारी पड़ती है, उस जवाबदारी को जब मैं सोचता हूँ, तो उनके लिए मेरे दिल में कुछ दया का भाव प्रकट होता है। उन पर कितनी बड़ी जवाबदारी आगई है। हम सब ईश्वर से प्रार्थना करें कि इस जवाबदारी को पूर्ण करने के लिए ईश्वर इनके कंधों में शक्ति दे।

मैं आप लोगों से यह भी कहना चाहता हूँ कि हम लोग बहुत दिनों तक लड़े। हमें परदेसियों के साथ लड़ना था, परदेसी ताकत के साथ लड़ना था। गुलामी काटने का वही एक रास्ता था। पर आज हमें किसी के साथ लड़ना नहीं है। आज हमें अपनी कमज़ोरियों के साथ ही लड़ना है। तभी हम राजपूताना को उठा सकते हैं, नहीं तो नहीं उठा सकते। आज तक जब हम लड़ते थे, तो हमारी लड़ाई का एक हिस्सा कानून भंग करने का था। उससे हमारे में एक आदत पड़ गई है कि कानून का मान नहीं रखना। यह बहुत बुरी आदत है। हमें उसको निकालना है। गान्धी जी ने हमको यह सिखाया था कि जो स्वेच्छा से कानून का आदर करता है, वही कानून का अनादर कर सकता है। तो हमारी यह खासियत होनी चाहिए कि हम सत्ता के मान का और कानून का ख्याल रक्खें। आज कानून को भंग करने का समय नहीं है। आज हमें अपने कानून की प्रतिष्ठा बढ़ानी है। जिन व्यक्तियों ने आज अपने अधिकारों का त्याग किया है, उनकी प्रतिष्ठा किसी न-किसी तरह से बढ़े, वह कम न हो, वह देखना हमारा कर्तव्य है। तो राजा-महाराजाओं की प्रतिष्ठा हम अवश्य करेंगे। राजाओं के प्रति हमारा ऐसा वर्ताव होना चाहिए कि हमारे प्रति उनकी प्रेम की भावना बनी रहे। हम चाहते हैं कि राजस्थान की प्रजा पुलिस के डंडे के डर से शान्ति न रखे, बल्कि राजधर्म और प्रजाधर्म को समझकर शान्ति रखे, तब हमारा काम चल सकेगा।

हमें राजपूताना की प्रजा को प्रजाधर्म सिखाना है। तो प्रजाधर्म तो यह

है कि प्रजा अपना दरवाज़ा खुला रखे और गरीब अपनी झोंपड़ी को अपना किला समझ ले। उसको भी पुलिस की ज़रूरत नहीं पड़े। इस प्रकार की हवा हम पैदा करें, तब हम राजपूताना को उठा सकते हैं और तब हम अपना कर्तव्य पूरा कर सकते हैं। कांग्रेस में काम करने वाले जो लोग ह, जिन्होंने आज तक इतनी कुर्बानी की है और काफ़ी कष्ट उठाया है, उनकी परीक्षा का समय अब आया है। उनको तो अब दूसरे रास्ते पर चलना है। जिस तरह हमारे राजाओं ने स्वीकार कर लिया है कि वे स्वेच्छा से दूसरे रास्ते पर चलेंगे। उसी तरह जागीरदार लोगों को भी समझाने की कोशिश मैं कर रहा हूँ। उन्हें भी अब दूसरे रास्ते पर चलना है। इसी तरह हम सब समझ-बूझकर सच्चे रास्ते चलें, तब हमारा काम बन सकता है। आखिर हमने राजपूताना का एकीकरण किया और हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता प्राप्त की, इस सब का मतलब क्या है? आज हमारे मुल्क में हमें स्वेच्छा से काम करने का पहला अवसर मिला है, उसका हमें पूरा उपयोग करना है। ईश्वर की कृपा से गुलामी की इतनी सदियों में भी इस धरती में जो ऋद्धि-सिद्धि भरी पड़ी है, उसमें से कोई चोरी नहीं कर सका। तो उसको हमें निकालना है। जो धन हिन्दुस्तान के उदर में भरा है, उसको हमें निकालना है और यदि हम सच्चे दिल से काम करेंगे तो हमारे मुल्क में गरीबी नहीं रहेगी। लेकिन उसके लिए हमें शान्ति चाहिए। उसके लिए हम एक दूसरे से प्रेम करें और अपनी-अपनी मर्यादा को समझें। खाली पुलिस के डंडे से शान्ति नहीं चाहिए। इस तरह शान्ति रह ज़रूर सकती है, लेकिन वह काम की चीज़ नहीं है। असल चीज़ वह है, जब हमें कम-से-कम पुलिस का उपयोग करना पड़े।

राजपूताना में आज नए साल का प्रारम्भ है। यहाँ आज के दिवस साल बदलता है। शक बदलता है। यह नया वर्ष है। तो आज के दिन हमें नए महा-राजस्थान के महत्त्व को पूर्ण रीति से समझ लेना चाहिए। आज अपना हृदय साफ़ कर ईश्वर से हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें राजस्थान के लिए योग्य राजस्थानी बनाएँ। राजस्थान को उठाने के लिए, राजपूतानी प्रजा की सेवा के लिए, ईश्वर हमको शक्ति और बुद्धि दे। आज इस शुभ दिन हमें ईश्वर का आशीर्वाद माँगना है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप सब मेरे साथ राजस्थान की सेवा की इस प्रतिज्ञा में, इस प्रार्थना में, शरीक होंगे।

जयहिन्द !

(२२)

राष्ट्रीय मज़दूर-संघ का दूसरा अधिवेशन

इन्दौर

७ मई, १९४९

स्वागत समिति के प्रमुख साहब, सम्मेलन के सदर साहब, प्रतिनिधि भाइयो और बहनो !

हमारे राष्ट्रीय मज़दूर संघ का यह दूसरा अधिवेशन है। पहला जल्सा बम्बई में हुआ था, जिसमें राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने संघ का उद्घाटन किया था और आज के जलसे के सदर साहब उस जलसे के भी सदर थे। इन्दौर मज़दूरों के संगठन के लिए एक मशहूर जगह है, क्योंकि इन्दौर के मज़दूरों ने अहमदाबाद के मज़दूर संगठन से अपना पार्ट ले लिया है।

मैं आप लोगों को संक्षेप में यह बताना चाहता हूँ कि हमारे मुल्क में मज़दूरों का संगठन किस तरह से शुरू हुआ, जिससे मज़दूरों की आज तक की हालत का और मज़दूरों के आन्दोलन का आपको ख्याल हो जाएगा। हिन्दुस्तान में सब से पहले सन् १९२० में ट्रेड यूनियन कांग्रेस की नींव डाली गई। उसके पहले ट्रेड यूनियन हिन्दुस्तान में नहीं थे। लेकिन उससे भी पहले अहमदाबाद में मज़दूर संगठन का जन्म हुआ था। वह मज़दूर संगठन महात्मा गांधी जी की सलाह से, उनके आशीर्वाद से और उनकी रहनुमाई से चलता था। उन्हीं की गाइडेन्स से वह शुरू हुआ था। यह जान कर आपको आश्चर्य होगा कि उसकी

शुरुआत एक अमीर मिल मालिक के कुटुम्ब की लड़की ने की थी। अहमदाबाद का एक बड़ा ज़बरदस्त इण्डस्ट्रियलिस्ट, जिसका नाम सेठ अम्बालाल साराभाई है और जिसकी बड़ी-बड़ी मिलें अहमदाबाद में हैं, उनकी बहन अनुसुइया बाई ने इस मज़दूर-संघ को बनाया और महात्मा गान्धी जी ने उनको आशीर्वाद दिया। अनुसुइया बहन को अहमदाबाद के मज़दूर देवी कहकर बुलाते थे। उसके साथ उनके साथी शंकरलाल बैंकर थे और हम लोग भी उस संगठन में शरीक हुए और साथ देने लगे। हमारे लिए वह नई बात थी, क्योंकि अहमदाबाद के किसी कारखाने में मज़दूरों का कोई संगठन नहीं था। कारखानों के मालिक जैसे मिल-मालिक कहे जाते हैं, वैसे ही उन्हें मजदूरों के मालिक भी कहा जा सकता था, ऐसी हालत थी। उस समय इस संगठन का जन्म हुआ। ट्रेड यूनियन कांग्रेस के जन्म से भी करीब तीन साल पहले इस मज़दूर संघ की नींव डाली गई।

उधर महात्मा जी ने चम्पारन में सब से पिछड़े हुए लोगों में काम करना शुरू किया। किसान लोग और जिनके पास ज़मीन नहीं है, ऐसे मज़दूर लोग तथा गली के कारखानों में काम करनेवाले मज़दूरों में गान्धी जी ने काम शुरू किया। इन गली के कारखानों में जिस प्रकार की मेहनत ली जाती थी, वह तो जिन लोगों ने उसका अनुभव किया हो, उन्हें ही मालूम हो सकता है। मिलों में काम करनेवाले मज़दूरों से भी ज्यादा कष्ट में ये लोग थे। जब गान्धी जी ने वहाँ आन्दोलन शुरू किया तो अहमदाबाद की मिलों में आन्दोलन शुरू हो गया। गुजरात के केरा जिले में किसानों से ज्यादा लगान लिया जाता था, उसके लिए वहां भी आन्दोलन शुरू हुआ। हमारे राष्ट्र का सच्चा जीवन वहाँ से शुरू हुआ। तो तीन चीज़ें साथ-साथ चलीं। आज आप वहाँ बिहार में जाएँ, तो आपको मालूम होगा कि गली का एक भी कारख़ाना वहाँ नहीं रहा। सब उठ गए। गान्धी जी के आन्दोलन का यह परिणाम निकला कि किसान, जो गुलाम थे, फँसे हुए थे और जिनसे जबरदस्ती काम लिया जाता था, काम छोड़कर चले गए। मज़दूरों से बहुत थोड़े वेतन पर और ज़बरदस्ती काम लिया जाता था, वह सब खत्म हो गया। इसी प्रकार आप देखें केरा जिले में भी आज जो किसान हैं, वह एक तरह से अपना राज चला रहे हैं, उनको लगान के लिए कोई आन्दोलन करने की ज़रूरत अब नहीं पड़ती। तीसरा अहमदाबाद का यह मज़दूर-संगठन है। अहमदाबाद में जो मज़दूर संगठन है, वैसा संगठन दुनिया भर में और किसी जगह नहीं है, यह मेरा दावा है। मैंने उसमें बहुत काम किया है। ट्रेड

यूनियन में जितनी गलतियां हैं, उन गलतियों को गान्धीजी ने पूरी पूरी तरह समझ लिया था। तो जितना उसमें मैल है, वह निकाल कर हिन्दुस्तान की संस्कृति के अनुकूल उसी के ढंग से, एक मज़दूर आन्दोलन वहां शुरू किया।

सब से पहली बार मज़दूरों ने अहमदाबाद में ही अपनी तनख्वाह बढ़ाने के लिए हड़ताल शुरू की। तब तक हिन्दोस्तान में किसी कारखाने में कभी हड़ताल नहीं हुई थी। यदि मज़दूर हड़ताल करते, तो पुलिस डंडा लेकर आती और मिल मालिक जो हुक्म देता, उसी के हुक्म के मुताबिक काम करती। जब यह आन्दोलन शुरू हुआ और मज़दूरों ने जो हड़ताल शुरू की, तो मज़दूरों में नई जागृति आ गई, क्योंकि उनकी पीठ पर मिल मालिक की अपनी बहन थी जो स्वयं एक करोड़पति की लड़की थी। साथ में एक बड़े राष्ट्रीय सेवक शंकरलाल बैंकर थे, जो कांग्रेस के एक लीडर थे। हम लोग भी उसमें थे और हम सब के साथ सबको सलाह देने वाले गान्धी जी थे। खैर, जब थोड़े दिन हड़ताल चली और एक हफ्ता भी पूरा नहीं बीतने पाया था कि मज़दूर लोग कुछ कमज़ोर पड़ने लगे। उन दिनों मिल-मालिक के हाथ में काफी सत्ता थी, और वे मज़दूरों में परस्पर काफी फूट-फाट करा सकते थे। उधर मज़दूरों का कोई पक्का संगठन तक नहीं था। सो वह डरने लगे और घबरा गए। जब गान्धी जी को मालूम पड़ा कि मज़दूर लोग अपनी प्रतिज्ञा तोड़ कर कारखाने में जाने वाले हैं, तब गान्धी जी ने साबरमती नदी के मैदान में मज़दूरों की एक सभा बुलाई और वहां उनसे कहा कि हिन्दुस्तान में यह मज़दूरों का पहला संगठन है। यदि आप लोग अपनी प्रतिज्ञा से हट जाएँगे और गिर जाएँगे तो हिन्दुस्तान में मज़दूरों के हितों को बहुत नुकसान पहुँचेगा। इसलिए आपको अपने मार्ग से हटना नहीं चाहिए। जो हड़ताल की प्रतिज्ञा आपने ली है, उसे आप पूर्ण करें। लेकिन इस पर भी मज़दूर इसके लिए तैयार नहीं थे। वे बहुत कमज़ोर पड़े। तब उसी समय गान्धी जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक आप लोगों के बीच में और मिल मालिकों के बीच में मानपूर्वक समझौता न हो जाए, तब तक आपको काम पर वापस नहीं जाना चाहिए और आप में से कोई जाएँगे, तो मुझे अनशन करके, फाका करके, मरना पड़ेगा। हिन्दुस्तान में मज़दूरों के हितों के लिए गान्धी जी की वह पहली प्रतिज्ञा थी। गान्धी जी ने वहाँ फाका करना शुरू किया। जब इस फाके को ५, ६ दिन बीत गए तो हम सब को बहुत चिन्ता हुई। रात दिन हम लोग परेशान रहने लगे। मज़दूर भी

परेशान थे और कई मालिक भी परेशान थे। आखिर एक हफ्ते की मेहनत के बाद एक बड़ा सिद्धान्त का आविष्कार हुआ, जिससे मिल-मालिक और मज़दूरों के बीच में समझौता हो गया। यह समझौता इस तरह से हुआ कि मालिक और मज़दूरों के बीच में कोई झगड़ा हो तो उस का फैसला हड़ताल से नहीं, मार-पीट से नहीं, ज़बरदस्ती से नहीं, बल्कि पंचायत से होना चाहिए। मज़दूर और मालिक मिलकर एक सरपंच रख दें और उनका जो फैसला हो, वह मान लिया जाय। अब, हिन्दुस्तान की मज़दूर जनता में वह पहला फैसला था, जिसने सारे मज़दूरों में एक नई जान डाल दी। मिल-मालिकों ने आखिर यह चीज कबूल की।

उसके बाद १५, २० सालों तक गान्धी जी ही मज़दूरों की तरफ से पंच रहे। मिल-मालिकों और मज़दूरों के बीच जितने झगड़े होते रहे, उनका फैसला मज़दूरों की तरफ से गान्धी जी और मिल-मालिकों की तरफ से मिल-मालिक मण्डल का प्रमुख मिलकर करते रहे। उसके बाद किसी और निष्पक्ष पुरुष को रख दिया गया। लेकिन उसका नतीजा यह हुआ कि अहमदाबाद में कम से कम हड़तालें हुईं और अहमदाबाद का उद्योग सब से ज्यादा आगे बढ़ने लगा। इसी बीच में, शुरू ही से अहमदाबाद के मिल मज़दूरों का एक प्रकार का यह सौभाग्य था कि उनको गुलज़ारीलाल नन्दा मिल गया। नन्दा पंजाब से एम० ए० की डिग्री लेकर सब काम छोड़ अहमदाबाद आकर बैठ गया, और उसने अपना जीवन मज़दूरों के काम के लिए अर्पण कर दिया। उसके बाद खंडू भाई आया। कुछ और लोग भी वहां से मिले, और मज़दूरों का संगठन पक्का बन गया। लेकिन आज तक भी अहमदाबाद में कभी मज़दूरों पर गोली चलाई गई हो, ऐसी बात सुनने में नहीं आई। हमारी पुलिस को हमारे मज़दूर पर गोली चलानी पड़े, उससे ज्यादा शरम की बात कोई नहीं हो सकती। तो इस प्रकार अहमदाबाद में जो एक मज़दूर संगठन बना, मैं चाहता हूँ वैसा सच्चा ट्रेड यूनियन हिन्दुस्तान भर में चले।

अहमदाबाद के मज़दूर-संगठन की स्थापना के तीन साल के बाद एक ट्रेड यूनियन कांग्रेस हुई। लाला लाजपतराय उसके प्रधान हुए। यह एक आल इण्डिया जलसा था। अब एक स्थाई आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस बना दी गई। आगे चलकर पण्डित जवाहरलाल इस आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रधान बने। उसके बाद बाबू सुभाष चन्द्र बोस प्रधान बने और

उसके बाद हमारे आज के सदर भी उसके प्रधान बने। लेकिन अहमदाबाद का ट्रेड यूनियन, जो एक सच्चा ट्रेड यूनियन था, जो मज़दूरों का अपना संगठन था, वह उससे अलग ही रहा। क्यों अलग रहा ? क्योंकि हम लोगों ने सोचा कि भारत में पाश्चात्य ढंग पर जो ट्रेड यूनियन बन रहा है, उस पर तो परदेशी ढंग के ट्रेड यूनियनों का ज्यादा असर रहेगा। हम यही समझे कि हमें उससे अलग रहना ही अच्छा है, क्योंकि उनका मन्तव्य है कि अपना ध्येय प्राप्त करने के लिए वे चाहे कोई मीन्स (उपाय) उपयोग करें, चाहे कोई हथियार उपयोग में लाएँ, वह उपाय स्वच्छ हो, ऐसी उनको परवाह नहीं। उनका मानना यह भी है कि ज्यादातर तो अस्वच्छ हथियार से ही जल्दी काम होता है। नतीजा यह हुआ है कि हर रोज़ ट्रेड यूनियन और मिल मालिकों में झगड़ा होता रहता है और हड़ताल करने की कोशिश जारी रहती है। आज की हालत तो ऐसी हो गई है कि पुलिस को गोली चलाने पर मजबूर किया जाता है। यह सब गान्धी जी ने पहले से देख लिया था। उन्होंने सलाह दी कि इस ट्रेड यूनियन में जाने का कोई फ़ायदा नहीं। वहाँ तब जाना चाहिए जब हमारी मेजोरिटी (बहुमत) वहां हो, हमारे बहुमत से अच्छा काम चल सकता हो, और उन लोगों को हम कुछ कन्ट्रोल (नियन्त्रण) में रख सकें। वैसी हालत हो, तब हमें वहां जाना चाहिए, नहीं तो नहीं।

तो हम अहमदाबाद में, गुजरात में और जगहों पर भी अपनी रीति से काम कर रहे थे। हमने यह देखा कि हमारे मुल्क में मज़दूरों में काम करने-वाले समझदार लोग बहुत कम हैं। तब हमने निश्चय किया कि अच्छे कार्यकर्ता (वर्कर्स) तैयार करने चाहिए। हमने देखा कि अहमदाबाद के संगठन के रूप से तब तक ढंग से काम करने वाले मेहनती लोग हमें न मिलें, हमारा काम नहीं चलता। इसलिए, हमने एक हिन्दुस्तान मज़दूर संघ तैयार किया। यह एक अलग संस्था थी, उसमें केवल कार्यकर्ताओं को शिक्षण दिया जाता था और बताया जाता था कि मज़दूरी में किस तरह से काम हो सकता है, जिससे मज़दूरों को फ़ायदा हो, और मुल्क को भी फ़ायदा हो। उस ढंग से हमने काम शुरू किया। उसमें मैं खुद भी था, डा० राजेन्द्रप्रसाद थे, शंकरराव देव थे, जय-रामदास थे, और कांग्रेस के बाकी कितने ही मित्र भी थे। गुलजारीलाल नन्दा और खंडूभाई भी थे। हम लोगों ने अहमदाबाद में कितने ही वर्कर्स को तैयार किया और उन्हें बाहर प्रान्तों में भेजा जाने लगा। ये लोग अपने अपने ढंग से

काम करने लगे। यदि इन्दौर में से भी कोई भाई आए होंगे और वहां शिक्षा ली होगी, तो उन्हें भी उस का अनुभव होगा। इन्दौर में जो संगठन चलाता है, उसने अपनी शिक्षा वहां ही से पाई है। उसका तो जन्म ही से पूरा सम्बन्ध अहमदाबाद के संगठन से है। अब सारे हिन्दुस्तान की सत्ता हमारे हाथ में आई है। आप लोगों को मालूम ही है कि सन् १९४२ में हमने एक आख़िरी लड़ाई ब्रिटिश सल्तनत के साथ हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए लड़ी। इस लड़ाई के सिलसिले में जब हम लोग जेल में गए, जब गान्धी जी को जेल में डाले जाने पर अहमदाबाद के मज़दूरों ने जो काम करके दिखाया, उतना काम हिन्दुस्तान भर में कम लोगों ने दिखाया था। कोई अण्डर ग्राउण्ड चले गए, कोई हवा में चले गए, कोई और जगह पर चले गए, लेकिन अहमदाबाद के इन मज़दूरों ने जो काम किया, वैसा काम और लोगों ने किया होता, तो हमारा काम तीन महीनों में खत्म हो जाता और इसमें तीन साल न लगाने पड़ते। आज कई लोग कहते हैं कि वह मज़दूर संगठन ही कैसा है, जो हड़ताल के खिलाफ़ है? सचमुच आज हम लोग हड़ताल के ख़िलाफ़ हैं। लेकिन जब हड़तालें करने का मौका था, तब इन लोगों ने तीन महीने तक हड़ताल की थी। जब गवर्नमेण्ट के साथ लड़ना था, तब वे सब लोग भाग गए थे और हमने हड़ताल की थी। आज जब मुल्क में हड़ताल की ज़रूरत नहीं है, तब वे हड़ताल हड़ताल चिल्लाते हैं। इस तरह से हम लोग काम नहीं करते। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि जैसा शिक्षण, राष्ट्रीय शिक्षण, और जैसा सही संगठन अहमदाबाद में मिलता है, और जगह नहीं मिलता।

आज हमारे पास देश की पूरी सत्ता आई है, कांग्रेस की गवर्नमेण्ट बन गई है और परदेशी सल्तनत देश से चली गई है, तो हालत ही बदल गई है। यह देश के राजा-महाराजा, जिनके पास सत्ता थी, उन्होंने भी जनता से कह दिया कि अब तुम शासन चलाओ, तो इन कारखाने के मालिकों के साथ लड़ने की बात ही क्या रह गई है। आज हमारे मज़दूरों के मिलमालिकों से कोई शिकायत हो तो उन्हें हमारे पास आना चाहिए। जो कुछ उन्हें लेना है, वह हम से लेना है, कारखानों के मालिकों से भला क्या लेना है। क्योंकि सत्ता तो अब हमारे पास है। पुलिस हमारी है, सारी फौज हमारी है, सारा खज़ाना हमारा है। कौन सी चीज़ अब मिल मालिकों के पास है कि जिसके लिए आप कहते हैं कि हम उनसे लड़ेंगे और हड़ताल करेंगे। हां, अब भी जो हड़ताल करवाते

हैं, उसके पीछे एक चीज है कि वे लोग कांग्रेस को वोट में तो हरा नहीं सकते, इसलिए कांग्रेस को हटाने का एक ही तरीका उन्हें समझ आता है कि मुल्क में गड़बड़ कराओ, अशान्ति पैदा करो, और रेल की पटरी उखाड़ दो। इस प्रकार की हड़ताल कराओ कि राज-शासन चले ही नहीं। हय कम्यूनिस्टों का काम है। तब हमने सोच लिया कि इन कम्यूनिस्टों के साथ ट्रेड यूनियन में बैठना मुल्क के लिए बहुत बड़ी खतरनाक चीज है। इसलिए हमने अलग रहने का फैसला किया।

तब हमारे सोशलिस्ट भाई भी हमारे साथ थे। जब मैं जेल से छूट कर आया, तब मैंने सोशलिस्ट भाइयों से भी कहा कि अब अँग्रेजों के साथ हमें लड़ना नहीं है, वह लोग चले ही जानेवाले हैं, और आप खाली भ्रम में पड़े हैं। वे लोग मुझ से कहने लगे कि आप लोग उनकी यह बात कैसे मानते हैं? यह बात हमारे मानने में तो आती नहीं कि वे जाने वाले हैं, आप लोग धोखे में पड़े हैं। मैंने बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन उनका दिल नहीं मानता था। आखिर मौका आने पर इन लोगों को कबूल करना पड़ा कि आप ठीक कहते थे। अँग्रेज़ लोग तो अब सचमुच चले। मैंने कहा कि यह तो चले, लेकिन हमारा मुल्क न चला जाए। वह संभालने की बात है, क्योंकि यदि अब हम गिरेंगे तो अपनी कमज़ोरी से ही गिरेंगे, किसी और की ताकत से हम कभी गिरने वाले नहीं हैं। मैंने उनको समझाया था कि आप हमारे साथ मिल कर काम करो। चन्द दिनों के लिए वे हमारे साथ आए भी, रहे भी और हमारे संगठन में शरीक भी हुए। तब हम सबने मिल कर दिल्ली में एक फैसला किया कि ट्रेड यूनियन के अगले. वार्षिक अधिवेशन में जाकर हमें उन लोगों को निकालना है जो हमारी राय के अनुसार ठीक काम नहीं कर रहे। हमारे पास मैजोरिटी है, बहुमत है। सो हम वहां गए। पर इसी जल्से में हमारे सोशलिस्ट भाई हम से अलग हो गए और कहने लगे कि हम न तो आपके साथ चलेंगे, न उन के साथ रहेंगे। नतीजा यह हुआ कि हमारा काम नहीं हुआ। इसलिए हम चले आए। हमने अपना एक अलग संगठन बना लिया, जिसका यह दूसरा जल्सा है। पहला जल्सा बम्बई में हुआ था। उस संगठन का नाम इण्डियन नैशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (आई० एन० टी० यू० सी०) है और यह जो संगठन हमने बनाया है, यह राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस है।

आज हिन्दोस्तान में जो ट्रेड यूनियन कांग्रेस है, वह थोड़ा बोगस है,



सरदार पटेल, अपने दिल्ली के निवासस्थान के उद्यान में

थोड़ा खोखा है। उसमें जान नहीं। उसमें खाली तूफ़ान करने की जान है, मांग करने की जान है। आज तक तो ट्रेड यूनियन कांग्रेस के ही प्रतिनिधि बाहर जाते थे, जो वहां हमारी बदनामी करते थे और कहते थे कि ये तो कैपिटलिस्टों के पिट्ठू हैं, पूंजीवादी के पिट्ठू हैं। हम लोग सब सुनते रहते थे और बरदाश्त करते रहते थे। जिस जबान से वे बोलते हैं, उस जबान से हम नहीं बोलते। हम तो अपने काम से मतलब रखते थे। आज हमारा अपना संगठन है और उसमें १२ लाख आदमी हैं। आज ८०० से ऊपर हमारे ट्रेड यूनियन की शाखाएँ होंगी, और इतनी संस्थाओं का संगठन बन जाने से हमारे १२ लाख मेम्बर हो गए हैं। उनके कुल मेम्बर ६, ७ लाख होंगे। उसमें भी कितने बोगस है, वह मैं नहीं जानता। क्योंकि उनका मेम्बर-शिप, बहुत कम सच्चा मेम्बरशिप है। हम मजदूरों से मैला नहीं कराना चाहते और न उन्हें गलत रास्ते पर ले जाना चाहते हैं। उससे मज़दूर लोग गिर जाने वाले हैं। उसको साफ़ करना चाहिए और साफ़ बात कहनी चाहिए। मजदूर कभी झूठ न बोलें। वे क्यों झूठ बोलें?

मेरी नज़र से और गान्धी जी की नज़र से भी अगर ताकत वाला कोई आदमी है तो वह मज़दूर है, क्योंकि वह अपने हाथ से काम करता है। उसमें इतनी शक्ति है कि वह सूखी रोटी भी हज़म कर जाता है। दूसरे को दवा खानी पड़ती है, अच्छी चीज़ें खाकर भी खाना हज़म नहीं होता। तो उनमें जो ताकत है, वह यदि संगठित की जाए, तो कोई ताकत उसके सामने नहीं ठहर सकती। लेकिन मज़दूरों के पास यह सच्चा संगठन न हो तो मज़दूर भी गिर जाएँ। और मज़दूर के संगठन में यदि सत्य न रहा और असत्य का प्रवेश हुआ या उन्हें अपने संगठन की ताकत का गर्व हो गया, तो इससे भी वे गिर जाएँगे। तो गान्धी ने पहले ही से बताया था कि ट्रेड यूनियन कांग्रेस में तब जाना, जब ट्रेड यूनियन कांग्रेस साफ़ हो। और वह साफ़ न हो, तो अपनी अलग ट्रेड यूनियन कांग्रेस बनाओ। आज वही अलग बनी है। परदेश में अब उनका प्रतिनिधि नहीं जा सकता, हमारा प्रतिनिधि ही जाएगा।

अगर आज आपको इन्साफ़ चाहिए, तो उसके लिए न हड़ताल करने की जरूरत है और न भिक्षा मांगने की। अपने हक से आपकी लेबर का एक प्रति-निधि हिन्दुस्तान की सरकार में बैठा है और उसके पास पूरी ताकत है। जो जो कुछ आपको चाहिए, अगर वह ठीक हुआ तो आपको ज़रूर मिल जाएगा।

लेकिन अगर आप की मांग ठीक न होगी, तो आपका वह प्रतिनिधि आप लोगों से कहेगा कि यह गलत रास्ता है, इस पर चलने से काम नहीं होगा। हमें गलत मांग कभी नहीं करनी चाहिए।

अब मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ। आप में से बहुत से देहात में से इन्दौर आए होंगे। देहात में आपका घर होगा, आपके रिश्तेदार होंगे। आपके आसपास के देहातों में क्या हालत है, उस पर नज़र करो तो आपको मालूम पड़ेगा कि वहां जितनी गरीबी है, ईश्वर की कृपा से उतनी गरीबी इधर नहीं है। क्योंकि हम काम करते हैं और रोज़ शाम तक काम करने से कुछ-न-कुछ दाम हमको मिल ही जाता है। कभी कम मिलता है, कभी ठीक भी मिल जाता है। लेकिन वे लोग, जो बेकार बैठे हैं, उनका गुज़ारा कैसे चल सकता है। साल भर में केवल तीन चार महीना जब खेती का मौसम आता है, तभी उन्हें मज़दूरी मिलती है। बाकी बेकार बैठे रहते हैं। न कोई रोज़गार है, न कोई काम है। वे कैसे अपना पेट भरें? तो हमसे बहुत गरीब हज़ारों, लाखों लोग हिन्दुस्तान में पड़े हैं। हमें पेट भर खाना और अपने बच्चों को भी खिलाना है, लेकिन वह हमारे जो करोड़ों लोग भूखे पड़े हैं, उनके ऊपर भी हमें नज़र रखनी है। नज़र रखने का माइना यह नहीं कि अपनी जेब से निकाल कर कुछ उनको दो। यह बात नहीं है। मैं किसी को भिक्षावृत्ति नहीं सिखाता। उस का तो एक ही उपाय है कि हमारे मुल्क में ज्यादा धन पैदा करो। तभी हम कुछ कर सकते हैं। हमारा मुल्क आज एक ऐसे बदन के समान है, जिसमें से सारा खून निकल गया हो, जैसा पाण्डु रोग का रोगी होता है या दिक का बीमार होता है। क्योंकि हमारे राष्ट्रीय बदन में से सारा खून निकल गया है। इतने साल की गुलामी, उसके बाद यह जो ६ साल की लड़ाई चली, विश्व युद्ध हुआ, उसमें जो चूस हुई, उससे सारा खून निकल गया। अब हमें राज तो मिला, लेकिन इसमें जान हमें नए सिरे से भरनी है। अब आहिस्ता आहिस्ता धन की बूंद-बूंद डाल कर हम इस में जान भर सकते हैं, दूसरी तरह से नहीं। कई लोग कहते हैं कि कांग्रेस का राज आया तो क्या हुआ? हमको तो कुछ भी नहीं मिला। यदि किसी ने यह उम्मीद रक्खी होगी कि अंग्रेज़ इधर छोड़ जाएगा, उसमें से हम बाँट करेंगे तो उस जैसा कोई बेवकूफ़ नहीं है। वह तो जो कुछ ले जा सकता था, अपने साथ ले गया। हमारा मुल्क आज खाली पड़ा है। मुल्क में हमें सभी कुछ नए सिरे से पैदा करना है। तो वह सब कैसे पैदा

करोगे ? हम लोग सब एक साथ मिलकर पैदा न करें, तो कैसे काम चलेगा ? तो हमारा फर्ज़ तो यह है कि आज हम अपने मुल्क की हालत देखें और यह समझें कि इस हालत में हमारा धर्म क्या है ।

मज़दूरों को न्याय चाहिए, तो उस न्याय के लिए लड़ने की उन्हें आज ज़रूरत नहीं रह गई । क्योंकि आज मजदूरों का राज है । लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि नहीं, यह तो पूंजीवादी का राज है । मज़दूरों में जाकर वे इस तरह की बातें करते हैं । मैं चाहता हूँ कि वे हमारे सामने आकर बैठें और बताएँ कि हमने किस तरह पूंजीवाद का साथ दिया ? हमने कौन-सी बात ऐसी की, जिस से मुल्क को नुकसान हुआ ? हमारे मुल्क में इतने पूंजीपति हैं ही नहीं । बहुत कम लोग यहां पूंजीपति हैं । उन सब की पूंजी अगर हम एक दफे बाँट लें, तो देश भर के लोगों के हिस्से एक एक आना यानी चार चार पैसे ही आएंगे । ये चार चार पैसे खाकर फिर क्या करोगे ? फिर किसके साथ लड़ेंगे ? हमारे देश में करोड़ों लोग भूखे पड़े हैं । यहाँ चन्द पूंजीवालों ने कुछ धन पैदा किया । कुछ बुराई से भी किया, यह कौन नहीं मानता । जिस तरह के काम उन्हें नहीं करने चाहिए, वैसे काम भी उन्होंने किए । लेकिन देश को सम्पन्न बनाने के लिए हमें भी तो कुछ करना चाहिए । हम वह काम क्यों नहीं करते ? लेकिन यह समझना चाहिए कि आज हमारी ताकत नहीं है । हिन्दुस्तान की सरकार के पास इतना सामान होता और इतने साधन होते, कि सारे कारखाने हम चला सकते, तो हमको क्या दिक्कत थी । लेकिन हम जानते हैं कि हम बारह महीना भी कारखाना नहीं चला सकेंगे और उसमें हमें नुकसान होगा । इस तरह से हमें काम नहीं करना है । तो हमें अक्लमन्दी से काम करना चाहिए ।

मैं आप लोगों को यह राय दूंगा कि आप को हड़ताल करने की बात छोड़ देनी चाहिए । जैसे हमारे इन्दौर के मज़दूरों के प्रतिनिधि ने आपको सुनाया कि हम कभी हड़ताल नहीं करते, और न हड़ताल करने की हमें कभी ज़रूरत पड़ती है । मैं आप लोगों को इस पर मुबारकबाद देना चाहता हूँ । साथ ही मैं आप से कहना चाहता हूँ कि इसी रास्ते पर चलने से आपका कल्याण है, दूसरे रास्ते से नहीं । आज अगर बम्बई में या कलकत्ता में, या कानपुर में या अन्य बड़े-बड़े शहरों में हड़तालें की जाएँगी, जलूस निकाले जाएंगे और पुलिस पर ज़बरदस्ती बोझ डाल कर उसे गोली चलाने पर मजबूर किया जाएगा, तो क्या यह अच्छा होगा ? अब जमाना बदल गया । जब अंग्रेज़ों की पुलिस गोली

चलाया करती थी, तब तो आप कह सकते थे कि वह बुरा काम करती है। लेकिन आज जो राज करनेवाले लोग हैं, वे तो आपके अपने प्रतिनिधि हैं। यदि आपको वे नापसन्द हों, तो उन्हें बदल दो। लेकिन जनता आपके साथ नहीं है, फिर भी आप जनता की लोकप्रिय सरकार का विरोध कर रहे हैं! अगर वे काम छोड़ दें, तो आप तो दो दिन भी काम नहीं कर सकेंगे। फिर हिन्दुस्तान का क्या हाल होगा? यही बर्मा में हुआ, यही चीन में हुआ और यही मलाया में हो रहा है। इस प्रकार का हाल आपको अपने देश का करना है? क्या हमने स्वराज्य इसीलिए लिया है? क्या इसमें मज़दूरों का कल्याण होगा? तो मज़दूरों को यह समझ लेना चाहिए कि हमेशा मिल-मालिकों के पीछे पड़ने से उन का काम नहीं होगा। जिस हद तक पीछे पड़ने की ज़रूरत थी, हम उनके पीछे पड़ चुके हैं, जब और ज़रूरत होगी तो और भी हम करेंगे। लेकिन हमें अपना साँचा स्वच्छ रखना है और देश की मशीनों से जितना अधिक से अधिक काम निकल सके, निकालना है।

ईमानदारी के साथ अपना काम पूरा कर शाम के समय आप को अपने घर वापस जाना है, शराबखाने के रास्ते नहीं जाना है। जो कुछ आपने पैदा किया है, वह शराब की दुकान पर दे देना, इसी तरह है, जैसे आप ने कुछ भी न कमाया हो। तब आपको पैसा मिला न मिला, बराबर है। बल्कि वह तो उससे भी बुरा है, क्योंकि शराब पीकर जब वह घर जाएगा तो अपनी औरत और अपने बच्चों को बेहाल करेगा, तंग करेगा, मार-पीट करेगा। उससे क्या फायदा? वह सब हमारी हिन्दुस्तान की संस्कृति से खिलाफ़ है। तो हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हमारे नेशनल ट्रेड यूनियन के जो मेम्बर हैं, वे और मज़दूरों से अलग मालूम पड़ें, उनका रंग ढंग अलग हो, हमें इस प्रकार की संस्था बनानी है। और वहां मज़दूर बस्ती में अपने बच्चों के खेल-कूद के लिए, मज़दूर-परिवारों के दवा-दारू के लिए, बच्चों के शिक्षण के लिए, अच्छा, प्रबन्ध हो, वह सब करना हमारा काम है। मैं आपको मुबारकबाद देना चाहता हूँ कि आपके १७,००० मेम्बर हैं। इधर कुल ३० या ३२ हजार मज़दूर हैं, उनमें से १७,००० आपके मेम्बर हैं, यह ठीक है, बहुत अच्छा है। दो दो रुपया देकर आप स्वागत समिति के मेम्बर बने और अपने हाथ की मेहनत से यह सारा इन्तज़ाम किया। यह स्वावलम्बन और स्वराज्य का एक शिक्षण है। जो काम करता है, हाथ-पैर चलाता है और कुछ नई बात मेहनत करके दिखाता है, वह स्वराज का

यह रथ आगे चलाता है। वह बाकी और सबको पीछे छोड़ जाता है। तो आप लोगों ने इस संगठन में इतना करके दिखाया, इसलिए तो मैं आपको मुबारक-बाद देना चाहता हूँ। साथ ही मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि आपने १७,००० मेम्बर तो बना लिए, लेकिन इन्दौर भर में एक भी मज़दूर आपके संगठन से बाहर नहीं रहना चाहिए। कोई क्यों बाहर रहे? आप १७ हज़ार मेम्बरों का यह कर्तव्य है कि और लोगों को भी आप अपने पास ले आएँ और उन पर जो बुरा असर पड़ रहा है, उसको हटाएँ। आपको यह समझाना चाहिए कि भोले भाले लोग, गलत बातों में फँस जाते हैं। इन्दौर के मज़दूरों के बारे में तो मैं नहीं जानता, लेकिन यहां के कई लोग गान्धी जी के खून से पहले, ऐसे आन्दोलन में फँस गए, जिससे इन्दौर और ग्वालियर कुछ बदनाम हुए। आर० एस० एस० वाले जो लोग कुछ इस तरह से गलत रास्ते पर पड़ गए कि जिससे मुल्क को बहुत नुकसान हुआ। मज़दूरों को ऐसी चीज़ों में नहीं फँसना चाहिए और जब कभी उनको कोई भी राय लेनी हो, तो अपने संगठन के मुख्य आदमी के पास जाना चाहिए। कोई बड़ा मामला हो तो अपने राष्ट्रीय इण्डियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस से राय लेनी चाहिए।

यह आपका सद्भाग्य है कि आपको खंडूभाई, गुलजारीलाल आदि लोगों की मदद मिली है। हमारे शास्त्री जी भी ट्रेड यूनियन का अनुभव करके आए हैं। उन्होंने काफी अनुभव किया। हमारी असेम्बली के भी वह मेम्बर हैं। बाहर के मुल्कों में भी वह देखकर आए हैं कि बाहर की क्या हालत है। इस तरह मार-पीट करने से और फ़िसाद करने से, खून-खराबी के अलावा और चीज़ नहीं निकलती। हमारे हिन्दुस्तान की नीति तो गान्धी जी के रास्ते पर चलने की है। हम सारी दुनिया में शान्ति चाहते हैं। तो दुनिया की शान्ति, मज़दूर की शान्ति से होती है और मज़दूर वर्ग ही दुनिया में शान्ति करा सकते हैं। मज़दूरों को सही शिक्षण मिलना चाहिए।

कारखाने में काम करने के बाद आप स्वतन्त्र हैं। तब आप ईश्वर का भजन करो और अपने बच्चों को तालीम दो। जितने लोग अभी तक अपने से बाहर हैं, उनको समझाओ और शान्ति का वातावरण पैदा करो। कारखाने में जब काम करो, तो जितना ज्यादा पैदा हो सके, उतना ज्यादा पैदा करने की कोशिश करो। तब हमारा काम बनेगा। आपसे जो कुछ कहने को था, वह सब मैंने कह दिया। हमारे मुल्क में करोड़ों बेकार आदमी पड़े हैं, जिसके पास

काम नहीं है, मजदूरी नहीं है, ज़मीन नहीं है । उनको भी हमें रास्ते पर लाना है। उनको भी कुछ-न-कुछ गृह-उद्योग सिखाना है। उसके लिए भी हमारे संगठन को कुछ ठोस काम करना है। लेकिन जब आपका संगठन पूरा हो जाए, और आपकी ताकत बढ़ जाए, तभी हम उस ओर जा सकते हैं। वे लोग आज बेकार पड़े हैं और दुखी हैं। उनके दुख में भी हमें हिस्सा लेना चाहिए, जिससे हमारा मुल्क मज़बूत बने और हम सबका कल्याण हो। मैं उम्मीद करता हूँ कि मैंने जो बातें आप से कहीं उनपर आप विचार करेंगे और अमल करेंगे। (तालियां)

---

(२३)

अभिनन्दन समारोह में

दिल्ली,
३१ अक्तूबर, १९४९

प्यारे भाइयो और बहनो,

जिस प्रेम से आप लोगों ने मेरा स्वागत किया, उससे मेरा दिल भर आया है। मेरे साथियों ने जिन शब्दों में भाव प्रकट किए, उससे अब इस मौके पर मेरी ज़बान पर और भी बोझ पड़ गया है और क्या कहना, क्या न कहना, यह समझ में नहीं आता। वैसे तो मेरे प्यारे भाई राजेन्द्र बाबू ने आप लोगों से कहा कि मैं कम बोलनेवाला आदमी हूँ। क्यों? मैं क्यों कम बोलता हूँ? एक सूत्र है, जो मैंने सीख लिया है: "मौनं मूर्खस्य भूषणम्"*। (हँसी) ज़्यादे बोलना अच्छा नहीं। वह विद्वानों का काम है। लेकिन जो हम बोलें, उसी के ऊपर हम चल न सकें, तो हमारा बोलना नुकसानकारी है। इसलिए भी मैं कम बोलता हूँ। लेकिन जब मौक़ा आता है, तो मेरी ज़बान खुलती है। जब समय नहीं है, तब मैं बोल नहीं सकता। अब आप लोगों ने जो प्रार्थना मेरे लिए की, जो आशीर्वाद मुझे दिया, उससे मुझे थोड़ा उत्साह होता है कि और भी आगे कुछ जीवन बढ़ाना, कुछ सेवा करना ठीक है। बाकी यह साल मेरे लिए काफी कठिन बीता है। खाली शारीरिक कठिनाइयों की तो मैं परवाह नहीं करता,

* मौन मूर्ख का भूषण है।

क्योंकि कौन नहीं जानता है कि शरीर तो मिट्टी का बना हुआ है, वह मिट्टी में ही चला जाएगा। जब उसका समय आएगा, तो उसका कोई उपाय करने वाला भी नहीं होगा। लेकिन मुल्क के लिए यह साल बहुत कठिन गुज़रा है। मुझे रात-दिन उसी का दर्द रहता है। सामने की ओर देखता हूँ तो अभी आगे जो साल आनेवाला है, वह उससे भी कठिन दिखाई देता है। यह तलवार की धार पर चलने के समान होगा। थोड़ा-सा भी आगे-पीछे चले, तो हम मुल्क को खड्ड में डाल देंगे। मेरे जैसे आदमी के लिए तो कुछ बाकी नहीं रहा है। दुनिया में और खास तौर से हिन्दुस्तान-जैसे मुल्क में ७४ वर्ष की आयु बहुत होती है। जैसी आप लोगों की आज मेरे लिए हृदय की भावना है, ऐसी भावना देखकर जाने से बेहतर तो कोई और जाना अच्छा नहीं हो सकता।

तो मैं ईश्वर से रात-दिन प्रार्थना करूँगा कि जो भाव आप के दिलों में भरे हैं, प्रेम का और जो शुभाशीष आप मुझे दे रहे हैं, उसके लिए मैं जबतक ज़िन्दा रहूँ, दिन-पर-दिन अधिक लायक होता रहूँ। लेकिन हमारा नेता, हिन्दुस्तान का नेता, तो आज परदेस में हैं*। मेरा काम तो मर्यादित है कि उनके हाथ-पैर मजबूत करना, जब तक मुझ से हो सके। अब वह अपनी शक्ति से बाहर हमारी इज्जत बढ़ा रहा है। और दुनिया में हमारी जो इज्जत बढ़ी है, वह सब से ज्यादा तो गान्धी जी ने बढ़ाई है। उनके जीवन से बढ़ी, उनकी मृत्यु से और ज्यादा बढ़ी। दूसरा हमारा आज का नेता जिस स्नेह से और जिस भाव से बाहर अपना काम कर रहा है, उससे भी हमारी इज्जत बढ़ी है। लेकिन आखिर यदि हमें अपने मुल्क की सच्ची इज्जत बढ़ानी है और उसकी रक्षा करनी है, तो हमें अपना घर सब से पहले संभालना पड़ेगा। जिसका घर ठीक नहीं है, उसकी बाहर कितनी भी इज्जत हो, वह ज्यादा दिन नहीं चलेगा। तो दुनिया को हमसे जो उम्मीद है, वह उम्मीद पूरी करना हमारा काम है। हमारे कितने ही साथी, जो कांग्रेस से बाहर निकल गए, आज हमारी आलोचना करते हैं। कई तो यहाँ तक कहते हैं कि अंग्रेज का राज्य भी आज के राज्य से अच्छा था। वे वहाँ तक पहुँच गए, यह बदकिस्मती की बात है। क्योंकि जब दिल में इस तरह का भाव आता है, तब यह सिद्ध होता है कि हम गुलामी

---

* प्रधान मन्त्री जवाहरलाल उन दिनों संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रेजीडेंट ट्रूमैन के निमन्त्रण पर गए हुए थे।

ज्यादा पसन्द करते हैं। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि सदियों की गुलामी, जो हमारे छाती पर बैठ गई थी, उसका बोझ इतना भारी था कि जब इस बोझ को किसी तरह से हमने उठाकर फेंक दिया, तो हम इतना थक गए कि अपने साँस पर काबू रखने की शक्ति भी हमारे पास नहीं रही। अभी भी वह पूरी तरह नहीं आई है। करीब-करीब मुर्दा में जान डाली गई है। चलने लायक तो हम अभी तक हुए ही नहीं हैं। अभी हमें चलना सीखना है। उसके पहले ही हम दौड़ने की कोशिश करेंगे, तो हमारे पैर टूट जाएँगे।

कोई यह समझे कि मुल्क में जो भुखमरी का दुख है, वह हमें अज्ञात है, तो सारी ज़िन्दगी भर हमने काम क्या किया है ? हम इतने अज्ञानी होते, तब तो हम ऐसे ही नालायक होते, जैसे चर्चिल साहब ने एक दफ़ा कहा था कि "आपने 'मैन आफ़ स्ट्राज़' (तिनके के आदमियों) के हाथ में भारत को सुपुर्द कर दिया है।" लेकिन अब वह खुद भी महसूस करता है कि यह "मैन आफ़ स्ट्राज़' नहीं हैं, इनमें कुछ तत्व है। लेकिन एक चीज़ आप को नहीं भूलनी चाहिए कि दुनिया में हर जगह पर आज दुख है। और जो चीज़ हमें चाहिए, वह है आर्थिक स्वतन्त्रता। वह हमारे पास नहीं है। यह केवल हमारे हाथ की बात नहीं है। दुनिया के जो बन्धन हमारे सामने, हमारे बीच में खड़े हुए हैं, उसमें से निकलना तो बड़ा विकट काम है। एक डीवैल्युएशन (मुद्रा का अव-मूल्यन) हुआ, उससे कितनी-कितनी मुश्किलात पैदा हुईं ? बेचारा देहात में काम करनेवाला किसान या फैक्टरी में काम करनेवाला मज़दूर और अन्य सामान्य लोगों को क्या मालूम पड़ता है कि ये कठिनाइयाँ क्या हैं ? लेकिन जो लोग इन कठिनाइयों से घबराते हैं, वे कुछ काम नहीं कर सकते। कितनी भी कठिनाइयाँ सामने हों, लेकिन इन्सान में ताकत दी गई है कि वह उन कठिनाइयों का मुकाबला करे। यह मर्दों का काम है, कायरों का काम नहीं है। तो हमें घबराना नहीं चाहिए। लेकिन आज कोई कहे कि हमने पार्लियामेंट तो बनाई और आज़ादी पा ली। लेकिन इस पार्लियामेंट में कोई गवर्नमेंट का सामना करनेवाले नहीं हैं। ठीक है, लेकिन यह पार्लियामेंट तो बच्चा है। हम पार्लियामेंट में केवल परदेशियों की नकल करना नहीं चाहते हैं। हमें हिन्दुस्तान के ढंग के अनुसार पार्लियामेंट बनानी है। गान्धी जी ने पार्लियामेंट के बारे में बहुत कुछ लिखा है, मैं उसका ज़िक्र यहाँ नहीं करना चाहता हूँ। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूँ कि कम-से-कम जब तक हिन्दुस्तान मज़बूत

न हो, उनके नसों में रुधिर बहने न लगे, तब तक हमें आपस में एक दूसरे के सामने मोर्चा बाँधने से कोई फ़ायदा नहीं होता।

आप लोगों को यह समझना चाहिए कि यदि हमें आर्थिक स्वतन्त्रता चाहिए, तो उसके लिए हमें काफी कुर्बानी करनी पड़ेगी। जो कुर्बानी हमने आज़ादी पाने में की, उससे दूसरी प्रकार की यह कुरबानी होगी और उसमें काम भी दूसरे प्रकार से करना पड़ेगा। तो उससे आज खेत में काम करनेवाले किसान, फैक्टरी में काम करने वाले मज़दूर, सामान्य वर्ग, जिसको मध्यम वर्ग कहा जाता है, जिसके ऊपर आज सबसे अधिक बोझ पड़ा है, और धनिक लोग सबको कष्ट है। मान लीजिए, धनियों को अधिक कष्ट नहीं होगा। तब भी हमारे मुल्क में धनिक तो बहुत कम हैं। हमारा मुल्क गरीब है, और उसमें बहुत थोड़े धनिक लोग हैं। रात दिन उन्हीं के पीछे लगे रहने से हमको कोई फायदा नहीं होगा। फायदा हो तो, मैं भी आप के साथ शरीक हो जाऊँगा। लेकिन मैं जानता हूँ कि हमारे मुल्क में अनुभववाले लोग बहुत कम हैं। और सब लोग कहते हैं कि हमें आर्थिक स्वतन्त्रता चाहिए। साथ ही सब तो नहीं, पर कई लोग कहते हैं कि सारा उद्योग सरकार को अपने हाथ में ले लेना चाहिए। सारी इण्डस्ट्री नेशनलाइज़ (व्यवसायों की राष्ट्रीयकरण) करनी चाहिए। वह केवल सिद्धान्त की बात है। वह सब अनुभव की बात नहीं है। क्योंकि हमने अभी तक कुछ काम तो किया नहीं है, और जो कहते हैं उन्होंने तो कुछ भी नहीं किया। वह कब करेंगे, वह तो ईश्वर के हाथ की बात है। मैं नहीं जानता। करें तो हमारे लिए बहुत अच्छा हो जाएगा। लेकिन अगर आज मैं नेशनलाइज़ेशन (राष्ट्रीयकरण) के बोझ को उठा सकूं तो एक मिनट की भी देरी नहीं करूँगा। लेकिन हमारे मुल्क में जितनी शक्ति है, उस सबका हमें उपयोग करना है और मुल्क में आर्थिक स्वतन्त्रता पैदा करने में सबका साथ लेना है। उसमें सब को थोड़ी-थोड़ी कुर्बानी करनी पड़ेगी। हमें सब का साथ लेना पड़ेगा। उसमें आप लोग समझपूर्वक जितना ज्यादा साथ देंगे, उतना ही अच्छा है।

ये जो पंजाब से या सिन्ध से भागे-भागे शरणार्थी आए हैं, उन लोगों का दुख क्या मजदूरों और किसानों के दुख से कम है? किन से कम है उनका दुख? उन्होंने सब चीज गंवाई है, लेकिन हिम्मत नहीं गँवाई। जब तक हिम्मत है, तब तक सब ठीक है। जब हिम्मत गुम जाती है, तब मनुष्य नीति से भ्रष्ट

हो जाता है और नीति गई तो आत्मा भी गया। सब खत्म हो गया। तो उनके दुख के सामने देखें, तो ऐसा दुख तो बहुत कम आदमियों को पड़ा है। हमको भी नहीं पड़ा है। सो हम उस दुख का अन्दाज़ नहीं लगा सकते हैं।

बहुत से लोग मेरे पास आते रहे। आज तो मैं ऐसी हालत में हूँ कि बहुत लोगों को मिल नहीं सकता। कई लोग गुस्से भी होते हैं कि मैं उनको मिल नहीं सकता। ठीक बात है, क्योंकि मैं तो चाहता हूँ कि मैं सब को मिलूं और एक समय था कि मैं सुबह ५ बजे एक हज़ार आदमियों से मिलता था। बाग में घूमते-घूमते। लेकिन आज मैं वैसा नहीं कर सकता। तो जो कुछ मर्यादित शक्ति है, उसका उपयोग करना हो तो वह आप लोगों की दया से ही हो सकता है। किसी को उसमें भला बुरा नहीं मान लेना चाहिए कि मैं मिल नहीं सकता हूँ, क्योंकि मैं पर्दे में रहनेवाला आदमी नहीं हूँ। तो आप समझ लीजिए कि मुझमें जो मर्यादित शक्ति बाकी है, वह सब आपके ही उपयोग की है। तो इस बारे में आप मुझे क्षमा कर दीजिए। लेकिन मैं कभी कभी बोलता हूँ। जो थोड़ा सा मैं कह रहा हूँ, उसको बराबर समझ लेना चाहिए। मैं कहता हूं कि सब साथ मिलकर कुर्बानी करके, आगे नहीं चले, तो हमारा काम होनेवाला नहीं है।। थोड़े आदमियों की शक्ति से काम लेने की बात कहो, थोड़े से आदमियों को सजा करने से काम होने वाला हो, तो हम लोग क्यों बैठे रहें? क्योंकि हिन्दुस्तान में करोड़ों आदमी पड़े हैं। करोड़ों मर गए, पिछले दो तीन साल में। कुछ ही साल हुए, तीस लाख आदमी मर गए बंगाल के फैमीन (अकाल) में। तो चन्द आदमियों का फैसला करने में हमको कोई दिक्कत नहीं होगी, यदि उससे काम बन जाए तो। क्योंकि ज्यादा से ज्यादा लोगों का भला करने के लिए ही तो हम बैठे हैं।

यह ठीक है कि हम अपनी बुद्धि से काम करते हैं। लोग कहें कि बुद्धि तो हम देते हैं और काम तुम करो तो काम बन नहीं सकेगा। हम भी काम को फेंक नहीं देते, उस पर सोचते भी हैं। जो काम हमने आज तक किया है, इतना न किया होता, तो दुनिया में भारत की जो इज्जत बढ़ रही है, वह न बढ़ी होती। जिस तरह से बड़ी-बड़ी कठिनाइयों में भी हमने मुल्क को इन दो सालों में संभाला है, उससे हमारी कुछ इज्जत बढ़ी है। लेकिन, यदि हमारे पेट में भूख लगी हो, तो बाहर कितना भी अच्छा कपड़ा पहन के और बाल ठीक करके हम घूमें, तो उससे कोई काम नहीं होता। वह पेट का खड्डा

तो हमें भरना ही है। लेकिन भरने के लिए इन्तज़ाम करना हो, तो आज हमें अपना सब सामान पैदा करना है। बूंद बूंद एकत्र करने से सरोवर भर जाता है। समुद्र भी इसी तरह भरता है। तो हमें भी सबका साथ चाहिए। थोड़ी-थोड़ी कुर्बानी न करने से तो आज हमारा सब काम रुक गया है। मुल्क में धन पैदा नहीं होता है। अंग्रेज़ों के जमाने में धन पैदा होता था। वह अपना हिस्सा ले जाता था, लेकिन ज्यादा धन पैदा होता था। आज धन पैदा होना बन्द हो गया है। कई कहते हैं कि धनिकों ने हमारे साथ धोखा किया है, इसीसे ऐसा हुआ है। कुछ हद तक यह बात सही हो सकती है। लेकिन दो हाथ के बिना ताली नहीं बजती है और भले बुरे जैसे भी हैं, वह हमारे धनिक हैं। उनका साथ नहीं लेंगे, तो हमारे खुद में इतनी ताकत होनी चाहिए कि उनको छोड़ कर भी हम अपना काम कर सकें। उनको गाली देने से क्या फ़ायदा है? मैं मुल्क की किसी एक शक्ति की इस तरह से आलोचना करने वाला आदमी नहीं हूँ। मैं यह बात चाहता भी नहीं हूँ। लेकिन जितनी शक्ति देश में है, उस सब को जमा करके हमें काम करना है। अपने आर्थिक संगठन करने के लिए हमें तो सब को समझाना है और हम यह सबको समझा किस तरह से सकते हैं? जिस तरह मैंने राजा महाराजाओं को समझाया है, उसी तरह से। दूसरी तरह से नहीं। हां, किसी से दण्ड से भी काम लेना पड़ता है। लेकिन अधिक काम साम और दाम से ही होता है। हमारा काम है समझाना, प्यार से समझाना, क्योंकि वे हमारे अपने ही हैं। मुहब्बत से इन्सान का दिल पिघल जाता है। हम जितना उन्हें दूर रखेंगे, उतना वह दूर भागते जाएँगे।

मैं आपसे कहता हूँ कि आज मुल्क में ज्यादा धन पैदा करो तो उसी से आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। लेकिन आप बार बार एक ही बात करते रहेंगे कि हमारे पास तो यह चीज नहीं है, वह चीज़ नहीं है। जैसा कुछ लोग कहते हैं कि हमारे पास चीनी नहीं है और आज अगर हमारा चुनाव हो, तो हम हार जाएँगे। क्योंकि दीवाली के मौके पर हर घर में चीनी बिना ऐसा एक मौका पैदा होगा, कि सब घरवालियां हमें गाली देने लगेंगी। लेकिन उनको मालूम नहीं है कि चन्द लोगों ने अगर शक्कर छिपाई हो, तो ठीक है। लेकिन अगर देश में शक्कर सचमुच ही कम है, तो उसे कहां से लाना है। कई लोग हम को लिखते हैं कि बाहर से चीनी मंगाओ। उनको मालूम नहीं है कि बाहर से भी आज चीनी नहीं मिल सकती। मिल सकती, तो हम तुरन्त

लाते। थोड़े दिन शक्कर का फाका करना पड़े, तो उससे हमारा कोई आदमी मरनेवाला नहीं है। गुस्सा करनेवाले और गाली देनेवाले तो ज़रूर हैं। हम अपनी गलती भी महसूस करते हैं कि कुछ गलती भी हमने की। लेकिन इस स्वराज्य के मानी भी यही हैं कि गलती करते करते हम लोग अपना काम खुद करना सीख जाएँ। यदि उससे ज्यादा कोई बेहतर काम चलानेवाले हों, तो मैं उनको मुबारकबाद दूंगा कि आइए, भाई, बैठिए। लेकिन अगर ऐसा न हो, तो देश की सब शक्तियों को मिलाकर हमें काम कराना है।

इसी तरह से हमारे मुल्क में अनाज कम पैदा होता है। क्योंकि जिस भाग में ज्यादा अनाज पैदा होता था, वह भाग अब अलग हो गया है। किसी-न-किसी तरह से हम वहाँ से दौड़कर आए हैं। अब बाहर के मुल्कों से जो अनाज आता था, वह भी नहीं आता है। तो हमें अब अपने लिए पूरा अनाज पैदा करना है। कई लोगों ने दो-दो साल का अनाज भर लिया है। देहातों में तीन तीन साल का भरा है। वे डरते हैं कि अगर आज हम निकाल देंगे, फिर अगले साल दुष्काल आएगा, तो क्या करेंगे और भाव बढ़ जाएगा, तो क्या करेंगे। लोग इस तरह से जमा करके रखते हैं, यह अच्छी बात नहीं है। हमें सारे मुल्क को समझाना पड़ेगा कि ज्यादा अनाज पैदा करो और कम-से-कम खर्च करो। कम-से-कम वेस्ट (बरबाद) करो। जब तक हमारा पड़ोसी भूखा है, तब तक हमें ख्याल करना चाहिए कि हमारे पास अपनी ज़रूरत से जितना ज्यादा है, उतना तो हम उसे दे दें। यह भाव जब तक हिन्दुस्तान में पैदा नहीं होगा, तब तक हमारी प्रजा शक्तिशाली नहीं होगी, प्रभावशाली नहीं बनेगी। और दुनिया हिन्दोस्तान से इस चीज़ की उम्मीद करती है कि यह गान्धी जी का हिन्दुस्तान है। हमारी संस्कृति बहुत पुरानी है, हमारा मुल्क धर्म परस्त है। और हमारी संस्कृति भी यही कहती है। अपने मुल्क में हम पुरानी संस्कृति से काम नहीं लेंगे, तो लोग कहेंगे कि ट्रेड यूनियन बनाओ और सब के पास भागो कि वे माँगें कि पहले हमारा हिस्सा हमें दे दो। उसके बाद सरकारी कर्मचारी कहें कि हाँ, हम को भी हमारा हिस्सा दे दो। धनिक भी कहे कि हम अपना धन छिपा कर रखेंगे, क्योंकि यदि हम बाहर निकालेंगे, तो इनकम टैक्स (आयकर) कमीशन वाला बैठा है। वह कहेगा कि बताओ यह कहाँ से लाए? तुम चोर हो। हम सब इस तरह काम करेंगे तो हमारी आर्थिक स्वतन्त्रता नहीं होगी, बल्कि पराधीनता होगी।

अब अगले साल हमें खूब काम करना है, क्योंकि मुल्क में हमने वह शान्ति पैदा कर ली है, जिस से हम दूसरा काम कर सकेंगे। अब भी हमारी जो सरहद है, उसपर तो हमें सावधान रहना ही है। अपना चौकीदार हमें ठीक रखना है। आप लोगों को मालूम होगा कि जब हमारा एकत्र हिन्दुस्तान था, तो हमारी फौज का खर्चा ११० करोड़ रुपया था। तब हमारी कुल फौज भी डेढ़ लाख ही थी। आज हमारी अकेले की फौज ४ लाख है और ढाई लाख फौज पाकिस्तान की है। अब आप उसका खर्चा लगाइए। आज हमारा जो बजट है, उसमें दो हिस्सा हम आर्मी के लिए रक्खें हैं। यह हमारी रक्षा का खर्च है। क्योंकि मुल्क में यदि अस्थिरता हो, तो कोई चीज़ बाकी नहीं रहेगी। तो हमें शान्ति तो रखनी ही है, सरहद की रक्षा भी करनी है। भूखे रह कर भी हमें अपने देश की रक्षा तो करनी ही होगी। हम मुल्क में कोई फसाद भी नहीं होने देंगे।

तो आज़ादी तो हमको मिल गई, लेकिन हमें अपना दो हिस्सा बजट फौज पर खर्च करना पड़ता है। पाकिस्तान को भी यही करना पड़ता है, सबको यही करना पड़ता है। हम खर्च घटाएँगे, लेकिन उसमें से घटाने का चारा न हो तो हमें सावधान रहना चाहिए कि इस फौज के लिए हमें क्या क्या चाहिए। वह सब हमको रखनी है। तो उसके लिए हमें अपनी उद्योग इण्डस्ट्री को ठीक करना है। वह ऐसी बेकार पड़ी रहेगी, तो ज्यादा दिन हम ये फौज नहीं रख सकेंगे। हम यह फौज न रख सकें तो हमारी सलामती भी नहीं रह सकती। तो एक तो भूख पड़ी और दूसरी यह चोट पड़ी, तब तो हम मर जाएँगे। हमें दोनों चीज़ों को हटाना है। यह हमारा अगले साल का कर्त्तव्य है। हमारे सामने बहुत-सी कठिनाइयाँ हैं। युद्ध के यन्त्र आदि सब हमें बाहर से लाने पड़ते हैं। पहले अमेरिका से जो चीज़ सौ रुपया में मिलती थी, अब हमको उसी का एक सौ चवालीस रुपया देना पड़ता है। यह हालत हो गई है और यह सब हमारे हाथ की बात नहीं है।

ऐसी और भी बहुत सी कठिनाइयां हैं, जिनका बयान करूँ, तो बहुत टाइम लगेगा। आज मेरी इतनी शक्ति नहीं है कि मैं खोलकर बात करूँ। यदि मुझ में ताकत आ जाए तो मैं किसानों में जाकर और किसानों में घूम-घूम कर उनको समझाना चाहता हूँ कि यह क्या कर रहे हो? आप क्यों बम मारते हो कि दाम ज्यादा न मिले, तो हम अनाज नहीं देंगे। आपकी इन बातों

से मुल्क को घाटा पड़ता है। मुल्क में घाटा पड़गा, तो आपको जो मिलता है, वह भी नहीं मिलेगा। मैं मज़दूर को भी समझाना चाहता हूँ कि थोड़े रोज कम मिले, तो कम दाम पर भी ज्यादा माल पैदा करो। पीछे आपको ज्यादा मिलेगा। इसी तरह से हमारे जो कर्मचारी हैं, सरकार में काम करने वाले हैं, उनको भी समझाना चाहता हूँ कि आज थोड़ी कमर कसो। और कुछ आपको देने को नहीं, तो बखशीश भले ही न दो, जो बचा सको, सरकार में जमा करो। वह तुम्हारे अपने लिए भविष्य में रहेगा। लेकिन हमारा उद्योग बढ़ने दो। आज हमारे पास धन ज्यादा पैदा करने के लिए न पैसा है, न उद्योग बढ़ाने के लिए पैसा है, लेकिन जैसा मैंने कहा कि एक एक बूंद से समुद्र भरा जाता है। इस तरह से करोड़ों आदमी थोड़ी थोड़ी बचत करके भी दे दें, तो यह पूंजी उनको भविष्य में काम देनेवाली है। उसी में हिन्दुस्तान की आर्थिक आज़ादी समाई है। दूसरी तरह से यह आज़ादी नहीं मिलेगी।

धनिकों को भी समझा-बुझाकर हम कुछ न-कुछ लेने की कोशिश करेंगे। उन्हें छोड़ेंगे नहीं। लेकिन हम अपने रास्ते करेंगे। मैं तो अपने रास्ते पर ही काम कर सकता हूँ। लेकिन उसमें आप लोगों को यह विचार न होना चाहिए कि धनिकों से पहले लेना चाहिए। हम पीछे देंगे। उससे तो हमें एक प्रकार का अहंपूर्वं (मैं पहले !) करना चाहिए। गरीब को भी दिल में लाना चाहिए कि हम गरीब तो हैं, लेकिन हमारा सारा मुल्क गरीब है। इस मौके पर हमें कुछ-न-कुछ कुर्बानी करनी है। सरकार की तरफ़ से यदि कोई मांग आए, तो उस मांग को जितना हो सके उतना पूरा करने की कोशिश हम करेंगे। हम इस तरह से नहीं चलेंगे, तो हमारा काम होनेवाला नहीं है। और यही काम इस साल हमें करना है। क्योंकि मुझे अब भीतर का कोई डर नहीं है। बाहर का खतरा तो जब होगा, तो उसमें सारी दुनिया भस्मीभूत होनेवाली है। क्योंकि आज जो बड़ी-बड़ी ताकतें हैं, जिनके पास खाना-पीना मज़े में और बहुत है, लेकिन उन्हें खाना हज़म नहीं होता है, क्योंकि उन्हें रात-दिन यही डर रहता है कि अब क्या होगा ? यह मुल्क ज्यादा बढ़ जाएगा, वह मुल्क ज्यादा बढ़ जाएगा। हमें इस प्रकार का कोई डर नहीं है। क्योंकि गान्धी जी ने हमको सिखाया है कि हमें किसी का डर नहीं रखना।

मैं चाहता हूँ कि जैसे सब ने आज प्रार्थना की, ऐसे सब मजहबवाले लोग मुहब्बत से एक दूसरे के साथ मिलकर रहें। कोई झगड़ा फसाद न करें।

और आस-पास की कोई बड़ी ताकत लड़ेगी, तब तो जो कुछ होगा, होगा। लेकिन कोई छोटी ताकत हमारे सामने ठहर नहीं सकेगी। वह हम से छेड़-खानी करेगी तो मर जाएगी। उसमें हम को क्या है। तो आप लोगों को यही समझना है कि हमें किसी पर हमला नहीं करना है, किसी को दवाना नहीं है, किसी को लूटना नहीं है। किसी की चीज़ लेना हमें हराम है। लेकिन अपना मुल्क हमें मज़बूत बनाना है, बलवान बनाना है। उसमें आप सब लोग साथ दें, इस काम में मुझको आप आशीर्वाद दें, तव तो मेरा ज़िन्दा रहना ज्यादे काम की बात है। इसी हालत में मरना सब से ज्यादा उत्तम है कि जब लोग कहते हैं कि आदमी ठीक था। जब वह बोलता था तो कुछ कड़ी बात भी कहता था, लेकिन आदमी ठीक था। इसी इज्जत से मरना बहुत अच्छा है। लेकिन अगर आप लोग मेरी बात मानें, तो ज्यादा जिन्दा रहने के बारे में आपका आशीष ठीक है। मैं मुल्क से भी यही उम्मीद करता हूँ कि सारा मुल्क इसी के ऊपर चलेगा।



सरदार पटेल एक प्रेस कान्फरेन्स में

(२४)

चौपाटी, बम्बई

४ जनवरी, १९५०

बहुत समय के बाद मैं आपके पास आया हूँ। मेरी ख्वाहिश थी कि कोई ऐसा समय आ जाए, जब बम्बई में मेरे समय का उपयोग भी हो जाए और मैं आपसे मुलाकात भी कर लूं। पिछली दफे मैं एक महीने तक इधर रहा था। लेकिन तब किसी को मिल न सका था। जिसका मुझे बहुत दुख था। जब भी मैं बम्बई आता हूँ, तब सबसे मिलने की मेरी ख्वाहिश होती है। पर आज मेरी प्रकृति ऐसी नहीं है कि मैं सब लोगों से अलग-अलग मुलाकात कर सकूं। इसलिए मैंने आप सब लोगों से इस जल्से में एक साथ मिलने की हिम्मत की है। बम्बई हमारे हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय प्रवृत्ति का केन्द्र-स्थान है। आज हमारे राष्ट्र की जो प्रगति या दुर्गति है, उसका माप निकालने को एक स्थान बम्बई से ही देश भर का सब तरह का माप मिल जाता है। जब बम्बई बिगड़ता है तो सारा हिन्दुस्तान बिगड़ता है। यह समझा जाता है कि बम्बई नाराज़ हो, तो सारा हिन्दुस्तान नाराज़ और बम्बई सुखी हो तो सारा भारत सुखी होता है। उसका मतलब यह नहीं कि देहात में जो करोड़ों लोग पड़े हैं, उनके सुख-दुख का केन्द्र स्थान भी बम्बई है। ऐसा नहीं है। बम्बई की रोशनी और जलाली और बम्बई का आकर्षण भारत के देहातों में रहनेवाले करोड़ों लोगों के सुख-दुख का माप नहीं है।

तो भी इस बात का काफ़ी अन्दाज़ बम्बई में मिल जाता है कि हिन्दुस्तान की नाड़ कैसी है। इसलिए बम्बई को हमें एक शानदार शहर के रूप में रखना चाहिए। लेकिन हिन्दुस्तान का हाल भी यहाँ हमें समझना चाहिए। मैं जानता हूँ कि बम्बई में जो उमंग और उत्साह हुआ करता था, उसमें आजकल कुछ ठंडाई आई हुई है। यहाँ भी कुछ नाखुशी और कुछ नाराज़ी दिखाई देती है। उसकी वजह कुछ भी हो, लेकिन हिन्दुस्तान में आज जो परिस्थिति है, उसका असर बम्बई पर भी पड़ना लाज़मी है।

आजकल जो कुछ भी भला-बुरा होता है, उसका दोष कुछ लोग अक्सर सरकार पर डालते हैं। उसका उन्हें अधिकार है। उन्हें जो सुख दुख होता है, उसमें वे सरकार को ज़िम्मेवार मानते हैं। यह बात कहां तक सही है, वह दूसरी बात है। लेकिन आज मैंने देखा कि जो लोग कभी पुरानी सरकार का भला नहीं चाहते थे, जो आज़ादी के जंग में हमारा साथ देते थे, सरकार का साथ नहीं देते थे, वे सब भी अब इस सरकार की नुकताचीनी करने में शरीक हो गए हैं। लोगों को जैसे एक प्रकार का शौक हो गया है कि वे हर चीज में सरकार की टीका-टिप्पणी करें। एक हद तक यह बात ठीक भी है। उस से सरकार एक तरह से जागती रह सकती है। लेकिन जब हर रोज़ हम एक ही बात चिल्लाते रहें कि यह सरकार तो नालायक है, ढंग की नहीं है, इसमें काफी घूसखोरी है, इसमें रिश्वत लेनेवाले हैं, और काला बाजार करने वाले चोर डाकुओं को भी यह सरकार कुछ सज़ा नहीं दे सकती तो इन बातों से मुल्क का भला नहीं होगा। जो लोग ऐसी बातें करते हैं, उन्हें समझना चाहिए कि आखिर यह सरकार है क्या चीज़? उन्हें बताना चाहिए अब तो सरकार जनता की प्रतिनिधि है और जनता उसे नहीं चाहती तो निकालने का उपाय क्या है। तब लोगों को मालूम होगा हम सब उस सरकार के ज़िम्मेवार हैं, और हम सब का इसमें हिस्सा है। तो जो सुख-दुख आज हम पर आ रहा है, उसको हमें हिस्सा बाँट लेना पड़ेगा। मैं यह नहीं कहता कि सरकार जो कुछ करती है, वह सब सही होता है। क्योंकि जिन लोगों के हाथ में राजतन्त्र है, उन्होंने पहले कभी राजतन्त्र नहीं चलाया था। सारी ज़िन्दगी तो उन्होंने परदेशी सल्तनत को हटाने का काम किया। उसके लिए वे जेलों में गए, लड़े और इस प्रकार की एक प्रवृत्ति चलाई कि जिससे सिद्ध हो कि सरकार के कामों में जनता की कोई ज़िम्मेवारी नहीं है। हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ और अब

चन्द दिनों के बाद वह रिपब्लिक बन जाएगा। पिछले ढाई साल इस सरकार ने जो काम किया, उसमें कुछ अच्छा काम भी किया है या नहीं ? या सभी बुरा ही काम किया है ?

तो आपको यह समझना चाहिए क्या देश में कोई दल है, जो सरकार को ठीक बना सके, ऐसी सरकार बना सके, जिससे आपको सुख हो ? अगर कोई वैसी सम्भावना होती तो हमारे जैसे लोग, जिनके कंधे अब कमज़ोर हो गए हैं, इस बात से बहुत खुश होंगे कि हम पर से बोझ उठ जाएगा। लेकिन उसके लिए उन लोगों को जवाबदारी लेने के लिए तैयार होना होगा। उसके लिए जवाबदारी की लियाकत होनी चाहिए। उस लियाकत का आपको सम्पादन करना पड़ेगा। जो आज रात-दिन दूसरों की नुक्ताचीनी करता रहता है, वह खुद कोई काम नहीं उठा सकता। आज हमें नुक्ताचीनी की आदत पड़ गई है। हम दूसरों के कसूर देखते हैं, लेकिन अपनी क्या कमज़ोरी है, वह सब हम नहीं देख सकते। यह समझ लेना कि भला, बुरा जो कुछ भी होता है, वह दूसरों ने किया है, हमने नहीं किया, तो भला इस तरह से कोई काम हो सकता है ? आपको समझना चाहिए कि आज दुनिया परेशान है। किसी मुल्क में शान्ति नहीं है। विश्व युद्ध के बाद जो क्रान्ति हो रही है, उसके असर से हम नहीं बच सकते।

एक बात आपको जाननी है। वह यह कि हमने इतनी कोशिश करके हिन्दुस्तान को आज़ाद बनाया। उसके लिए हमने इतनी कुर्बानी की। तो क्या आज़ादी के साथ हमारा काम खतम हो गया ? ऐसी बात नहीं है। अब हमें हिन्दुस्तान को मज़बूत बनाना है और उसे सुखी बनाना है, तो उसके लिए हमारा फर्ज़ क्या है ? हमें सोचना चाहिए कि हमें दूसरों के लिए क्या करना चाहिए। अगर हम इस तरह न सोचें और यह जवाबदारी सरकार पर छोड़ दें, तो उससे हमारा काम न बनेगा।

अब देखिए मैं आपके सामने वह बात रखता हूँ, जिससे पिछले दिनों सरकार की काफ़ी बदनामी हुई। एक बात तो यह हुई कि दिवाली के अवसर पर लोगों को काफ़ी शक्कर नहीं मिली। इस बात पर बहुत शोर मचाया गया। शायद ठीक था। मैं समझता हूँ कि शक्कर न मिलने से मुझे भी दुख है। लेकिन इसका कसूरवार कौन था ? उसके लिए जब तक पूरी जाँच न हो, तब तक जिसने कसूर किया वह भी यही कहेगा, कसूर मेरा नहीं, दूसरों का कसूर है। व्यापारी लोग कहेंगे कि कारखाने वालों का कसूर है। कारखानेवाले

कहेंगे कि सरकार का कसूर है, मज़दूरों का कसूर है। कोई कहेगा किसानों का कसूर है, गन्ना पैदा करनेवाले का कसूर है। मतलब यह कि सभी दूसरों को दोष देंगे। सरकार कहेगी हम क्या करें, हमको तो कुछ मालूम न था। हम एक रास्ते से चलते थे कि बीच में यह रुकावट आई। हमने पूरी कोशिश की। कसूर दूसरे का है। जो शक्कर खानेवाले थे, वे कहेंगे हम शक्कर बिना खाए मर गए। हालांकि शक्कर बिना कोई मरता नहीं है और न आग टूट पड़ता है। यह ऐसा नहीं है कि खाने-पीने की तकलीफ हो। जो कोई दुनिया में राज करते हैं, उनकी भी बहुत मुसीवत है। लेकिन वे बरदाश्त करते हैं और उसका उपाय सोचते हैं। तो उसमें से सरकार अपनी ज़िम्मेवारी से नहीं बच सकती है। लेकिन भविष्य में ऐसी चीज़ न हो, वैसा उपाय हम कर सकते हैं, और कसूर किसका है, यह बाद में मालूम पड़ेगा। लेकिन सरकार क्या करे? उसमें के चन्द आदमियों को पकड़े तो उसमें भी शोर मचता है कि इसको पकड़ा, उसको पकड़ा, यह भी गलती है। तो चीनी का उपाय जो कुछ करना है, हम करेंगे। लेकिन यह छोटी बात थी, उसने बड़ी बात बना दी। लेकिन जिसकी आदत वैसी पड़ गई है, वह तो करेगा ही। उनसे बड़ी बातें बनाईं, लेकिन उन बातों में सार नहीं था।

तो मेरी सलाह है कि छोटी बातों को इतनी बड़ी बनाकर शोर मचाना इससे हमारा काम नहीं होता है। यदि सरकार को हटाना हो तो छोटी बात को बड़ी बनाकर शोर मचाना ठीक नहीं। सरकार को बदलना आसान चीज है। उसके लिए आप की तैयारी होनी चाहिए, उसका बन्दोबस्त करना चाहिए; नहीं तो यह चीज सदा ऐसी बनती रहेगी, जिसमें हमेशा गलतियां होती रहेंगीं। सबको साथ मिलकर काम करना चाहिए। आज हमारे मुल्क में दो चीजों की बड़ी कमी है, जिनकी कि जरूरत है। एक तो अनाज की। हर हिन्दुस्तानी को मालूम पड़ गया है कि हमें करोड़ों का अनाज बाहर से मँगाना पड़ता है लेकिन उसका उपाय क्या है? जब तक हमारे मुल्क में ज्यादा अनाज पैदा न करें, तब तक ऐसा होता रहेगा। कोई कहेगा उसके लिए भी सरकार जिम्मेवार है। पर अब इस तरह की बातों से हमारा काम नहीं चलेगा।

सच बात तो यह है कि हमारे देश में अनाज की भी उतनी कमी नहीं, जितनी लोग मानते हैं। मैंने बराबर कहा कि यदि लोग सच्चे हों, तो थोड़ी

ही कमर कसने से हमारा काम हो जाएगा। लेकिन हमारे में दो प्रकार के आदमी हैं। सरकार ने निश्चय किया कि अनाज का भाव इतना होना चाहिए और किसानों को चाहिए कि वे ठीक भाव पर सरकार को अनाज दें। तो दूसरा दल कहता है कि सरकार को अनाज का भाव मुकर्रर करने का क्या अधिकार है। कोई कहता है कि सरकार को अनाज मत दो। तो इन सब बातों से क्या होगा? आज हमें किसानों को ज्यादा अनाज पैदा करने में मदद देनी चाहिए और उन्हें समझाना चाहिए कि आज अगर मुल्क गिरेगा, तो तुम भी गिर जाओगे। और अगर सारा हिन्दुस्तान गिर गया, तो इसमें कोई नहीं बच सकता। इतनी कुरबानी के बाद हमारा मुल्क आज़ाद हुआ है तो हमें इस तरह की गैर ज़िम्मेवारी नहीं बरतनी चाहिए। देशभक्त ऐसा काम नहीं करते। अनाज की टोटी (कमी) को पूरा करने के लिए हमें करोड़ों रुपयों का अनाज बाहर से लाना पड़ता है। उसके लिए सरकार ने फैसला किया कि यह मुल्क अपने पैरों पर हो जाए, ऐसी कोशिश हमें करनी चाहिए। लेकिन अकेली सरकार यह काम कभी न कर सकेगी। जब तक लोगों का साथ न मिलेगा, तब तक यह काम पूरा न होगा।

अब हमें कपड़ा चाहिए। तो कपड़े की उत्पत्ति में जितनी कमी है, उसे पूरा करने के लिए यह ज़रूरी है कि बार-बार हड़तालें न हों। यह ज़रूरी है कि काम बराबर चलता रहे, जितना कपड़ा निकलना चाहिए उतना हम निकाल सकें। अधिक कपड़ा बनाने के लिए हमें रुई चाहिए। हमारे मुल्क में उतनी रुई पैदा नहीं होती इसलिए हमें बाहर से रुई मँगवाने का इन्तज़ाम करना चाहिए। साथ ही मज़दूरों को मैं समझाना चाहता हूँ कि तुम्हारा जितना हक है, उसे लेने की पूरी कोशिश करो, हम भी उसके लिए कोशिश करेंगे। आज हमारा, हम सब का अपना राज है। हम आपस में क्यों झगड़ा करें? मिल-मालिकों को भी समझाना चाहिए कि भई तुमने पहले बहुत दिन नफा उठाया, भविष्य में भी मौका मिलेगा। लेकिन जब मुल्क को तकलीफ है, तो मुनाफे की बात छोड़कर हमें मुल्क को उठाने के काम में एक हो जाना चाहिए। मैं यह नहीं समझता कि सब लोग हमारी बात मानेंगे। लेकिन हमें एक ऐसा वायुमण्डल पैदा करना चाहिए, जिसमें अधिकतर लोग देश के हित को नज़र में रखकर काम करें। लेकिन अगर हम अपनी जवाबदारी छोड़कर दूसरों पर डालते रहें, और दूसरे के दोष ढूंढ़ते रहें, तो काम नहीं चल सकता।

हमने निश्चय किया है कि ज्यादा-से-ज्यादा धन देश में पैदा करें। अनाज,

कपड़ा, चीनी, लोहा, जितनी भी जिन्दगी की ज़रूरियात हैं, वे ज्यादा-से ज्यादा हमारे देश में पैदा हों। उसके लिए कोशिश करना हमारा धर्म है, हमारा कर्तव्य है। आपस में झगड़ा करना हो तो जब मुल्क मजबूत हो जाएगा, तब खूब झगड़ा कर लेंगे। कोई कहता है कि हमें तो सिर्फ ईक्वल डिस्ट्रीब्यूशन आफ़ वैल्थ (धन का बराबर बँटवारा) पर ही ध्यान देना चाहिए। जितना धन हमारे पास हो, वह सब को बराबर-बराबर सरीखे बाँट देना चाहिए। अभी तक तो ऐसा किसी मुल्क में नहीं हुआ है। फिर भी हाँ, हमारा ध्येय यह हो, तो ठीक है। लेकिन आज हमारे देश में धन ही कहाँ है? जितना धन यहां है, वह सब बराबर बाँट भी दिया जाए, तो मुल्क भिखारियों का ही मुल्क होगा। उसमें कोई धनवान नहीं रहेगा। सब एक समान भले ही हो जाएँ, लेकिन जब तक हमारे देश में समृद्धि नहीं बढ़ेगी, तब तक हमारी जनता का कुछ न बनेगा। तो क्या हमारी आज़ादी का मकसद यही है? हमें बीच का रास्ता निकालना चाहिए।

कई लोग कहते हैं कि हमारा सारा उद्योग सरकार को अपने हाथ में लेना चाहिए। दूसरी तरफ़ आप कहते हैं कि सरकार ने चीनी के मामले में क्या किया? और जितने उद्योग हैं, उन्हें हाथ में लेकर सरकार को इसी तरह करना है। सरकार का क्या मतलब है? सरकार के पास इतने साधन नहीं हैं कि वह अपनी व्यवस्था ठीक तौर से चला सके। तब भी उसके ऊपर इतना बोझा डालना, कि जो कुछ हमारा है, वह भी बिगड़ जाए तो इससे क्या फ़ायदा? आज मुल्क में जितने उद्योग हैं, और जिस तरह चल रहे हैं, यदि सरकार के हाथ में आकर भी, कम-से-कम आज की तरह चलते रह सकें, तो मैं इस बात पर अपना पहला दस्तखत करूँगा कि हाँ, ले लो, इस सब का राष्ट्रीयकरण कर दो। लेकिन अगर आज ऐसी स्थिति है कि जो है वह भी बिगड़ जाए, तो उसमें कोई भी हैरानी की बात नहीं है। दुनिया के बहुत से देशों में यही स्थिति है। लेकिन इस बात के पीछे उसमें कोई सपना रखता हो कि मुल्क को नष्टभ्रष्ट करके उसके पीछे उसमें से कुछ नई बात निकालेंगे, जैसा कि हमारे साम्यवादी भाई कहते हैं। आप कलकत्ता में देख चुके, जहाँ रोज-रोज कोई ट्राम पर बम्ब फेंकते हैं, तो कोई मोटर पर, मकान पर या किसी फैक्टरी में। जैसे चन्द लोगों ने यह पेशा ही कर लिया हो, जिससे उन्हें कुछ पैसा मिले, कुछ ब्लैक मिले। जब बाहर के लोग अपने अखबारों में हमारे अहवाल का बयान पढ़ेंगे, तो वे कहेंगे कि यह

कैसा मुल्क है ? कलकत्ता हिन्दुस्तान का एक बड़ा शहर है, जो कितने ही उद्योगों का केन्द्र स्थान है। उस केन्द्र स्थान में आप रात दिन यही धन्धा करें, तो उससे मुल्क को कितना नुकसान होगा, जैसे यह बात कोई नहीं सोचता।

ऐसा फ़साद करने का जिन लोगों का धन्धा ही है, उनको तो मैं कुछ भी नहीं कह सकता। उनको कहने से फ़ायदा भी क्या होगा ? क्योंकि उन लोगों ने तो मान लिया है कि इसी तरह से काम चलेगा। लेकिन आप लोगों को समझना चाहिए कि अगर मुल्क इस रास्ते पर जाएगा, तो वह अपनी आज़ादी का भी कोई फ़ायदा नहीं उठा सकेगा। कुछ लोग कहते हैं कि असेम्बलियों और पार्लियामेंट में इस सरकार के सामने कोई विरोध करनेवाला नहीं है। मगर विरोध करने का यह ढंग नहीं है। ठीक ढंग से विरोध करने से तो लोकशाही मुल्कों में सरकार को भी इज्जत और मदद मिलती है। लेकिन हर रोज़ एक जुलूस निकाल कर सेक्रेटेरियट पर हल्ला करने से या किसी कारखाने के सामने जलसा करने से पार्लियामेंटरी विरोध नहीं होता। वह तो परदेशी सरकार को तंग करने का तरीका था और तब, उन हालतों में ठीक था। लेकिन आज उससे क्या लाभ होगा ? तो हिन्दुस्तान में जितने लोग हैं, उन्हें आज अपनी जवाबदारी समझनी चाहिए। आज तो हमको रिपब्लिक का एक नया कान्स्टीटयूशन जारी करना है, जिस में सब बालिग लोगों को मत देने का अधिकार मिलता है। मतलब यह कि आज हर एक भारतवासी को अपनी जवाबदारी का ख्याल रखना चाहिए।

जब तक सब लोग अपना-अपना बोझ उठाने में लय नहीं हो जाएँगे, तब तक मुसीबत बनी रहेगी। आज सरकार की ज्यादा से ज्यादा मुसीबत है। कुछ लोग कहते हैं कि कण्ट्रोल मिटाओ। हमने एक दफे कण्ट्रोल निकाल कर देख भी लिया। उसमें हमारी बहुत बदनामी हुई। बहुत लोगों को मुश्किलें आईं, क्योंकि तभी से कुछ लोग पहले से भी अधिक फायदा उठाने लगे। आज कण्ट्रोल हटाने को सरकार क्यों राज़ी हो जाएँगी ? कण्ट्रोल हटाने से न तो शान्ति होगी और न देश का कारोबार ही ठीक ठीक से चलेगा। क्योंकि सरकार का काम व्यापार करने का नहीं है। जो सरकार व्यापार करेगी, वह भीख मांगेगी। यह काम सरकार से नहीं होगा। आज की दुनिया इस तरह की है कि हमें स्वतन्त्रता मिलने पर और अधिक मुसीबतें और कठिनाइयां आई हैं। उनको बाँटने की कोशिश आपको करनी चाहिए। यह कण्ट्रोल हमने आज़ादी के बाद

नहीं रक्खा। यह तो पहले भी था। आज़ादी के साथ जो कठिनाइयां आई हैं उन्हें भी हमें हटाना है। इसके हटाने में आपको साथ देना होगा। बिना मिहनत किसी का पैसा ले लेना आम तौर से आदमी को ठीक लगता है, लेकिन यदि मुल्क का हित उससे बिगड़ता है, तो इन्सान को वह काम नहीं करना चाहिए। पहले हम अब की बनिस्बत अधिक धन पैदा करें, उसके बाद वह सब हो सकता है।

आज हमारे हिन्द का जो बजट है, उसका यदि अध्ययन करें, तो मालूम पड़गा कि हमारे मुल्क का असली हाल क्या है। हमें धनिकों के ऊपर जितना कर का बोझ डालना चाहिए, उससे भी ज्यादा हमने डाला है। लेकिन उस सब से जो पैसा आता है, उसमें से दो हिस्सा हमें हिन्दुस्तान के बचाव के लिए लश्कर रखने पर खर्च कर देना पड़ता है। कोई कहता है कि लश्कर का खर्च कम करो। लेकिन हमारी एक मर्यादा है, और उस मर्यादा से आगे हम नहीं जा सकते। क्योंकि मुल्क के दो टुकड़े होने से जो जख्म मुल्क को लगा है, वह अभी भरा नहीं है। अपने पड़ोसी के साथ अभी हमारी मुहब्बत नहीं है। हमें उम्मीद थी कि दो टुकड़ा हो जाने के बाद इधर पूरी शान्ति हो जाएगी और दो टुकड़ा करने का काम भी पूरी मुहब्बत से होगा। उसके बाद वह अपना घर चलाएँगे, और हम अपना। मगर वह अभी तक हुआ नहीं। जब तक अपने पड़ोसी के साथ हमारा सम्बन्ध ठीक नहीं हुआ, तब तक हमें अपना घर संभालने में ऐसी चौकसी करनी चाहिए कि कोई खतरा न हो। अगर हम ऐसा न कर सकें तो हमें सरकार से हट जाना चाहिए। इस प्रकार की हमारी तैयारी न हो, तो वह गुनाह होगा। यह सारी मुसीबत हमारी ही नहीं है। यह उनकी भी मुसीबत है, और वह इसे जानता भी है।

उधर अभी तक कुछ लोग बात करते हैं कि लाल किले पर हम झण्डा लगाएँगे। इधर कलकत्ता में एक जलसा हुआ, जिसमें लोगों ने प्रस्ताव किया कि हिन्दुस्तान का जो दो टुकड़ा हुआ है, उसे हम एक कर देंगे। दो साल के बाद आज ज़रा हिम्मत की है, तो वह हमारे काम में रुकावट डालने के लिए की है। इससे दोनों देश एक नहीं हो सकते। जब हमने दो टुकड़ा मंजूर किया, तब किसी ने नहीं कहा कि यह टुकड़ा न करो। सब ने कहा कि दो टुकड़ा होना अच्छा है। तो जिन लोगों ने आज यह बात उभारी है, वह उसी मनोवृत्ति का उदाहरण हैं, जिस मनोवृत्ति का नतीजा एक यह हुआ कि गान्धीजी का खून

हुआ। उसमें कई आदमी ऐसे निकले, जिन्होंने हत्या में हिस्सा लिया। अगर फिर भी अभी तक हम उसी रास्ते पर चल रहे हैं, तो उधर जाने में तो देश का नुकसान है ही।

तो मैं इन लोगों को चेतावनी देना चाहता हूँ कि उस रास्ते पर जाना मूर्ख लोगों का काम है। इसका परिणाम भयंकर होगा। खामखाह दुश्मन को यह कहने का मौका क्यों देते हो कि देखो, इनकी नियत बुरी है। हमारी नियत बिल्कुल बुरी नहीं है। हम चाहते हैं कि पाकिस्तान फूले और फले। वह मज़बूत बने। लेकिन हमको लूटकर मज़बूत बनने का मौका हम उसे नहीं देंगे।

आप जानते हैं कि सारी जूट की खेती उनके वहां पाकिस्तान में पड़ी है। जब कि सारे जूट के कारखाने कलकत्ता में हैं। अब हमने टुकड़ा तो किया, लेकिन सारे कारखाने इधर हैं और जूट उधर है। वह किसान जो जूट के सिवा दूसरा कुछ पैदा नहीं कर सकता, अब अपनी जूट को इस तरफ़ भेज न सके, और इधर के कारखाने जूट प्राप्त न कर सकें, तो दोनों की आर्थिक व्यवस्था टूट जाती है। इस से उसको भी नुकसान है और हमको भी नुकसान होगा। अब यह जो डिवैल्यूएशन (मुद्रा का अवमूल्यन) हुआ, उसका भी यह नतीजा हुआ कि पाकिस्तान ने मान लिया इनके १०० रुपये की कीमत हिन्दोस्तान के १४५ रुपये के बराबर होगी। अर्थात् हिन्दुस्तान से ४५ रुपये ज्यादा। तो ठीक है। और यह फैसला उन्होंने इस प्रकार किया कि वे सब मुल्कों से अलग रहे। तो १०० रुपये के जूट का दाम हम १४५ रुपये देंगे, उन्हें ऐसी उम्मीद थी। तो हम ऐसे बेवकूफ नहीं हैं। हमने तय किया हम बेजा रकम नहीं देंगे। यदि ज़रूरत पड़ेगी तो कारखाने बन्द रक्खेंगे। लेकिन गलत बात नहीं मानेंगे। साथ ही हमें मालूम था कि कारखाने बन्द करने का समय नहीं आएगा। हमारे मुल्क में जूट इतना पैदा हो सकता है कि हमें बाहर से मंगाने की ज़रूरत न पड़े। तब देखो कि हमारी हालत क्या होती है। हम लड़ना नहीं चाहते, मुहब्बत से काम करना चाहते हैं। लेकिन इस प्रकार सीनाजोरी से काम करना हो तो उसमें सब का नुकसान होगा। सब ने कहा कि वह चीज़ हमारे मुल्क में पैदा करनी चाहिए। तो वहां से जो उनके फायनेंस मिनिस्टर हैं, उन्होंने कहा कि देखो वे कहते हैं कि हम अपने मुल्क में जूट पैदा करेंगे। देखो, उनकी नियत।

तो क्या हमारी नियत ऐसी होनी चाहिए कि हम उनके पैरों पर ही पड़ते

रहें ? यह तो बुरी बात है। अगर वे ऐसी उम्मीद रखें, तो यह कितना गलत है। हाँ, मुहब्बत और मित्राचारी से यह काम हो सकता है। इसके लिए हमने बहुत कोशिश की। लेकिन जितना किया, वह सब निष्फल जाता है। तब हमने निश्चय किया कि जितने जूट का हमने आर्डर दिया है, उसका डिवैल्यूएशन से पहले जितना दाम था, वह हम दे दें। वह दाम दे दिया, तब भी जूट उन्होंने रोक ली, तब हमने निश्चय किया कि इस तरह तो काम नहीं हो सकता। इस तरह एक झगड़े से दूसरा झगड़ा निकलता गया, तो वह अच्छा नहीं है। आज हमारे प्राइम मिनिस्टर पुकार-पुकार कर कहते हैं कि भाई, जो भी झगड़ा हो, उसका आपस में फैसला करो। आपस में फैसला न हो, तो पंचों के सुपुर्द करो। हम इस बात के लिए तैयार हैं। करोड़ों रुपयों का माल सिंधियों के पास से ठोंक-ठोंक के निकाल लिया और वह दबा कर बैठे हैं। उसका फैसला भी वे नहीं करना चाहते। जब तक ऐसी नियत रहेगी, तब तक कोई दोस्ती नहीं हो सकती। तो उधर हमारी मिलकियत और इधर उनकी मिलकियत के बारे में झगड़ा है, इसका फैसला भी आरबिट्रेशन (पंचायत) से होना चाहिए। ऐसा करना हो, तो हम तैयार हैं। इस प्रकार जितने हमारे प्रश्न हैं, वह इस तरह के हैं कि जिनका फैसला आपस में बैठ कर हो, तो वह हो सकता है। लेकिन हम वहाँ तक आने का खर्चा अपना नहीं करेंगे। वहाँ तक आपको भी थोड़ी सी मुसीबत आए तो उठानी पड़ेगी। वह उठाने के लिए आपको तैयार रहना चाहिए। हम किसी के साथ लड़ाई तो करना नहीं चाहते। दुनिया में किसी भी मुल्क को दबाने की कोशिश हिन्दोस्तान ने आज तक कभी नहीं की। कभी भविष्य में भी वह वैसा करने इरादा नहीं रखता। लेकिन अपने देश को अपने पैरों पर खड़ा रखने की हम कोशिश करें और आप उसमें रुकावट दें, तो वह नहीं चलेगा।

तो मैंने कहा कि हमारे मुल्क में आज जितनी मुसीबतें हैं, उसका बड़ा हिस्सा इस कारण है कि हम दोनों में मुहब्बत नहीं है। खाली मुहब्बत का अभाव ही नहीं है, साथ ही इतने और कारण भी जमा हुए हैं कि जिनकी वजह से आपस में घर्षण रहता है। इस घर्षण से यदि कभी झगड़ा हो तो उस दशा में अपनी रक्षा करने की पूरी तैयारी हमारे पास होनी चाहिए। उसके लिए हमें सब चीज़ों की तैयारी करनी पड़ेगी। कई लोग कहते हैं भई, गान्धी के प्रोग्राम पर चलो। गवर्नमेंट अपनी रक्षा के लिए जो सामग्री रखती है,

जो लश्कर रखती है, उस सबके लिए जो कुछ हमें चाहिए, वह सब हमें अपने यहाँ बनाना चाहिए। हिन्दुस्तान में उसके लिए हमें कारखाने चाहिएँ। हमारे जो पुराने कारखाने हैं, आज उनको भी हमें बढ़ाना है। अब नये कारखाने भी हमें चालू करने हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि हमारे मुल्क को उद्योग में मत डालो। हमारा मुल्क तो कृषि प्रधान है। यहाँ के अधिकांश लोग तो देहात में पड़े हैं। यह सब सही है। हम गान्धी जी के साथ सारी उमर रहे। हम कोई ऐसे पागल तो नहीं हो गए कि उनको भूल जाएँ। लेकिन गान्धी जी की बात का यह मतलब नहीं कि हम कारखाने खतम कर दें, या जो हैं सिर्फ उनको रखें और नये न बनाएँ। उसका यह भी मतलब नहीं कि हम सिर्फ देहात का ही काम करते रहें, या सिर्फ देहात में जो पैदा हो वही खाएँ। गान्धी जी चाहते थे कि हर गाँव स्वावलम्बी हो, हर गाँव अपने गाँव में सब झगड़ों का फैसला करे, हर चीज़ वे अपने यहाँ पैदा करें। हम भी वही चाहते हैं। लेकिन हम देखते हैं गाँवों में से भाग-भाग कितने ही लोग बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली में आते हैं। देहात को ठीक करने में तो कुछ समय ज़रूर लगेगा ही। लेकिन इस तरह कारखानों को बन्द करने से क्या लाभ होगा? अगर हमें नये कारखाने नहीं चलाने तो यह फौज़ कहाँ से पाली जाएगी? उसका काम चलाने के लिए देहात में से तो रास्ता नहीं बनेगा। इसके लिए पेट्रोल चाहिए, वह देहात में कहाँ मिलेगा? इसके लिए सामान चाहिए, यूनीफार्म चाहिए, कपड़ा चाहिए, मोटर चाहिए, लारी चाहिए, और भी कितनी ही चीज़ें चाहिएँ। अपनी बड़ी फौज़ों का इन्तज़ाम हम देहात में नहीं कर सकते। इसके लिए कारखाने चाहिएं, उसके लिए लोहा चाहिए। लोहे का एक कारखाना जमशेदपुर में है, उससे हमारा काम नहीं चलता। बाहर से लोहा मँगाना पड़ता है। उसके लिए बहुत दाम देना पड़ता है। तो हमें सोचना है कि उस का क्या इन्तज़ाम करें। और कोई इन्तज़ाम हमारे पास है नहीं। तो इन सब कामों के लिए हमें कारखाने भी चाहिएँ। उधर हम चाहते हैं कि गाँव भी सुखी हों और वे समृद्ध बनें। तो हमें दोनों का मिश्रण करना पड़ेगा। हमें कारखाने तो चाहिएँ, पर उन्हें कौन चलाएगा? यदि गवर्नमेंट चला सके तब तो ठीक। लेकिन अगर सरकार न चला सके, तो जिनको उद्योग का अनुभव है, और उनको जो चला सकते हैं, उन लोगों की मार्फत हमें यह काम करना पड़ेगा।

उनका भी साथ हमें चाहिए। रात-दिन उनके साथ हम लड़ते ही रहें, तो उससे हमारा काम नहीं चलेगा। इन उद्योगों में मज़दूरों और कारखाने के मालिकों का मिश्रण होना चाहिए। यह हो सकेगा, तभी हमारे देश के कारखाने सफ़लता पूर्वक चल सकेंगे।

कुछ लोग कहते हैं कि बाहर से धन लाओ। बाहरवाले कहते हैं कि अगर हम आपके मुल्क में धन लाएँगे तो उससे पहले यह देखेंगे कि उससे फायदा कितना है, वे अपनी-अपनी शर्तें भी लगाना चाहेंगे। यह भी एक बड़ी मुसीबत है। इस मुसीबत में जो काम करना है, उसमें छोटी-छोटी मुसीबतों से नहीं घबराना चाहिए। मैं यह कबूल करता हूँ कि बम्बई में जितने कांग्रेस के साथ देनेवाले लोग थे, करीब-करीब उनका रोजगार भी चला गया। जो मध्यवर्ग के लोग थे, उनका व्यापार भी टूट गया। क्योंकि हरेक प्रकार का कण्ट्रोल आया तो नए नए लोग खड़े हो गए। उसमें जो बाकी रोज़गार करनेवाले लोग थे, वे भी कुछ बदनाम हो गए। उनके नौकर-चाकर, गुमाश्ते सब बेकार बैठे हैं। कई लोग हमें गाली भी देने लगे। मगर वह बेवकूफी की बात है। इससे किसी का कोई काम नहीं चलेगा।

कुछ लोग कहते हैं कि हमें जल्दी से जल्दी कण्ट्रोल खतम कर देने चाहिए, जिससे हमारा काम चले। उनका कहना है कि कण्ट्रोल खत्म होगा, तभी हमारे काम में प्रगति होगी। परन्तु व्यवहार में हमने थोड़ा कण्ट्रोल हटाया ही था कि नफ़ा करने को कुछ लोग जल्दी-जल्दी वहाँ पहुँच गए। तो आज यहाँ जो कुछ हो रहा है, हमारे मुल्क में आज जितनी बेचैनी, बदनामी और झगड़ा है, वह सब क्रान्ति का एक नतीजा है। एक गुलाम मुल्क को आज़ादी तो मिली है, मगर गुलामी का असर अभी तक उस पर से नहीं गया। जब चरित्र बिगड़ा है, तो कण्ट्रोल कहाँ चल सकता है? बहुत-से लोग कहते हैं कि कण्ट्रोल में बड़ी घूसखोरी होती है। उसका उपाय क्यों नहीं करते? ठीक है। मगर जब घूस देनेवाले और घूसखोर मिल जाते हैं, तो उन्हें पकड़ना आसान नहीं होता। उसका उपाय क्या है? इसका उपाय तो यही है कि घूसखोर जब कायदा-कानून से पकड़ा जाए, तो उसको सज़ा हो। लेकिन उसके लिए भी तो आपका साथ चाहिए, जनता के सशक्त सहयोग के बिना यह दुराचार किस तरह रुक सकता है?

आज बहुत-से लोग कहते हैं कि यह पुलिस अपना काम क्यों नहीं करती?

पुलिस बेचारी क्या करे ? आखिर यह पुलिस किसकी है ? क्या यह बाहर से आई है ? वह किसी परदेसी का हुक्म तो नहीं उठाती है । आज पुलिस हमारी है । इसकी इज्जत हम नहीं बढ़ाएँगे तो कौन बढ़ाएगा ? अगर हम उसको उत्साह देनेवाले काम न करें, यदि हम उसकी इज्जत न करें और सदा यही कहते रहे कि हमारी पुलिस खराब है तो इसका मतलब यही होगा कि हमारी सारी नेशन खराब है । तब दुनिया में हमारी आबरू इज्जत क्या होगी ? हमें अपने मुल्क में से यह चीज़ हटानी है । इस ओर हमने कुछ काम भी किया है । हिन्दुस्तान के बाहर के लोग तो यही कहेंगे कि इन लोगों ने दो साल में बहुत काम किया है । हम यह नहीं उम्मीद रखते थे कि हिन्दुस्तान इस तरह से काम कर सकेगा । हमारा तो ख्याल था कि वह टूट जाएगा । लेकिन इन लोगों ने इतना संगठन कर लिया और शान्ति पैदा कर ली, जिसकी उम्मीद न थी । हम तो जानते थे कि यह चलनेवाली चीज़ नहीं है । लेकिन यह चली और इस तरह चली कि बाहर के देशों में हिन्दुस्तान की इज्जत बहुत बढ़ गई ।

मैं जानता हूँ कि इज्जत से पेट नहीं भरता । लेकिन इज्जत भी तो कोई चीज़ है । बाहर दुनिया में हमारी कदर हुई, यह ठीक है । लेकिन हमारी कदर हमारे घर में नहीं है, और इसका उपाय करना चाहिए । तो इसके लिए हमें सारे देश की जनता को साथ लेना होगा । तो मैं बम्बई में आप लोगों से बड़े प्रेम और अदब से यह अर्ज करने के लिए आया हूँ कि एक दूसरे की निन्दा करने से हमारी बाहरी इज्जत भी चली जाएगी । उससे हमारा कोई काम नहीं बनेगा । मैं चाहता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम करो और गलत रास्ता छोड़ दो । लड़ाई के ज़माने में आपको जितना फायदा उठाना था, उठा लिया । उन दिनों में कुछ लोगों ने धन पैदा करने का रास्ता लिया था । आज यह समय आया है, जब कि हर किसी को अपना पसीना बहाना है, कड़ी मेहनत करनी है । पूरी मिहनत करके एक दफ़ा अगर हम हिन्दुस्तान को ठीक कर दें, तो बहुत अच्छा होगा । हमारे देश का भविष्य बहुत ही अच्छा है, इस में मुझे कोई शक नहीं । लेकिन हमें दो-चार साल मेहनत कर के संभालना है । यदि दो-चार साल इस बच्चे की हम ठीक हिफ़ाजत कर लें, तो बाद में यह दौड़ता चलेगा ।

जैसा कि मैंने अभी कहा था, हमारी इज्जत बाहर तो बढ़ी ही है । हम

यह नहीं कहना चाहते कि हम लोगों ने कुछ किया है। बहुत-से लोग इस बात को जानते हैं कि ऐसी बात नहीं है कि हमने कुछ भी नहीं किया। जो काम हमने किया है, कुछ उससे फ़ायदा भी हुआ है और हमारी इज्जत भी बढ़ी है। अगले काम के लिए भी हमने भूमि तैयार की है। हिन्दुस्तान का टुकड़ा हो जाने पर भी आज जितना हिन्दुस्तान एक हुआ है, उतना वह पहले कभी नहीं था। हिन्दुस्तान के सारे इतिहास में वह कभी इतनी बड़ी इकाई नहीं था, जितना आज हुआ है। आज मुल्क में शान्ति भी है। आज हमारे यहाँ न आपस के झगड़े हैं और न कौमों के। अब मुल्क को ठीक करना है। उसके लिए हर आदमी को अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए। और समझना चाहिए हमारा कर्त्तव्य क्या है? यह न समझे तो हमारा काम नहीं चलेगा।

मैं तो आज बम्बई में बैठा हूँ, लेकिन पहले मैंने जितना किसानों का काम किया है, उतना किसी ने नहीं किया। मैंने उनकी काफी सेवा की है। मैं फिर से उनमें जाना चाहता था, मगर अब मेरी सेहत अच्छी नहीं है। अगर मेरी उमर ठीक होती, तो मैं हिन्दुस्तान भर को हिलाता और खुद फिर से किसानों में जाता। लेकिन आज तो मैं यहाँ ही से देश भर के हर एक किसान से अपील करना चाहता हूँ कि आप को यह नहीं कहना चाहिए कि आपको इतना पैसा मिले, तभी आप अनाज देंगे, तभी आप अनाज पैदा करेंगे। यह समय आया है, जब आपको देश का हित सब से बढ़कर देखना है। अभी तो वह समय है कि जो कुछ मिले, आप मंजूर करें। हमारे करोड़ों भाई-बहन पड़े हैं, जिसको आज खाने को अनाज नहीं मिलता। जिनके खाने के लिए हमें बाहर से अनाज मँगवाना पड़ता है। इसका बहुत भारी बोझ है और यह बोझ हमारे खुद के ऊपर पड़नेवाला है। हिन्दुस्तान गिरा तो सब गिरेंगे। लेकिन हम उसे गिरने नहीं देना चाहते। तो हम सबका धर्म है, कि ज्यादा अनाज पैदा करें और उसे अपने पर कम-से-कम खर्च करें। किसी भी तरीके से अनाज का नुक-सान हो, वह बरबाद हो, इस तरह की कोई चीज हमें नहीं करनी चाहिए। आज आप ज्यादा-से-ज्यादा अनाज पैदा कीजिए, देश को जितनी रूई और जूट की ज़रूरत है, उतनी रुई और जूट पैदा कीजिए। अपने मुल्क को अपने पैरों पर खड़ा करने में आप जितनी भी हो सके, मदद दें।

मज़दूर भाइयों से भी मैं बड़ी अदब से कहता हूँ कि वे चाहे जितने दल-

बल बनाएँ। एक दल, दूसरा दल, साम्यवाद, समाजवाद, मिथ्यावाद, बकवाद, चाहे जो बनाएँ, सब ठीक है। लेकिन यह तब तक, जब तक यहां एक छत्र छाया है। जब मुल्क में आप कुछ पैदा करेंगे, तभी तो बढ़ेंगे। लेकिन कुछ पैदा ही न किया तो? तब तो जैसे एक हड्डी के टुकड़े पर कुत्ते पड़ते हैं और एक दूसरे को काटते हैं, वही हाल होगा। उससे कोई फ़ायदा नहीं। उससे तो मुल्क की इज्जत भी गिर जाएगी। तो ज्यादा से-ज्यादा उत्पादन करो। अपने हक को माँगो, खुशी से माँगो। लेकिन हमारा जो आर्थिक ढाँचा है, उसे ठीक ढंग से सँभालो—और उसे मत बिगाड़ो। देश की ज़रूरत के लिए ज्यादा धन पैदा करो।

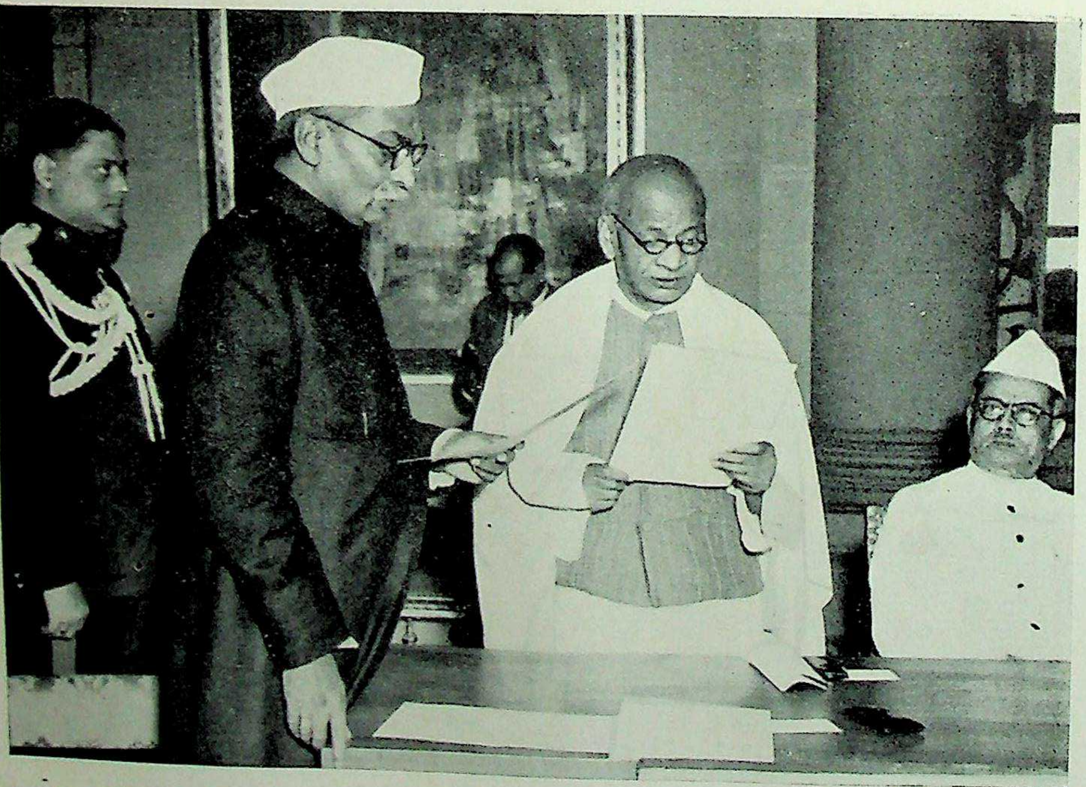
मैं पूंजीपतियों से भी कहता हूँ कि आज आप नफ़ा पैदा करने की नज़रें छोड़ दो। आज तुम्हारी निगाह अपनी इज्जत पैदा करने की ओर होनी चाहिए। तुम बहुत बदनाम हुए हो। तुम्हारे बारे में काला बाज़ार, सफेद बाज़ार, बहुत तरह की बातें लोग कहते हैं। वे सब बातें अब भूल जाओ और हर तरह से निश्चय करो कि साल, दो साल, या तीन साल, नफ़ा खाने की बातें छोड़ दो। अभी भी नुकसान उठाने को तुम्हें कोई नहीं कहता, मगर अब नफ़े का लालच छोड़, पहले मुल्क को मज़बूत बनाने का काम करो, उसके बाद नफ़े की बात सोचना।

कहा जाता है कि पिछले मध्यम वर्ग को बहुत दुख उठाना पड़ा। सही बात है। लेकिन जब हम मध्यम वर्ग की व्याख्या करते हैं, तो उसमें किसको डालना और किसको नहीं डालना, यह मुश्किल हो जाता है। उसमें सब घुस जाते हैं। तो दुख उनको भी है। आज हिन्दुस्तान में सब वर्गों को दुख हैं। लोग मानते हैं कि धनी वर्ग को सुख है और बाकी सब दुखी हैं। मैं यह नहीं मानता कि जिसमें खाने को ज्यादा हो और इज्जत न हो वह सुखी जीवन है। क्योंकि खाली पेट भरने से तो कोई काम नहीं होता है। वह तो जानवर भी करता है।

आजकल धनिक वर्ग को गाली देना जैसे हमारा कर्त्तव्य हो गया है। किसी को लीडर बनना हो तो वही शुरू करे, नहीं तो काम नहीं चलता। मगर उससे न धनिक को फ़ायदा है, न गाली देनेवाले को ही। तो हमारा काम तो सब को समझाना है। सब को साथ लेना है। आप कहते हैं कि दुनिया में दो बड़े दल हैं और दो वाद हैं। एक साम्यवाद दुनिया के बहुत बड़े हिस्से में फैल

रहा है। दूसरे कैपिटलिस्ट लोग हैं। ठीक है। लेकिन हम कहाँ आते हैं ? न हम साम्यवाद में हैं, न पूंजीवाद में। पूंजीवाद भला हो या बुरा, लेकिन आज दुनिया में सबसे धनवान, सुखी, मज़बूत और प्रतिष्ठावान मुल्क अमेरिका है। तो जो पूंजीवाद वहाँ है, उतना दुनिया में और कहीं नहीं। फिर भी लोग वहाँ सुखी हैं। वहां के मज़दूर को जो वेतन मिलता है, वह कहीं और के मज़दूर को नहीं मिलता। हमारे जो धनवान लोग हैं, व उनके धनवानों के मुकाबले में तो कुछ भी नहीं। तो इस झगड़े में हमें नहीं पड़ना है। हमारा काम तो यह है कि देश के सब लोगों को साथ मिलाकर एक ऐसा रास्ता निकालें, जिससे चार-पांच साल में देश में पूरी ताकत आ जाए। इस काम में हमें सब का सहयोग लेना है।

उसके लिए हम अगर काम नहीं करेंगे, तो आज तो हम जैसा-तैसा काम चलाते रहे हैं, लेकिन भविष्य में धोखा खाएँगे। इसलिए मेरी आप लोगों से एक ही प्रार्थना है कि जो थोड़ा दुख आया है, उसे आप सहन करें। आपके दुख को हम जानते हैं। हम इसकी कदर करते हैं कि आप लोगों ने दुख सहन किया है। लेकिन आज भी आप कायर न बनो। कायरता आदमी को बेजान बना देती है। हम लोग तो सैकड़ों सालों की गुलामी को बरदाश्त किए रहे। अब आज़ाद हुए हैं, तो थोड़े समय के लिए इतना थोड़ा सा कष्ट और बरदाश्त कर लें तो सब ठीक हो जाएगा। लेकिन इस कार्य में हमें आपका साथ चाहिए। अगर आप सब साथ देंगे, तो मेरा विश्वास है कि हम इस मुल्क को ऐसी जगह पर पहुँचा सकते हैं, जब कि दुनिया में हर जगह उसकी फिर से कदर हो। तभी वह दुनिया में शान्ति फैलाने के काम में योग्य हिस्सा ले सकेगा और गान्धी जी ने हम से जो उम्मीद रखी थी, उसी रास्ते पर जा सकेगा। लेकिन अगर पहले हम अपना घर ठीक नहीं करेंगे, तो हम न तो गान्धी जी के रास्ते पर चल सकेंगे और न किसी और रास्ते पर। तब हमारा मुल्क बेजान बन जाएगा। जब तक बाहर से हम पर कोई आक्रमण नहीं करता, तब तक तो ठीक है। लेकिन यदि कोई आक्रमण करनेवाला आया, तो फिर से हमें गुलाम नहीं बनना है। इसलिए आज की जो प्रजा है, उसके ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। आज की प्रजा का कर्तव्य है कि भविष्य की प्रजा के हित के लिए आज दुखों को भी बरदाश्त करे। आज हमें भविष्य की प्रजा के सुखों की नींव डालनी है। उसके लिए हमें तैयार रहना चाहिए।



२६ जनवरी, १९५० के ऐतिहासिक दिन राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद सरदार पटेल से भारत के गृहमंत्री पद की शपथ ग्रहण करवाते हुए

अब जितनी बातें मैंने आपके सामने कहीं हैं, उन पर आप विचार करें। अगर वे समझ में आ जाएँ, दिल में उतर जाएँ, तो उन पर पूरा अमल करें। मैंने तो जितना हो सका, अपनी ज़िन्दगी में कर लिया। मगर आज भी बहुत काम करने को बाकी है। मेरे जीवन के जो थोड़े दिन रह गए हैं, उनमें भी जहाँ तक मुझ से बन पड़ेगा मैं काम करूँगा। लेकिन अब ज्यादातर तो बोझ आप लोगों के ऊपर ही पड़ेगा। तो मुझे उम्मीद है कि मैंने जो बातें कही हैं, उन्हें दिल में रक्खेंगे और उन पर सोचेंगे और अमल करेंगे।

---

(२५)

मुझे बंगाल का दर्द है

कलकत्ता,

२७ जनवरी, १९५०

बहुत दिनों के बाद आप लोगों का दर्शन करने का मौका मिला। बहुत दिल चाहता था मिलने के लिए। बार बार मैंने कोशिश की, लेकिन अपनी शारीरिक कमज़ोरी की वजह से मैं हिम्मत नहीं करता था। लेकिन आखिर ईश्वर की कृपा से मुझे आप लोगों से मिलने का जो अवसर मिला है, इस अवसर पर मैं आप से दो शब्द कहना चाहता हूँ। मैं बंगाल के दर्द को पूरी तरह से जानता हूँ। मुझे रात-दिन इसका ख्याल रहता है। बंगाल के लिए मेरे दिल में काफी दर्द और हमदर्दी रहती है। लेकिन कितना भी दर्द और कितनी भी आपत्ति आए, बंगाल की जनता पर हमारी पूरी श्रद्धा है। यह कोई पहला मौका नहीं है। सारे हिन्दुस्तान की आज़ादी की नींव जब से डाली गई, तब से आज तक जब-जब मुसीबतें आईं, तब-तब बंगाल ने बहादुरी दिखाई। पहले तो बंगाल पर, हिन्दुस्तान पर, जब परदेसी हुकूमत थी, तब परदेसी हुकूमत को हटाने के लिए जो कोशिश हुई, उसमें बंगाल के नेताओं का और बंगाल के नौजवानों का जो हिस्सा था, उसके कारण बंगाल पर काफी जुल्म किया गया। उसका आपने बड़ी हिम्मत से और बड़ी बहादुरी से मुका-बला किया। उसके लिए सारा हिन्दुस्तान बंगाल का ऋणी है और उस

बंगाल को हिन्दुस्तान कभी भूल नहीं सकता। इसके बाद विदेशी हुकूमत हट गई, या हटने को तैयार हुई। तब आधी हुकूमत तो परदेशी थी, लेकिन जब आधी अपनी हुई, तब मुस्लिम लीग का एक प्रकार से आधा राज्य हो गया। आधी हुकूमत उनकी हुई, और आधी अंग्रेज़ की हुई। बीच में कोई हमारा हिस्सा था, तो नाम का था। लेकिन उस समय आप पर काफी मुसीबत पड़ी, और उसका सामना आपने किया। बंगाल पर आए "डाइरेक्ट एक्शन डे" को हिन्दोस्तान कभी भूल नहीं सकता। उस दिन और उसके बाद कलकत्ता का जो हाल हुआ, उसे कौन भूल सकता है ? कैसे भूलें ? लेकिन उसमें से भी आप निकल आए। उसके बाद नोआखाली में क्या हुआ ? उसे भी हिन्दुस्तान कैसे भूल सकता है ? तो उसमें से भी आप लोग निकल आए।

उसके बाद समय आया और यह कहना भी मुश्किल हो गया कि अब बंगाल का क्या होगा। पर जब ऐसा समय आया, तब गान्धी जी इधर ही थे। वे नोआखाली में गए। उन्होंने गाँव-गाँव पैदल चलकर लोगों के दुख में हिस्सा लिया, लोगों को कुछ सहारा दिया। उसके बाद वे कलकत्ते में भी कुछ रोज़ ठहरे। गुस्से में आकर, या अपने दुख के कारण गुस्से में भरे हुए हमारे बिहारी भाइयों ने भी उसी समय पर रोष प्रगट किया, और उसकी आग हिन्दुस्तान भर में फैली। यह आग उत्तर हिन्दुस्तान में ज्यादा फैली। उसका किस्सा आप सब को मालूम है। लेकिन बाद में ऐसा समय आया कि नब हमने सोचा और सारे हिन्दुस्तान की एक राय हुई। तब आप की भी उसमें यही राय थी कि यह समय ऐसा है कि हमें किसी न किसी तरह से परदेशी हुकूमत को इधर से हटाना है, और उसके लिए जो कुर्बानी करनी पड़े, सो करें। क्योंकि जब तक अंग्रेज़ हटें नहीं, तब तक मुल्क में शान्ति होना असम्भव था, और दोनों कौमों के बीच झगड़ा मिटना भी मुश्किल था।

उस समय हमने यह निश्चय किया कि अगर हिन्दुस्तान का टुकड़ा करना ही पड़े, तो एक शर्त पर हम उसे मंजूर कर सकते हैं कि पंजाब के भी दो हिस्से होने चाहिए और बंगाल के भी दो हिस्से होने चाहिए।

यह ईश्वर की लीला है कि कभी अंग्रेज़ ही बंगाल को तोड़ना चाहते थे, उसके दो हिस्से करना चाहते थे। तब आप लोगों ने उसको रोका था। रोकने के लिए काफी कुर्बानी भी आपने की थी। सारे हिन्दुस्तान ने तब आपका साथ दिया था। अब उसी बंगाल के दो हिस्से करने के लिए हमें खुद कहना

पड़ा और हम सब ने मान लिया कि उसके सिवाय कोई चारा नहीं है। तब हिन्दुस्तान में कोई ऐसा नहीं था, जो अपनी आवाज ज़ोर से उसके विरोध में निकाले। क्योंकि सब समझ गए थे कि उसके सिवाय कोई और रास्ता दिखाई नहीं देता। और साथ ही हमने सोच लिया कि कलकत्ता हमारे पास न रहे, तो हम किसी भी हालत में टुकड़े की बात मंजूर नहीं कर सकते। मुसलिम लीग के नेता इसको नहीं मानते थे। वे जिसे पाकिस्तान मानते थे, उसको तो हम मंजूर नहीं कर सकते थे। उनका कहना था कि उन्हें सारा ही लेना है। सारा बंगाल और सारा पंजाब। उसका झगड़ा चलता रहा। आखिर उन्होंने भी मान लिया और हमने भी मान लिया। लेकिन इसे मानने के बाद भी उसका जो नतीजा आया, और जो खून-खराबी हुई, उससे हिन्दुस्तान को चोट लगी। वह चोट अभी तक ठीक नहीं हुई, और उसको ठीक होने में कुछ समय लगेगा। उसमें बंगाल को काफी घाव लगे। उसका घाव गहरा है, उसके भरने में भी समय लगेगा। उसके लिए धीरज चाहिए, हिम्मत चाहिए।

आपके पास पहले भी काफी ऐसे मौके आए, जिनमें आपने धीरज और हिम्मत दिखाई। आज भी वैसा ही मौका है कि सब्र से काम लिया जाए। हिम्मत रखो। अच्छा दिन ज़रूर आएगा, लेकिन अपने हाथ से हमें परिस्थिति को बिगाड़ना नहीं चाहिए। अपने काम को हमें हिम्मत, धीरज और समझ पूर्वक करना पड़ेगा। गुस्से से कोई काम नहीं होगा। जल्दबाज़ी करने से भी काम बिगड़ेगा। हमारे जो भाई हमसे अलग हुए हैं, उनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं। मैं पंजाब की बात छोड़ देता हूँ। मैं खाली बंगाल की बात करता हूँ। वहाँ भी दोनों हिन्दू और मुसलमान सुखी हों, इधर भी दोनों सुखी हों। हमारा घाव जल्दी भर जाए, हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। दोनों तरफ़ से हिम्मत, धीरज और बुद्धि से काम लेना पड़ेगा। पुरानी बातें हम में से कई लोग न इधर भूल सकते हैं और न वहाँ भूल सकते हैं, और इसी से बार-बार झगड़ा होता है। तो बंगाल का दर्द किसको मालूम नहीं है? हमारे जो लोग वहां पड़े हैं, वे आज परदेशी हो गए। जो कल तक हमारे भाई थे और हमारे साथ हमारी आज़ादी की लड़ाई में शामिल थे, वे सब आज परदेशी हो गए। हम और वे ऐसे अलग हो गए कि एक दूसरे के दुख में सहानुभूति तक नहीं दिखा सकते हैं।

अभी अफ्रीका में भी हमारे लोग पड़े हुए हैं। दक्षिण अफ्रीका वाले भाइयों से हम सहानुभूति दिखा रहे हैं, और उनका जो नैतिक साथ देना चाहिए, वह भी हम देने की कोशिश कर रहे हैं। वे आज माने हुए अफ्रीकन नागरिक हैं, तब भी हम पर उनका हक है। यह एक पुराना हक है। बंगाल के यह जो दो हिस्से हुए, इस तरह से वे पुराने भाई-बन्धु कोई अलग थोड़े ही हो सकते हैं? हमारी रिश्तेदारी, हमारा सामाजिक सम्बन्ध, हमारे आर्थिक सम्बन्ध, वे सब टूट कैसे सकते हैं? तो यह तो हम भूल नहीं सकते। लेकिन इसमें जो मुश्किलें और रुकावटें पड़ती हैं, उनको रफ़ा करना हो, तो पहले हमें अपना घर ठीक करना चाहिए।

हमारा घर अगर ठीक न हो, तो हम बाहर किसी की मदद नहीं कर सकते। तो दुख तो हमारे सामने है ही। लाखों आदमी इधर आकर पड़े हैं, कलकत्ता में पड़े हैं, बंगाल के दूसरे हिस्सों में पड़े हैं। ये सब भागे भागे यहाँ आए हैं। अपनी माल मिल्कियत वहीं छोड़ कर आए हैं, सगे सम्बन्धियों को छोड़कर आए हैं। कई लोग उनको बहकाते भी हैं, कि यह गवर्नमेंट कुछ नहीं करती; सेंट्रल गवर्नमेंट कुछ नहीं करती; प्रान्त की गवर्नमेंट कुछ नहीं करती। लेकिन इससे उनको कुछ फ़ायदा नहीं मिलता है, उनका दुख मिटता नहीं है। मैं आपके सामने सोचने के लिए जो बात रखता हूँ, वह यह है कि हमें इन लोगों का दुख मिटाना हो, तो हमें पहले अपना घर ठीक कर लेना चाहिए। और उनका दुख मिटाना हमारा कर्तव्य है।

आज हम बंगाल में, खासकर कलकत्ता में, जिस एक चीज़ को देखते हैं, उसे सारा हिन्दुस्तान देख रहा है। जिस से हिन्दोस्तान को दुख होता है वह यह है कि हर रोज़ कुछ-न-कुछ ऐसी बातें अखबारों में आती हैं कि कलकत्ता के किसी भाग में, किसी हिस्से में या अमुक गली में बम पड़ा है, या अमुक जगह बम फटा है। इधर कोई क्रेकर फेंका, उधर कोई ट्राम जलाई, इधर एक मोटर जला दी, उधर पुलिस को चोट लगी, इधर पुलिस का आदमी मर गया, उधर नौजवानों को पकड़ा, इधर किसी को जेल में रखा, उधर किसी ने जेल में फ़ाका किया। ऐसी बातें हम रात-दिन अखबारों में पढ़ते हैं। तब ऐसी हालत में दुखी भाइयों का काम किस तरह हो सकता है? जिन लोगों पर दुख पड़ा है, उनके दुख की तरफ़ ध्यान देना मुश्किल हो जाता है। जब हम इस मुसीबत में फँसे, तो उनको कैसे ठीक करें? बाहर के

लोगों को तो यही मालूम होता है कि सारे कलकत्ते में इतनी अराजकता फैल गई है कि वहाँ कुछ काम करना ही मुश्किल है, और रहना भी मुश्किल है।

पर जब लोग इधर आते हैं, तो उन्हें मालूम पड़ता है कि ऐसी कोई बात नहीं है। चन्द लोग बिगड़े हैं, और वे मुट्ठी भर लोग सारे कलकत्ता को तंग करना चाहते हैं। वे बंगाल की सरकार को भी तंग करना चाहते हैं, और लोगों को भी तंग करना चाहते हैं और एक प्रकार का जुल्म करके सबको डराना चाहते हैं। उनकी क्या मंशा है, यह मैं नहीं समझता। क्योंकि हमारी समझ में नहीं आता कि इनका मतलब क्या है और वे क्या कराना चाहते हैं? मैं कम्यूनिस्ट आइडियौलौजी (साम्यवादी आदर्शों) को समझ सकता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं समझ सकता कि इस तरह से नुकसान करने से या बम डालने से या धींगामस्ती करने से कौन सी चीज़ मिलनेवाली है। लेकिन इसके साथ ही मुझे दुख भी होता है कि कलकत्ता में रहने वाले लाखों नागरिक इस चीज़ को क्या समझते हैं और इसकी तरफ़ उनका घ्यान क्यों नहीं जाता? क्या उनका फर्ज़ नहीं कि वे उसका ख्याल करें? पुलिस का काम इन कामों को रोकने का ज़रूर है। लेकिन लोगों का यह सोचना कि यह सरकार का काम है, हमारा काम नहीं है, बड़ा गलत ख्याल है। क्योंकि आज देश में जो हुकूमत है, वह परदेशी नहीं है। परदेशी हुकूमत के जमाने में जिस ढंग से हम काम किया करते थे, उस ढंग से अब हमारा काम नहीं चल सकता। हम से वैसा नहीं हो सकता, और न होना ही चाहिए। हाँ, जब आपका ख्याल होगा कि हमें यह हुकूमत नहीं चाहिए, उस समय आप खुद इसे हटा सकते हैं।

हमारे प्रधान मन्त्री इधर आए, हमारे और नेता इधर आए और उन्होंने देखा और कहा कि अच्छा, यदि आप नए चुनाव करना चाहते हैं, अपनी गवर्नमेंट बदलना चाहते हैं, तो हम नया चुनाव कर लेंगे। अब आप वैसा चाहते हो या न चाहते हो, लेकिन उन्होंने तो यह कहा है। और दूसरा रास्ता हो भी क्या सकता है? क्योंकि आज अगर हमें अपनी गवर्नमेंट बदलनी हो, तो उसके लिए चुनाव के अलावा दूसरी कार्यवाही नहीं हो सकती। नए चुनाव में कोई और भले ही जीते, मगर जो भी होगा, हमारे घर का ही होगा, कोई बाहर से तो नहीं आएगा। लेकिन हमने देखा कि चुनाव करना हो, तो वह

तुरन्त तो हो नहीं सकता। क्योंकि हमारे पास न अभी मतदाताओं के रजिस्टर हैं, न चुनाव की कोई तैयारी है। लाखों लोग बंगाल में नये-नये आएँ हैं, उनको भी तो मताधिकार मिलना चाहिए। पहले की तरह कौम-कौम के अलग मत हों, तो वह भी अब काम की चीज़ नहीं है। अब तो एकत्र मतदान मण्डल बनना चाहिए। और उसके लिए हमें अपना कानून बदलना पड़ेगा। सो बहुत सी रुकावटें हैं, और उन्हें रफ़ा करने में टाइम लगेगा, और इतना टाइम लगेगा कि नये आम चुनावों का वख्त आजाएगा। अब तो सारे हिन्दुस्तान का चुनाव होनेवाला है, जिसमें हर बालिग को मताधिकार मिल गया है। इस तरह दो चुनावों के बीच में अन्तर बहुत थोड़ा रह जाएगा। बीच में चुनाव करने से खर्च भी बहुत पड़ेगा।

जब हमने यह हालत देखी, तब बंगाल की राय लेने की कोशिश की। बंगाल की कांग्रेस कमेटी के नेता, यहां की गवर्नमेंट और यहाँ के सब लीडरों से पूछ लिया, तो मालूम पड़ा कि कोई भी नहीं चाहता है कि अभी चुनाव हो। तब हमने कहा, तो ठीक है। अभी चुनाव मत करो, क्योंकि नया आम चुनाव तो हमें करना ही है। तब बहुत से अखबारों ने कहा, कि यह जो फैसला किया गया, वह शान्ति का फैसला है। अच्छा है, ठीक हुआ। लेकिन जो नया आम चुनाव होनेवाला है, उसके लिए ज्यादा विलम्ब नहीं होना चाहिए। जितना जल्दी हो, उतना जल्दी उसका प्रबन्ध करना चाहिए, और मुझे उम्मीद है कि हम जल्दी ही नया चुनाव करेंगे। हम नहीं चाहते हैं कि उसमें विलम्ब हो। जितनी जल्दी हो, उतना जल्दी हमें यह काम करना चाहिए। लेकिन आप जानते ही हैं कि यह पहला मौका है, जब कि हिन्दुस्तान में करोड़ों आदमियों को मताधिकार मिला है। यहां इतने मतदाता हो गए हैं कि हर प्रान्त में उनकी सूची (लिस्ट) छपाने में भी लाखों रुपये खर्च होंगे। उसकी तो परवाह नहीं। लेकिन इसके लिए इतने प्रेस चाहिए, इतने आदमी चाहिए, सब का इन्तज़ाम करना बड़ी मुसीबत का काम है। इसमें टाइम तो लगेगा ही, पर जितना जल्द हो सके, उतना जल्द हम यह काम करेंगे। उसके लिए आप भी अपनी तैयारी करें, और प्रान्त की हुकूमत भी तैयारी करेगी। लेकिन उसके लिए ठीक हवा अभी से पैदा करनी चाहिए। वह हो, तभी काम चलेगा। अब इस बारे में जो फैसला हुआ है, उसमें मैंने किसी का विरोध नहीं देखा। यही बात ठीक भी है। फ़ज़ूल एक झंझट करना, खर्च करना, टाइम

बरबाद करना, उस सब से कोई फ़ायदा नहीं। अब हमें आगे अपना काम चलाना है।

जो लोग आज दिन-रात गवर्नमेंट के पीछे पड़े हैं, उनसे मैं अदब से कहना चाहता हूँ कि गवर्नमेंट बदलने का एक तरीका होता है। बैलट बॉक्स ही वह तरीका है। आप को मताधिकार मिल गया है, उसी से सरकार बदली जाती है या रेवोल्यूशन (क्रान्ति) से। यह जो इधर उधर पुलिस पर बम फेंकने का काम है, यह कोई रेवोल्यूशन नहीं है। यह तो एक प्रकार का मैडनेस (पागलपन) है। यह ल्यूनिटिकों (पागलों) का काम है। हां, मैं यह तो समझ सकता हूँ कि कोई कहे कि भाई ये भी क्या करें? नौजवान हैं, इनको फ्रस्ट्रेशन (निराशा) हुआ है, उनके पास कोई और रास्ता नहीं। तो वह चीज़ भी समझने लायक है। लेकिन उसके लिए यह उपाय नहीं है। वे जो करना चाहते हैं, वह इस तरह नहीं होगा। उससे तो अपना मतलब पूरा नहीं पड़ेगा। बल्कि वह तो दूर हो जाएगा। मैंने कहा कि आप लोगों ने बहुत मुसीबतें उठाई, और इतनी मुसीबतें उठाईं, उसका वर्णन करना भी मुश्किल है। जब इधर परदेशी हुकूमत थी, और लड़ाई चलती थी, उस समय बंगाल में भी लड़ाई का क्षेत्र था। हिन्दुस्तान में और इधर वह लड़ाई जीतने के लिए परदेशी हुकूमत ने जो कुछ किया, उसका नतीजा क्या है? कम-से-कम ३० लाख आदमी बंगाल में भूख से मर गए। उन्हें खाना नहीं मिला। उस समय पर कोई चिल्लानेवाला भी नहीं था। लेकिन आज हमारी पुलिस से आप क्यों नाराज़ हों? आप देखें कि पुलिस में कौन हैं? उसमें बंगाल के नौजवान ही तो हैं। हमारे बंगाल में पुलिस आफिसरों से पूछ लीजिए कि पुलिस में बंगाल के लोग कितने हैं। मैंने पूछा तो उन्होंने कहा कि करीब सेवन्टी परसेंट (सत्तर प्रतिशत) हैं। और नई भरती में तो सौ फी सदी हमने बंगाल के लोग लिए हैं। अब आप उसको क्या करोगे? उस पर गोला मार कर क्या करोगे? उस पर फेंकर फेंकने से, उसको पीटने से आपको क्या फ़ायदा होगा? कभी आपने ख्याल किया कि ये गोला फेंकने वाले भी हमारे ही नौजवान हैं और रोकने वाले भी हमारे ही लोग हैं? वह जो रोकता है, वह किस लिए रोकता है? आप ही के लिए तो।

जब लोग कहते हैं कि इधर सिविल लिबर्टी (नागरिक स्वतन्त्रता) नहीं है, तब मैं हैरान हो जाता हूँ कि कहां भाग गई सिवलि लिबर्टी? क्या विलायत

में ? जो लोग रात दिन तंग करते थे, दबाते थे, और मारने में भी झिझकते नहीं थे, उन्होंने क्या सिविल लिबर्टी दी थी आप को ? आज तो हम जो चाहें, सो कर सकते हैं। क्या यह सिविल लिबर्टी नहीं है ? आज जिसके दिल में जो आता है, सो लिखता है, जिसके दिल में जो आता है, सो कहता है। तो आप की सिविल लिबर्टी, किसने छीन ली ? इन चन्द लोगों ने ही उसे छीना, जिन्होंने यह टेररिस्ट (आतंकवाद) काम चलाया है। आप को उन्हें रोकना है। खाली पुलिस पर यह काम डाल देने से देश का काम नहीं चलेगा। कोई लोकशाही राज्य पुलिस के डंडे से नहीं चलता। हाँ, हमारी तो यह आदत ही पड़ गई है कि सब बातों में पुलिस को दोष दें। पुलिस का नाम ही बदनाम है। हमें यह आदत अब छोड़ देनी चाहिए। हमें अपना रास्ता बदलना चाहिए। हम रात-दिन जिस पुलिस के पीछे लगे हुए थे, वह पुलिस दूसरी थी। आज हमारी जो पुलिस है, वह दूसरी है। आज की पुलिस के लोग एक तरह से हमारे वालंटियर हैं, स्वयंसेवक हैं। इनको जो तनख्वाह मिलती है, वह हम पर इतना बोझ नहीं है कि जितना पड़ना चाहिए। जितना इन्हें देना चाहिए उतना हम उन्हें दे नहीं सकते, क्योंकि हमारा मुल्क गरीब है। अभी बहुत लोग बेकार हैं। उनको पूरी तनख्वाह तो हम दे नहीं सकते हैं, लेकिन आज ये लोग जो काम कर रहे हैं, उसके लिए आपके दिल में सहानुभूति न होगी, तो आप को पछताना पड़ेगा।

क्योंकि दो तरह से ही काम चलता है। या तो आप लोग कांग्रेस के स्वयंसेवकों से अपना काम चलाइए या पुलिस से। कलकत्ता के एक अखबार में मैंने पढ़ा कि इस जलूस के लिये २० हजार रुपया खर्च किया गया। यह खर्च क्यों करना पड़ा ? क्योंकि हम पहले कांग्रेस में जिस तरह सभा कर सकते थे, उस प्रकार आज नहीं कर सकते। क्योंकि हमारा सारा ढंग बदल गया है। ढंग क्यों बदल गया ? क्योंकि हमने पुरानी आदतें छोड़ी नहीं हैं। हमारी कांग्रेस का ढाँचा, जैसा पहले ताकतवर था, वैसा अब नहीं रहा। अब वह टूट गया है। तो हमें इसको ठीक करना चाहिए। हमें कांग्रेस के संगठन को ठीक करना चाहिए। जितने कांग्रेस में काम करनेवाले भाई हैं, उनसे भी मैंने मिलने की कोशिश की। में उनसे मिला, उनके साथ बातचीत की, पुलिस आफिसरों के साथ बात की, और मिनिस्टरों के साथ भी बात की। में सबसे मिला, सब की बात मैंने समझने की कोशिश की।

जो बंगाल का दर्द है, उसे मिटाने के लिये हमें काम करना चाहिए। मगर उस कार्रवाई को छोड़कर हम मिथ्या कार्रवाई में फंसे हैं। उससे हमारा असली काम रुक जाता है। मैं जानता हूँ कि बंगाल के नौजवान बहकावे में फँसे हुए हैं। एक-एक कालेज में दस-दस हज़ार, पाँच-पाँच हज़ार, सात-सात हज़ार लड़के पढ़ते हैं। वे पढ़ते हैं कि नहीं पढ़ते हैं, वह भी मैं पूरी तरह नहीं जानता हूँ। क्योंकि वहां तो बैठने की भी जगह नहीं है। किसी-किसी कालेज में तो तीन-तीन शिफ्ट (बारी) लगते हैं। हमने फैक्टरी में तो शिफ्ट सुने थे, लेकिन कालेजों में शिफ्ट की बात कभी नहीं सुनी थी। इधर आकर देखा कि यहाँ तो कालेजों में भी तीन शिफ्टों से काम चलता है। वहाँ स्टूडेंट बेचारे क्या पढ़ते हैं और प्रोफेसर भी उन्हें क्या पढ़ाते हैं, यह तो मैं नहीं जानता। यह जो पचास-साठ हज़ार ग्रेजुएट हर साल कालेजों से पढ़-पढ़कर निकलते हैं, उन्होंने खाली उपाधि या तूफान करना सीखा? या वे खाली कुछ ऐसा लिटरेचर पढ़ते हैं, जिसके 'वाल पोस्टर्स' (दीवारों पर नोटिस) आप देखते हैं ! वे ऐसे पोस्टर होते हैं, जिनको पढ़ने से बदहज़मी होती है, मेदे की भी बीमारी होती है, दिल की भी बीमारी हो सकती है, लेकिन कोई और फ़ायदा नहीं हो सकता। इसका उपाय हमें करना चाहिए।

यह भी मैं जानता हूँ कि कलकत्ता हिन्दुस्तान का एक केन्द्र है। हिन्दोस्तान के उद्योग का यह सबसे बड़ा केन्द्र है। पहले तो हिन्दुस्तान की राजधानी ही इधर थी। लेकिन आज भी उद्योग की राजधानी यही है। इधर से ही धन पैदा होता है। देहातों से जो धन पैदा होता है, या किसानों से जो धन पैदा होता है, वह एक प्रकार का है। कारखानों से जो धन पैदा होता है, वह दूसरे प्रकार का है। आजकल हमें दोनों की जरूरत है। इनमें से एक को भी हम छोड़ नहीं सकते। एक के भरोसे रहकर हम दूसरे को नहीं बढ़ा सकते। दोनों को हमें साथ-साथ चलाना होगा। यह उद्योग का क्षेत्र है, और इस उद्योग में बंगालियों का हिस्सा कम से-कम है। बंगाल के नौजवान उसमें सब से कम हैं। यहाँ बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ हैं, मगर उनमें बंगाली नहीं हैं। वे क्यों नहीं हैं? इसकी क्या वजह है? ऐसा क्यों हो गया है? तो मैं दोनों को समझाना चाहता हूँ। कारखानों और कम्पनियों के मालिकों से मैं कहना चाहता हूँ कि उन्हें बंगाली नौजवानों के प्रति अपना फर्ज़ अदा करना पड़ेगा। उन्हें उनका दिल समझना पड़ेगा। उनके अलग रहने से किसी को

फ़ायदा नहीं होगा । इसी प्रकार जो बंगाली नौजवान बेकार निकलते हैं, उनको भी समझाना पड़ेगा कि अब हर प्रान्त में अपनी हुकूमत है और उनका फ़र्ज़ है कि वे उसका साथ दें ।

पहले बंगाली नौजवान अमलदारी करने के लिए दूसरे प्रान्तों में जाते थे। अब भी अगर वे उम्मीद रखें, कि अध्यापकी, प्रोफेसरी के लिए, डाक्टर बन कर, वकील बन कर, या कोई धन्धा करने के लिए वे आसाम में, बिहार में या किसी और प्रान्त में जाएँगे, तो आज वहां के नौजवान भी समझते हैं कि उनको भी मौका मिलना चाहिए । इस तरह दरवाज़ा बन्द हो जाता है और हमारे बीच में थोड़ा-थोड़ा अन्तर पड़ जाता है । हमारे हिन्दुस्तान में यह एक प्रकार की बीमारी है कि प्रान्तीय भावना पैदा हो गई है । हमारी दृष्टि संकुचित हो जाती है, और जो विशाल भावना हमारे हिन्दुस्तान की है कि हम सब भारतवासी हैं, उसे भूलकर हम प्रान्त-प्रान्त के संकुचित क्षेत्रों में फँसते जा रहे हैं । उसको हमें रोकना है । आज-कल लोग माँगते हैं कि हमारा प्रान्त अलग किया जाए । बंगाल के लोग भी मांगते हैं कि हम को यह हिस्सा दिया जाए, वह हिस्सा दिया जाए । वे कहते हैं कि हमारा टुकड़ा पड़ गया, हमारा प्रान्त छोटा बन गया । उसे भी मैं समझता हूँ और मेरी कोशिश भी यही है कि बंगाल को जितनी मदद की जा सके, उतनी मैं ज़रूर करूँ। बहुत दिनों से बंगालवाले कहते थे कि हमें बिहार के कुछ ज़िले दिए जाएँ, तो मैंने कोशिश की । यह कोई आसान बात नहीं है । क्योंकि लोगों को समझाना पड़ता है, दूसरे प्रान्तवालों को समझाना पड़ता है, वहाँ की रैयत को समझाना पड़ता है । हमें देखना पड़ता है कि कोई फिसाद न हो । तो आपने देखा कि जो पांच-छः सौ अलग-अलग राज्य थे, उन सबको हमने एक कर दिया, लेकिन कोई फिसाद नहीं होने दिया । और जिसने फिसाद किया, उसका सिर फूट गया । इसी तरह से बंगाल का मसला भी हल करना हो, तो उसमें आप को मेरा साथ देना चाहिए । मेरे काम में आपको मुसीबत नहीं डालनी चाहिए ।

लेकिन एक तो मैं शारीरिक कमज़ोरी में फँसा हुआ हूँ । दूसरा हमारे मुल्क में आज जो बड़ी-बड़ी समस्याएँ हैं, उनको मैं हल न कर सकूं तो उसका असर भी आपके ऊपर पड़ेगा, और आप और ज्यादा मुसीबतों में फँस जाएँगे । उनको भी हमें हल करना है, और साथ-साथ आमका काम भी करना

है। अगर आप मेरा साथ दें, तो यह काम बन सकता है। तो मैं आपका साथ इस तरह से चाहता हूँ कि इतनी पुलिस हमें मीटिंग के लिए न रखनी पड़े। क्या ज़रूरत है इसकी ? लेकिन आज मैं घर से बाहर निकलूं, तो मेरे पीछे पुलिस लगेगी। अपनी ज़िन्दगी भर मैंने अपने पीछे पुलिस को नहीं देखा था। हाँ, छिपी-छिपी पुलीस मेरे पीछे ज़रूर रहती थी। यह देखने के लिए कि यह क्या करता है। लेकिन अब तो यह सावधानी रखने के लिए मेर पीछे पुलिस है कि कौन मुझको मारनेवाला है। आख़िर मुझको कौन मारनेवाला है ? लेकिन आज हालत कुछ ऐसी हो गई है कि हमारे कई नौजवान कुछ-न-कुछ अपने दिमाग से हट गए हैं। सभी जगह पर ऐसा नहीं हुआ। बहुत-से तो अभी तक अपना मनुष्यत्व ठीक रखते हैं। लेकिन जो बिगड़े हैं, वे गुस्से में भी हैं। उनको ठीक करना हमारा काम है। मैं कितनी भी कोशिश करूँ कि यह पुलिस हट जाए, यह नहीं मानती। आज मीटिंग में भी इतने लाखों लोगों को जमा करना था, तो पुलिस भी आई। असल में हमें देश की आबोहवा बदलनी चाहिए।

तो इस मीटिंग की बात छोड़कर मैं दूसरी बात पर आता हूँ। हमारे देश का धन हमारे उद्योग (इण्डस्ट्री) से ही पैदा होता है। उसको ठीक चलाना हो तो हमारे मज़दूर वर्ग को अच्छी तरह से समझाना चाहिए कि उनका जितना हक है, उतना उनको दिलाना हमारा काम है। जो मालिक लोग हैं, जो एम्प्लायर्स हैं, वे इस समय अपनी बुरी नीयत छोड़ दें, कालाबाजार न करें, प्रोफिटियरिंग (नफ़ाखोरी) न करें और मुल्क का ध्यान कर ज्यादा नफ़ा लेने की आदत छोड़ दें। उन्हें चाहिए कि वे मुल्क का साथ दें। मैं उन्हें समझाना चाहता हूँ। नौजवान कहता है कि नहीं, इस तरह से नहीं हो सकेगा। जो चीन में हुआ, उसी प्रकार यहाँ भी करो। चायना में क्या हुआ, इसे तो मैं नहीं जानता। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि रूस में भी जब क्रान्ति हुई थी, तो आज के रूस की रचना करने में, आज जैसा उन्नत रूस बनाने में, उसको ठीक करने में, उन्हें बहुत काफ़ी कुरबानी करनी पड़ी थी, बहुत काफ़ी मेहनत करनी पड़ी थी। आज दुनिया में सब से अधिक धनवान मुल्क अमेरिका है। लेकिन अमेरिका जब आज़ाद हुआ तो उसका पहला कांस्टीटयूशन बनाने में सात साल लगे थे। हमारा मुल्क भी तो बहुत बड़ा है। लेकिन हमने तीन साल में ही, इतनी मुसीबतें होते हुए भी,

अपना कांस्टीटयूशन बना दिया। आपको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान के दो टुकड़े होते हुए भी आज जितना हिन्दोस्तान एकत्र हुआ है, उतना बड़ा हिन्दुस्तान पहले कभी नहीं था। आप हमारे पिछले इतिहासों को देख लीजिए। सदियों में जो कभी नहीं हुआ था, वह एक ही रंग में आज हिन्दुस्तान पर हो गया है। यही बहुत बड़ी कृति है।

अमेरिका धनवान हुआ, तो उसके लिए कितने सालों तक उसको मेहनत करनी पड़ी। यह इतिहास आपको देखना चाहिए। इसमें बहुत साल लगे, बहुत मेहनत करनी पड़ी और तब जाकर वह हृष्टपुष्ट हुआ। हमारी आज़ादी तो अभी दो साल की ही है। अभी से हम उसमें से हिस्से बाँटना चाहते हैं कि नहीं, जितना है उसमें से हमारा शेयर एकदम हमको दो। इस बँटवारे से सब गरीब हो जाएँगे, कोई भी धनवान नहीं हो सकता। अब देश में धनवान थोड़े हैं। मैं कबूल करता हूँ कि हिन्दुस्तान में थोड़ों के पास ज्यादा धन है। लेकिन जो कुछ है, वह भी कुछ नहीं है। आप अमेरिका में जाएँ और देखें। और देशों में भी देखें, तो आपको पता चलेगा कि हमारे धनवान कुछ भी नहीं हैं। लेकिन उनके धन का उपयोग ठीक करना हो, तो इस ढंग से काम करने में उन्हें भी लाभ होगा और हमें भी लाभ होगा। आज हिन्दुस्तान को उठाना हो, तो वह इसी तरह हो सकता है कि धनवान अपना लोभ छोड़ दें और मज़दूर अपना काम वफ़ादारी से करें। आज जिस प्रकार मज़दूरों में इस बात का प्रचार किया जाता है कि बार-बार स्ट्राइक करो, तूफ़ान करो, तो इस नीति से हमको और सभी को भारी नुकसान होने वाला है। उसकी भी अगर कभी ज़रूरत होगी, तो उसका समय आएगा। लेकिन मैं नहीं मानता कि हमको अब कभी भी इसकी ज़रूरत पड़ेगी। हिन्दुस्तान में हमारी संस्कृति ऐसी है कि हम आपस में बैठकर सब चीज़ों का फैसला कर सकते हैं।

कई लोग कहते हैं कि पूंजीपति ब्लैक मार्केट करते हैं। जब लड़ाई चलती थी, तो ब्लैक मार्केट का धन बहुतों ने लिया था। उस समय पर जिसने ज्यादा पैसा बनाया, वे सब आज धनी हैं। पर उस समय परदेशी हुकूमत थी। उस समय पर हमने कुछ नहीं किया, कोई बोला भी नहीं। लोग हम से कहते भी थे, और वे लोग मानते भी थे कि इस परदेशी हुकूमत को जितना कम पैसा देना पड़े, ठीक है। इन्कम-टैक्स (आयकर) न दें, तो भी ठीक है। पर अब

उन बातों से न उनका फायदा होता है, न हमारा फायदा होता है। हमें तो अब अपना सारा ढंग बदलना है। कई लोग कहते हैं कि हमारे सारे उद्योग को नैशनलाइज़ (राष्ट्रीयकरण) करो। सरकार चाहे तो किसी भी उद्योग को अपने हाथ में ले सकती है, उसमें आज कोई रुकावट नहीं है। लेकिन आज हम में यह ताकत नहीं है। क्योंकि हमारे पास इतने साधन नहीं हैं, इतने अनुभवी आदमी भी नहीं है। इस काम के लिए हमें जितने प्रवीण और स्वच्छ आदमी चाहिएँ, आज हमारे पास नहीं हैं।

आज हमने बिजिनेसमैन (व्यापारी) के पास से बिजनेस ले लिया, क्योंकि बिजनेस (व्यापार) वाले गड़बड़ करते थे। कुछ काला बाज़ार करते थे, कुछ पैसे ज्यादा लेते थे। तभी हमने कण्ट्रोल किया। हमारी सरकार यह समझती थी कि हम कण्ट्रोल चलाएँ। लोग भी कहते हैं कि कण्ट्रोल करो। हम कण्ट्रोल तो करते हैं, लेकिन बिजनेसमैनों की जगह पर जिन्हें रखते हैं, वे अच्छा काम करते हैं, ऐसा कोई नहीं कहता। उनके बारे में भी लोग छींटे डालते हैं कि ये लोग घूसखोरी करते हैं, पैसा खाते हैं, और इन बातों से सरकार बदनाम होती है। तो उससे क्या फायदा ? उसमें तो हम सब बदनाम होते जाते हैं। तो गांधी जी ने कहा कि कण्ट्रोल हटा दो। तो हमने उसका भी एक एक्सपेरिमेंट (परीक्षण) कर लिया। अब उसमें हम ऐसी मुसीबत में फँस गए कि लोग बोले कि फिर से कण्ट्रोल बैठाओ। तो हमने फिर से कण्ट्रोल बैठाया। अब कई लोग कहते हैं कि भाई कि इस गवर्नमेंट को तो अपने माइन्ड (दिल) की भी खबर नहीं। यह कहना तो शायद ठीक है। लेकिन हमारा इतना बड़ा मुल्क है। जिसके सारे ढांचे को चलाने वाले परदेशी लोग, इसे अपनी धाक से चलाते थे। सारा काम अंग्रेजों के रोब से, परदेशी की धाक से चलता था। तब पचपन-साठ की फीसदी अँग्रेज़ ऊँची सर्विस में थे। उन सब को हमने निकाल दिया। आप देखें अब पुलिस में किसी अँग्रेज़ का चेहरा आपको दिखाई पड़ता है ? हमारे जो पुराने लाट साहब इधर थे, उसके स्टेच्यू (मूर्त्ति) आज भी खड़े हैं। ज़माना तो आज बदल गया। रेवोल्यूशन किसको कहते हैं ? रेवोल्यूशन तो हो गया। लेकिन अब तो हमें रचनात्मक-कार्य करना है।

मैं आप से कहना चाहता हूँ कि आज हमको, आपको, मजदूरों को, मिल कर सब को काम करना है। सब पुरुषों और सब स्त्रियों को साथ मिलकर काम

करना है । झगड़ा छोड़कर मुहब्बत और प्रेम से हमें अपना काम करना होगा । यदि हम कोई ज़हर पैदा करेंगे, प्रान्त प्रान्त में ईर्ष्या की आग पैदा करेंगे, फिसाद में पड़ेंगे तो उसका परिणाम यही होगा कि कलकत्ता का उद्योग कलकत्ता से चला जाएगा । जहाँ शान्ति होगी, वहाँ चला जाएगा । उससे किसी को कोई फ़ायदा नहीं होगा, नुकसान-ही-नुकसान होगा । बंगाल के नौजवानों के प्रति मेरी पूरी सहानुभूति है । लेकिन मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि यह जो फार्मेटिव पीरियड (रचना काल) है, जो अपना चरित्र बनाने का समय है, इस समय पर उन्हें अपने हाथों का प्रयोग समझदारी से करना चाहिए । अगर हम फिसादों में पड़ जाएँगे, तो उससे कोई फायदा नहीं होगा, बल्कि नुकसान ही होगा । लेकिन मेरी शिकायत जो आज आप लोगों के सामने है और वह यही है कि आपको इस तरह से बिना सोचे-समझे काम नहीं करना । यदि किसी जगह पर तूफ़ान हो, तो हमारा फ़र्ज़ है कि हम हट जाएँ । वहाँ एक ट्राम में या एक बस में पचास मुसाफिर बैठे हैं, दो नौजवान आएँ और कह दिया कि सब उतर जाओ, तो सब भेड़ के माफ़िक या बकरे के माफ़िक उतर जाएँगे । यह क्या बात है ? यह आज़ाद हिन्दुस्तान के नागरिकों का धर्म नहीं है । उनका भी तो कुछ फ़र्ज़ है ? नागरिकों का भी तो कुछ हक है ? उन दो नौजवानों का कान उन्हें पकड़ना चाहिए ।

जब इस तरह से काम होगा, तब काम चलेगा । मैंने कल अखबारवालों से भी कहा कि अखबारवाले दो प्रकार के बाजे बजाते हैं । दो आवाज़ें वे एक साथ निकालते हैं । एक तो कहते हैं कि कुछ भी ठीक नहीं है, कुछ भी अच्छा नहीं है । दूसरे कहते हैं वे करें क्या ? लोग कुछ करते नहीं, गवर्नमेंट कुछ करती नहीं, पुलिस भी बुरी है आदि ।

लोग जेल में फाका क्यों करते हैं, यह मेरी समझ में नहीं आता । हिन्दुस्तान में अनाज की कमी है, इस वजह से वे क्या सहानुभूति से फाका करते हैं ? या कोई और बात है ? मुझे बताओ तो सही । ये जो तूफ़ान करनेवाले लोग हैं, उन्हें पकड़ने के साथ ही, उनके जेल जाने के पहले ही अढ़ाई सौ रुपया तो हम उन्हें उनका कपड़ा-लत्ता (आउटफिट) के लिए देते हैं । यानी ढाई सौ रुपया तो उनको बखशीश देते हैं, और उसके बाद वह जेल में गया तो रोज़ ढाई रुपया उसको खाने के लिए देते हैं । रोज़ के ढाई रुपये ! बताइए मुझे यह क्या हुआ ? अब यह रिफ्यूजीज़ की बात लीजिए । बंगाल में ऐसे कितने

लोग हैं, जिनको ढाई रुपया रोज़ खाने के लिए ही मिलता है ? वे कैसे माँगते हैं ? और लोगों को ढाई रुपये मिलते हैं, तो उनके बच्चे हैं, फैमिली (परिवार) है, उनकी स्त्री है, माता है । ऐसा होता है, तो फिर लोग भला बाहर क्यों रहें ? वे जेल में ही क्यों न जा बैठें ? इतना मिलने पर भी फिर वे फ़ाका क्यों करते हैं ? क्योंकि वे लोग तो चार दफ़ा खाते हैं और बाहर प्रोपेगेंडा चलता है कि फाका कर रहे हैं।

इस समय भी, जब ये लोग फाका करते हैं, वे क्या चाहते हैं ? भला बताइए तो इस प्रकार के लोग जब पुलिस की शिकायत करते हैं, तब मुझे दुख होता है । क्या आप लोगों का यह धर्म नहीं है कि हमारी पुलिस के लिए कुछ सहानुभूति बता कर उनकी मदद करें ? स्वतन्त्र मुल्क में पुलिस की जितनी इज्जत है, वैसी इज्जत हम आज उन्हें नहीं देंगे, तो हमारी स्वतन्त्रता बेमाइना होगी । आज हमारा आज़ाद मुल्क है, तो हमारा फ़र्ज़ हो गया है कि जो हमारे रक्षक हों, उनका हम साथ दे । उनको कम-से-कम काम करना पड़े, ऐसा काम करना हमारा फ़र्ज़ है । यह सब तो उनका काम नहीं है । आज मैं देखता हूँ और आप भी अखबारों में पढ़ते होंगे कि हर रोज़ किसी न किसी जगह पर पुलिस ने मारा, लेकिन कोई मरा नहीं। पहले कई रोज़ पुलिस ने गोली चलाई, तो आप लोग एकदम गुस्से हो गए । कहने लगे, उसका ट्रायल करो । उस समय तो सब ने शोर मचाया। अब जब पुलिस मार खाती है, तो आप बोलते क्यों नहीं ? क्यों आप खामोश बैठे रहते हैं ? आपको राज चलाना है या नहीं ? चलाना हो तो हम सबको समझ लेना चाहिए कि हर एक व्यक्ति का धर्म है, हर एक हिन्दुस्तानी का फ़र्ज़ है कि अपनी ड्यूटी का, अपने धर्म का पालन करे । मैं तो आपसे कहना चाहता हूँ कि तूफान करनेवाले थोड़े ही लोग हैं। ये थोड़े से आदमी लोगों को तंग करते हैं, देश की हवा बिगाड़ते हैं। उनको समझाओ । स्वयंसेवक दल बनाओ और उनको पकड़ो । ये कहते हैं कि ये लोग अण्डर ग्राउण्ड (छिपे) रहते हैं, भीतर में, भूतल में रहते हैं । भूतल कहाँ है ? यहीं, हमारा ही तो भूतल है । अगर ऐसा आदमी हमारा भाई हो, हमारा लड़का हो, हमारा रिश्तेदार हो, तो उसको समझाना चाहिए कि वह गलत रास्ते पर है। उसे कहना चाहिए कि तुम ऐसा गन्दा काम छोड़ दो, नहीं तो मैं तुमको पुलिस में देता हूँ । इस तरह से जब तक हम सक्रिय सहायता नहीं देंगे, तब तक हमारा काम नहीं चलेगा, और देश का खर्च भी बढ़ता

जाएगा। इनके लिए पुलिस रखो, इनके लिए जेलखाना रखो, इनको खाने-पीने को दो। यह सब बाहर से तो नहीं आएगा, हमको ही तो देना पड़ेगा। तो हमारे जो बेचारे भाई बेकार पड़े हैं, जो बाहर से आए हैं, जो रिफ्यूजीज़ हैं, उन्हीं को ज्यादातर वे बहकाते हैं। हालांकि इस से रिफ्यूजी बेचारों को तो कोई मदद नहीं मिलती। बल्कि उल्टा काम होता है।

आप लोगों को मेरी सलाह है कि इस रास्ते को छोड़ दो। जब शान्ति हो, तभी हम रचना कर सकते हैं। इधर जो लोग पड़े हैं, उनको भी सुख हो, और बाहर जो दुखी हो रहे हैं, उनका भी कुछ इन्तज़ाम हो। हम बार-बार सुनते हैं कि पूर्वी पाकिस्तान में हमारे जो भाई पड़े हैं, वे आजकल बहुत तंग किए जा रहे हैं और उनका वहाँ रहना मुश्किल हो गया है। यदि यह चीज़ आगे बढ़ी तो वहाँ से और भी लोग इधर आएँगे। हमारे यहाँ तो इतनी जगह भी नहीं है। और वे आएँ, तो फिर क्या होगा? उसका रास्ता हमें बनाना पड़ेगा। ऐसे तो चलेगा नहीं। कोई-न-कोई रास्ता तो सोचना ही पड़ेगा।

लेकिन उसके लिए पहले आप अपना घर ठीक कर लो और मेहरबानी करके कोई झगड़ा न करो। बाहर से किसी को यह मालूम नहीं पड़ना चाहिए कि हमारे घर में कोई रोग है, कोई खटपट है या कोई झगड़ा है। तब इन लोगों को भी शान्ति होगी। ये लोग, जो वहां पड़े हैं, उनके दिल पर क्या बीतती होगी कि हम इधर इतने दुख में पड़े हैं, और उधर कलकत्तावाले क्या कर रहे हैं? हां, इस रास्ते पर चलने से अगर उनका दुख रफ़ा हो, तो मैं भी उनका साथ दूं। लेकिन यह नहीं होगा। इससे तो उन का दुख बढ़ता जाएगा। तो हमें इस प्रकार का काम करना है कि जिस से देश के धन की वृद्धि हो। एक तो हमें किसानों को समझाना है कि जितना बने, उतना ज्यादा अन्न पैदा करो। जितना धान आज पैदा करते हो, जितना अनाज पैदा करते हो, अपने खाने के लिए ज़रूरी भाग रखो, बाकी गवर्नमेंट को दे दो। सरकार ने जो दाम मुकर्रर किया है, उसी दाम पर उसे दो। हमारे कई लोग वहाँ लोगों को समझाते हैं कि सरकार को दाम मुकर्रर करने का क्या अधिकार है, यह तो तुम्हीं करो। तुम न दो तो सरकार को ज्यादा देना पड़ेगा। वह झख मार कर देगी। पर सोचो तो कि सरकार कहाँ से लाएगी? देगी तो ठीक। लेकिन कहाँ से देगी? किस के हिस्से में से निकाल कर देगी? ये जो इस तरह

की सलाह देते हैं, उनके खीसे में से नहीं, हमें अपने आप के खीसे से ही उसे देना पड़ेगा। आप को याद है कि ३० लाख आदमी इधर भूख से मर गए। अब इधर आज़ादी के बाद हमने कुछ भी बिगाड़ किया हो, कण्ट्रोल किया हो या रिश्वतखोरी देखी हो, कितनी भी बुराई की हो, लेकिन इन तीन सालों में हमने हिन्दुस्तान में किसी को भूख से नहीं मरने दिया। आपको समझना चाहिए कि हम कहाँ से अनाज लाएँ? करोड़ों मन अनाज बाहर से लाते हैं। उसका कितना खर्च पड़ता है, यह आपको मालूम नहीं। करोड़ों रुपये उस पर खर्च करने पड़ते हैं।

तो हम अपने किसानों को समझाएँ कि हमारे मुल्क में जो अनाज पैदा होता है, उसका हम ठीक तरह से उपयोग करें। जो हमारे दुखी लोग हैं, जिसके पास अनाज नहीं है, जैसा कलकत्ता शहर है, वहाँ अनाज भेजें। कलकत्ता शहर में तो बाहर से ही अनाज आएगा। इधर कौन अनाज पैदा करेगा। लेकिन कलकत्ता के आसपास जो किसान लोग हैं, वे अनाज पैदा करते हैं। उनको समझाना चाहिए कि कलकत्ता के लाखों आदमियों को अनाज देना उन्हीं का काम है। अगर वे लालच करें, उसके लिए ज्यादा कीमत माँगे, वह कलकत्ता को देनी ही पड़ेगी। मगर आज कलकत्ता की हालत ऐसी नहीं है। बहुत थोड़े लोग ही ऊँची कीमत दे सकते हैं। बाकी ज्यादातर तो मध्य वर्ग के लोग हैं, जो बहुत ही दुखी हैं। बेकारी तो है ही, महँगाई तो है ही। तो आज सब हिन्दुस्तानियों का फर्ज़ है कि वे देशभर का थोड़ा-थोड़ा दुख आपस में बाँट लें। दो साल तक अगर हम बँटवारा करके दुख उठा लें, तो पीछे हम सब सुख के हिस्सेदार होंगे।

यदि आज कलकत्ता गिरा, तो बंगाल गिर जाएगा। फिर कौन जिन्दा रहेगा? लेकिन बंगाल को अपनी असली जगह पर आ जाना चाहिए। हिन्दुस्तान की जो नेतागिरी उसी के पास रही, वह उसे लेनी चाहिए। इस प्रकार हमारा काम चले, तो सारा हिन्दुस्तान ठीक हो जाएगा। आज झगड़े का समय नहीं है। मैंने कांग्रेस में काम करनेवालों से भी कहा कि मेरी आप लोगों से यह आखिरी अपील है। अब आप सब आपस में समझ जाइए। यह झगड़े का समय नहीं है। अभी हमको मिनिस्ट्री मिली तो क्या, न मिली तो क्या? सारी उम्र हमारा धंधा तो दुख उठाने का था। लोगों के लिए जेलखाने जाने का और दुख उठाने का। जब लड़ाई चलती थी, तो आप ही ने कितना दुख

उठाया ? तब कितने लोग भूख से मरते थे। उस समय पर जो यहाँ बाढ़ आई, तो आप ही ने वह बाढ़ बरदाश्त की थी। दुष्काल आया तो उसको बरदाश्त किया, उसका भी सामना किया। उससे भी नहीं डरे। तो अब आप यह क्या कर रहे हैं ? इस चीज़ को हमें खत्म करना चाहिए और सब को साथ मिलकर काम करना चाहिए। मिनिस्ट्री के लिए हमें आपस में झगड़ना नहीं चाहिए। यह दुनिया का राज चलाने का ढंग नहीं है। इस तरह से कुछ भी काम नहीं चल सकता है। किसी ने बुरा काम किया तो उसको पकड़ना चाहिए। उसको ठीक रास्ते पर लाना चाहिए। जो हो सके, जो बात सिद्ध हो सके, उसको सामने लाना चाहिए।

यदि कलकत्ता के नागरिक अपनी गवर्नमेंट की बुराई करें, तो उसमें उनकी अपनी ही बुराई होगी। क्योंकि जैसे लोग हैं, वैसा ही राजा होता है। जैसे लोग होते हैं, उनके लायक ही राज मिल जाता है। मैं यह मानता हूँ कि आज हम सब को मिलकर, एक दूसरे को साथ लेकर, काम करना चाहिए। तभी हमारी बेहतरी हो सकती है। अब मैंने आपसे जो कुछ कहा, उसपर आप सोचें और उसपर ख्याल करें। मेरे लिए बार-बार तो इधर आना भी मुश्किल है। लेकिन मेरे दिल में आग भरी है, और मेरे दिल में कलकत्ता के लिए गहरी सहानुभूति है। वह मुझको इधर बुलाती है, इसीलिए मैं यहाँ आया।

मैं आप से बहुत नम्रता से प्रार्थना करता हूँ कि एक तो आप अपने शहर में कोई प्रान्तीय भावना न रखें, कोई ऐसा झगड़ा न रखें। साथ मिलकर काम करें, क्योंकि इस मुल्क की आज की स्थिति में, इस शहर में कितने ही और और प्रान्तों के लोग हैं, और उन सब के पास आपका उद्योग पड़ा है। उनके साथ मिलकर हमें काम करना है। वह आप की मदद से ही हो सकता है। वह झगड़े से नहीं हो सकता। दूसरा जो फिसाद यहाँ हो रहा है, उसको भी बन्द करना है, और अपना रोज़गार बढ़ाना है। वह किस तरह से बढ़े, उसके लिए हमें इधर की आबोहवा बदलनी है कि हमारा धन बढ़े। जब धन की वृद्धि होती है, तभी उसके बाँटने का समय आता है। हाँ, बाँटने के समय पर आप अपना हक ले सकते हैं। लेकिन जब पैदा न हो, तब तो किसी को कुछ भी नहीं मिलेगा। तो उसके लिए तैयारी करो।

अगर हमारी पुलिस में कोई त्रुटि हो, तो हमारी सरकार के पास हमें कहना है। पुरानी बातें हमें भूल जानी है कि हमारी पुलिस रिश्वत खाती

हैं, ज़ुल्म करती है। वे सब बातें अब गईं। आज तो हमारी पुलिस अपना तन तोड़ कर मेहनत से काम करती है। उनका साथ देना, उन्हें सहानुभूति देना हमारा आपका कर्तव्य है। तभी हमारा काम चलेगा। नई पुलिस में हम बंगालियों को ही रखेंगे और किसे रखेंगे? वे भी तो हमारे अपने नौजवान हैं। उन्हें बुरा कहते रहना हमारे लिए लज्जास्पद है। अगर सब बुरे हैं, तो अच्छा कौन है? अब कोई बाहर का इधर नहीं है। सभी हमारे हैं। तो हमें सारी चीज़ बदलनी चाहिए।

यह तो मैंने बता ही दिया कि अखबारवालों को क्या करना है। लेकिन जिनके पास अखबार नहीं है, जो प्रोफेशन के लोग हैं, जो समझदार लोग हैं, उनके लिए खाली अखबार पढ़कर बैठ जाने से हमारा काम नहीं चलने का। जो बात अखबार में लिखी गई है, अगर वह सही नहीं है, तो उनको ठीक करना भी हमारा ही काम है। हमें अपनी आवाज़ उठानी चाहिए कि यह चीज़ बहुत खराब है। इस चीज़ को चलने नहीं देना चाहिए। इस तरह हमें अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। तब तो काम चल सकता है। हर मामले में जहां गड़बड़ हो, हमें स्वयंसेवक दल बनाकर उस गड़बड़ को खत्म करना है। जिस से बंगाल की इज्जत और कलकत्ते की इज्जत बढ़ जाए, और कलकत्ता फिर से एक दफा सारे हिन्दुस्तान की आबोहवा बदले और सारा संसार समझ जाए कि कलकत्ता के नागरिक समझदार हैं और स्याने हैं। वैसे ही काम हमें करने चाहिएँ। मैं इतना ही कह कर प्रार्थना करना चाहता हूँ कि परमात्मा हमें इसमें सफल होने की शक्ति दें।

जयहिन्द!

---

(२६)

दिल्ली प्रदर्शनी का उद्घाटन

२९ जनवरी, १९५०

प्रमुख साहब, भाइयो और बहनो,

इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करने का काम मैंने कबूल कर लिया, इसका कुछ रहस्य मैं आप को समझाना चाहता हूँ। जब २६ ता० को पूर्ण स्वराज्य की घोषणा हुई, तो उसी मौके पर यह प्रदर्शनी खोलने का विचार था। लेकिन उस दिन यह नहीं हुआ। परन्तु इससे कोई फर्क इसके महत्व में नहीं पड़ता। क्योंकि संकल्प तो यही था कि इस प्रदर्शनी को उसी दिन खोला जाए। लेकिन उस दिन इतना काम था कि उसमें समय निकालना भी बहुत मुश्किल था और आम जनता को दो जगह जाना भी मुश्किल था। उस समय पर कुछ हवा भी ऐसी थी और बादल भी घिरा हुआ था। तो उस समय इस काम को मुलतवी रखा। पर उससे कुछ नुकसान नहीं हुआ। देहात के लोग उस रोज़ ज्यादा आए थे, परन्तु उनके लिए भी दो जगहों पर जाना मुश्किल होता। लेकिन यह तो कोई एक दिन का काम नहीं है। उस रोज़ जो विधि हुई, वह तो एक ही रोज़ की थी, लेकिन प्रदर्शनी तो कई दिनों तक खुली रहेगी। देहातवालों को भी मालूम हो जाएगा कि प्रदर्शनी खुल गई है, और वे लोग आ जाएँगे, और देखेंगे। तो उससे आपको नाउम्मीद होने की कोई ज़रूरत नहीं है। क्योंकि

प्रदर्शनी का असल काम तो उसे शान्ति से देखने का है। उसमें क्या चीज़ है और क्या-क्या चीज़ हमारे मुल्क में बनती है और क्या-क्या चीज़ देहात में बनती है, क्या-क्या चीज़ शहरों में बनती है, क्या-क्या चीज़ ग्रामोद्योग से, हाथ से बनती है, क्या-क्या चीजें मशीनों से बनती हैं, यह सब हमें शान्ति से देखना चाहिए। फिर हमें सोचना है कि इनसे कौन सी चीज़ों को हमें आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए, और कौन-सी चीज़ों को हमें खुद इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे मुल्क को फायदा हो।

मैंने जो यह प्रदर्शनी खोलने का बोझ उठाया है, वह इसी मतलब से कि आज से ठीक २० साल पहले २६ जनवरी १९३० को हमने एक प्रतिज्ञा ली थी। वह यह कि हमें अपने देश की सम्पूर्ण आज़ादी चाहिए। परदेशी हुकूमत का कोई साया भी हमारे ऊपर बाकी नहीं होना चाहिए। हमारी वह प्रतिज्ञा भगवान् की कृपा से पूरी हुई। वह तो ठीक हुआ। लेकिन जिस तरह से हमें स्वराज्य मिला है, उसमें उतना कष्ट नहीं मिला, जितना उसकी प्राप्ति में उठाना चाहिए। उसके अनेक कारण हैं, लेकिन उन कारणों में जाने की ज़रूरत नहीं। जो काम आसानी से होता है, जिसमें ज्यादा कष्ट नहीं उठाना पड़ता है, उसकी पूरी कीमत प्रायः मालूम नहीं पड़ती। तो स्वराज्य हमको बहुत आसानी से मिल गया। अगर स्वराज्य के लिए किसी ने कष्ट उठाया तो गान्धी जी ने उठाया और उनकी कृपा से और उनके आशीर्वाद से हमारे मुल्क का इतना बड़ा यह काम पूरा हुआ। वह तो ठीक है। उनके पीछे हम चन्द लोग चले। कई लोग जेलखाने में गए, कई लोगों ने अपनी मिलकियत की बरबादी की, कई लोग शहीद भी हो गए।

लेकिन हिन्दोस्तान की समस्या आसान नहीं थी। यह बहुत बड़ा काम था। यह इतना बड़ा मुल्क है और इस में अनेक प्रकार के मजहब और अनेक प्रकार की पृथक् पृथक् भाषाएँ हैं। इतने बड़े मुल्क को एक बनाना, इसकी इतनी रियासतों को एक बनाकर, एक संगठन में डालकर, सारे मुल्क को आजादी दिलाना कोई आसान काम नहीं था। लेकिन इतने बड़े काम के मुकाबले में हमको बहुत कम कष्ट उठाना पड़ा, इसलिए हमें उसकी कदर कम है। तो भी इस २६ तारीख (१९५०) को सारे मुल्क को मालूम पड़ गया कि हमारा मुल्क आज किसी भी तरह से किसी परदेशी हुकूमत की साया में या किसी और मुल्क के काबू में नहीं है। तब सारे मुल्क में एक प्रकार की खुशहाली का

प्रदर्शन हुआ। यह अच्छा हुआ। लोगों को मालूम पड़ गया और लोग समझ गए कि यह काम तो अच्छा हुआ है। लेकिन इतने ही से हमारा काम पूरा नहीं होता। यह काम तो वैसा ही है, जैसे एक किसान अपनी खेती के लिए ज़मीन तैयार करता है। यदि हमें सच्चा स्वराज्य चाहिए, जैसा स्वराज्य गान्धी जी चाहते थे, तो उस प्रकार के स्वराज्य की रचना के लिए अभी हमें बहुत काम करना है। हिन्दुस्तान में हमारी उन्नति के काम में जो लोग रुकावट डालनेवाले थे, वे लोग तो चले गए। लेकिन हमारे मुल्क में करोड़ों लोग आज भी दुखी हैं, और हमें उनका दुख हटाना है। सब को पेट भर रोटी खाने को मिले, पहनने के लिए कपड़ा मिले और रहने के लिए अच्छी जगह मिले, कम-से-कम इन तीनों चीज़ों की स्वराज्य में किसी प्रकार की कमी नहीं रहनी चाहिए।

लोग हम से अपेक्षा करते हैं कि हमको स्वराज्य तो मिला है, लेकिन उससे हमें फायदा क्या हुआ? यह सवाल तो ठीक है। रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या हल करने के लिए पहला काम यह था कि हम हुकूमत अपनी बना लें, सो हुकूमत तो हमारी बन गई। अब हमारे काम में कोई रुकावट नहीं डालेगा। लेकिन हमें पेट भर खाना चाहिए, तो वह खाना कहाँ से आएगा? हमारे मुल्क में तो इतना खाना नहीं है। जितना अनाज हमें अपने लिए चाहिए, उतना यहाँ पैदा नहीं होता है। आस-पास के जिन मुल्कों से हमारे लोग जो अनाज ले आते थे, उसमें भी कमी आगई। जैसे ब्रह्मदेश में से काफी चावल इधर आता था, जिसके ऊपर मद्रास और बंगाल का निर्वाह होता था। इसी तरह और मुल्कों से भी अनाज आता था। इधर हमारे मुल्क का एक हिस्सा, जिसमें बहुत अनाज पैदा होता था, हम से अलग हो गया। इस सब से अनाज की बहुत कमी हो गई है। सब जगह पर अनाज पहुँचाने के लिए और हिन्दुस्तान में कोई आदमी भूख से नहीं मरे, इसके लिए हमें बाहर से अनाज मँगाना पड़ता है। उसके लिए यह बन्दोबस्त करना पड़ता है कि सब जगहों पर कम-से-कम ज़िन्दा रहने के लिए, जितने अनाज की ज़रूरत है, उतना तो अवश्य पहुँचाया जाए। तो उसके लिए अनेक प्रकार के कंट्रोल रक्खे गए। उसमें भी बहुत-सी खराबियाँ होती हैं। इतने बड़े मुल्क में यह राशनिंग और कंट्रोल का काम चलाना आसान नहीं है और उसमें सरकार की बदनामी भी बहुत होती है। कई लोग घूसखोरी करते हैं, कई लोग उसका दुरुपयोग करते हैं, यह सब होता है। लेकिन ये सब चीज़ें हमीं लोग करते

हैं, ऐसी बातें करनेवाला कोई बाहर से तो नहीं आता। लोग सरकार को उसका दोष देते हैं। किसी हद तक यह भी सही होगा। लेकिन ऐसी बातों से सारी दुनिया में हमारी बदनामी होती है कि ये लोग ऐसे हैं कि ऐसे मौके पर भी एक दूसरे को मदद करना और एक दूसरे का साथ देना तो एक ओर रहा, अपने स्वार्थ में पड़कर एक दूसरे का गला काटते हैं। यह हमारे लिए अच्छी बात नहीं है। यह गान्धी जी का रास्ता नहीं है और अगर हमें सच्चा स्वराज्य चाहिए, तो हमें उन्हीं के बताए रास्ते पर चलना होगा।

इस प्रदर्शनी में जो चीज़ें आपको दिखाई जाएँगी, उनमें एक चीज़ तो यह है कि हमारे मुल्क में ज्यादा अनाज पैदा करने के लिए क्या-क्या करना चाहिए, कहाँ किस प्रकार काम हो रहा है, कहाँ कहाँ किस किस तरह का अनाज पैदा होता है। यदि हमें बाहर से कम अनाज लाना है और अपने ही मुल्क में सब अनाज पैदा करना है, और इस तरह सच्चे स्वराज्य की नींव डालनी है, तो पहले से हमें यह समझ लेना चाहिए कि हमारा मुल्क इन सब चीज़ों के लिए दूसरे मुल्कों पर निर्भर न हो। अपने मुल्क में जितनी चीज़ें हमें चाहिए, उतनी पैदा कर लेना, यह एक कठिन काम है। हमारा मुल्क इतने सालों तक गुलामी में पड़ा हुआ था और परदेशी लोगों के फ़ायदा उठाने का मैदान बना हुआ था। हम इतने साल से दबे हुए और पिछड़े हुए थे कि हमारा मुल्क एकदम कंगाल बन गया था। अब स्वराज्य मिलते ही वह अमीर और खुशहाल बन जाएगा और सब चीज़ें उसे मिल जाएँगी, वह तो हो नहीं सकता। लेकिन अगर हम सब लोग साथ मिलकर काम करें, तब वह चीज़ चल सकती है। तो गान्धी जी ने हमें बताया था कि हमारा स्वराज्य तो सूत्र के तांते से जुड़ा हुआ है। हमें चरखा चलाना चाहिए, यह उन्होंने कहा था। वह तो हमने कुछ नहीं किया। अब यह स्वराज्य जो आया है, वह असली नहीं, नकली है। असल स्वराज्य तो तभी हो सकता है जब हम सब साथ मिलकर, जितनी चीज़ें हमें अपने मुल्क के लिए चाहिए, वे सब अपने मुल्क में पैदा कर लें। इसके लिए हमें अपनी आदतें बदलनी होंगी। जो चीज़ हमें चाहिए, वह चीज़ अगर हमारे मुल्क में बनती हो, तो उसी को इस्तेमाल करना हमारा कर्तव्य है। सच्चे स्वराज्य की प्राप्ति के लिए हमें आज प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि २६ तारीख से, या तो इसी महीने से, कि हम परदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल नहीं करगे। हां, कोई ऐसी चीज़ हो, जो हमारे मुल्क मे नहीं बनती, और उसे

इधर लाने से हमारे मुल्क को फायदा हो, लोगों को फायदा होता हो, ज्यादा धन पैदा करने में सहायता मिलती हो, तो इस प्रकार की चीज़ों का, जैसे मशीन आदि का उपयोग अभी हमें करना पड़ेगा। लेकिन जहाँ तक हो सके हमारी कोई चीज़ ऐसी नहीं होनी चाहिए, जो परदेश में बनी है और जो हमारे गरीब देहाती भाइयों ने नहीं बनाई हैं, या जो शहरों में रहनेवाले शरणार्थी भाइयों ने नहीं बनाई है। इन चीज़ों के उत्पादन को हम उत्तेजना देनी है।

जो चीज़ हमारी जिन्दगी की ज़रूरियात के लिए ज़रूरी है, और जिसको हम खरीदते हैं, वह सब चीज़ें, हमें पहले देखना चाहिए कि कहाँ बनी हैं। सभी स्वतन्त्र मुल्क ऐसा ही करते हैं और उन्हें बचपन से यही शिक्षा दी जाती है। एक अंग्रेज़ छोटा बच्चा भी यही कोशिश करेगा कि जो चीज़ इंग्लिस्तान में बनी है, उसी को ले। इसी तरह वह अपना माल बाहर दूसरे मुल्कों में भेजने की कोशिश करेगा। तो हमें कोई इस प्रकार की कोशिश तो नहीं करनी चाहिए, कि अपना माल दूसरे देशों पर थोंपें, लेकिन इतनी कोशिश हमें ज़रूर करनी चाहिए कि हमें जितनी चीज़ अपने लिए चाहिएँ, वे हमारे अपने मुल्क में ही बनें।

तो प्रदर्शनी का माइना यह होता है कि हम देख लें कि हमारे मुल्क में क्या-क्या चीज़ें बनती हैं। उसमें से हमें यह पता चलेगा कि इतनी चीज़ हमारे मुल्क में बनती हैं और इस चीज़ का हमें ज्ञान नहीं था कि यहाँ बनती हैं, सो वह हम देख लें। उसके साथ ही प्रदर्शनी में और भी चीज़ें होती हैं, जिनमें से हमें शिक्षा मिलेगी कि हमारा स्वास्थ्य किस तरह से अच्छा रहे और हमारा हेल्थ डिपार्टमेंट आरोग्य के लिए क्या कुछ कर रहा है। वह सब भी हमें देखना है। आज तो एक प्रकार से सारी दुनिया एक हो गई है। दुनिया के और देशों से जो चीज़ हमारे स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए यहाँ आती हैं, जिनका हमें कोई दाम नहीं देना पड़ता है, वे भी इधर रखी गई हैं, क्योंकि उन से मुल्क को फायदा होता है। तो वह सब चीज़ भी हमें देखनी चाहिए। हमारे मुल्क में क्या-क्या मशीन हैं और वे क्या-क्या काम करती हैं, कहां कैसा कपड़ा बनता है, ये सब चीज़ें हमें यहाँ देखनी हैं और यह भी देखना है कि हमारे यहाँ कौन-कौन सी चीज़ नहीं बनती हैं। उसका हिसाब लगाना आम जनता का काम नहीं है। लेकिन जो उद्योगपति और अन्य समझदार लोग हैं, वे उसके लिए कोशिश करें कि हमारे मुल्क में जितनी मशीनें वगैरह बाहर

से आती हैं, वे हमें अपने हाथों से बनानी हैं। यदि हमें अपना स्वराज्य पक्का बनाना है, तो हमें किसी परदेश पर अवलम्बित नहीं रहना चाहिए, निर्भर नहीं रहना चाहिए। यह बहुत ज़रूरी है।

अगर बदकिस्मती से हमारा झगड़ा अपने पड़ोसी से चलता है, तो उस से हमें नुकसान होता है। हमारे यहाँ कलकत्ता में, जितने कारखाने हैं, पाकिस्तान के सारे जूट का उपयोग उन्हीं में होता है। इन कारखानों के लिए पूर्वी पाकिस्तान के किसान अपने यहाँ जूट पैदा करते हैं। तो हमारे झगड़े का असर यह हो रहा है कि वहाँ के किसान भूखों मर रहे हैं, क्योंकि उनके जूट का उपयोग इधर होता था। तो उसमें किस का कितना कसूर है, इस गहरे पानी में यहाँ उतरना अच्छा नहीं है। लेकिन इस समय पर मैं इतना ही कहना चाहता हूँ, कि हिन्दुस्तान की सरकार ने जितनी कोशिश हो सकी, उतनी की कि हमारे दोनों देशों के बीच हमारा पुराना रोज़गार अच्छी तरह से जारी रहना चाहिए, उसमें कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। इसी से दोनों का फायदा है। लेकिन उनके साथ हमने जितने जितने कौल-करार किए, जितने एग्रीमेंट किए, उनपर जब अमल करने का समय आता है, तब हम पाते हैं कि उन पर सिर्फ हमारी तरफ से अमल होता है। आखिर हम थक गए और हमने कहा कि अगर तुम इसी तरह से करते रहोगे, तो कोई कौल-करार करना बेकार होगा। इस हालत में तो तुम अपना करो, हम अपना करेंगे। जिस जूट का पैसा हम पहले ही दे चुके हैं, उतना जूट भी हमको नहीं देते हो। तो यह अच्छी बात नहीं है। तुम इस तरह से करते हो कि हमारा कपड़ा लेते थे, वह भी अब नहीं लेते हो। और परदेशों से लाखों-करोड़ों रुपये का कपड़ा मंगवाते हो। हमारा कपड़ा परदेश में जाता है और वहाँ से वही कपड़ा, उनके वहाँ भेजा जाता है। वह इस प्रकार का उल्टा धंधा करते हैं।

एक समय ऐसा था कि हम लंकाशायर और मैन्चेस्टर के कपड़े का बाइकाट करते थे। आज हमारी मिलों का बना कपड़ा लंकाशायर जाता है। कितना उल्टा तरीका हो गया है। वहाँ से ठीक-ठाक कर उसे पाकिस्तान में भेजा जाता है। तो इस तरह से दोनों मुल्कों को नुकसान होता है। हमने उन्हें समझाने की कोशिश की कि इस तरह से तुम्हें क्या फायदा होता है? इस से तो दोनों को नुकसान होता है। लेकिन हमारे नुकसान को बचाने का एक ही तरीका हो सकता है कि हम जितने करार करें, उनपर ठीक तरह से अमल होगा,

इस बात की कोई गारंटी हमें की जाए। ऐसा न हो, तो उससे अच्छा यह है कि हमारा मुल्क उन पर निर्भर ही न रहे। हमारे मुल्क में जितना जूट चाहिए, उतना हम स्वयं पैदा कर लें। जितनी रूई हमें चाहिए, उतनी रूई हम यहीं पैदा करें। जितना अनाज हमें चाहिए, उतना हम अपने यहां पैदा करें। वह काम बहुत कठिन है। आज हम बहुत-सा अनाज बाहर से मंगवाते हैं और उनके वहाँ काफी अनाज पड़ा है, इतना अनाज पड़ा है, कि वह पड़े-पड़े सड़ भी सकता है। क्योंकि जितनी अच्छी अच्छी ज़मीन थी, जिसमें पानी का इन्तजाम था, इर्रीगेशन (सिंचाई) का इन्तजाम था, वह सब हमारे जिन लोगों के पास थी, वे सब तो वहां से निकाल दिए गए और अब इधर आकर पड़े हैं। वे सब इधर मारे मारे फिर रहे हैं। उनका बन्दोबस्त करना, उनका गुस्सा भी सहन करना और उनका दुख भी देखना, यह अब हमारा काम है। उनकी वहाँ जो जगह पड़ी है, वह सच्चा सोना है, क्योंकि उसमें अनाज बहुत पकता था, रूई बहुत पकती थी, वह सब वे दबा कर बैठ गए हैं। हम बार-बार चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं कि उसका फैसला करो तो वे फैसला नहीं करते हैं और जिद्द करते हैं। इस तरह से हमारा उनका झगड़ा चलता है और इससे दोनों मुल्कों का नुकसान होता है। तो उसका फैसला एक ही तरह से हो सकता है कि खुले और साफ दिल से, जिस तरह से दो भाई बैठ के बातें करते हैं, उस तरह से हमें आपस में बैठकर समझौता कर लेना चाहिए।

हमारा मुल्क बाहर के किसी मुल्क पर निर्भर रहेगा, तो वह गिर जाएगा। उसे गिरने नहीं देना चाहिए। मैं एक खाली पाकिस्तान की ही बात नहीं कहता हूँ, हमें किसी भी मुल्क के ऊपर निर्भर नहीं रहना चाहिए। हमारे मुल्क को अपने लिए जितनी चीज़ें चाहिएँ, वे हम अपने मुल्क में पैदा करें, यह हमारा पहला काम है। उसमें इस प्रदर्शनी से काफी लाभ होगा। इसमें देखने की बहुत सी चीज़ें हमें मिलेंगी। उसमें सीखने को बहुत कुछ मिलेगा। हमारे काम में कौन-कौन-सी त्रुटियाँ हैं, वह भी देखने को मिलेगी। इस सब चीज़ों को देखना और जानना हमारा कर्तव्य है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम भी सुखी हों और हमारा पड़ोसी भी सुखी हो। हमारी नीयत यह न होनी चाहिए कि हमारे पड़ोसी को दुख हो। लेकिन जब तक हमारे पड़ोसी का बर्ताव हमारे साथ इस प्रकार का न हो कि वह भी हमारे सुख में सुखी है या हमारे दुख में दुखी है, तो हमें दूर से उसे नमस्कार कर अपना इन्तज़ाम पूरा कर लेना चाहिए।

यह हमारा काम है। इसीलिए जब प्रदर्शनी खोलने की बात मेरे सामने आई, तो मैंने उसे कबूल कर लिया।

हमने प्रतिज्ञा की है कि हमें स्वराज को ठीक करना है, उसे मज़बूत बनाना है। तो इसके लिए हमारा पहला काम यह है कि बड़े बड़े शहरों में और देहातों में हर जगह हम ऐसे प्रदर्शनी करें। जो चीज़ें हमारे मुल्क में बनती हैं, उनकी जब हमें जरूरत हो, तो हम उन्हीं को पसन्द करें, चाहे कुछ ज्यादा दाम ही क्यों न देने पड़ें। कुछ सस्ते दाम होने पर भी बाहर से आए माल को हम पसन्द न करें। कहें कि भई, हमें इसकी ज़रूरत नहीं है। क्योंकि एक साल, दो साल, तीन साल या चार-पाँच साल की तकलीफ हम उठा लें, तो उससे आगे चल कर हमारा मुल्क मज़बूत बन जाएगा और तब हमें किसी तरह का डर नहीं रहेगा। तब हमारा काम अच्छी तरह से चलेगा।

आज हमारे मुल्क में एक प्रकार की शान्ति हो गई है और इतना बड़ा मुल्क एक हो गया है, जितना पहले कभी नहीं था। तो यह बहुत बड़ी बात हो गई है। हिन्दुस्तान के इतिहास में हिन्दुस्तान इतना बड़ा, एकत्र और एक केन्द्रीय सरकार की हुकूमत के नीचे कभी नहीं था, जितना वह अब बन गया है। इसको सँभालना हमारा काम है। इसको मजबूत बनाने के लिए जितनी कोशिश करने की ज़रूरत है, वह तो सब को करनी ही चाहिए। और यह चीज़ हम और आप मिलकर ही कर सकते हैं। खाली हम सरकार के ऊपर बैठकर वैसा नहीं कर सकते। सरकार के पास इतने साधन नहीं हैं, इतनी सामग्री नहीं है। हमारे मुल्क को जख्म लगा है, उसको उठाना हर आदमी का कर्तव्य है। अब दो-व चार साल तक हमें यही कोशिश करनी चाहिए कि इसे अधिक-से-अधिक मजबूत बनाएँ, और हम सब लोग इस काम में अपनी हुकूमत का साथ दें। हमें झगड़ों में नहीं पड़ना चाहिए और न वाद-विवाद में फँसना चाहिए। इस प्रकार के जो रचनात्मक कार्य हैं, जैसे यह प्रदर्शनी है, इनसे जो-जो सीख हमें मिलें, जिस-जिस रास्ते पर जाने का सुझाव मिले, वह सब चीज़ हम सीख लें, यह मेरी प्रार्थना है। मुझे उम्मीद है कि हम फिर यही निश्चय करेंगे हम सब तरीकों से अपने मुल्क को मजबूत बनाएँगे। क्योंकि हमारा मुल्क आज नाज़ुक समय पर आ गया है। क्योंकि हमारा मुल्क अकेला ही ऐसा नहीं है। दुनिया में चारों तरफ़ आग फैल रही है। हमारे मुल्क के आसपास, जहाँ से आज तक हम अनाज लाते थे, व्यापार करते थे, वे सब मुल्क आज दुख में

फँसे हुए हैं। वहाँ बहुत झगड़ा है, बहुत मारपीट और बहुत खून-खराबी चल रही है। इन सब से हमें अपने मुल्क को बचा लेना चाहिए।

जब चारों तरफ़ आग फैल रही है, तो उस से बचना आसान काम नहीं है। यह बड़ा विकट काम है। लेकिन काम करने में तो मज़ा ही तब आता है, जब उसमें मुसीबत होती है। मुसीबत में काम करना ही बहादुरों का काम है, मर्दों का काम है। कायर ही मुसीबतों से डरते हैं। लेकिन हम कायर नहीं हैं, हमें मुसीबतों से डरना नहीं चाहिए। हमारे आसपास जो कुछ हो रहा है, उससे बचने के लिए हमें एक ही कोशिश करनी चाहिए और वह यह कि हमारा हिन्दुस्तान गान्धी जी के बताए मार्ग पर चले। आज की परिस्थिति में हमें अपनी गवर्नमेंट का साथ देना चाहिए। इस प्रदर्शनी में जो चीज़ें हैं, उन्हें देख कर हमें दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि हम अपने मुल्क में बनी चीज़ों का ही उपयोग करेंगे और जहाँ तक हो सकेगा, परदेशी चीज़ों को छोड़ देंगे। आपसे प्रार्थना है कि आप सब लोग इसी पर चलने की कोशिश करें।

—

(२७)

हैदराबाद का स्वागत समारोह

७ अक्टूबर, १९५०

भाइयो और बहनो,

जब से मैंने हैदराबाद स्टेट में प्रवेश किया, तब से मैं आप लोगों के प्रेम का अनुभव कर रहा हूँ। जिस प्रेम से और जिस भाव से आपने मेरा स्वागत किया है, उसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। हैदराबाद सिकन्दराबाद की म्युनिसिपैलिटी और हिन्दी प्रचार सभा की तरफ से मुझे जो मानपत्र दिया गया, उसके लिए मैं इन दोनों संस्थाओं का भी आभार मानता हूँ। मुझे मानपत्र देने की कोई आवश्यकता नहीं है और न इसका अभी कोई समय ही आया है। अब आदमी दुनिया छोड़कर चला जाता है, असली मानपत्र तो उसके बाद मिलता है। क्योंकि कोई आदमी आखिर दिन तक कोई गलती न करे, तब उसकी इज्जत रहती है। लेकिन यदि आखिरी उम्र में दिमाग पलट जाए, तो सारी करी-कराई ही खत्म हो जाती है। इसलिए हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि आखिर दम तक हम शुद्ध और निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करते रहें, ऐसी ताकत हमको मिले।

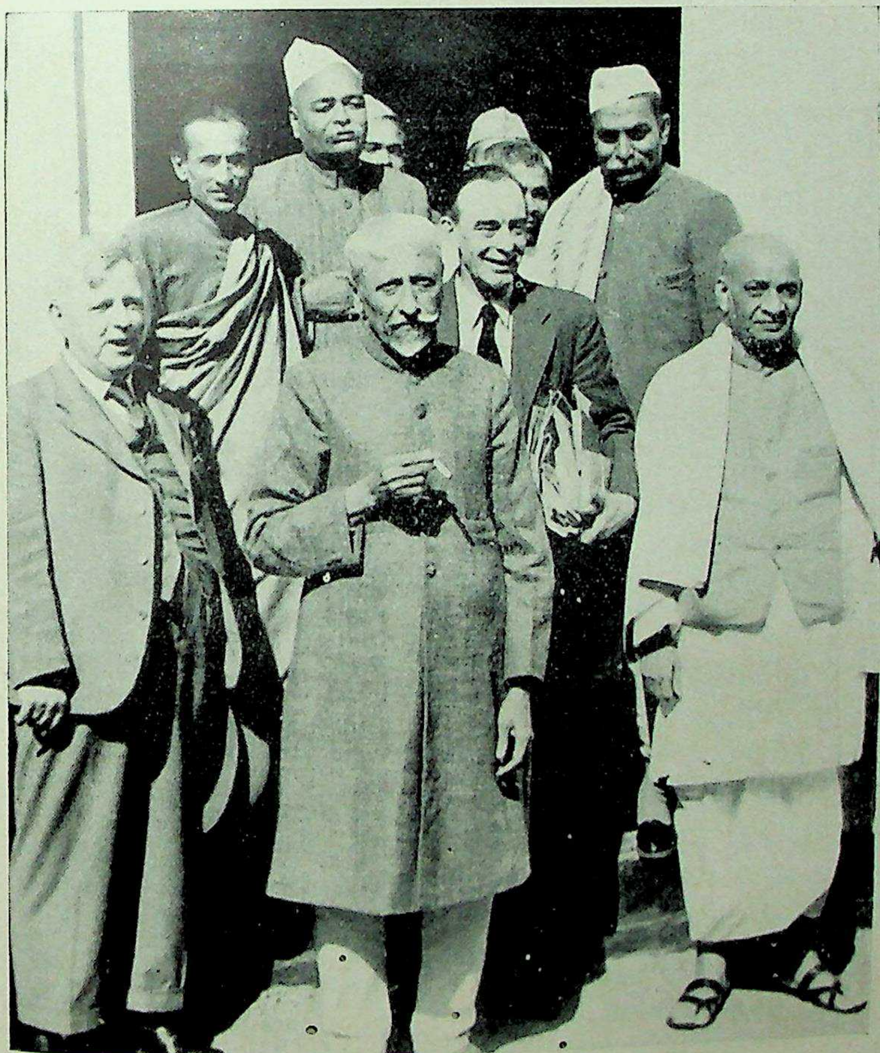
मानपत्र में मेरे बारे में जो बातें लिखी हैं, उसके बारे में मैं आपका समय नहीं लूंगा। लेकिन चन्द बातें हैं, जिनका जवाब मैं आपको देना चाहता

हूँ। उसमें मुख्य बात तो यह है कि आज तक आपके शहरों में जितनी म्युनिसिपैलिटियाँ हैं, उनमें सिर्फ स्टेट के नियुक्त सदस्य नोमिनेटेड (नियुक्त) मेम्बर्स हैं। तो यह बात आज के ज़माने के अनुकूल नहीं है। सब से पहले तो वही चीज़ बननी चाहिए। उसमें ऐसे नये लोग आएँगे, जिन्होंने अनुभव नहीं पाया है। इससे लोक शासन चलाने में बहुत दिक्कत पड़ेगी, यह मैं मानता हूँ। साथ ही उसका मतलब यह भी नहीं है कि नोमिनेटेड और सरकार द्वारा नियुक्त लोगों ने जो काम किया है, उसकी मैं कदर नहीं करता हूँ। लेकिन यह लोक शासन के अनुकूल चीज़ नहीं है। इसलिए आपकी तरफ़ से, हैदराबाद के मन्त्रिमण्डल की तरफ़ से, स्टेट की तरफ़ से, एक कानून बनाया गया है और वह कानून मंजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार के पास पहुँच भी गया है। बल्कि केन्द्रीय सरकार के लीगल डिपार्टमेंट ने उसमें देख-भाल करके उसे प्रेसीडेंट साहेब के दस्तखत के लिए भेज दिया है और चन्द दिनों में वह आपके यहाँ लागू हो जाएगा और उसके बाद आपकी म्यूनिसिपैलिटियों का चुनाव करने का काम आपका रहेगा। चुनाव "अडल्ट फ्रेंचाइज़" (बालिग मताधिकार) के सिद्धान्त पर होनेवाला है। यह समय की माँग है, यद्यपि उसमें मुश्किलें बहुत हैं। जहाँ अधिक लोग अनपढ़ हैं, जिन्हें चुनाव का अनुभव नहीं है, उनके लिए बालिग मताधिकार का उपयोग बड़ा मुश्किल है। लेक्रिन आज वह समय की माँग है, इसलिए हम दूसरी चीज़ नहीं कर सकते। तो एक तो हमारा खुद का अनुभव कम है और दूसरे ये मुश्किलें हमारे सामने आ पड़ी हैं। हमने सब बालिगों को वोट देने का अधिकार दिया है। उनमें बहुत-से मतदाता ऐसे होंगे, जिनके बारे में यह कहना कठिन है कि मत देने की कितनी योग्यता उनमें है। हमने उन्हें कितना तैयार किया है, ये सब सोचने की बातें हैं। परन्तु सब मुश्किलें सामने रखते हुए भी हमें सही काम करना है।

जहाँ-जहाँ एक ही हाथ में सत्ता होती है, वहाँ आसानी से काम चलता है; जो कुछ काम करना हो जल्दी-जल्दी कर लिया जा सकता है। लेकिन लोक-शासन का काम बड़ा मुश्किल है, वह जल्दी-जल्दी चल नहीं सकता। उसमें सब की राय लेनी पड़ती है, सब तरफ़ से लोगों का दबाव पड़ता है, सब तरफ़ से खींचा-तानी होती है। जो काम चलानेवाले कार्यकर्ता हैं, सर्विसवाले लोग हैं, उनको भी बहुत मुश्किल पड़ती है, क्योंकि उनको प्रतिनिधि लोगों की राय के माफिक़ होने की कोशिश करनी पड़ती है। उन दोनों की राय आपस में खिलाफ़

हो, उनमें अन्तर हो, तो बहुत मुश्किल हो जाती है। इस हालत में जब आप के यहां लोक शासन का पूरा कारोबार चलेगा, तब आपको बहुत-सी दिक्कतें आने-वाली हैं। एक बात यह भी है कि आपके यहाँ हिन्दुस्तान की तरह पुराना अनुभव ज़रा भी नहीं है। हिन्दोस्तान के सूबों में कुछ पुराना अनुभव तो था, कुछ लोक-संस्थाएँ, लोकल बोर्ड, म्यूनिसिपैलिटियाँ वहाँ बहुत सालों से बन गई थीं। ये चीज़ें इधर नहीं हैं। उसके साथ ही आपके यहाँ कुछ दिनों तक कौम कौम का जो प्रभाव पड़ता रहा, उसको भी हटाना है। अब आप सबको मिल-जुल कर काम करना है।

मैं आज आपके पास तीसरी दफे आया हूँ। पहले पुलिस ऐक्शन के बाद आया था। लेकिन आज मैं बहुत दिनों के बाद आया हूँ। इस बीच में हमने कुछ तबदीली भी की है। एक तो हैदराबाद स्टेट हिन्दोस्तान में मिल गई है। राजप्रमुख ने उसके लिए अपना दस्तखत दे दिया है। उसके साथ-साथ आपके १६, १७ प्रतिनिधि हिन्दोस्तान की पार्लियामेंट में शरीक हो गए हैं। हमारे स्टेट डिपार्टमेंट ने हैदराबाद स्टेट रिकमंडेशन (सिफ़ारिश) से उन्हें चुना है। इस तरह से हिन्दुस्तान की बड़ी पार्लियामेंट में आपका प्रतिनिधित्व पूर्ण हो गया और हैदराबाद स्टेट हिन्दोस्तान में मिल गई। क्योंकि यह तो खुली बात थी। इसमें कोई फर्क पड़नेवाला नहीं और दुनिया की सब ताकतें भी मिल जायँ तो भी उसमें कोई फ़र्क नहीं पड़ सकता है। जो चीज खुली हो, उसको ढाँकने से कोई फायदा नहीं है। सो इतना काम तो हो गया। उसके कुछ समय बाद कांग्रेस के प्रतिनिधियों को इधर के शासन में, राज्य के कार-बार में शरीक किया गया। यह एक शुरुआत ही हुआ, क्योंकि हमारी यह ख्वाहिश नहीं है कि हम सब बोझ उठाते रहें और आप हमारे पीछे ही चलते रहें। जैसा हिन्दुस्तान चलता है, उसके साथ साथ आपको भी चलना है। हमारी यह ख्वाहिश है और जितना जल्दी आप तैयार हो जाएं, उतना ही अच्छा है। जब आपकी तरफ़ से इस तरह की कोई माँग आती है कि हमारा शासन पूरे तौर से हमारे खुद का होना चाहिए, तो उसके लिए हमें कहने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि उसी के लिए तो हमने यह सब कुछ किया है। हम कोई परदेशी लोग थोड़े ही है। हम कोई सत्ता के लोभी भी नहीं कि हमें यहाँ की सत्ता चाहिए। यह तो हमारे ऊपर एक बोझ है। जितनी जल्दी आप अपना बोझ उठा लें उतना ही अच्छा है।



सरदार पटेल कुछ विदेशी पत्रकारों के साथ; साथ में डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आज़ाद, पंडित पन्त और आचार्य कृपलानी भी हैं

लेकिन इसमें हमारी जो ज़िम्मेवारी है, जो जवाबदारी है, उसका ख्याल भी हमें रखना पड़ता है। यदि हिन्दुस्तान की सरकार इस प्रकार अपनी जिम्मेवारी का ख्याल न रखे, तो वह हुकूमत चलाने के लायक न बनेगी। तो सब से पहले तो हमें यह देखना है कि आपका संगठन किस प्रकार का है, वह कितना पक्का है, आप लोगों में आपस का कौमी भेद भाव कितना हट गया है और बाकी कठिनाइयों पर कहाँ तक काबू पाया जा सका है। मैं आपकी कोई शिकायत नहीं करने आया हूँ। लेकिन एक बात मैं आपसे ज़रूर कहूँगा। जैसा कि बहुत दफे पहले भी कह चुका हूँ कि एक ही संस्था है, जो यह क्लेम (दावा) कर सकती है कि शासन उसके हाथ में आना चाहिए। यह संस्था कांग्रेस है। दूसरा तो कोई दावा भी नहीं कर सकता। कांग्रेस ही ने दावा किया है, और उसका अधिकार है! तो उसमें सब से बड़ी बात यह है कि कांग्रेस में जितने दल थे, उन्हें आपस में मिल जाना है। कोई ऐसा मान ले कि सत्ता मिलने के बाद सब ठीक हो जाएगा, तो वह बड़ी भारी गलती होगी। सत्ता मिलने के बाद तो झगड़ा और भी अधिक होनेवाला है, और तब बहुत-से नये दल भी बन सकते हैं, सत्ता कोई आसान चीज़ नहीं है। वह भली चीज़ नहीं है, बुरी चीज़ है। उसमें बहुत बड़ी चमक है और उससे दिमाग पलट जाता है। जब यह राज्य का सारा कार्य-भार किसी भी संस्था के पास आएगा, तो उनके प्रतिनिधियों को नींद लेने का भी समय नहीं मिलेगा।

तो सब से पहले हमें कांग्रेस के संगठन में से पक्षापक्ष मिटाने की कोशिश करनी है। इस काम में यहाँ कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है। जब हमने देखा कि ये लोग आपस में मिले हैं, यह न जानते हुए भी कि ये दिल से मिले हैं कि ऊपर से मिले हैं, हमने यहां के मिलिट्री गवर्नर को हटा लिया और एक सिविल एडमिनिस्ट्रेटर, जो आज आपका प्रधान मन्त्री है, भेजा। यह आदमी हमारी स्टेट मिनिस्ट्री का सेक्रेटरी था, जो सारे देशी राज्यों व रियासतों की देखभाल करता था। हमारी सर्विस में जो सब से अधिक अनुभवी लोग थे, उसमें से भी चुना हुआ एक आदमी हमने आपके पास भेजा है, जो आपकी गाड़ी को ठीक रास्ते पर चला सकेगा और यह बता सकेगा कि आप अपना काम किस तरह करें। तो हमने शुरूआत की। अब कांग्रेस का संगठन अगर सच्चे दिल से एक हुआ है, तो उससे मैं बहुत खुश हूँ। लेकिन मैंने सारी जिन्दगी भर सारे हिन्दुस्तान का संगठन चलाया और किसी आदमी के चेहरे पर से मैं पह-

चान सकता हूँ कि वह कैसा है। वह कितना भी ऊपर से बात करे, लेकिन मैं जान जाता हूँ कि उसके भीतर क्या है। तो जब मुझे इतना मालूम हो जाएगा कि अब यहाँ हैदराबाद स्टेट की गाड़ी को इन लोगों के हाथ में देने में कोई खतरा नहीं है, तब मैं एक मिनट की भी देर नहीं करूँगा। क्योंकि मेरी ख्वाहिश यही है कि आप अपना बोझ अपने कन्धों पर उठा लें। तो इस बारे में जितनी जिम्मेवारी मेरे पर है, उससे ज्यादा जिम्मेवारी आपके ऊपर है।

अब दूसरा रुख भी देख लीजिए। हिन्दुस्तान में नया चुनाव होनेवाला है। सारे हिन्दुस्तान के हर यूनिट में नया चुनाव होगा। उस समय आपके यहाँ भी नया चुनाव होगा और उसमें कोई ज्यादा समय लगने वाला नहीं है। इस बीच में आपकी म्युनिसिपैलिटी का भी चुनाव हो जाएगा। तो पहले म्युनि-सिपैलिटी का चुनाव कर लीजिए और देख लीजिए क्या होता है। चुनाव का भी कुछ अनुभव आपको हो जाएगा और जब चुने हुए प्रतिनिधियों के पास म्युनिसिपैलिटी का कारोबार आएगा, तब उससे मालूम हो जाएगा कि आगे क्या हाल होनेवाला है।

अब अगला सवाल यह है कि यहाँ कौमों के आपसी सम्बन्ध कैसे हैं? मैं खुश हूँ कि आज हैदराबाद में हिन्दू-मुसलमानों के बीच में किसी प्रकार का बखेड़ा नहीं होता। यह भी मैं कहूँगा कि हिन्दू और मुसलमान के बीच जब दिल का असली मेल हो जाएगा, तब वह भी मुझको मालूम पड़ जाएगा। कई लोग कहते हैं कि आप आए हैं, तो इन लोगों को छोड़ दो, उन लोगों को छोड़ दो; जनरल एमनिस्टी (आम रिहाई) दे दो। वह भी कोई खाली मेरे हाथ की बात नहीं है। उसमें भी तो आपका अपना हाथ ज्यादा है। जो कुछ बातें हुई हैं, उनके बारे में किसकी कितनी जिम्मेवारी है, इस बारे में आपको बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। हम सब कुछ जानते हैं कि कौन कितना ज़िम्मेवार है। लेकिन हम पिछली बातें याद नहीं करते हैं। हम तो भविष्य का ख्याल करते हैं कि भविष्य में हैदराबाद की गाड़ी कैसे चलेगी। उसमें गड़बड़ न हो और फिर कोई ऐसा धक्का न लगे, जिससे आपको नुकसान हो। हमें किसी से द्वेष नहीं रखना चाहिए और पिछली बातों को माफ़ करने के लिए भी तैयार हो जाना चाहिए। परन्तु यदि कोई मॉर्टर (शहीद) बनना चाहे, और खुदा के दफ्तर में इस प्रकार का नाम लिखाना चाहे कि वही कौम का खैरख्वाह है,

तो उसके लिए हमारे दिल में कोई रहम-रियायत हो नहीं सकती। कई लोगों ने किसी के हुक्म से काम किया तो हम देखेंगे कि हुक्म देनेवाला कौन था। हुकुम का अमल वफ़ादारी से करना कितना धर्म है, वह भी हमें देखना पड़ेगा। इन सब चीज़ों में कानून से काम हो सकता है, क्योंकि हमारे यहाँ आज जो लोक-शासन बना है, उसमें एक व्यक्ति के हाथ में कोई पावर (शक्ति) नहीं है। और हो तो भी, उसके ऊपर बहुत बोझ पड़ता है और वह सब काम अपने हाथ से नहीं कर सकता।

जैसा मैं कांग्रेस से आशा करता हूँ, वैसा ही मैं यहां की सब कौमों से भी आशा करता हूँ। और आप सब से कहता हूँ कि यहां पूरा अमन कायम कीजिए। आप समझ लीजिए कि मैं किसी को खुश करने के लिए कोई बात करने वाला आदमी नहीं हूँ। मैं साफ़-साफ़ बात करनेवाला आदमी हूँ। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आज आपका जो मेल दिखाई दे रहा है, वह अच्छा है। उससे मुझे खुशी है। आज हैदराबाद में से इस तरह की खबरें नहीं आ रहीं कि किसी जगह पर कोई बखेड़ा हुआ, कोई तूफ़ान हुआ, कोई वैर की बात हुई। इसी में हैदराबाद का भला है। लेकिन अभी तक मेरे दिल में यह विश्वास नहीं है कि आप लोगों के अन्तर का मैल चला गया है। मैं आपसे साफ़ कहना चाहता हूँ, कि उसका आपको सबूत देना चाहिए।

जब लायकअली हैदराबाद से भाग गया, तो क्या आप मुझ से यह कहना चाहते हैं कि आप लोगों में से किसी को कोई पता ही नहीं था और सारी जिम्मेवारी हमारी ही थी? मैं यह पूछना चाहता हूँ कि कितने मुसलमानों को यह दर्द हुआ कि यह आदमी हिन्दुस्तान से क्यों भाग गया? यदि मुसलमान हैदराबाद के हैदराबादी होते, हिन्दुस्तानी होते, तो उनके दिल में दर्द उठती और वे आवाज़ उठाते कि "तुम हमको छोड़ कर भाग क्यों गए? तुमने यह नहीं सोचा कि तुम्हारे इस प्रकार भाग जाने से कौम के ऊपर क्या बोझ आएगा? आपने कौम की अज़ादी को जोखम में डालकर तुम अपनी खुद की आज़ादी के लिए दौड़ गए। इस प्रकार तुमने जो कुछ किया, उससे मुसलमान कहाँ तक खुश हो सकते है?" हिन्दोस्तानी मुसलमान इस बात पर रोता कि इस आदमी ने क्या किया। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि जब मैंने सुना कि चन्द मुसलमान यहाँ नाचने लगे, कूदने लगे तो मुझे बहुत अफ़सोस हुआ। उसको मैं क्या कहूँ। वैसे मैं आपका कसूर नहीं निकालता। जब गान्धी जी का खून हुआ तो

हिन्दुस्तान में ऐसे हिन्दू भी थे, जिन्होंने खुशी मनाई थी। जब तक वह शैतानियत हम से नहीं निकल जाती, तब तक कौम-कौम का एका भी नहीं हो सकता।

तो मैं बड़ी अदब से कहूँगा और मुसलमानों से उनके खुद के इन्ट्रेस्ट के लिए, उनके खुद के हित के लिए, कहूँगा कि वे अपने को पूरी तरह हिन्दोस्तानी समझें। क्योंकि हमारा तात्पर्य यह है कि हिन्दू और मुसलमानों को हर तरह से एक ही प्रकार के हक और एक प्रकार की जिम्मेवारी होनी चाहिए। बराबर हक और बराबर अवसर उन्हें मिलना चाहिए और उसमें कोई फर्क नहीं होना चाहिए। लेकिन इसके लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों को हिन्दुस्तानी बनना पड़ेगा। उसके लिए जितना जल्दी तैयार हो, उतना अच्छा है। हो सकता है कि कई आदमियों के दिल में यह हो कि पाकिस्तान उनके लिए ठीक स्थान है। उनसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि हमारी तरफ़ से कोई रुकावट नहीं होगी। जितनी जल्दी चले जाओ, उतना ही अच्छा है। इधर के मुसलमानों के लिए भी यही अच्छा है। हम नहीं चाहते थे कि हिन्दोस्तान का टुकड़ा हो। लेकिन मजबूर होकर हमें टुकड़ा करना पड़ा। उस समय हमने नहीं सोचा था कि वहाँ से सब हिन्दुओं को भगा दिया जायगा। जब पाकिस्तान बना, तब भी हमारा यह ख्याल था कि हम आपस में बैठ कर समझौता कर लें। पाकिस्तान आज़ादी से अपनी खुशहाली बनाए और जैसा अपना शासन होता है वैसा बनाएँ, चाहे अपनी जैसी प्रकृति और गति बनाए। हम भी चाहते थे कि एक दूसरे के साथ मोहब्बत और प्रेम बना रहे। हिन्दुस्तान के मुसलमान और पाकिस्तान के मुसलमान आपस में मिल-जुलकर रहें, उनमें विवाह-शादी हो। और यह तो अब भी होगा। अभी इतना टुकड़ा होते हुए भी यह चीज़ टूटनेवाली नहीं है। तोड़नेवाले कितनी भी कोशिश करें, खुद टूट जाएँगे, लेकिन यह चीज़ नहीं टूटनेवाली। क्योंकि हिन्दुस्तान की आबोहवा ही ऐसी है। फिर भी अगर उनको अलग होना हो, तो हो सकते हैं। लेकिन इधर के कोई मुसलमान अगर यह ख्वाहिश रखते हैं कि बाहर के लोग उनका रक्षण करेंगे, तो यह गलत तरीका है। यह होनेवाला नहीं है। मैं आज कहता हूँ कि हमें हिन्दू और मुसलमान दोनों को आपस में मेल कराना चाहिए। पिछली चीज़ें हमें याद नहीं करनी चाहिएँ, उन्हें भूल जाना चाहिए। क्योंकि लाखों भाई तो देहात में पड़े हैं। उन्होंने क्या कसूर किया? उनको तो ख्याल भी नहीं था कि पाकिस्तान क्या चीज़ है, किस तरह से बनेगा, क्या होगा।

देहात का रहनेवाला तो अपने पड़ोसी के साथ मोहब्वत से रहता था, उनके साथ घूमता-फिरता था ।

अब जो कुछ हो गया, सो हो गया । अब फिर से मोहब्बत की कोशिश करने का वक्त आया है । ऊपर से अब शान्ति है । लेकिन मेरा बोझ हटा नहीं है । आज भी हिन्दुस्तान में हिन्दू-मुसलमान का बखेड़ा उठ खड़ा होता है । यह ज़हर इतना घुस पड़ा है कि इसके निकालने में थोड़ा समय लगेगा । आपको शान्ति रखनी चाहिए । दोनों कौम के बीच में जो समझदार आदमी हैं, उनको शान्त रह कर लोगों को समझाना चाहिए कि भई अगर उधर कोई गड़बड़ हुई है, तो इधर बदला लेने की कोशिश करना एक बहुत बुरी बात है । हमारा तो यह पूरा धर्म है कि हमारा जो शासन है, जिसको सिक्यूलर स्टेट (धर्म निरपेक्ष राज्य) कहते हैं, उसमें सबके लिए समान स्थान है । हमें सोच-समझ कर चलना है । लेकिन हम शीघ्रता से चल सकें और हमारे काम में कोई रुकावट न हो, उसके लिए हमें आपका साथ चाहिए । हैदराबाद में रहनेवाले सब हिन्दू और मुसलमानों को समझ लेना चाहिए कि वे हैदराबादी हैं और हिन्दुस्तानी हैं । वे जब यह समझ जाएँगे, तभी हम आगे बढ़ सकते हैं ।

मैं आपसे यह भी कहना चाहता हूँ कि हमने जब हैदराबाद स्टेट को अपने हाथ में लिया, तब देखा कि यहाँ करोड़ों रुपये का घाटा पड़ा है । राज्य के पास पहले जो रिज़र्व फण्ड था, वह सब-का-सब उड़ गया है और एक बड़ा खड्डा पड़ गया है । क्योंकि हैदराबाद को स्वतन्त्र बनाने के लिए इसी प्रकार का कारोबार और इसी प्रकार का खर्चा यहां किया गया था । लोगों को पैसा दिया गया था । यह सब काहे को किया गया ? कुछ अपने कामों के लिए या हैदराबाद की उन्नति के लिए तो किया नहीं गया । जो कुछ किया गया, उस से आज हैदराबाद में आर्थिक स्थिति बहुत बिगड़ी हुई है । वह अच्छी नहीं है और उसको ठीक करना है । हम उसको ठीक करें, तभी काम आगे चल सकता है । हमने तिलक आप लोगों के सुपुर्द कर दिया है । अब आपको स्वयं चलना पड़ेगा । आप देहात में जाइए, वहाँ न कोई अस्पताल है, न कोई दवा-दारू का सामान है, न कोई पढ़ाई का सामान है । वहाँ खाने पीने की भी तकलीफ़ है । तो लोगों को, जनता को, आज भी मालूम नहीं पड़ा होगा कि राज्य में क्या फर्क आ गया है । सब चीजें नए सिरे से बनाने का बोझ तो आपके ऊपर पड़ेगा । हिन्दुस्तान की सरकार की हालत भी ऐसी ही है । क्योंकि जब

तक हमको पाकिस्तान का भरोसा न हो, तब तक हमें हिन्दुस्तान को संभालने के लिए लश्कर रखना ही पड़ेगा। उसके लिए करोड़ों रुपया खर्च करना ही पड़ेगा। हम वैसा न करें, तो हम भी गुनहगार बन जाएंगे, क्योंकि यह सारे हिन्दुस्तान की सलामती की ज़िम्मेवारी का सवाल है।

तो हमें देखना पड़ता है कि हमारा पड़ोसी क्या करता है। पाकिस्तान कहता है कि दुनिया में हमारा एक ही दुश्मन है और वह है हिन्दुस्तान। जब वे ही खुल्लमखुल्ला ऐसा कहते हैं, तो हम उतना तो न करें, पर यह तो मान लें कि वे हमें अपना दुश्मन समझते हैं। ऐसी बात है, तो हमें भी सावधान रहना चाहिए। यदि मोहब्बत करनी हो, तो आज भी हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब पाकिस्तान से कहते हैं कि हम दोनों को आपस में ऐसा करार कर लेना चाहिए कि किसी सूरत में हम आपस में लड़ाई नहीं करेंगे। जब हमको मालूम पड़ेगा कि दिल और ज़बान के बीच में कोई अन्तर नहीं है, तभी वह बात होगी। जब तक ऐसा नहीं होगा, तब तक वहां से फौज़ को निकालना पाप है। मैं पूछता हूँ कि बताइए आपने सिन्धियों को क्यों निकाला ? पंजाब के बारे में तो मैं मान लेता हूँ कि आप कहेंगे कि पंजाबी हिन्दू मुसलमान एक दूसरे की अदला बदली और मार-पीट करते हुए भागने लगे। लेकिन सिन्धियों को आपने क्यों निकाला ? इसका जवाब मुझको दीजिए। है कोई जवाब आपके पास ? अब हम किससे कहें कि हमें आपस में ऐसा करार करना है कि कभी लड़ाई न करनी पड़े। एक तरफ़ तो आपका कहना है कि हिन्दोस्तान में रहने-वाले तीन करोड़ मुसलमानों की जवाबदारी हमारे सिर पर है। दूसरी तरफ़ कहना है कि हमारा एक ही दुश्मन है। तो हम कहते हैं कि हम तुम्हारी बात मानते हैं। ठीक है। तुम्हारी बात मानकर हमें सावधान रहना चाहिए। लेकिन इस पर भी हम यह कभी नहीं कहेंगे कि तुम हमारे दुश्मन हो। क्योंकि हम समझते हैं कि तुम दुश्मन रहना चाहो तो भी नहीं रह सकोगे, दुनिया की ऐसी हालत हो गई है। इधर रहनेवाले करोड़ों मुसलमान एक-न-एक दिन इस बात को समझ जाएँगे कि यह गलती हुई है। भले ही टुकड़ा हो और अपनी-अपनी ताकत से चाहे जैसा कार्य चलाएँ। लेकिन अपना घर-बार छोड़ कर अपना वतन, अपनी मंज़िल छोड़ कर भागना-भगाना किसको पसन्द आएगा ? इस समय पर मैं ज्यादा खोलकर नहीं कहना चाहता। क्योंकि मैं नहीं चाहता कि कौमों का ज़हर और आगे बढ़े। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे और

पाकिस्तान के बीच में कभी लड़ाई न हो। लड़ाई की ख्वाहिश रखनेवाले लोग तो पागल होते हैं। हम इस तरह की कोई ख्वाहिश नहीं रखते। हम दिल से चाहते हैं कि लड़ाई न हो। यह तो सौदागरी कर लीजिए कि सिन्धी अपने घर लौट जाएँ और जो मुसलमान इधर से वहाँ गए हैं, अगर वे लौट कर आना चाहें, तो उसकी आज्ञा हम दें देंगे। इसी प्रकार का प्रबन्ध हमने बंगाल में भी किया। इस बारे में काफी कोशिश की। इसे आगे बढ़ाना हो, तो रास्ता यह है कि हिन्दू और मुसलमान मोहब्बत से रह सकें। उसके लिए हमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में सामान पैदा करना पड़ेगा। यदि आप यह कहते रहेंगे कि दुनिया में हमारा एक ही दुश्मन है, और वह हिन्दुस्तान है, तब तो आप ही दुश्मनी का ऐलान करते हैं। मैं यह बात हैदराबाद के सब हिन्दू-मुसलमानों को समझाना चाहता हूँ।

हिन्दुओं से भी मैं कहना चाहता हूँ कि पीछे जो कुछ हुआ, उसे भूल जाना चाहिए। जब एक दफा हम से ज्यादती हो गई तो मर्दों का काम है कि उस चीज पर पर्दा डाल दें। अपने दिल में कभी वैर नहीं रखना चाहिए। वैर रखना नामर्दों का काम है। एक आदमी बुरा है, इसलिए उसके ऊपर थप्पड़ लगाना बेवकूफों का काम है। उसका हाथ पकड़ कर उसे मुहब्बत से उठाना चाहिए। क्योंकि वह हमारा भाई है। और मुसलमान कहां के हुए? इतने मुसलमान कहाँ से आए? वे परदेश से आए थे क्या? वे हमारी बेवकूफी ही तो से मुसलमान हुए थे। तो इस बारे में हमारा दोष तो है ही। वे मुसलमान इसलिए हुए कि हमने उनसे इस प्रकार का वर्ताव किया। आज भी क्या हम इस बात को समझे हैं? आज भी क्या हमारे में से अस्पृश्यता गई है?

गान्धी जी पुकार-पुकारकर कहते थे कि यदि सच्चा स्वराज्य आप लोगों को चाहिए, तो अस्पृश्यता को मिटा दीजिए। पहले हिन्दू और मुसलमानों को एक कर दो। अपनी आर्थिक स्थिति ठीक करनी हो, तो हम अपना कपड़ा आप बनाएँ। पहनने का जो कपड़ा हमारे गाँव में बने वही हम पहनें। गांव में क्या बनाएँ बेचारे? गाँव में तो मिल का भी कपड़ा नहीं मिलता, घर का क्या बनाएँ? और कहते हैं कि हमारे मुल्क में एक भाषा होनी चाहिए। अँग्रेजी-वंग्रेजी छोड़ देनी चाहिए। राष्ट्रभाषा एक होनी चाहिए। इन चार इमारतों पर हिन्दुस्तान का स्वराज्य बनाने की गान्धी जी ने कोशिश की और वह कोशिश

उन्होंने मरते दम तक नहीं छोड़ी थी। मैं उनका साक्षी हूँ। मरने से सिर्फ पाँच मिनट पहले एक घंटे तक मेरी उनसे बात-चीत हुई और मैं जब चला गया तो तुरन्त एक आदमी आया और उसने बताया कि एक पागल आदमी ने फाईरिंग किया और बापू तो मर गए। यह बहुत बरी बात हुई। लेकिन मेरी तब जो एक घंटे तक बातचीत हुई थी, वह तो मेरे दिल में भरी है कि वह क्या चाहते थे। हिन्दुस्तान का टुकड़ा होना उन्हें पसन्द नहीं था। लेकिन इस तरह से वह टुकड़ा नहीं कराना चाहते थे और अब कराची जाना चाहते थे। वहां जाकर वह मुसलमानों को दिल से समझाना चाहते थे कि हिन्दुओं को ठीक रक्खो। इधर यही बात वह हिन्दुओं को समझाते थे, बिहार में जाकर और जगह पर जाकर, दिल्ली में जाकर, रात-दिन कोशिश करके भी वह सफल नहीं हुए। लेकिन आखिर जब तक यह चीज़ नहीं होगी, तब तक हिन्दुस्तान में शान्ति होना असम्भव है, यह आप मान लीजिए। आप कहते हैं कि फैसला कर लीजिए। हमारी करोड़ों रुपये की रकम वे दबा कर बैठे हैं। उसका फैसला कर लीजिए। अब यह काश्मीर का मामला है, उसका फैसला कर लीजिए। आप कहते हैं कि हम काश्मीर को नहीं छोड़ेंगे, हिन्दुस्तान कहता है कि हम नहीं छोड़ेंगे। तो इसका फैसला कौन करेगा ?

हिन्दुस्तान के मुसलमानों से मैं पूछता हूँ कि आप की क्या राय है ? जब तक आप अपना दिल नहीं बदलोगे, तब तक मोहब्बत कैसे होगी ? तो आप लोगों को भी पाकिस्तानियों से कहना चाहिए कि इस तरह से लड़ने से फायदा क्या ? दो-ढाई साल तो हो गए। शेख अब्दुल्ला को समझाओ, काश्मीर के मुसलमानों को समझाओ। यदि वे पाकिस्तान में जाना चाहते हैं तो हम ज़बरदस्ती थोड़े ही रखनेवाले हैं। लेकिन वे चाहते हैं कि हमें इधर ही रहना है, क्योंकि हमारा तो सेक्यूलर (धर्म निरपेक्ष) स्टेट है। और हमने काश्मीर के चन्द मुसलमानों के लिए ही इसे सेक्यूलर स्टेट थोड़े ही बनाया है। तीन करोड़ मुसलमान पहले से ही हमारे यहाँ पड़े हैं। जितने आप के यहां मुसलमान हैं, करीब उतने ही हमारे यहां भी हैं। उनका बोझ हम किस तरह से उठाएँगे, अगर रात-दिन लड़ते रहेंगे। तो इधर के मुसलमानों को समझना चाहिए कि उनका सभी कुछ यहां ही है; यहीं घर है, यहीं रिश्तेदारी है, यहीं मुहब्बत है। उनको कहना चाहिए कि भई झगड़ा छोड़ो, उससे कोई फ़ायदा नहीं होने वाला है। हम पहले समझते थे कि बहुत फायदा होगा। लेकिन अब हमने समझ

लिया है कि जो कुछ हुआ, सो हुआ। तुम अपना काम चलाओ, हम अपना चलाएँ। एक दूसरे का साथ दो। एक दूसरे का पैर खींचने की आदत छोड़ दो। तब तो हमारी आपस की मुहब्बत हो सकती है।

यों झगड़ा एक नहीं है, अनेक झगड़े हैं। हमारी सब नदियाँ पड़ी हैं। पाकिस्तान में उन का पानी जाता है। नदियों का मूल हमारे यहाँ है। वे कहते हैं कि इसका फैसला करो। ठीक है, फैसला करो। सिन्ध में और पंजाब में नदियों की कमी नहीं है। दोनों मुल्कों के लिए काफी पानी है। बैठ कर फैसला करो। लेकिन फैसले की मंशा किए बिना सिर्फ यही मंशा करना कि किसी-न किसी तरह हमें जी भर कर पानी मिल जाय, यह कैसे हो सकता है? जिन आदमियों को हमने निकाल दिया, जिनके पास पंजाब की सिंचाई थी, उनको मुल्क में से निकाल दिया; सिक्खों को निकाल दिया, हिन्दुओं को निकाल दिया। अब यह कहना कि पानी भी हमारा ही है, ज़मीन भी हमारी ही है और जो लोग गए, उनका सब बोझ तुम्हीं उठाओ। यह चीज़ होनेवाली नहीं है। वह इन्साफ से होगा। अगर ये सब चीज़ें करनी हों, तो हमारी तरफ़ से कोई रुकावट नहीं होगी। लेकिन जब हमको विश्वास होगा कि ये बातें सही हैं और वे सचमुच चाहते हैं। ऐसा हुआ, तो हम ज़रूर करेंगे।

हमने अभी दिल्ली का ऐग्रीमेंट किया। दिल्ली में बैठकर प्राइम मिनिस्टर से साफ साफ बात करके बंगाल के बारे में एग्रीमेंट किया। अब यह किस तरह से वह चलता है? कितने हिन्दू कहाँ रहते हैं, कितने वहाँ से भागते हैं? कितने मुसलमान इधर से जाते हैं कितने वहाँ से भागते हैं? यह सब कछ देखने की बातें हैं। क्योंकि हमारा खयाल है कि ऐग्रीमेंट का केस तो एक ही है। यह जो करार किया गया है, वह सही तरह से अमल में आता है कि नहीं। उसका उद्देश्य एक ही है कि जो हिन्दू वहां से इधर आ गए हैं, वे वापस चले जाएँ। जो मुसलमान भाग कर उधर गए हैं, वे लौट आएँ। यह बातें दोनों बंगालों में हो जाएँ, तो समझ लीजिए कि हमारा एग्रीमेंट सच्चा है। ऐसा न हुआ तो हम जबान से कितनी भी बातें करते रहें, कहते रहें कि ठीक हो रहा है, ठीक हो रहा है, उससे कुछ भी काम नहीं होगा। हमारी ख्वाहिश है कि ठीक काम होना चाहिए। बहुत लोग कहते थे कि हम लोग वहाँ नासिक कांग्रेस में बखेड़ा करेंगे, वहाँ झगड़ा होगा, हिन्दू-मुसलमान के सवाल पर झगड़ा होगा। आपने देखा कि हमारी कांग्रेस के प्रधान ने कलकत्ता में जाकर स्पीच दी कि पाकिस्तान

में कुछ भी हो, लेकिन हमारा धर्म है कि हम मुसलमानों को उनका पूरा हक़ दें और उनका पूरा राशन दें।

यह बखेड़ा अगर एक जगह पर होता है, तो उसका असर कितनी ही जगहों पर होता है। इस तरह जो एक्शन और रिऐक्शन (क्रिया और प्रतिक्रिया) होता है, उसके रोकने की कोशिश में ही हमको बहुत मुसीबत बढ़ गई है। उन पर भी यही मुसीबत होगी। मैं नहीं कहता हूँ कि उनपर नहीं होगी। लेकिन उन्होंने अपना काम इस तरह से कर लिया कि उतर पाकिस्तान में दूसरी कम्यूनिटी ही नहीं रही। लेकिन इस तरह से तो मुहब्बत की बात नहीं हो सकती। मेरी राय तो यह है, और मैं मानता हूँ कि आखिर में सब की यही राय होनेवाली है कि जो हिन्दू अपनी-अपनी जगह पर फिर से लौट आना चाहें, उन्हें लौट आने दें। उनकी मिलकीयत उनको वापस कर दी जाए। इसी प्रकार जो मुसलमान इधर से गए, वे अपनी जगह पर लौट आएँ। चाहे लायकअली भी लौट आना चाहे, तो मैं उसको हज़म करूँगा, वह आ जाए। क्योंकि इधर तो हमारी किसी के साथ मित्रता या दुश्मनी नहीं है। पहले वह समझा होगा कि उसी प्रकार हैदराबाद का कल्याण है। अब इसका अनुभव उसने कर लिया है कि हैदराबाद के मुसलमानों को उससे कितना फ़ायदा मिला और उनका क्या हाल हुआ। जिन लोगों को पाकिस्तान में रहना है वे खुशी से वहीं रहें। लेकिन जो जाना चाहें, उसके आने-जाने के लिए दोनों ओर से रास्ता खुला रखना चाहिए और इस बात की व्यवस्था दोनों तरफ़ से होनी चाहिए। तब तो यह काम हो सकता है। नहीं तो फिर अलग-अलग दो मुल्क तो हैं ही। चाहे मुहब्बत करने के लिए तैयार न हों, तो भी यह बात तो नहीं करनी चाहिए कि वह हमारा पड़ोसी हमारा दुश्मन है।

मैं हैदराबाद के मुसलमानों से यह कहना चाहता हूँ कि हमें हैदराबाद की सल्तनत का सैन्सस (जन गणना) लेना होगा। उससे आपको मालूम हो जायगा कि हैदराबाद में मुसलमानों की आबादी पिछले सैन्सस की अपेक्षा कितनी है। हमने कितने मुसलमानों को इधर से निकाला? ऐसी सिच्यूएशन (स्थिति) पैदा हुई, जिसमें कितनों को भागना पड़ा? इधर कोई ऐसी परिस्थिति पैदा करने की हमारी ख्वाहिश नहीं है कि इधर से लोगों को भागना पड़े। और न यह हमारा धर्म है। हमारा धर्म ऊँचा है। जो मुसलमान इधर हैं, उनका हमें पूरा विश्वास करना चाहिए। यहाँ के मुसलमानों को भी समझना चाहिए कि हम हिन्दुस्तान के सिटि-

जन (नागरिक) हैं। यहाँ शहरियों का जो हक है, उतना ही हमारा हक रहेगा। अगर हम ऐसे हालात न बना सकें, तो हम राज्य करने के लायक नहीं है।

हैदराबाद में जो लोग राज्य अपने हाथ में लेने की ख्वाहिश करते हैं, उनको मैं सावधान करना चाहता हूँ कि उन्हें ये सब बातें करने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। हैदराबाद में से हमें अस्पृश्यता को निकालना है हैदराबाद में हमें हिन्दू मुसलमान की एकता बनानी है और हैदराबाद में हमें देहातियों की तरफ़ नज़र करनी है और उनको उठाना है। हैदराबाद में हमें राष्ट्रभाषा का प्रचार करना है। साथ ही यहां हमें सारे हैदराबाद को एक इकाई बनाना है। चाहे कोई हो, चाहे आन्ध्र हो, चाहे करनाटक का हो और चाहे कोई और हो, हमें सब का एक ही ग्रूप बनाना है। जिन लोगों की ख्वाहिश जल्दी-से-जल्दी राज्य अपने हाथ में लेने की है, उन्हें इन कठिन सवालों की ओर तो ध्यान देना ही पड़ेगा। तो जैसा कि मैंने कहा, इन्हीं चार बातों पर हमारे राज्य की इमारत बननेवाली है। अगर इन्हें हम ठीक कर लें, तब तो गान्धी जी की ख्वाहिश का राज्य हमको मिल सकता है।

मैं इधर इसलिए आया हूँ कि इधर के हालत देख लूं, और कुछ आपको बताऊँ कि हमारी क्या ख्वाहिश है। आपके दिल में कुछ अविश्वास हो, तो वह भी मैं निकालना चाहता हूँ। कौम-कौम में अभी तक कुछ अन्देशा हो, तो उसे भी मैं दूर करना चाहता हूँ। कुछ लोगों के दिल में यह वहम है कि जिन्होंने पहले कुछ गलतियाँ की हैं, उनके ऊपर हम कुछ वैर भाव रखते हैं। वह चीज़ आपके दिल से मैं हटाना चाहता हूँ। हमें किसी भी हैदराबादी के ऊपर वैर भाव नहीं रखना है। दयाभाव पूरा रह सकता है, क्योंकि धर्म का मूल तो दया है। परन्तु जो लोग ऐसे हैं कि उनके दिल में गुमान है कि उन्हें शहीद बनना है, उनको हम कैसे रोकेंगे ? जो खुदा के दरबार में शहीद बनकर जाना चाहते हैं, उनके काम में हम रुकावट डालें, ऐसे पापी हम क्यों बनें ? जाने दो उसको, जाए वह, यही हमारी ख्वाहिश है। आप यह समझ लीजिए कि कोई काम कानून से चलता हो, तो उसे कानून से चलने दो। कानून के मुआफिक काम करने में थोड़ा खर्चा तो होगा, लेकिन वह लाचारी है।

कई मुख्य-मुख्य जवाबदार यहाँ से भाग गए हैं, परन्तु कम रुतबेवाले लोग तो यहाँ ही हैं। इस बारे में क्या करना है, यह तो गवर्नमेंट आफ इंडिया के सोचने की बात है। मैं कुछ जवाबदारियाँ ले सकता हूँ। सोचेंगे हम। लेकिन

उस सब के लिए हमें आप लोगों की मदद चाहिए । यदि आप लोग ऐसी आबोहवा इधर पैदा करेंगे तो मेरा काम सरल हो जायगा । तब आप देखेंगे कि मैं इस तरह से चलनेवाला आदमी नहीं हूँ कि किसी के ऊपर द्वेष-भाव से कोई काम करूँ । यह होता तो मैं जिस जगह पर बैठा हूँ, उस जगह पर बैठने के लायक नहीं होता । यह बात तो आप समझ गए होंगे ।

एक और बात मैं आपको कहना चाहता हूँ । वह यह कि हमारे देश में बहुत सालों से गुलामी आई और जिस तरह से हुकूमत चलाई गई, (मैं अकेले हैदराबाद की हुकूमत की बात नहीं कह रहा हूँ । क्योंकि हैदराबाद की हुकूमत भी तो हिन्दोस्तान की बड़ी सलतनत की छाया में चलती थी) उसने हिन्दुस्तान को बेकार बना दिया, हिन्दुस्तान के लोग आलसी बन गए, लोग बेकार हो गए, क्योंकि कोई काम करने को रहा ही नहीं । तो करोड़ों लोग बेकार हो गए । परन्तु अब हमारा अपना राज हो गया है । आज हमारे करोड़ों बेकार लोग कुछ-न-कुछ धन पैदा करने में लग जाएँ और वे ज्यादा धन पैदा करन लगें, तो उसी से हिन्दुस्तान का कल्याण है । इसके बिना हमारा काम नहीं चलेगा । हमें यह बाँध लेना चाहिए कि बरसों की गुलामी से हमारा देश कंगाल हो गया है और जब तक हम सब मिलकर काम नहीं करेंगे, इस कंगाली से हमारा छुटकारा होनेवाला नहीं है । मुल्क में जो थोड़ा-सा धन है, वह बराबर बराबर बाँट देने से भी काम नहीं चलनेवाला । यह बात हम बाँध लें, क्योंकि यहाँ करोड़ों बेकार हैं और भूखे मरते हैं।

हमें यहाँ एक और बात की भी फिक्र है, जिस बात ने हैदराबाद को सारी दुनिया में मशहूर कर दिया है । वह यहां का नवगंज एरिया है, जिसमें कम्यूनिस्ट लोग कोई-कोई काम करते हैं । वहां जो लोग सब फिसाद कर रहे हैं, वह सब तो कम्यूनिस्ट नहीं हैं, गुंडे भी हैं, क्योंकि उनको लूटपाट का मौका मिल गया है । लेकिन उनको जोड़नेवाले हैं कम्युनिस्ट लोग । यदि उनके दिल में यह हो कि हिन्दुस्तान में चीन की तरह साम्यवादी पथ बने, तो वे लोग पागल लोग हैं । मैं कहना चाहता हूँ जिस प्रकार ये लोग कर रहे हैं, उस प्रकार तो चाईना वालों ने भी नहीं किया । मैं नहीं समझता हूँ कि दुनिया में कोई भी कम्युनिस्ट वैसा पागलपन करेगा, जैसा कि हिन्दुस्तान में किया जा रहा है । हमारे जो बेचारे गरीब देहात में हैं, उनको गोली से मारना, कुल्हाड़ी से मारना, टुकड़ा करना, औरतों को भी नहीं छोड़ना, उनको भी मारना, यह सब क्या

है ? अपने ही आदमियों को मारनेवालों को कम्यूनिस्ट कहा जाय ? वे कम्युनिस्टों का नाम बदनाम करते हैं ।

मैंने पिछली दफा भी कहा था, और इधर आज फिर भी कहता हूँ कि जो कम्युनिस्ट लोग खरामस्ती कर रहे हैं, गरीबों को मारते हैं और झूठा दावा करते हैं कि हम गरीबों को कुछ दिलाते हैं, मैं उन लोगों की जड़ को निकालने वाला हूँ । इसके लिए जितनी मेरी कोशिश होगी, करूँगा । दुनिया में ऐसा पाप मैंने किसी जगह पर नहीं देखा है, न सोवियत यूनियन में देखा, न इधर किसी जगह । इधर लोग जो काम कर रहे हैं, यह बहुत ही बुरा है । लेकिन मुझे अफ़सोस होता है कि इन लोगों को इतने आर्मस ऐम्युनीशन (हथियार) कहाँ से मिलते हैं । और वह उनके जोड़ने वाले जो लोग हैं, उनका ब्रेन (दिमाग) कहाँ रहता है । आप मालूम कीजिए कि वे कहाँ रहते हैं ? क्या वे हैदराबाद से बाहर रहते हैं ? क्या नलगंडा में रहते हैं ? नहीं, वे वहां के रहनेवाले नहीं हैं । नहीं तो वे सब पुलिस की, मिलिट्री की झपट में आ जाते । तो वे इधर हैदराबाद में पड़े हैं या सिकन्दराबाद में पड़े हैं या किसी और सही सलामत जगह पर पड़े हैं । वे किस के घर में खाते हैं, कहाँ रहते हैं, उनको दवा-दारू कहाँ से मिलती है ? जब आपके हाथ में यह राजसत्ता आएगी, तब क्या हाल होगा, यह सोचिए । मैंने आज दूसरा एक आदमी हैदराबाद का प्रधान मंत्री का काम करने के लिए दिया । इसी प्रकार नालगंडा एरिए के लिए हम अपनी सर्विस का एक खास आदमी पसन्द करते हैं । बहुत मुश्किल से हम ऐसे आदमियों को भेज सकते हैं, क्योंकि हमारे पास पूरे आदमी नहीं हैं । आप सही सलामत अपनी गाड़ी खुद चला सकें, इस प्रकार हमें आपको तैयार करना है ।

आप लोग मुल्की-नामुल्की की बात करते हैं और कहते हैं मुल्की लोग सर्विस में रहने चाहिए । तो मैं कबूल करता हूँ, होने चाहिए और साथ-ही-साथ मैं यह भी कहना चाहता हूँ यदि आप हिन्दुस्तानी बनना चाहें, तो आपको सारे हिन्दोस्तान को अपना मुल्क समझना होगा और तब हिन्दोस्तान भर के आदमी मुल्की होंगे, गैरमुल्की नहीं । तो बाहर से लाने की ज़रूरत होती है तो उन्हें लाया जाता है । ज्यादा आदमी तो हम लाएंगे ही नहीं, लेकिन हमें हिन्दोस्तान भर को एक बनाना है । जिस हिन्दोस्तानी की जहाँ ज़रूरत हो, उसे वहाँ जाना चाहिए । सारे मुल्क में वह मुल्की है । हैदराबादियों की भी जहां ताकत होगी, जहाँ उनकी योग्यता होगी, हिन्दोस्तान भर में किसी भी जगह

चले जा सकेंगे। क्योंकि सारा हिन्दुस्तान खुला पड़ा है। हिन्दोस्तान के हर प्रान्त में और हर मैदान में आप जा सकते हैं। पहले आप अपना काम सँभालना चाहें तो और बात है।

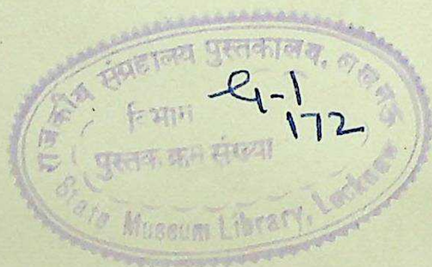
एक बात यह भी ख्याल करने की है कि आपकी आमदनी का पाँच से छः करोड़ रुपया पुलिस के ऊपर खर्च होता है। यह खर्चा बहुत है। हमारे पास तुंगभद्रा के प्रोजेक्ट हैं, गोदावरी के प्रोजेक्ट हैं, और प्रोजेक्ट भी हैं। अगर जल्दी से उन पर अमल हो सके, तो अनाज का कोई टोटा नहीं रहे। तब आप हिन्दुस्तान भर को रूई दे सकते हैं, अनाज दे सकते हैं। तो अब हमें इतना खर्चा क्यों करना पड़ता है? यदि हमारी कांग्रेस ताकतवर हो, या हैदराबादी लोग समझदार हों, तो ये गुनाह यहां क्यों होते? अगर आप यह समझते हों कि हमारी जवाबदारी नहीं है, सिर्फ पुलिस की है, तो आप गलती पर हैं। एक तरफ़ तो अब पुलिस की जितनी ज़िम्मेवारी है, यहां की पुलिस उसे निभा नहीं सकेगी। तो बाहर से मैं पुलिस लाऊँगा। मद्रास से, मैसूर से, यू० पी० से या सी० पी० से लाऊँ? इतनी पुलिस मुझे बाहर से लानी पड़ी है। बाहर से जो लोग आए, उनमें सब लोग देवता नहीं हैं, यह तो मैं भी जानता हूँ। फिर भी बाहर वाले अफ़सर आप को तंग करने या बेइज्जत करने नहीं आए हैं। आप अपने काम के लिए जल्दी तैयार हो जाइए। लेकिन यह सारा ढांचा ही बिगड़ जाए, ऐसा काम नहीं करना चाहिए।

वहां रायपुर में गोली चलानी पड़ी। बाहर अखबारों में छपा कि वहां फूड राएट (रोटी का दंगा) हुआ। यह फूड राएट नहीं था, भूखमरों का राएट नहीं था। रायपुर के गोदामों में तो दो महीने की खुराक पड़ी है। लेकिन लोगों की यह गलती हमें मससूस करनी पड़ेगी, कबूल करनी पड़ेगी। हम जो दूकान से माल लाने के लिए राशन कार्ड देते हैं, वह एक आदमी को एक ही कार्ड दिया जाता है। रायपुर में लोगों ने बहुत गड़बड़ी की। जिसके घर में चार आदमी थे, और वह झूठमूठ चौदह आदमी का कार्ड ले गया। तो और लोग भूखे मरेंगे और इधर अधिक खर्च से उतना करजा हमारे ऊपर हो जाएगा। औरों के हिस्से का अनाज हमें वहां देना पड़ेगा। तो रायपुर में यह हुआ कि अनाज के कोटे के बहुत से गलत कार्ड बनवा लिए गए। उनको ठीक करने में कोई गलती भी शायद हुई हो। लेकिन गलती हुई तो आप लोगों को अपनी सरकार के मेम्बरों के पास जाना चाहिए था। लेकिन वहां दुकानें बन्द करना, हल्ला करना,

दुकानों को लूटने की कोशिश या गवर्नमेंट का गल्ला लूटने की कोशिश करना और पुलिस के ऊपर पत्थर चलाना, यह कोई स्वराज्य चलाने का तरीका नहीं है। इससे तो हैदराबाद बदनाम होगा। अब आप की जो बदनामी आएगी, वह हमारे ऊपर पड़ेगी। आप कह सकते हैं कि हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट की तरफ़ से यहां राशन चलता है, उसमें चाहे बिगाड़ पड़े, हमारा क्या है ? लेकिन थोड़े दिन के बाद आपको अपना काम अपने हाथ में लेना है, फिर आप का क्या होगा ? उधर मध्यभारत में ज़रा सी ज्यादती से इतना बिगाड़ और इतना हल्ला हुआ। सरकार के विरुद्ध जितने ग्रुप थे, वे सब आपस में मिल गए और सब ने मिलकर ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी कि गोली चलानी पड़ी और कितने ही विद्यार्थी घायल हुए तथा पांच सात मर गए। इससे वहां मुल्की मिनिस्ट्री की हालत ऐसी हो गई कि आज वहां मुल्की गवर्नमेंट ही नहीं है। इस तरह के हालत आपके यहां भी हुए, तो आप को बहुत मुशकिल पड़ेगी। मैं आप लोगों को सावधान करने के लिए आया हूँ कि आप को राजसत्ता तो मिलने वाली ही है, वह आपका ही हक है, आपका ही अधिकार है और आपके लिए ही हमने यह सब किया है। लेकिन इसके लिए आपको तैयार होना है। मैं आपको सावधान करने के लिए आया हूँ कि उसके लिए आप अपना संगठन ठीक कर लो, अपना दिल खुला रखो, अपना दरवाज़ा खुला रखो। कांग्रेस से भी मैं कहता हूँ कि कांग्रेस का दरवाजा बन्द नहीं करना चाहिए। उसमें अच्छे आदमियों के लिए जगह होनी चाहिए। और जो आदमी अच्छे हैं, समझदार हैं, उनको भी समझना चाहिए कि हमें राजतन्त्र में हिस्सा लेना है। उसके लिए यह जो संगठन है, उसके बन्धन नियम हैं, उसमें हमें पड़ जाना चाहिए। यही सब चीज़ें आप को समझाने के लिए मैं आया हूँ।

आप जानते हैं, मेरी शारीरिक ताकत बहुत कम हो गई है। मैं सब को मिल नहीं सका। मुझको बहुत-से लोग मिलना चाहते थे। किसी-किसी को नाराज़ भी करना पड़ा। लेकिन मैं लाचार हूँ और आप लोगों से क्षमा चाहता हूँ कि मैं सबको नहीं मिल सका। इसको माफ़ कीजिए। लेकिन मुझे जो कुछ कहना था, वह सब मैंने इधर बैठकर कह दिया है। उसके ऊपर आप सोचिए। मैं तो देहात में भी जाना चाहता था और मैं नलगुंडा भी जाना चाहता था। लेकिन मुझमें इतनी ताकत नहीं है। इसलिए मैं लाचार हूँ। लेकिन इधर बैठे बैठे मैंने जितनी बातें की हैं, उनके ऊपर आपको सोचना है। जितना

जल्दी सोचकर आप उनके ऊपर अमल करेंगे और यह समझेंगे कि यह आदमी जो कुछ कहता है, हमारे फायदे के लिए कहता है। वही हैदराबाद के फायदे की बात है और उसी में हैदराबाद का कल्याण है, उसीसे आपका और हिन्दुस्तान का भी कल्याण होनेवाला है। यह बात आप समझेंगे तो उससे आपकी भी इज्जत बढ़ेगी, हिन्दुस्तान की भी इज्जत बढ़ेगी। ईश्वर आप सब का कल्याण करे, यही मेरी ख्वाहिश है।


राजकीय संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
विभाग
पुस्तक क्रम संख्या
State Museum Library, Lucknow

